CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1999

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1999

Contents

28 February 1999 Vol. 13 No. 1

31 March 1999 Vol. 13 No. 2

31 May 1999 Vol. 13 No. 3

30 June 1999 Vol. 13 No. 4

31 August 1999 Vol. 13 No. 5

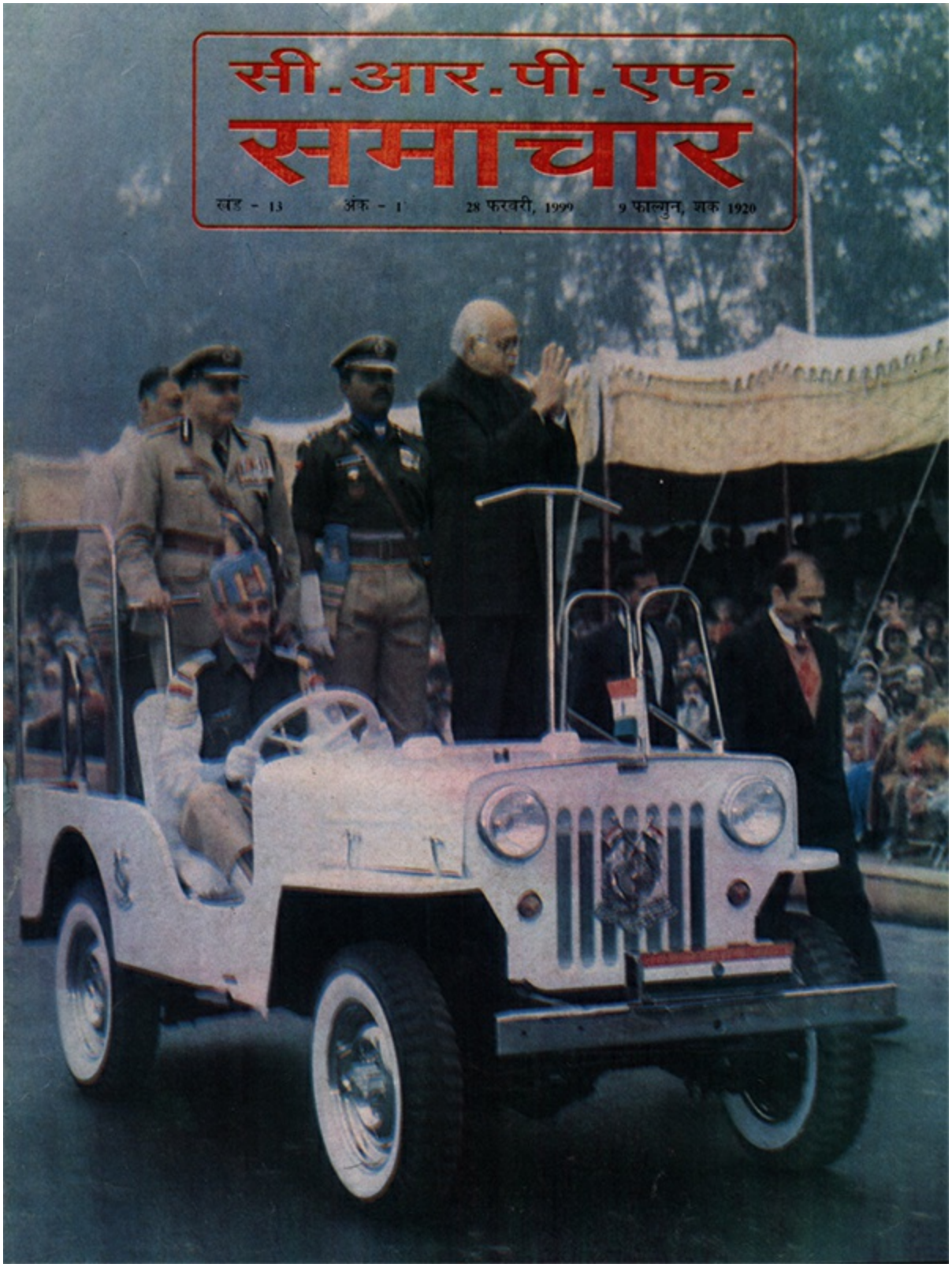
30 September 1999 Vol. 13 No. 6

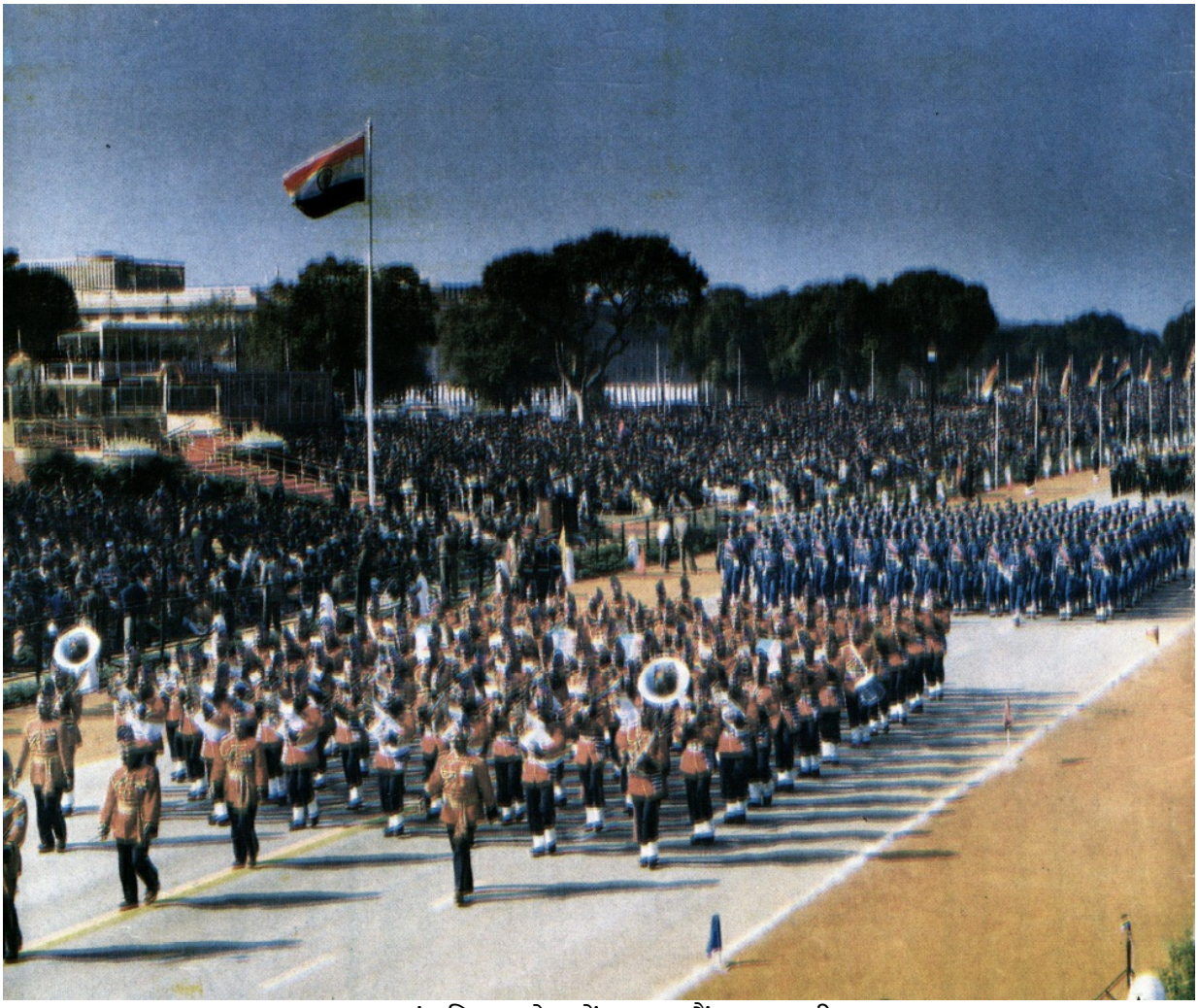
30 November 1999 Vol. 13 No. 7

31 December 1999 Vol. 13 No. 8

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 13 अंक - 1 28 फरवरी, 1999 9 फाल्गुन, शक 1920





गणतंत्र दिवस परेड में बल का बैंड व टुकड़ी

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-13 अंक-1
28 फरवरी, 1999
9 फाल्गुन, शक 1920

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय
एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की
ओर से
डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस
झड़ौदा कलां,
नई दिल्ली-72



इस अंक में

59वां के.रि.पु. बल दिवस

59वीं वर्षगांठ पर सम्मानित कार्मिक

28 कार्मिकों को पुलिस पदक

के.रि.पु. बल के वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

के.रि.पु. बल की उच्च परंपराओं की बनाए रखें

सफलता के लिए सीखने के लगातार प्रयास जरूरी

संक्षिप्त समाचार

प्रथम आवरण- के.रि.पु. बल की 59वीं वार्षिक परेड के अवसर पर जनता का अभिवादन स्वीकार करते गृहमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी।

अंतिम आवरण- 59वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर पर आयोजित सामूहिक बैंड वादन।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

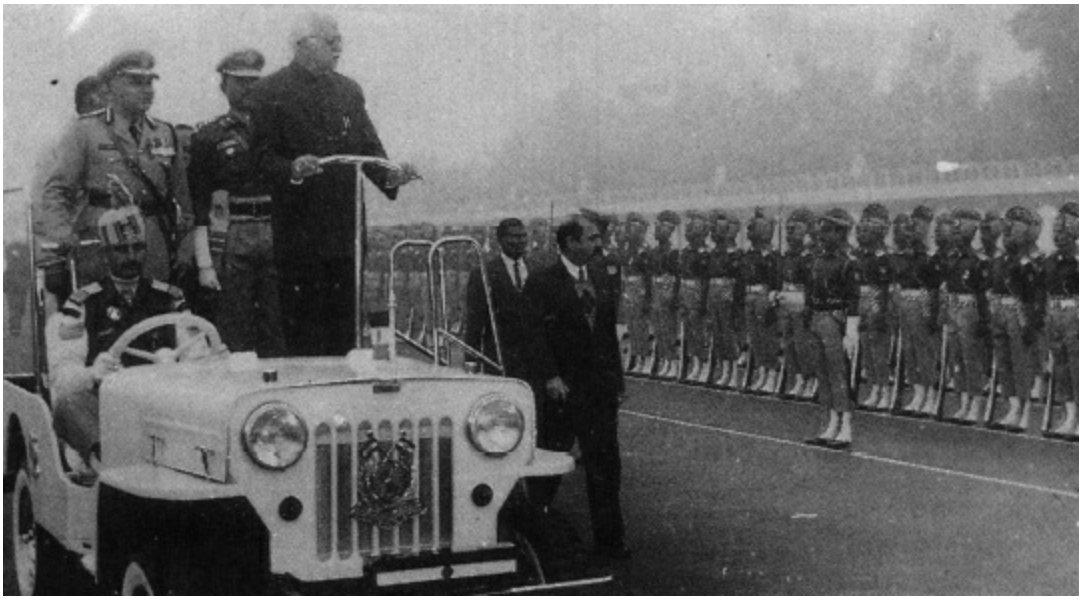
–संपादक

59वां के.रि.पु. बल दिवस

आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष में के.रि.पु. बल का योगदान उल्लेखनीय

"जम्मू-कश्मीर तथा उत्तर पूर्वी राज्यों में आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की भूमिका उल्लेखनीय रही है।" केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 59वीं वर्षगांठ के अवसर पर 28 दिसंबर '98 को नई दिल्ली, झड़ौदा कला स्थित बल के ग्रुप केंद्र में आयोजित एक भव्य समारोह को संम्बोधित करते हुए केंद्रीय गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि सरकार उन कठिनाइयों के प्रति जागरूक है जिनका सामना बल के कार्मिकों को करना पड़ रहा है। सरकार यथासंभव उन्हें दूर करने का प्रयत्न करेगी।

गृहमंत्री ने इस मौके पर बल के कल्याण कार्यक्रमों के लिए एक करोड़ रुपये के अनुदान की भी घोषणा की।



परेड का निरीक्षण करते गृह मंत्री

गृहमंत्री ने इस मौके पर एक शानदान परेड का निरीक्षण किया तथा उस की सलामी ली।

इससे पूर्व बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए कहा कि देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के के लिए के.रि.प

बल कार्मिकों ने भारी संख्या में बलिदान दिये हैं। इस बल ने देश और विदेश दोनों में ही बड़ी खूबी के साथ अपने कर्तव्य को अंजाम दिया है। उन्होंने कहा कि कठिन इलाकों में लगातार काम करने के बावजूद बल के जवान अपनी बहुमुखी प्रतिभा तथा जिम्मेदारियों के प्रति समर्पण द्वारा देश की सुरक्षा व अखंडता बनाए रखने में हमेशा अग्रणी साबित हुए हैं।

गृहमंत्री ने इस मौके पर 20 कार्मिकों को शौर्यवीरता तथा विशिष्ट सेवाओं के पदक भी प्रदान किये, इनमें से 5 कार्मिकों को यह पदक मरणोपरांत दिये गये।



गृह मंत्री को स्मृति चिह्न भेंट करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

इस मौके पर गृहमंत्री ने ग्रुप केंद्र-1 अजमेर को सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र ट्राफी, ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी को सर्वाधिक वित्तीय अनुशासन ट्राफी, 20 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ बटालियन ट्राफी, 26 बटालियन को जम्मू-कश्मीर स्थित सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन तथा 96 बटालियन को उत्तर पूर्व में तैनात सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन की ट्राफी प्रदान की।

परेड का नेतृत्व कमांडेंट आर.एन. मिश्रा ने किया। परेड में महिला टुकड़ी सहित नौ टुकड़ियां शामिल थीं, इन के अतिरिक्त बल का श्वान दस्ता, आर.ए. एफ. का

मोबाइल दस्ता, बल के अर्जुन पदक विजेता खिलाड़ी बैंकाक, एशियाड में पदक जीतने वाले खिलाड़ी, बल के शौर्य पदक विजेता तथा रेपिड एक्शन फोर्स की एक झांकी भी परेड में शामिल थी। बल के कार्मिकों ने इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।



बल के एक जवान की विधवा को पदक प्रदान करते गृह मंत्री

नीति वाक्य

दूसरों के प्रेम से अपना कार्य कर लेना चतुरता है।

* * *

आजादी के मायने यह नहीं है कि हर आदमी आजादी के नाम पर बुरा काम करे।

* * *

बड़ो की निंदा करने वाला ही पाप का भागी नहीं होता, वरन उस निंदा को सुनने वाला भी होता है।

* * *

जब तक मनुष्य पुरूषार्थ नहीं करता, तब तक दूसरे पर विजय दुलर्भ है।

* * *

जो धर्म दूसरे धर्म को बाधा पहुंचाता है, वह धर्म नहीं कुधर्म है।



*59*वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर पर प्रकाशित पुस्तक का विमोचन करते हुए गृह मंत्री

*59*वीं वर्षगांठ पर सम्मानित कार्मिक

शौर्यवीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

1. हेड कांस्टेबल इमानुल टोपनो (मरणोपरांत)-23 बटा. (उनकी पत्नी विलन टोपनो ने पदक ग्रहण किया)

शौर्यवीरता का पुलिस पदक

2. उप निरीक्षक राम चंदर – 130 बटा.
3. हेड कांस्टेबल बीरबल सिंह (मरणोपरांत) – 130 बटा.
   (उनकी पत्नी पतासी देवी ने पदक ग्रहण किया)

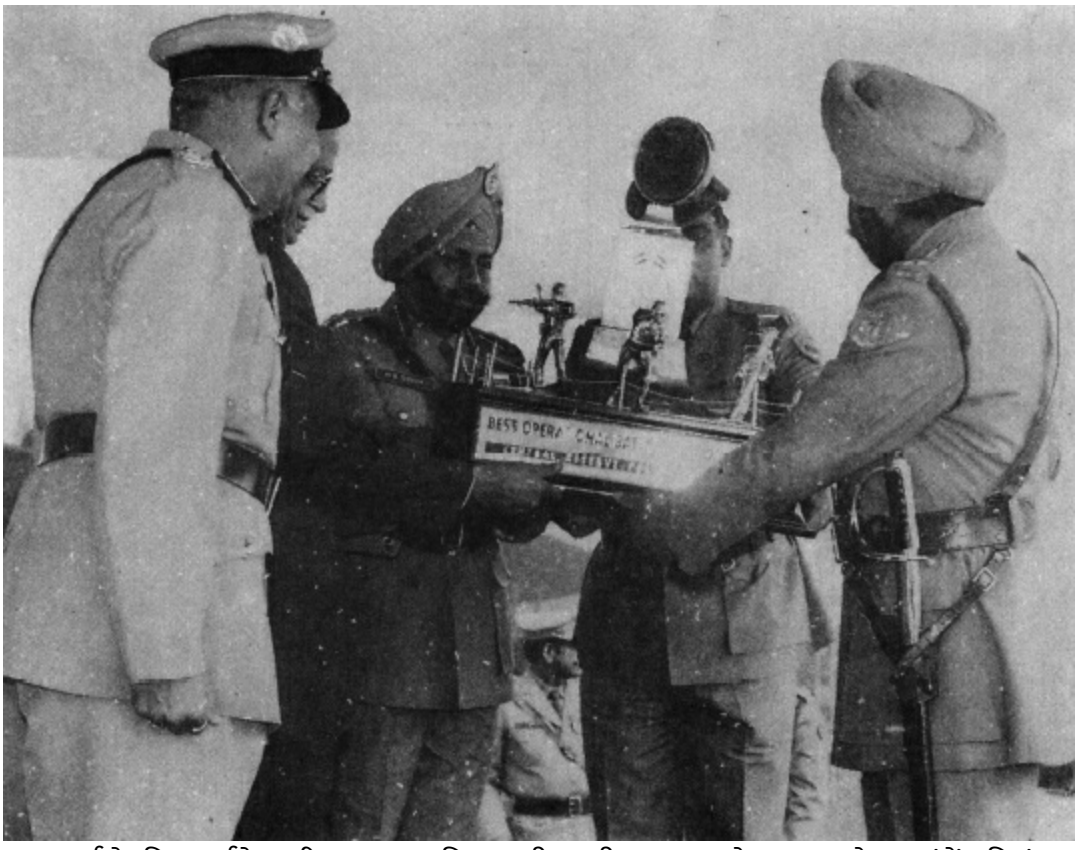
4. नायक आर. नल्लन - 130 बटा.
5. कांस्टेबल मुत्तु कुमार (मरणोपरांत) - 130 बटा. (उनकी माता के कालीमुत्तु ने पदक ग्रहण किया)
6. जलवाहक सतीश कुमार – 130 बटा.
7. है.कां. मनोहर लाल (मरणोपरांत) – 133 बटा.
8. इंस्पेक्टर निरमल राव – 19 बटा.
9. नायक (अब है.कां.) मंशाराम – 19 बटा.
10. नायक (अब है.कां.) रईसुद्दीन – 107 आर.ए.एफ. बटा.
11. कां. रमेश सिंह (मरणोपरांत) – 85 बटा.
    (उनके पिता श्री पी.एन.सिंह ने पदक ग्रहण किया)
12. है.कां. हजारी लाल - 14 बटा.
13. ला. नायक अब्दुल रशीद –14 बटा.
14. कां. विनोद कुमार – 14 बटा.

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक

15. अपर महानिदेशक एस.के. सेठी (अब हरियाणा के पुलिस महानिदेशक) – महानिदेशालय
16. अपर पुलिस उप महानिरीक्षक जय प्रकाश – उत्तरी सेक्टर (अब उप महानिरीक्षक गुवाहाटी)
17. अपर उप महानिरीक्षक के.डी. एस. दुल्लत – महानिदेशालय



जम्मू-कश्मीर स्थित सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन की ट्राफी ग्रहण करते *26* बटा. के कमांडेंट के.के. मेहता



उत्तर पूर्व के लिए सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन की ट्राफी ग्रहण करते *96* बटा. के कमांडेंट सिकंदर



सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी ग्रहण करते *20* बटालियन के कमांडेंट श्री एच.आर. सिंह



सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र की ट्राफी ग्रहण करते ग्रुप केंद्र–*1* अजमेर के अपर उप महानिरीक्षक श्री आई.एस. गिल

18. अपर उप महानिरीक्षक स्टेनले कोंस्टेंटाइन–महानिदेशालय
19. अपर उप महानिरीक्षक बी.आर. शर्मा – ग्रुप केंद्र मोकामाघाट (अब उत्तरी सेक्टर)
20. इंस्पेक्टर एस.आर. पिल्लई – ग्रुप केन्द्र–एक अजमेर

सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र ट्राफी

ग्रुप केंद्र–एक अजमेर के लिए यह ट्राफी अपर उप महानिरीक्षक आई.एल. गिल ने ग्रहण की।

सर्वश्रेष्ठ बटालियन ट्राफी

20 बटालियन के लिए यह ट्राफी कमांडेंट एच.आर. सिंह ने ग्रहण की।

जम्मू कश्मीर स्थित सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन

26 बटा. के लिए यह ट्राफी कमांडेंट के.के. मेहता ने ग्रहण की।

उत्तर पूर्व के लिए सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन

96 बटालियन के लिये यह ट्राफी कमांडेंट सिकंदर ने ग्रहण की।

वित्तीय अनुशासन तथा मित्तवययता के लिए ट्राफी

ग्रुप केंद्र गुवाहाटी के लिये यह ट्राफी अपर उप महानिरीक्षक पी.जे. शेट्टी ने ग्रहण की।



वित्तीय अनुशासन तथा मितव्ययता की ट्राफी ग्रहण करते ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी के अपर उप महानिरीक्षक श्री पी.डी. शेट्टी

28 के.रि.पु. बल कार्मिकों को विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 28 अधिकारियों और जवान को गणतंत्र दिवस 1999 के अवसर पर राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति के विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के पदकों द्वारा सम्मानित किया गया है।

3 कार्मिकों को राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा 25 को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये गये हैं।

पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :–

राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक



कमांडेंट नागेन्द्र सिंह *(34* बटा.*)*



कमांडेंट एस.एस. संधू *(73* बटा.*)*

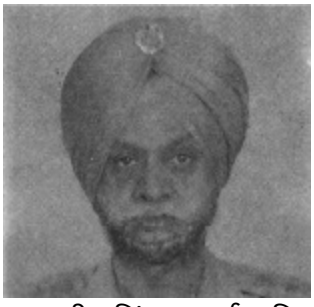


इंस्पेक्टर घीसा राम *(66* बटा.*)*

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक



उप महानिरीक्षक टी.पी. दास *(*हैदराबाद*)*



अपर पुलिस उप महानिरीक्षक दलजीत सिंह *(*कार्या. पुलिस महानिरीक्षक बिहार सेक्टर*)*



कमांडेंट पुष्कर सिंह *(110* बटा.*)*



कमांडेंट परमजीत सिंह *(106* बटा.*)*



कमांडेंट पूरन सिंह *(68* बटा.*)*



कमांडेंट आर.पी. सिंह *(40* बटा.*)*



उप कमांडेंट सी.पी. शर्मा *(*ग्रुप केन्द्र हैदराबाद*)*



उप कमां. राज सिंह यादव *(ग्रुप केन्द्र हैदराबाद)*



उप कमांडेंट डी.सी. खुल्बे *(महानिदेशालय)*



उप कमांडेंट एम.आर. शेखाव *(22* बटा.*)*



उप कमांडेंट जे. राजेन्द्रन *(केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज–II)*



सहायक कमांडेंट नयाजू खान *(103* बटा.*)*



सहा. कमां. धनेश्वर झा *(116* बटा.*)*



सूबेदार मेजर रामपा कुडगी *(91* बटा.*)*



निरी. दिलीप सिंह *(103* बटा.*)*



निरी. मोहन लाल जायसवाल *(34* बटा.*)*



निरी. माम चन्द *(127* बटा.*)*



उप निरी. नाहर सिंह *(58* बटा.*)*



उप निरी. कंवर सिंह, *(20* बटा.*)*



उप निरी. एम.एन. जोशी *(22* बटा.*)*



उप. निरीक्षक सी.बी. चौहान *(*ग्रुप केन्द्र पूणे*)*



हवलदार शिव कुमार *(16* बटा.*)*



हवलदार के.एस. डोगरा *(22* बटा.*)*



हवलदार/आरमोरर अमर सिंह *(127* बटा.*)*



हवलदार राम निवास *(*ग्रुप केन्द्र जालंधर*)*

के.रि.पु. बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

"**क**र्तव्य निर्वाह के दौरान आने वाली चुनौतियों तथा कठिनाइयों का सामना करने के लिए साधनों और उपायों के विकास के लिए आप लोगों को प्रयास करने चाहिए।" 29 दिसम्बर '98 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 59वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित के.रि.पु. बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा कि भारी तैनाती, दबाव और तनाव के बावजूद के.रि.पु. बल ने 1998 में उल्लेकारियों का सफलता प्राप्त की है। बल की परिचालन क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रत्येक बटालियन की एक कम्पनी को रोटेशनल ट्रेनिंग दिये जाने पर उन्होंने जोर दिया।

इस चर्चा में अपर महानिदेशक श्री वाई.एन. श्रीवास्तव, महानिरीक्षक ए.आर. पवार तथा ए.एस. गिल ने भी भाग लिया तथा अधिकारियों से अधिक परिचालन दक्षता के लिए काम करने का आग्रह किया। सम्मेलन में पूरे देश से आए बल के करीब 200 अधिकारियों ने भाग लिया।



वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन की संबोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

इसके अतिरिक्त 29 दिसंबर '99 को ही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकरियों की पत्नियों की कल्याण संस्था को भी एक बैठक हुयी । संस्था की अध्यक्षा श्रीमती वीणा सभरवाल की अध्यक्षता में हुयी इस बैठक में बल की कल्याण गतिविधियों पर चर्चा की गई ।

गणतंत्र दिवस परेड में के.रि.पु. बल के दो दस्ते

देश के शांति प्रहरी - केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में अपने दो दस्ते भेजे। इनमें एक दस्ता आर.ए.एफ. का तथा एक दस्ता बैंड वादकों का था।

के.रि.पु. बल के पहले दस्ते में सहायक कमांडेंट मनमोहन सिंह तथा दो सब इंस्पेक्टरों के नेतृत्व में 144 जवानों को टुकड़ी थी। बल की इस टुकड़ी के जवान नीली छापे वाली डांगरी में थे। उनकी बांयी बाजू पर आर.ए.एफ. का प्रतीक चिह्न तथा कमर पर काली पेटी थी। बल के ये जवान गले में सफेद स्कार्फ तथा सफेद बलगी वाली नीली टोपी पहने थे। इस टुकड़ी के लिए जवानों का चुनाव पूरे देश में फैली के.रि.पु. बल की आर.ए.एफ. युनिटों से किया गया। इस टुकड़ी में शामिल जवानों का औसत कद 6 फुट था।

के.रि.पु. बल की इस टुकड़ी के पीछे 121 सदस्यों वाला के.रि.पु. बल बैंड था। जिसका नेतृत्व इंस्पेक्टर पुरूषोत्तम राम ने किया। के.रि.पु. बल बैंड का गठन 1961 में किया गया था।

बल की टुकड़ियां राजपथ से के.रि.पु. बल के कथानक गीत "सेवा भक्ति का यह प्रतीक के.रि.पु. बल कहलाता है" की धुन पर मार्च करती हुयी गुजरी। मार्चिंग दस्ते के जवानों के एस.एल.आर. थी, जबकि उनके कमांडरों के हाथों में तलवारे थीं।

के.रि.पु. बल की उच्च परंपराओं को बनाए रखें

-श्री एम.एन. सधरवाल

"किसी भी बल की छवि उसके जवानों की भूमिका पर निर्भर करती है। अधिकारियों को चाहिए कि वे जवानों को प्रेरित करें। यह तभी संभव है जबकि जवानों और अधिकारियों के बीच निकट संबंध हों" बल के नये सहायक कमांडेंटो को बल के महानिदेशालय में संबोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने उनसे अपील की कि वे बल की उच्च परंपराओं को बनाए रखें तथा देश की एकता अखंडता तथा शांति के लिए स्वयं को समर्पित करें।

नव अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए महानिरीक्षक ए.आर. पवार, ए. एस. गिल तथा एस.एम. कैरे ने भी उनसे कहा कि वे जनता की सेवा करते समय हमेशा अपने कर्त्तव्य तथा देश के प्रति वफादार रहें।



नये सहायक कमांडेंट अधिकारियों को संबोधित करते महानिदेशक

सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी के रूप में जाने जाने वाले ये अधिकारी के.रि.पु. बल की माउंट आबू, राजस्थान स्थित आंतरिक सुरक्षा अकादमी में अपना प्रशिक्षण पूरा कर दिल्ली में बल की विभिन्न शाखाओं के परिचितीकरण दौरे पर आये थे।

1,20,622 के.रि.पु. बल कार्मिकों को मानवाधिकारों का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के निर्देश पर 1996 से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल युनिटों में शुरू किये गये मानवाधिकार से संबंधित तीन दिवसीय कैपसूल कोर्स के माध्यम से अब तक बल के 1,20,622 अधिकारियों और जवानों को मानवाधिकारों से संबंधित प्रशिक्षण दिया जा चुका है। बल के कार्मिकों को दिये जाने वाले इस कोर्स का उद्देश्य उनमें उच्च श्रेणी की व्यावसायिक दक्षता तथा मानवाधिकरों एवं मूल अधिकारों के प्रति उन्हें जागरूक करने तथा उनका पालन और संरक्षण करने के साथ-साथ उनमें जन मैत्री का रवैया पैदा करना भी है।

इसके अतिरिक्त सितम्बर, 1998 में मानवाधिकार आयोग द्वारा तैयार किये गये मानवाधिकारों से संबंधित संवेदनशीलता के एक 10 दिवसीय कोर्स के जरिए भी अब तक 350 अधीनस्थ अधिकारियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

के.रि.पु. बल की एक विशिष्ट शाखा रेपिड एक्शन फोर्स के सदस्यों को मानवाधिकारों के संबंध में प्रशिक्षित करने के लिए प्रत्येक आर.ए.एफ. बटालियन में आई.सी.आर.सी. नई दिल्ली के सहयोग से मानवाधिकारों से संबंधित कोर्स चलाया जाता है। इस कोर्स के जरिये 1997 तथा 1998 में 1050 राजपत्रित अधिकारियों तथा अन्य अधिकारियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

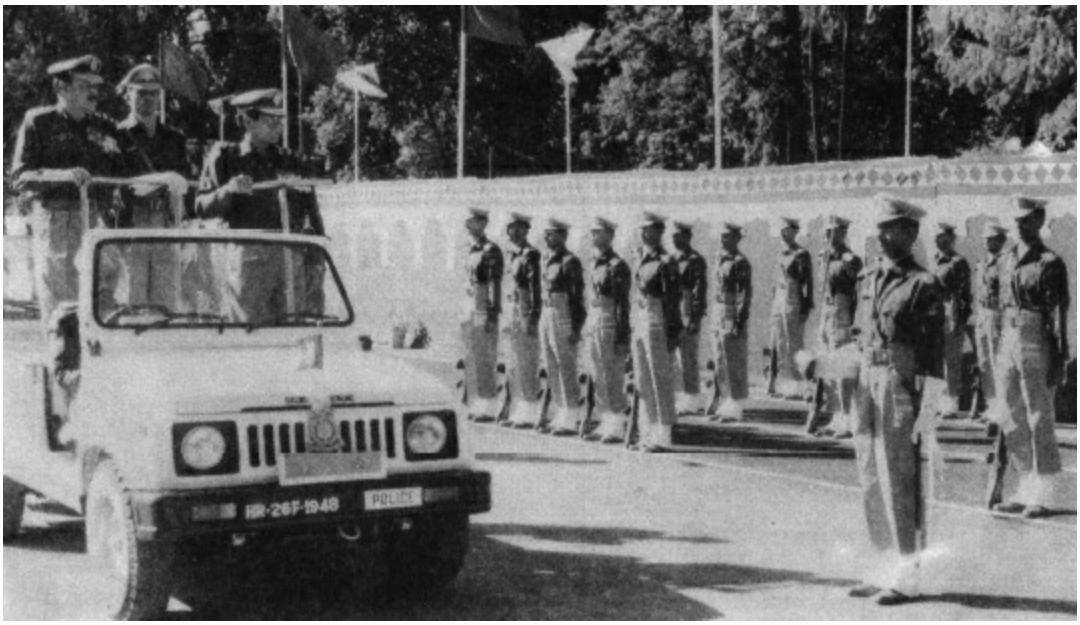
मानवाधिकारों से संबंधित व्याख्यानों तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के आयोजन के अतिरिक्त के.रि.पु. बल ने मानवाधिकारों के संबंध में “करिये - न करिये” निर्देशों की एक पुस्तिका हिंदी और अंग्रेजी में अपने प्रत्यक सदस्य को उनके उपयोग के लिए उपलब्ध करायी है ज्ञातव्य है कि मानवाधिकारों के संबंध में के.रि.पु. बल का रिकार्ड हमेशा स्वच्छ रहा है।

सफलता के लिए सीखने के लगातार प्रयास आवश्यक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की आंतरिक सुरक्षा अकादमी के निदेशक देवेन्द्र कुमार सूरी ने कहा है कि सफलता के लिए सीखने के लगातार प्रयास आवश्यक है।

24 दिसम्बर '98 को अकादमी में आयोजित सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के दीक्षांत समारोह में अधिकारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने यह बात कही। बल के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 29वें बैच के 62 अधिकारियों को संबोधित करते हुए श्री सूरी ने कहा कि बल में लीडर को कठिन प्रशिक्षण, आत्म अनुशासन, आत्मविश्वास और व्यवसायिक ज्ञान से तैयार किया जाता है एवं इस संदर्भ में यह भी आवश्यक है कि हमारी व्यावसायिकता एक जगह नहीं ठहरनी चाहिए। उन्होंने कहा कि निरंतर विविध आवरण, नए प्रबंधनों को आत्मसात करने के साथ नए उत्साह और प्रभावशाली तरीकों से कार्यों को अपनाना चाहिए ताकि प्रगति की निरंतरता बनी रह सके।

श्री सूरी कहा कि एक अधिकारी को उसके मातहतों को प्रेरित करने में सक्षम होना चाहिए, जिससे वह दीपक के समान अन्य को प्रकाश दे सके। उन्होंने कहा कि यह गौरव इतनी आसानी से प्राप्त नहीं हुआ है बल्कि इसके पीछे हमारे पूर्वजों का त्याग व बलिदान छुपा हुआ है। उन्होंने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा को बचाए रखने के साथ इस बल ने सन् 62, 65 एवं 71 में हुए चीन एवं पाकिस्तान के युद्धों में देश की सीमा की रक्षा करने में भी अपना योगदान दिया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने श्रीलंका में शांति वाहिनी सेवा के एक अंग के रूप में भी अपनी भूमिका निभाई, जिसमें एक महिला बटालियन भी शामिल थी। कम्बोडिया, मोजंबिक और अंगोला में भी संयुक्त राष्ट्र संघ की शांति सेना की एक इकाई के रूप में भाग लेने के अतिरिक्त बल को इसी कार्य को अंजाम देने के लिए सराहना मिली।



सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 29वें बैच की दीक्षांत परेड का निरीक्षण करते अकादमी के निदेशक श्री सूरी

श्री सूरी ने कहा कि देश एक कठिन परिस्थिति के दौर से गुजर रहा है, जहां सामाजिक स्तर पर एकता को नुकसान पहुंचाने वाली शक्तियां सिर उठा रही हैं।

इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में जाति, वर्ग एवं अलगाववाद के साथ आतंकवादी ताकतें आंतरिक सुरक्षा के सामने खतरा बनती जा रहे हैं, इन संदर्भो में देश को बल से अनेक आशाएं और उम्मीदें हैं।

उन्होंने कहा कि इस बल ने आंतरिक सुरक्षा के अलावा प्राकृतिक आपदा दंगे एवं प्रॉक्सीवार जैसी समस्याओं से निपटने में अपनी सक्षम कार्यवाही का यथोचित निर्वाह किया है।

इस मौके पर अकादमी के इतिहास में पहली बार किसी महिला अधिकारी द्वारा प्रशिक्षण का सर्वोच्च पुरस्कार एवं सम्मान "सोर्ड ऑफ ऑनर" प्राप्त करने पर सहायक कमांडेंट ममता सिंह की सराहना की गई इसके अतिरिक्त उन्होंने शुभकामनाओं सहित सिंह के अलावा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए डायरेक्टर्स बेटन मनीष कुमार मीणा, बेस्ट इन ड्रिल पी.के. जी. गोस्वामी, बेस्ट इन वीपन्स आर.एस. शलापुरकर, बेस्ट स्पीकर एरिक गिल्बर्ज जोंस, बेस्ट इन राकक्लाइंबिंग शशि नेगी, बेस्ट स्पोर्ट्स मैन अरविंद कुमार, ऐसे कांपटीशन दुष्यन्त कुमार, फोटोग्राफी विनोद नंदन प्रसाद, फिजीकल ट्रेनिंग एरिक गिल्लर्ट जोस एवं इंस्ट्रक्टर की ट्राफी शिवराज एस. बिष्ट को प्रदान की गई।

इससे पूर्व रंगारंग दीक्षांत परेड की सलामी अकादमी के निदेशक देवेन्द्र कुमार सूरी ने ली। परेड कमांडर मनीष कुमार मीणा, थे जबकि प्लाटून नं. 1, 2, 3, 4 का नेतृत्व क्रमशः पी.के.जी. गोस्वामी, पवन कुमार, ममतासिंह एवं भूपाल सिंह ने किया।

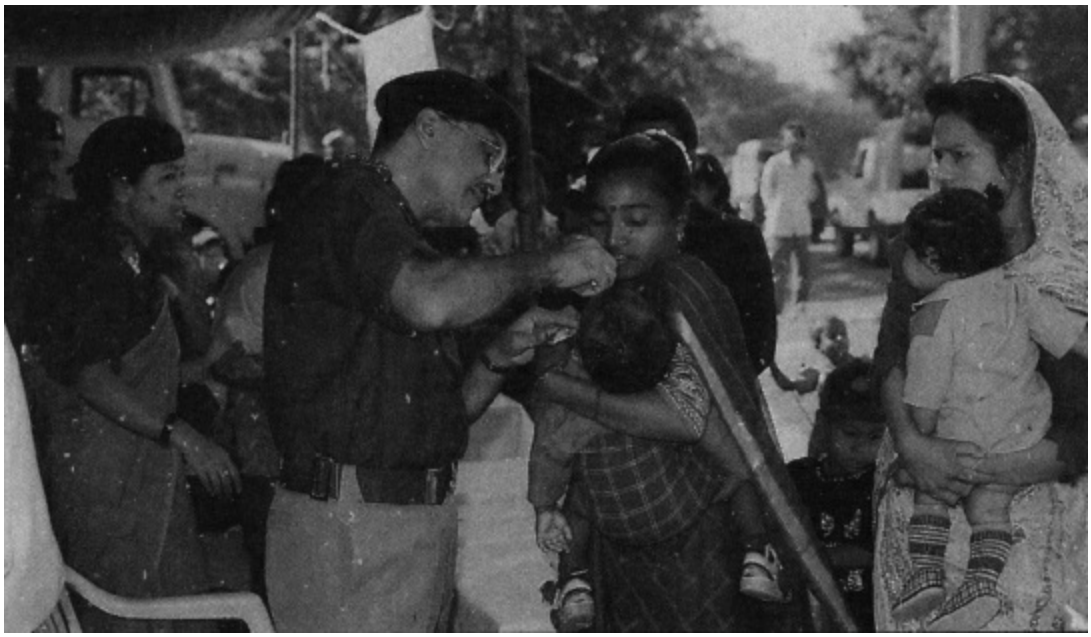
संछिप्त समाचार

122 बटालियन द्वारा पल्स पोलियो अभियान में योगदान



122 बटालियन के कमांडेंट श्री आर.एन. मिश्रा *6* दिसंबर *'98* को जिरानिया, त्रिपुरा में आयोजित पल्स पोलियो अभियान के दौरान एक बच्चे को पोलिया ड्राप देते हुए।इस अभियान में *122* बटालियन ने *325* बच्चों को पोलियो खुराक दी

ग्रुप केन्द्र खटखटी द्वारा पल्स पोलियो अभियान में योगदान



ग्रुप केंद्र खटखटी ने 17 जनवरी '98 को ग्रुप केन्द्र तथा गांव खटखटी बाजार में एक-एक पल्स पोलियो कैम्प का आयोजन किया। इससे पूर्व 6 दिसंबर 1998 को भी इस ग्रुप केन्द्र ने पल्स पोलियो कैम्प का आयोजन किया। ग्रुप केन्द्र खटखटी के अपर उप महानिरीक्षक श्री एच.सी. सूद ने कैम्प का आयोजन किया। इन कैम्पों में 2408 बच्चों को पोलियो खुराक दी गयी।

माह जनवरी '99 में मृत बल के कार्मिक

माह जनवरी '99 में बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए । के.रि.पु. बल समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

इंस्पेक्टर (पी.ए.) ए.के. वर्धन (ग्रुप केन्द्र नीमच), सब इंस्पेक्टर/टेलर प्रहलाद सिंह (ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम्) सहायक निदेशक बी.एस. रस्तोगी (महानिदेशालय), है.कां. रमेश चंद यादव (65 बटा.), कां. धनुक धारी (39 बटा.), सब इंस्पेक्टर प्रेम सिंह (35 बटा.), का./आरमोरर एम.सी. दास (35 बटा.), ला. नायक टी.एम. लावमा (35 बटा.), कां./ड्राइवर सुरजीत सिंह (35 बटा.) तथा कां. देबराज शर्मा (78 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह नवंबर '98 में 36 बटा. के लां. नायक अगस्टस टर्की तथा दिसंबर '98 में 53 बटा. के लां. नायक लाल सिंह, 31 बटालियन के कां. / ड्राइवर रवि शंकर, 28 बटा. के. कां. / ड्राइवर पवन कुमार, 119 बटा. के सफाई कर्मचारी दिनेश मलिक, 14 बटालियन के कां. लाल चंद, 106 बटा. के कां./टेलर एम.आर. कोली तथा 100 बटा. के कां. प्रभु सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

आर.ए.एफ. की टुकड़ी प्रथम



गुजरात के राज्यपाल श्री के.जी. रामाकृष्णन आर.ए.एफ. की टुकड़ी को ट्राफी प्रदान करते हुए

इस वर्ष गांधीनगर में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में में रैपिड एक्शन फोर्स की महिला टुकड़ी को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया।

आर.ए.एफ. की महिला टुकड़ी को गुजरात के राज्यपाल श्री के.जी. रामाकृष्णन ने सर्वश्रेष्ठ टुकड़ी को ट्राफी प्रदान की। इस मौके पर गुजरात के मुख्यमंत्री भी उपस्थित थे।

राजभाषा शील्ड

वर्ष 1997-98 के दौरान सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, बनतलाब (जम्मू) को राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), भारत सरकार द्वारा "ग" क्षेत्र की श्रृंखला में प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया तथा 12-13 जनवरी, 1999 को आगरा (उ.प्र.) में दिल्ली एवं उत्तर क्षेत्र के लिए आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में श्री सी.डी. त्रिपाठी, भूतपूर्व राजभाषा सचिव वृंदावन हिंदी संस्थान के निदेशक द्वारा राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। श्री रमेश चन्द्र, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय ने राजभाषा शील्ड ग्रहण की तथा निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक) अनूप सिंह ने प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया। दिल्ली एवं उत्तर क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्यालयों/यूनिटों आदि में ग्रुप केन्द्र-बनतलाब ही ऐसा कार्यालय है जिसे इस समारोह में राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए हैं। इस समारोह में राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), भारत सरकार व अन्य केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा ग्रुप केंद्र गुवाहाटी का निरीक्षण

ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, गुवाहाटी में 2 नवंबर '98 को संसदीय राजभाषा समिति का प्रथम उप समिति द्वारा राजभाषा में हो रहे कामकाज का जायजा लेने के लिये निरीक्षण किया गया। श्री एम.के. सिन्हा, कमांडेंट, ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल गुवाहाटी द्वारा समिति का स्वागत किया गया तथा 2 नवंबर '98 को समिति द्वारा आयोजित बैठक में इस कार्यालय से संबंधित राजभाषा में किए गए कार्य के आंकड़ों पर चर्चा की।

समिति ने ग्रुप केन्द्र में हो रही राजभाषा की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया तथा प्रशंसा की तथा कहा कि यदि इसी प्रकार राजभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार जारी रहा

तो निश्चित रूप से निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर लिया जायेगा।

बैठक में महानिदेशालय, के.रि.पु. बल की तरफ से स्वर्ण सिंह, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक जो कि पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वोत्तर सेक्टर, के.रि.पु. बल, शिलांग में पदस्थापित हैं, ने भाग लिया। इनके अलावा श्री एस.एन. सिंह, हिन्दी अधिकारी, महानिदेशालय, के.रि.पु. बल, नई दिल्ली तथा निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक) तेजवीर सिंह ढाका, ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, गुवाहाटी ने भाग लिया।

75 बटालियन द्वारा कल्याण कार्यक्रम

75 बटालियन द्वारा 30 नवंबर से 1 दिसंबर '98 तक सुम्बल जिला बारामूला (जम्मू-कश्मीर) में जनकल्याण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में एथेलिटिक्स, फुटबाल, वालीबाल, नृत्य व गायन प्रतियोगिता, मेडिकल कैम्प तथा गरीब बच्चों को पठन-पाठन सामग्री के वितरण आदि का आयोजन किया गया।

उपरोक्त कार्यक्रम में वाहिनी अधिकारियों व जवानों के अतिरिक्त एस. डी.ओ.पी, तहसीलदार, पत्रकार व अन्य वरिष्ठ शासकीय अधिकारी एवं लगभग चार हजार से अधिक स्थानीय पुरूष, महिलाओं एवं बच्चों ने बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम के अन्त में गरीब बच्चों को पाठ्य सामग्री एवं एथेलिटिक्स, फुटबाल, वालीबाल की विजेता टीमों तथा नृत्य गायन प्रतियोगियों को श्री बलराम सिंह नेगी, कमांडेंट 75 बटालियन के.रि.पु. बल ने पुरस्कार वितरित किए।

उपरोक्त कार्यक्रमों के साथ-साथ चिकित्सा शिविर का भी आयोजन के.रि.पु. बल चिकित्सा अधिकारी के अधीन आयोजित किया गया, जिसमें चिकित्सा अधिकारी द्वारा लगभग 500 से 600 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया एवं आवश्यकतानुसार मुफ्त औषधियों का वितरण किया गया।



के.रि.पु. बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था की वार्षिक बैठक में नृत्य प्रस्तुत करती एक बालिका



सी.आर.पी.एफ. समाचार

31 मार्च, 1999 9 चैत्र, शक 1921





13 मार्च *'99* को गुवाहाटी बेस अस्पताल के नये ब्लाक का उद्घाटन करते हुए के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–13 अंक–2
31 मार्च, 1999
9 चैत्र, शक 1921

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

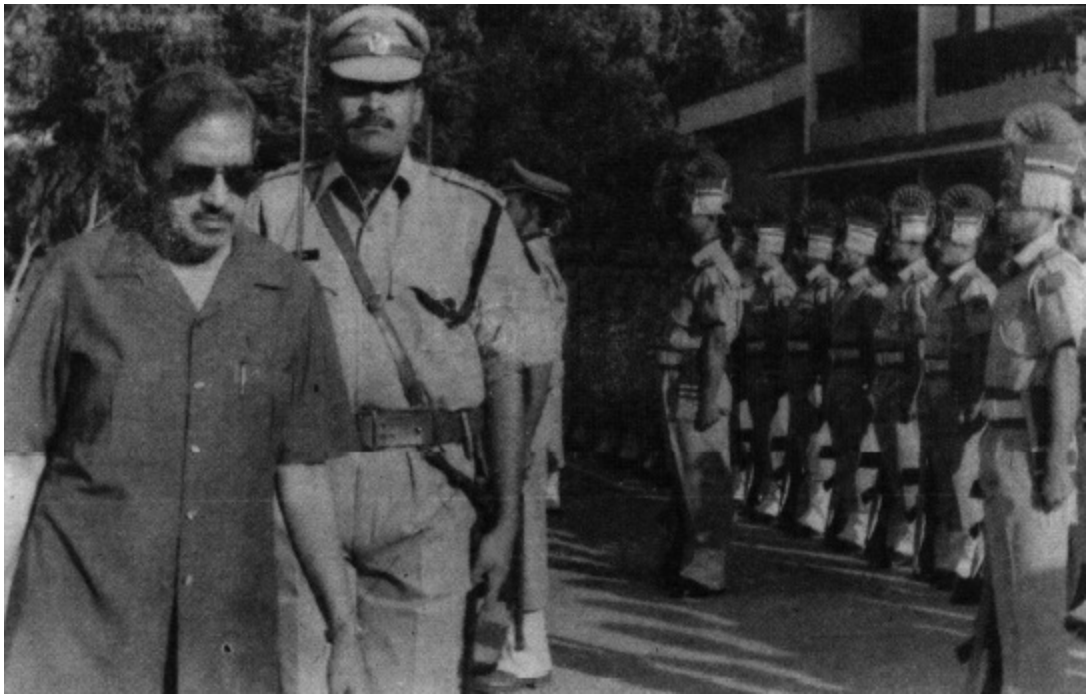
संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003
की ओर से
डी.जी. महापात्र

प्रोसेस और प्लेटस :
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस
1728, कूचा दखनीराय दरियागंज, नई दिल्ली–2
दूरभाष : 3262279

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस
झड़ौदा कलां,
नई दिल्ली–72



इस अंक में

मानवाधिकारों पर वाद–विवाद प्रतियोगिता

एड्स पर कार्यशाला

ग्रुप केंद्र इम्फाल अस्पताल

इम्फाल रेंज कम्प्यूटरीकृत

उत्तर पूर्व में के.रि.पु. बल

संक्षिप्त समाचार

बल के नौ कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

सुपर आतंकवाद

कविता

प्रथम आवरण – मानवाधिकारों पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का दूसरा पुरस्कार के.रि.पु. बल की ममता सिंह को प्रदान करते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति, एम.एन. बैंकेटाचैलेया ।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

मानवाधिकारों पर वाद विवाद प्रतियोगिता

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के तत्वाधान में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा 24 मार्च, 99 को बल के महानिदेशालय में आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता – क्या अर्द्धसैनिक बलों की ड्यूटी मानवाधिकारों का पालन करने तक सीमित है अथवा अन्य लोगों के मानवाधिकारों के संरक्षण के प्रति भी है? – की चैंपियनशिप शील्ड केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल ने जीत ली, विजेता टीम को शील्ड राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री एम.एन. वैंकंटाचैलेया ने प्रदान की।

प्रतियोगिता के हिंदी वर्ग का प्रथम स्थान असम राइफल के बी.डी. मिश्रा को मिला, जबकि केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की आराधना तथा राष्ट्रीय सुरक्षा गारद के गोपाल सिंह को क्रमशः दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

प्रतियोगिता के अंग्रेजी वर्ग में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के आदित्य झा प्रथम, के.रि.पु. बल की ममता सिंह द्वितीय तथा सीमा सुरक्षा बल के मुकेश पंवार तीसरे स्थान पर रहे।

ज्ञातव्य है कि प्रतियोगिता सभी केंद्रीय अर्द्धसैनिक पुलिस बलों के कार्मिकों के लिए आयोजित की गयी थी।

इस मौके पर बोलते हुए न्यायमूर्ति श्री वैंकटाचैलेया ने कहा कि यह कहना कि मानवाधिकार सुरक्षा बलों के लिए अपने कर्तव्य पालन में रूकावट हैं, बिल्कुल भ्रांत धारणा है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा बलों को अपने कर्तव्य का निर्वाह पूरी ईमानदारी और कर्तव्य परायणता के साथ करने की पूरी छूट है, लेकिन कर्तव्य निर्वाह के नाम पर झूठी मुठभेड़ों और गोलीबारी की इजाजत हरगिज नहीं दी जा सकती। उन्होंने कहा कि अगर मानवाधिकारों के रक्षक ही मानवाधिकारों का हनन करने लगेंगे तो उनमें और एक आतंकवादी में क्या फर्क रह जाएगा। उन्होंने कहा कि वह जानते हैं कि सुरक्षा बलों को कठिन कार्य स्थितियों तथा तनावों में कार्य करना पड़ता है, मगर यह उनके लिए मानवाधिकारों के मामलों में छूट का कारण नहीं हो सकता। उन्होंने केंद्रीय सुरक्षा बलों की कार्य स्थितियों को सुधारने की जरूरत पर बल दिया।



केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की टीम को विजेता ट्राफी प्रदान करते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति एम.एन. वैंकटाचैलेया

उन्होंने कहा कि केंद्रीय अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों को अपने कर्तव्य का निर्वाह करते समय मानवाधिकारों का सम्मान करते हुए कानून का पालन करना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक मानव को पूर्ण गरिमा एवम सम्मान के साथ जीने का अधिकार है तथा उसके इस अधिकार को सुरक्षा की गारंटी संविधान प्रदत्त है। उन्होंने आगे कहा कि लक्ष्य की ही तरह उसे प्राप्त करने के साधन भी पवित्र होने चाहिए। गलत उपायों से सही न्याय नहीं किया जा सकता। केंद्रीय अर्द्धसैनिक पुलिस बलों के कार्मिकों को आम व्यक्ति द्वारा उनमें व्यक्त किये गये विश्वास की हर हालत में रक्षा करनी चाहिए।

इससे पूर्व बोलते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के महानिदेशक श्री कार्तिकेयन ने कहा कि आयोग सुरक्षा बलों की कठिन कार्य स्थितियों के प्रति अवगत है, मगर मानवाधिकारों के मामले में किसी भी प्रकार की छूट नहीं दी जा सकती। उन्होंने कहा कि यह सोचना गलत होगा कि मानवाधिकारों के हनन के दोषी को दंडित करने से सुरक्षा बलों के नैतिक बल पर बुरा असर पड़ेगा, उन्होंने कहा कि बल्कि इसके विपरीत इससे सुरक्षा बलों में मानवाधिकारों के मामले में और जागरूकता आएगी। उन्होंने कहा कि इस तरह की वाद–विवाद प्रतियोगिताओं के आयोजन का उद्देश्य अर्द्धसैनिक पुलिस बलों में नीचे तक के स्तर पर मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करना है। उन्होंने मानवाधिकारों के मामले में देश व्यापी रूप से एक पारदर्शक संस्कृति विकसित करने तथा उसे बढ़ाने पर बल दिया।

अंत में बल के महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल ने प्रतियोगियों को बधाई देते हुए मुख्य अतिथि सहित सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा स्थितियों के मद्देनजर कार्य करते हुए केन्द्रीय अर्द्धसैनिक पुलिस

बलों के कार्मिकों को यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि वे अपने ही देशवासियों के साथ बर्ताव कर रहे हैं। प्रत्येक बल का कार्मिक वर्दी में एक नागरिक ही है अतः उसे नागरिकों के साथ व्यवहार करते समय बेहद सावधानी बरतनी चाहिए।

एड्स पर कार्यशाला

एड्स और यौन रोगों पर ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर अस्पताल में 17 से 19 दिसंबर, 1998 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) नई दिल्ली के सहयोग से किया गया। कार्यशाला में नाको की ओर से डा. एन.सी. भार्गव तथा डा. डी. सेनगुप्ता ने भाग लिया। उड़ीसा राज्य के चिकित्सा सेवाओं के निदेशक डा.जे.के. साहू मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जबकि चिकित्सा एवं परिवार कल्याण संस्थान के निदेशक उद्घाटन सत्र में अतिथि वक्ता थे। ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर के स्टेशन अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. बी.एन. आचार्य ने कार्यशाला का संचालन किया। कार्यशाला में पूर्वी तथा बिहार सेक्टर के चिकित्सक तथा अर्द्धचिकित्सक स्टाफ ने भाग लिया।



एड्स पर आयोजित कार्यशाला का संचालन करते विशेषज्ञ

गुवाहाटी में गणतंत्र दिवस परेड में बल का योगदान

इस वर्ष गुवाहाटी में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया। परेड में मार्चिंग दस्तों के अतिरिक्त बल का ब्रास व पाइप बैंड तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश पर रही टुकड़ियां भी शामिल थीं। परेड के लिए जवानों का चयन स्थानीय युनिटों से किया गया था। जबकि बैंड टुकड़ी में ग्रुप केंद्र खटखटी, गुवाहाटी तथा इम्फाल के बैंडकर्मी शामिल थे, सांस्कृतिक टुकड़ी में बल की महिला कर्मी तथा चेन्नई स्थित बल की युनिटों से बुलायी गयी कडगम पार्टी शामिल थी।

परेड में शामिल बल की टुकड़ियों के प्रदर्शन की सभी ने तारीफ की। असम के मुख्यमंत्री ने बल की सांस्कृतिक टुकड़ी को 5000 रूपये का पुरस्कार भी प्रदान किया।

नीति वचन

स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए इन तीनों को ठीक–ठाक रखना चाहिए – आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य। – **महर्षि चरक**

* * *

जो स्वयं सुंदर है उसकी सुंदरता किसी अन्य वस्तु से नहीं बढ़ती। – **कालीदास**

* * *

भले पुरुषों की मित्रता कभी बूढ़ी नहीं होती। – **वेदव्यास (महाभारत)**

* * *

नारी यह कभी नहीं देखेगी कि उसके पास क्या है वह सदा देखेगी कि उसके पास क्या नहीं है। – **स्टीफन**

* * *

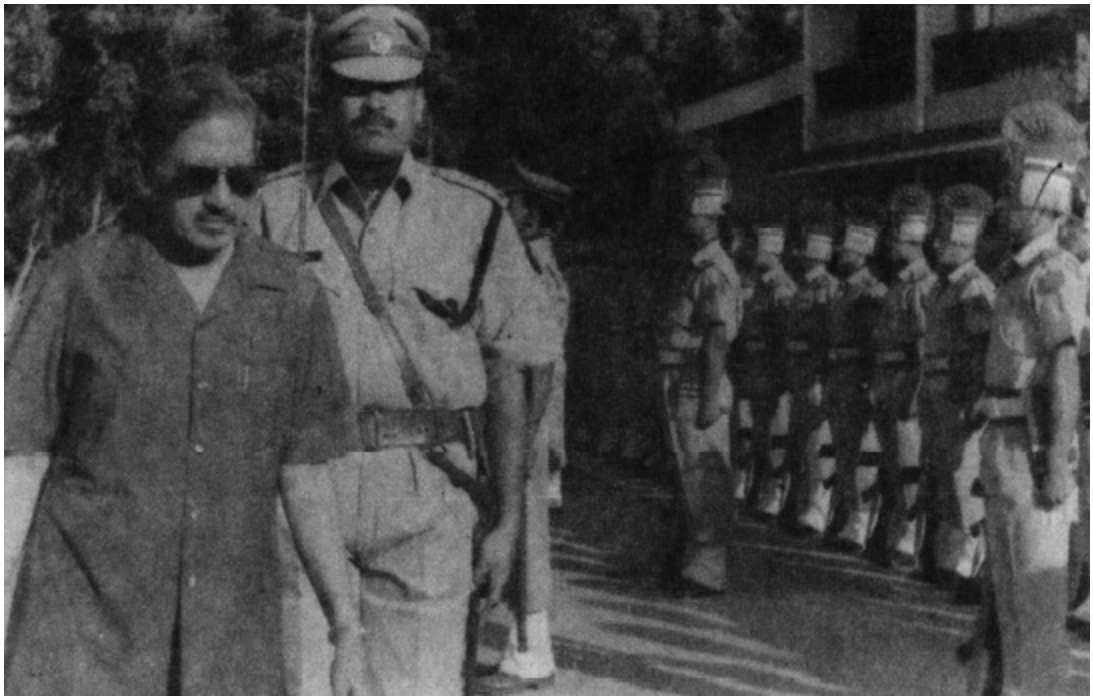
रूपवती नारी रत्न है, परन्तु गुणवती नारी रत्नों का खजाना। – **महात्मा विदूर**

ग्रुप केंद्र इम्फाल अस्पताल

उत्तर पूर्व में बल की भारी तैनाती को दृष्टि में रखते हुए तथा वहां तैनात बल के कार्मिकों को जरूरत पड़ने पर तुरंत चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से 19

जनवरी, 1990 को ग्रुप केंद्र इम्फाल में 30 बिस्तर वाले एक अस्पताल की नींव रखी गयी, अस्पताल का शिलान्यास तत्कालीन उप महानिरीक्षक श्री एम.पी. सिंह ने किया। अस्पताल का निर्माण कार्य किन्हीं कारणों से 1994 में बाधित हो गया, मगर 1995 में इस का निर्माण कार्य फिर शुरू किया गया और मार्च, '98 तक अस्पताल का निर्माण लगभग पूरा हो गया।

ग्रुप केंद्र इम्फाल के बीचोबीच स्थित इस अस्पताल का उद्घाटन मणिपुर के राज्यपाल श्री ओ.एन.श्रीवास्तव ने 15 मई, 1998 को किया। इस मौके पर मणिपुर–नागालैंड के महानिरीक्षक श्री ए. पटनायक भी मौजूद थे। लगभग 90 लाख की लागत से बने इस अस्पताल में आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी हैं। वर्तमान में यह अस्पताल अपनी पूरी क्षमता से कार्य कर रहा है। मणिपुर नागालैंड में तैनात बल के कार्मिकों को इस अस्पताल के शुरू हो जाने से काफी राहत मिली है।



राज्यपाल श्री ओ.एन. श्रीवास्तव अस्पताल इमारत का उद्घाटन करने से पूर्व क्वार्टर गार्ड का निरीक्षण करते हुए।

पोलियो उन्मूलन अभियान में के.रि.पु. बल का योगदान

6दिसंबर, '98 तथा 17 जनवरी, '99 को देशव्यापी रूप से चलाए गये पोलियो उन्मूलन अभियान में के.रि.पु. बल ने भी अपना योगदान दिया। इस अभियान के दौरान के.रि.पु. बल ने रोटरी इंटरनेशनल तथा सरकार को वाहन, अपने चिकित्सकीय तथा अर्द्ध–चिकित्सकीय स्टाफ तथा दवाओं को उपलब्ध करा कर

सहायता उपलब्ध करायी। के.रि.पु. बल ने जम्मू कश्मीर तथा उत्तर पूर्व के अशांत क्षेत्रों में लगाए गये पोलियो कैंपों तथा उनमें काम करने वाले कर्मचारियों को सुरक्षा भी प्रदान की। साथ ही के.रि.पु. बल ने अपने अस्पतालों तथा युनिटों में भी पोलियो उन्मूलन कैंपों का आयोजन किया।

इस अभियान में के.रि.पु. बल ने दिसंबर, '98 में 7,49,000 तथा जनवरी, '99 में 9,05,000 बच्चों को पोलियो खुराक दी।

इम्फाल परिचालन रेंज कम्प्यूटरीकृत

उप महानिरीक्षक (परिचालन) इम्फाल रेंज हाल ही में पेंटियम कम्प्यूटर की स्थापना के साथ ही कम्प्यूटरीकृत हो गयी। मणिपुर तथा नागालैंड के महानिरीक्षक (परिचालन) श्री मोहन राज ने 4 फरवरी, 1999 को इस कम्प्यूटर का उद्घाटन किया।

उप महानिरीक्षक (परिचालन) इम्फाल श्री डी. सम्पत के अनुसार इस कम्प्यूटर की स्थापना से परिचालन से संबंधित विभिन्न आंकड़ों को स्टोर करने तथा बेहतर परिचालनिक योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी।

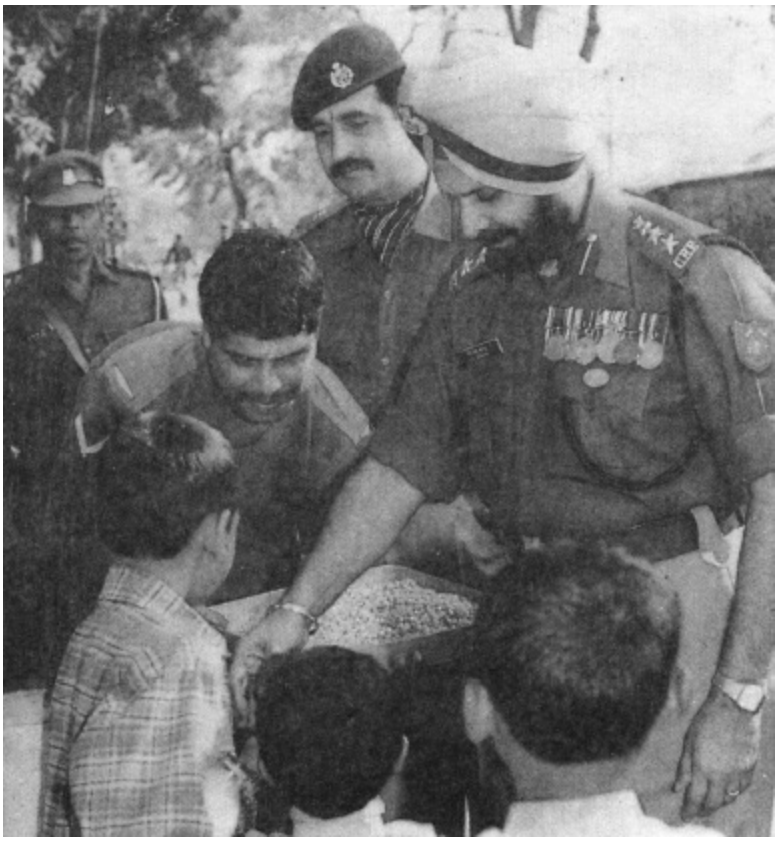
इसके अतिरिक्त बजट, कैडर कोर्स तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों में भी इस कम्प्यूटर के इस्तेमाल से कार्यभार सुगम एवं हल्का होगा।



कम्प्यूटर का उद्घाटन करते हुए मणिपुर तथा नागालैण्ड के महानिरीक्षक (परिचालन) श्री मोहन राज ।

73 बटा. द्वारा *50*वां गणतंत्र दिवस समारोह

बोकोजान, असम स्थित 73 बटालियन द्वारा 26 जनवरी, 1999 को 50वें गणतंत्र दिवस समारोह का भव्य अयोजन किया गया । इस अवसर पर एस.एस. सन्धू, कमांडेंट–73 बटालियन, के.रि.पु. बल के द्वारा ध्वजारोहण किया गया, इसके पश्चात् कमांडेंट ने इस अवसर पर उग्रवादी, अलगाववादी संगठनों से लड़ने एवं उनके नापाक इरादों को असफल करने का आह्वान किया । राष्ट्रीय भावनों से ओत–प्रोत होकर एवं दिल खोलकर राष्ट्रीय एकता बनाये रखने को कहा । साथ ही अपनी ड्यूटी के प्रति सावधान रहने को बताया । देश को खंडित करने के लिए विदेशी शक्तियां अपना भरपूर प्रयास कर रही हैं, ऐसी स्थिति में हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है । इसके पश्चात् कमांडेंट संधू ने देश के प्रति सच्ची लगन, निष्ठा से कार्य करने पर राष्ट्रपति पदक से सम्मानित कार्मिकों के नाम पढ़कर सुनाये तथा उनके कार्य से सीख लेने को कहा । इस अवसर पर वाहिनी के सभी कार्मिकों को मिठाई वितरण किया गया तथा आस–पास के गांवों के बच्चों को भी मिठाई वितरित की गयी ।



गणतंत्र दिवस के अवसर पर बच्चों को मिठाई वितरित करते 73 बटा. के कमांडेंट एम.एस. संधू

उत्तर पूर्व में के.रि.पु. बल

- डी.जी. महापात्र, जन संपर्क अधिकारी

सात बहनों के रूप में जाना जाने वाले देश के उत्तर पूर्वी इलाके के सात राज्यों की टोली में हालांकि आठवां राज्य सिक्किम भी सम्मिलित हो गया है, मगर इसे आठवें भाई के रूप में जाना जाता है।

यह क्षेत्र भिन्न भाषाओं, भिन्न जातीय गुटों, सांस्कृतिक विरासतों तथा रीति रिवाजों वाला क्षेत्र है। बेहद खूबसूरत प्राकृतिक नजारों से भरपूर इस क्षेत्र के निवासी बेहद मासूम तथा सादा जीवन जीने वाले हैं। उनकी यह सादगी और रहन सहन, मैदानी क्षेत्रों से आने वाले व्यक्तियों के लिए एक अजूबा हो सकता है। झीलों, नदियों, पहाड़ियों, वनों तथा हरीतिमा से भरपूर यह क्षेत्र एक अलौकिक संसार का आभास कराता है। यहां के निवासियों के बारे में प्रायः देश के अन्य नागरिकों की यह धारणा है कि यहां केवल जन जातीय लोग रहते हैं, जो बंजारा कठिन जीवन जीते हैं 'कम कपड़े पहनते है तथा वे असभ्य है', लेकिन यह सच नहीं है।

के.रि.पु. बल और उत्तर पूर्वी राज्यों का एक बहुत पुराना रिश्ता है। यह रिश्ता स्वतंत्रता के तत्काल बाद शुरू होता है, जबकि नागा विद्रोहियों के विरूद्ध के.रि.पु. बल की पहली टुकड़ी को वहां तैनात किया गया था। जबकि आज उत्तर पूर्वी राज्यों में के.रि.पु. बल की लगभग 349 कम्पनियां तैनात है, जो कि बल का लगभग 50 प्रतिशत हैं।



असम के दुर्गम इलाकों में बल के जवानों की गश्त

पिछले 10 वर्षों में पूरे उत्तर पूर्व में के.रि.पु. बल कार्मिकों की आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों तथा अन्य आपरेशनों में 190 आतंकवादी मारे गये हैं तथा 13107 को गिरफ्तार किया गया तथा 2417 घातक हथियार तथा 24387 गोली बारूद भी बरामद किया गया। मगर इस सबके एवज में बल के 300 वीर जवानों को अपने प्राणों की आहूति देनी पड़ी तथा 530 गंभीर रूप से घायल हुए।

अकेले असम में आज बल की 151 कम्पनियां तैनात हैं जो पूरे उत्तर पूर्व में तैनाती का लगभग 50 प्रतिशत है। पिछले दस सालों मे असम में बल के जवानों ने 9835 आतंकवादियों को पकड़ा है तथा 106 आतंकवादी विभिन्न मुठभेड़ों में मारे गये हैं। यहां बल के जवानों ने 947 घातक हथियार तथा 8797 गोली बारूद बरामद किया है। अकेले असम में इस अवधि में बल के 69 जवान शहीद हुए तथा 167 गंभीर रूप से घायल। केवल परिचालन के क्षेत्र में ही नहीं अपितु लोगों के हृदय जीतने में भी यहां के.रि.पु. बल अग्रणी रहा है। बल यहां के दूरदराज के इलाकों में अपने सिविक एक्शन कार्यों के जरिये स्थानीय जनता की सेवा कर रहा है। इस कार्यक्रम में बल की युनिटें मुफ्त चिकित्सा शिविरों आदि का आयोजन कर लोगों का प्रेम और विश्वास जीतने का प्रयास करती हैं। 1997-98 के दौरान असम के दस जिलों में इस तरह के समाजोपयोगी कार्यक्रमों के लिए 11 लाख रूपये खर्च किये गये। इन कार्यक्रमों में चिकित्सा कैंपों के अतिरिक्त खेलों का आयोजन, खेल प्रतियोगिताएं, बच्चों को शिक्षा सामग्री का वितरण तथा समग्र विकास के लिए समूचे ग्राम को अंगीकृत करने जैसे कार्यक्रम भी शामिल थे। इनके अलावा बाढ़ व रेल दुर्घटना आदि में जहां बल के कार्मिकों ने यहां राहत सहायता उपलब्ध करायी, वहीं पोलियों खुराक देने, वृक्षारोपण तथा कमजोर लोगों को संरक्षण देने में भी बल यहां अग्रणी रहा।



एक पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए उत्तर पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री पी.एन. रामाकृष्णन

60 के दशक में जब यहां समस्याएं बढ़ी, तो भाषाई विवाद से पनपे दंगों को शांत करने के लिए के.रि.पु. बल ने स्थानीय प्रशासन को अपना सहयोग दिया। बल की युनिटो को गुवाहाटी से डिब्रूगढ़ तक फैले इस पहाड़ी क्षेत्र में भी तैनात किया गया। बल के कार्मिकों ने अपनी अदम्य इच्छा शक्ति, साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता से स्थिति को सामान्य बनाने में अपना योगदान दिया। बल की 11वीं बटालियन ने 38 पाकिस्तानी घुपैठियों को गिरफ्तार कर एक इतिहास रचा। बल के कार्मिक आज भी यहां मुख्य धारा से भटके दिग्भ्रमित युवकों के हृदय जीत कर उन्हें मुख्य धारा में शामिल करने के प्रयासों में जुटे हैं। देश के अन्य सुरक्षा बलों के साथ-साथ के.रि.पु. बल भी उत्तर पूर्व के इस सबसे बड़े राज्य में शांति बहाल करने के लिए प्राणोपन्न से जुटा है।

असम के बाद उत्तर पूर्व में के.रि.पु. बल की सबसे ज्यादा तैनाती मणिपुर तथा नागालैंड में है, मणिपुर में बल की 67 कंपनियां और नागालैंड में 36 कंपनियां तैनात हैं। पिछले दस वर्षों में इन दोनों राज्यों में बल के जवानों ने 1956 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा विभिन्न मुठभेड़ों में 44 आतंकवादी मारे गये हैं। यहां बल के जवानों ने 734 घातक हथियार तथा 14176 गोलीबारूद भी बरामद किया। मगर यहां भी बल के जवानों ने यह उपलब्धियां भारी कीमत चुका कर कमायी हैं, यहां पिछले 10 वर्षों में बल के 167 कार्मिक कर्त्तव्य की वेदी पर शहीद हुए हैं, तथा 277 गंभीर रूप से घायल। इस दौरान बल के जवानों की आतंकवादियों के साथ 299 मुठभेड़ें हुई हैं।

नागालैण्ड तथा मणिपुर का प्रवेशद्वार कहे जाने वाले दीमापुर शहर में दीमापुर सुरक्षा योजना के तहत के.रि.पु. बल शांति और सद्भाव बनाये रखने के लिए निरन्तर

अपनी सेवायें दे रहा है। 1 नवम्बर, 1998 से जारी इस योजना के तहत के.रि.पु. बल स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर जनता में भय और अराजकता फैलाने वाले तत्वों को पकड़ने में लगा है। इसके लिए बनायी गयी रणनीति के तहत लगातार गश्त व नाके इत्यादि लगाये जाते हैं, यह योजना बेहद सफल रही है इसके लोगों में विश्वास बढ़ा है, व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आयी है, दुकानें देर रात तक खुली रहने लगी हैं तथा नागरिकों ने राहत की सांस ली है।

आपरेशन के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी के.रि.पु. बल ने इन राज्यों के दूर दराज के इलाकों में अपनी सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत चिकित्सा कैम्पों इत्यादि का आयोजन कर लोगों का विश्वास जीता है।

वर्ष 1997-98 में मणिपुर के चूड़ाचांदपुर, थोबल तथा विश्नुपुर जिलों में इन आयोजनों पर छः लाख रूपये खर्च किये गये, चिकित्सा कैम्पों तथा जरूरत मंद विद्यार्थियों को शिक्षण सामाग्री उपलब्ध कराने के अतिरिक्त बल ने यहां के विभिन्न गांवों के प्राथमिक स्कूल, भवनों तथा सामुदायिक भवनों की मरम्मत आदि का कार्य भी किया। इसी प्रकार नागालैण्ड में भी सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत तीन लाख रूपये खर्च किये गये। यहां अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त बल के जवानों ने पल्स पोलियो कार्यक्रम तथा सड़कों के निर्माण आदि में भी भाग लिया।

उत्तर पूर्वी राज्यों की देश के अन्य हिस्सों के साथ सांस्कृतिक एकता को बढ़ाने के लिए आपरेशनल चार्म नाम की एक योजना शुरू की गयी। 1998 में इस योजना पर 1.44 लाख रूपये खर्च किये गये। इस योजना के अन्तर्गत दो समूहों में चालीस मैतेयी नागरिकों को देश के विभिन्न नगरों में घुमाया गया।

विद्रोहात्मक गतिविधियों में त्रस्त त्रिपुरा राज्य में भी कानून व व्यवस्था बनाये रखने के लिए के.रि.पु. बल महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। राज्य में पुनः शांति बहाली के लिए बल की 66 कम्पनियां तैनात हैं। पिछले 10 वर्षों में के.रि.पु. बल के जवानों ने त्रिपुरा राज्य में 1200 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया जबकि इस दौरान हुई 104 मुठभेड़ों में 36 आतंकवादी मारे गये। यहां बल के जवानों ने 664 घातक हथियार तथा 843 गोली बारूद बरामद किया, इस अवधि में बल के 41 कार्मिक यहां शहीद हुए तथा 46 गंभीर रूप से घायल हुए। भारी परिचालनिक व्यस्तताओं के बावजूद के.रि.पु. बल अगरतल्ला को देश के बाकि हिस्से से जोड़ने वाले 44 नं. राष्ट्रीय राजमार्ग की सुरक्षा के लिए भी तैनात है। 60 किमी. लम्बा यह राजमार्ग अगरतल्ला की जीवन रेखा है, इस कार्य के लिए पांच कम्पनियों को तैनात किया गया है जो प्रतिदिन इस राजमार्ग से गुजरने वाली 300 गाड़ियों के काफिले की सुरक्षा प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बल के जवान अन्य राजमार्गों पर भी सुरक्षा के लिए तैनात हैं। कार्मिकों की इस सजगता के कारण त्रिपुरा के वाणिज्य और व्यापार में वृद्धि हुई है, बल के जवान जातीय दंगों से प्रभावित लोगों की मदद राहत शिविरों के जरिये कर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि पश्चिमी त्रिपुरा के कंचन माला क्षेत्र में 2 फरवरी 1999 को जातीय दंगे भड़क उठे थे। राहत कार्यों की सुरक्षा के साथ-साथ खवाई सब डिविजन में मार्च 1997 से बल के

तीन कम्पानेयां तैनात हैं। यह क्षेत्र जातीय दंगों की दृष्टि से संवेदनशील माना जाता है, बल के जवान तीर थमूख जल विद्युयत परियोजना, मंदिर घाट परियोजना, अगरतल्ला हवाई अड्डा, राजभवन, विधायक तथा पूर्व मुख्यमंत्री निवास आदि की सुरक्षा के लिए भी तैनात है।

सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत यहां वर्ष 1997-98 में 6 लाख रूपये खर्च किये गये। इस कार्यक्रम में अन्य समाजोपयोगी कार्यों के अतिरिक्त दूर दराज के गरीब इलाकों में कपड़ें, कम्बल, बर्तन तथा विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री भी वितरित की गयी, पल्स पोलियो कार्यक्रम के तहत यहां 52000 से अधिक बच्चों को पोलियो खुराक दी गयी।

मिजोरम राज्य भी परिचालनिक दृष्टि से महानिरीक्षक परिचालन त्रिपुरा के ही अन्तर्गत आता है, मिजोरम अपेक्षाकृत शांत राज्य है। वर्तमान में यहां पर कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए के.रि.पु. बल की छ: कम्पनियां तैनात हैं। यहां स्थित 48 बटा. ने अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत स्थानीय लोगों की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करने के अतिरिक्त व्यापक स्तर पर पल्स पोलियो अभियान का भी आयोजन किया।

14 से 25 फरवरी '99 तक मणिपुर इम्फाल में हुए 5वें राष्ट्रीय खेलों में भी के.रि.पु. बल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौरान उसने पूरे देश से आये 6000 से अधिक तकनीकि अधिकारियों, खिलाड़ियों तथा पत्रकारों को सुरक्षा प्रदान की। इस कार्य के लिए इम्फाल, थोबल तथा विश्नुपुर में बल की 30 कम्पनियां तैनात की गयी।

ग्रुप केन्द्र बनतलाब को राजभाषा शील्ड

वर्ष 1997-98 के दौरान सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, बनतलाब (जम्मू) को राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय), भारत सरकारी द्वारा "ग" क्षेत्र की श्रृंखला में प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया तथा 12-13 जनवरी, 1999 को आगरा (उ.प्र) में दिल्ली एवं उत्तर क्षेत्र के लिए आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में श्री सी.डी. त्रिपाठी, भूतपूर्व राजभाषा सचिव वृंदावन हिंदी संस्थान के निदेशक द्वारा राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। श्री रमेश चन्द्र, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय ने राजभाषा शील्ड ग्रहण की तथा निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक) अनूप सिंह ने प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया। दिल्ली एवं उत्तर क्षेत्र में स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्यालयों/यूनिटों आदि में ग्रुप केन्द्र-बनतलाब ही ऐसा कार्यालय है जिसे इस समारोह में राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए हैं। इस समारोह में राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), भारत सरकार व अन्य केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

माह जनवरी, फरवरी, '99 में बल के मृत कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जनवरी, फरवरी, '99 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सीआरपीएफ समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

है. कां. आर.पी. पांडेय (30 बटा), कां. डी. विजय कुमार (123 बटा.), का. राजन कुमार (86 बटा.), इंस्पेक्टर मैनेजर सिंह (102 बटा.),

डा. डी.एन. कार (बेस अस्पताल-दो), है.कां. घांसी सिंह (1 बटा.), कां. गुरविंदर सिंह (128 बटा.), है. कां. देवाराजू (ग्रुप केन्द्र आवड़ी), सब इंस्पेक्टर दर्शन लाल (49 बटा.), एस.एम./ओ.एस.पी.एल.एन. सौमेया जी (ग्रुप केन्द्र रंगारेड्डी), कां./ड्रा. अरविंद कुमार (ग्रुप केन्द्र पिंजौर), लां.ना. हरेंद्र सिंह (ग्रुप केन्द्र शिवपुरी), कां. लाल प्रताप सिंह (ग्रुप केन्द्र शिवपुरी), है.कां. मुल्कराज (8 बटा.), हैं. कां. फुलवारी लाल (24 बटा), ला.ना. गुरूदेव सिंह (24 बटा.), सब इंस्पेक्टर आर. लक्ष्मण भाई (21 बटा), है. कां. के.एस. मुंडा (21 बटा.), सब इंस्पेक्टर भारत चौबे (29 बटा.), सहा. कमांडेट मोहम्मद सादिक (75 बटा.), है. कां. रामानंद (88 बटा.), है.कां. रमेश चंद यादव (65 बटा.), ला.नायक एम.ए. खान (83 बटा.), ला.ना. ठाकुर सिंह (95 बटा), है.कां. तेज नारायण शाह (133 बटा.), सब इंस्पेक्टर सूबे सिंह (131 बटा.), इंस्पेक्टर श्याम सुंदर (34 बटा.), कां. बिरेंदर सिंह (77 बटा.), है.कां. बलदेव राज (24 बटा.), है.कां./रेडियो आपरेटर दलबीर सिंह (5 सिंग.बटा.), का./पेंटर जे.सी. सरकार (135 बटा.), कां. सूबे सिंह (29 बटा.), का. अशोक गेदाम (29 बटा.), कां. नरेश शर्मा (34 बटा.), धोबी सुल्तान अहमद (36 बटा.), लां. नायक तेजभान सिंह (116 बटां.), कां. बानी सिंह (25 बटा.), कां. रामाशंकर (66 बटा.), का. मोहम्मद शफी (22 बटा.), कां. डी. देशराज (ग्रुप केन्द्र बनतालाब), कां. डी. परमेश्वरन (115 बटा.), सफाई कर्मचारी संतोष राज (26 बटा.), कुक तारीफ सिंह (108 बटा.), है. कां. रामोवतार (35 बटा), सब इंस्पेक्टर विभूती नारायण गोसांई (67 बटा.), है.कां. ब्रह्म दत्त (34 बटा.), कां. एम.ए. कुरैशी (आंतरिक सुरक्षा अकादमी), ला.ना. राम ब्रिकेश यादव (124 बटा.), कां. कमलदास (28 बटा.), कां. एस. सहदेवन (26 बटा.), लां. ना. सतनाम सिंह (76 बटा.) तथा है.कां. बी. एम. त्रिपाठी (36 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचारों के अनुसार माह अक्टूबर, '98 में कां. दफ्तरी विश्वनाथ (ग्रुप केंद्र नयी दिल्ली), कां. सोमबीर सिंह (122 बटा.) तथा लां. नायक एस.एन. कोयल (10 बटा.), माह नवंबर, '98 में कां. के.एस. विठोबा (29 बटा.) तथा लां. नायक सहदेव मुंडा (127 बटा.) तथा दिसंबर, '98 में है.कां./आपरेटर के.एस. मुरली (2 बटा. सिगनल), कां. बाबू कुमार डे (22 बटा.), है.कां. गुलजारी लाल

(60 बटा.) तथा कां. बलविंदर सिंह (110 बटा.) भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की केन्द्रीय जोखिम निधि से माह जनवरी '99 में मृत्यु के 31 मामलों में कुल 18,60,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के 8 मामलों में 1,57,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि "बी" से माह जनवरी '99 में इसके किसी सदस्य को मृत्यु का मामला प्रकाश में नहीं आया।

माह फरवरी '99 में केन्द्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 41 मामलों में 24,60,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के 7 मामलों में 1,65,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि "बी" से भी इसके 9 सदस्यों की मृत्यु के मामले में 3,35,000 रूपये स्वीकृत किये गये।

बल के नौ कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नौ कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है, इनमें से एक कार्मिक को यह पदक मरणोपरांत दिया गया है। राष्ट्रपति द्वारा इन कार्मिकों को यह सम्मान उत्तर पूर्वी राज्यों में अपने कर्त्तव्य निर्वाह के दौरान दिखाई गयी उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता, साहस तथा शौर्यवीरता के लिए दिया गया है।

पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :–



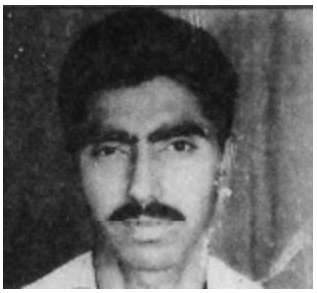
सब इंस्पेक्टर आर.पी. जून *(37* बटा.*)*



कांस्टेबल टी.पी. सिंह *(67* बटा.*)*



है.कां. सूबे सिंह *(65* बटा.*)*



कां. विष्णु प्रसाद *(65* बटा.*)*



कां./ड्रा. आर.एम. पांडे *(*मरणोपरांत*) (1* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर यू.आर. रामेश्वरम *(52* बटा.*)*



कां. ए.पी. सिंह *(66* बटा.*)*



है.कां. सी.आर. मंडल *(10* बटा.*)*



कां./ड्रा. अनिल कुमार *(132* बटा.*)*

*7*वीं के.रि.पु. बल अंतर सेक्टर जूडो प्रतियोगिता

उत्तरी सेक्टर ने चैम्पियनशिप जीती

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की अंधेरिया मोड़, मैहरोली स्थित 8वीं बटालियन स्थल पर 8 से 12 मार्च, '99 तक खेली गयी 7वीं अंतर सेक्टर जूडो प्रतियोगिता की ओवरआल चैंपियनशिप उत्तरी सेक्टर ने जीत ली। आर.ए.एफ. सेक्टर दूसरे स्थान पर रहा तथा पूर्वी सेक्टर को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

इस चार दिवसीय प्रतियोगिता में बल के सभी सेक्टरों के 130 जुडोकाओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता के समापन पर के.रि.पु. बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री

डी.पी. सिन्हा, मुख्य आतिथे के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये।



उत्तर सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा विजेता टीम की ट्राफी प्रदान करते हुए

सुपर आतंकवाद

- गिरीश कुमार, स.सहा.नि. (परिचालन), महानिदेशालय

अंग्रेजों के राज में देश को आजाद कराने के लिए शस्त्र उठाने वालों को विद्रोही या आतंकवादी कहा जाना उस समय के सत्ताधरियों की एक राजनैतिक मजबूरी थी, लेकिन असल में भारत में आतंकवाद की शुरूआत आजादी के पहले दशक से हुई, जब पाकिस्तान ने अपने सशस्त्र गुरिल्लों को कश्मीर में भेजकर इस दैवभूमि को बलप्रयोग द्वारा भारत से अलग करने की नाकाम कोशिश की, इसके बाद तो मणिपुर, नागालैण्ड, आसाम, मिजोरम, त्रिपुरा, जम्मू व कश्मीर और पंजाब में समय समय पर आतंकवादी घटनाओं में उतार चढ़ाव आते रहे।

आज नागालैण्ड में अस्थायी शांति समझौता है, पंजाब में पूर्ण शांति है, जम्मू व कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं में महत्वपूर्ण कमी आई है, लेकिन एक बात स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आ गई है और वह यह कि भारत के जिस हिस्से में भी आतंकवाद का पैर पसरा हर उस हिस्से की भौगोलिक सीमा किसी न किसी अन्य देश से अवश्य मिलती है, जिससे यह साबित कर पाना आसान हो जाता है कि हमारे यहां के आतंकवाद को आश्रय व बढ़ावा दूसरे देशों से मिल रहा है।

फिलीस्तीन या आयरलैंड की स्वाधीनता के लिए उठा संघर्ष हो या अमेरिका के विरूद्ध कुछ मुस्लिम संगठनो की आतंकी कार्यवाहियां, श्रीलंका के लिट्टे का सामरिक कौशल हो या भारत में भाड़े के विदेशी उग्रवादियों की हरकतें, आतंकवाद

की मुख्य रणनीति रही है - बारूदी सुरंगों और विस्फोटकों का प्रयोग, अंधाधुंध गोलीबारी से सामूहिक नरसंहार, विमान अपहरण एवं प्रमुख व्यक्तियों की हत्या, अधिकतर जगहों पर छापामार प्रणाली का प्रयोग करते हुए सरकारी सशस्त्र बलों पर जानलेवा हमले हुए हैं, लेकिन धीरे धीरे विज्ञान की प्रगति के साथ ही आतंकवादी घटनाओं के स्वरूप में भी परिवर्तन आता जा रहा है। विदेशी वैज्ञानिक डेंगू और प्लैग पर रिसर्च करते हुए पाए जाते हैं और साथ ही सूरत तथा दिल्ली में यह महामारी अपना भयंकर रूप दिखाती है। देश विदेश में भारत की छवि एक ऐसे देश के रूप में उभरती है जहां भयानक जानलेवा बीमारियों का साम्राज्य है, विदेशियों को भारत में यात्रा न करने की हिदायतों का अम्बार लग जाता है और फिर ये बीमारियां अपना भयानक स्वरूप वापिस ले लेती हैं। अचानक आई इन महामारियों के पक्के कारणों का आज तक भी पता नहीं लग पाया है। पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान में कपास की फसलों का लगातार तीन साल तक खराब होना, हरियाणा के कुछ हिस्सों में जंगली घास का आतंक, देश में प्याज की अचानक कमी और तदोपरांत मचा हाहाकार, दिल्ली तथा देश के कुछ अन्य नगरों में नमक की कमी की अफवाहें, अंर्तराष्ट्रीय सीमा के नजदीक नकली नोटों का जमावड़ा इत्यादि यह इंगित करते है कि आतंकवाद के स्वरूप और क्षेत्र में निरंतर विस्तार हो रहा है। सुपर आतंकवाद की ओर मानवता के बढ़ते कदमों का एक और प्रतीक है – रासायनिक युद्धों का पूर्वाभ्यास। अमेरिका-मैक्सिको सीमा पर पिछले वर्ष घातक बीमारी फैली, कहा जाता है कि यहां चेचक के विषाणु तथा मरबर्ग विषाणु का प्रयोग किया गया था। आज सामान्य कॉलेज में विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके कोई भी सिरफिरा युवक थोड़े से साधनों की मदद से अपने घर में ही इतना रासायनिक या जैवीय तंत्र विकसित कर सकता है जिससे किसी छोटे-मोटे देश की सम्पूर्ण जनता को समाप्त किया जा सकता है। विश्व के न जाने कितने हिस्सों में ऐसी गोपनीय प्रयोगशालाएं पैदा की जा चुकी हैं, जहां सामूहिक नरसंहार के लिए गैसें तैयार की जा सकती है। ईरान, ईराक, पाकिस्तान और लीबिया जैसे देशों में विदेशी वैज्ञानिकों को भाड़े पर लिया जा रहा है। विघटन के पहले से सोवियत संघ में रासायनिक अस्त्रों के भंडार थे तथा वहां के वैज्ञानिकों को इन प्रयोगों का विशेषज्ञ माना जाता है। दुनिया के किसी भी देश को बरबाद कर देने में सक्षम ऐसी महामारियों तथा गैसों पर अनुसंधान हो रहे हैं जो जरूरत पड़ने पर किसी चुने हुए क्षेत्र में सिर्फ मनुष्यों और जीव जन्तुओं को खात्मा करेंगे लेकिन उस देश में उपलब्ध अन्य संसाधनों की बरबादी नहीं करेंगे, ऐसे किसी प्रयोग में यह भी संभव है कि प्रयोग करने वाले का पता ही न लग पाए, वह स्वयं को सामने भी ना लाए और अपने उद्देश्य की पूर्ति में कामयाब भी हो जाए। यदि ऐसा हुआ तो यह "सुपर आंतकवाद" ही कहलायेगा।

आज के अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद में सामरिक दृष्टिकोण के साथ-साथ कृषि स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था को बरबाद कर देने के आतंकवादी लक्ष्यों का भी समावेश हो गया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के शांति मिशन में कार्य करने के दौरान मैंने कुछ अपुष्ट तथ्यों के बारे में सुना जैसे कि विश्व की एक शीर्ष जासूसी संस्था अन्य महत्वपूर्ण देशों के भावी

स्वरूप के बारे में अभी से गणनाएं करके योजना बना लेती है, जैसे कि आज से पच्चीस वर्ष बाद अमुक देश के संभावित प्रधानमंत्री कौन हैं, वहां अर्थव्यवस्था का मुख्य प्रभावी क्षेत्र कौन सा होगा, उद्योगों की दशा, मुख्य कृषि उत्पादन तथा मुख्य आयात-निर्यात की मात्रा और दिशा क्या होगी इत्यादि। दबी जुबान में यह भी कहा गया है कि सोवियत संघ का विघटन एक स्वाभाविक प्रक्रिया न होकर एक दीर्घकालीन योजना थी, जो प्रायोजित आतंकवाद की आज तक की सबसे बड़ी सफलता है। यह भी सुनने में आया है कि प्रयोगशालाओं में ऐसी रिसर्च की जा रही है जिससे एक ऐसे कम्प्यूटर वायरस का निर्माण किया जाएगा जो उस समय प्रयोग में लाया जा सके, जब विश्व के अधिकतर देशों में बैंकिंग, व्यापार, सामरिक शस्त्र एवं अर्थव्यवसथा के अन्य महत्वपूर्ण हिस्सों का कम्प्यूटरीकरण हो चुका होगा। परिकल्पना यह है कि उस समय कम्प्यूटर प्रणाली में घुसाया गया मात्र एक वायरस अर्थव्यवस्था और सामरिक रणकौशल के क्षेत्रों में उपलब्ध आंकड़ों, गणनाओं और जमाओं तथा भुगतान की अवस्था में ऐसी उलटफेर कर सकेगा जिसका परिणाम होगा - चारो तरफ हाहाकार और बरबादी, बैंको के लेन-देन ठप्प हो जायेंगें, मिसाइलों के निशाने बदल जायेंगे, बड़ी-बड़ी परियोजनाएं बेकार हो जायेंगी, क्योंकि कम्प्यूटर और रोबोट हमारे आदेशानुसार काम करना छोड़ देगें और इन सबकी वजह से किसी भी देश में गृहयुद्ध या विद्रोह के हालात अथवा अन्य किसी देश से युद्ध छिड़ने का खतरा पैदा हो जाना अतिश्योक्ति नहीं माना जा सकता।

इन सब भयानक बातों को मात्र कल्पना की उड़ान मान कर उड़ा देना अति सरल है और मेरी कामना है कि यह सब कल्पना ही रहे, सच में तब्दील ना हो, लेकिन आज से हजारों वर्ष पूर्व रामायण महाभारत में की गई सामरिक और वैज्ञानिक कल्पनाएं क्या आज साकार हमारे सामने नहीं हैं ? क्या आज ऐसा नहीं लगता कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में वर्णित अविश्वसनीय सी वस्तुएं एवं शक्तियां वास्तव में मूर्त रूप में थी, जो प्रकृति के किसी नियमवश लुप्त हो गई एवं अब पुनः सामने आ रही है, अथवा यह कि यदि यह सब मात्र कल्पना की उड़ान भर था तो उस समय के लोगों की कल्पना शक्ति पर हमें गर्व होना चाहिए क्योंकि आज से हजारों वर्ष पूर्व वो ऐसी कल्पनाएं कर पाए जिसे आज का विज्ञान साकार रूप देने में जुटा हुआ है एवं काफी हद तक सफल भी हो गया है।

कल का सच्चा स्वप्न

बिजली के पंखो के,
ये कृत्रिम हवा के झोंके।

पत्थरों के इस जंगल में,

वाहनों का यह चहचहाना।

कृत्रिम यन्त्रों से चलता,
यह खूबसूरत प्राकृतिक झरना।

यंत्र चलित यह दहाड़ता शेर
प्लास्टिक का यह पीला बेर।

हवा के थपेड़ों को सहती,
यह प्लास्टिक के पेड़ों की डालियां।

लिपिस्टिक के आधुनिक रंगों में,
छिपी यह अधरों की कलियां।

प्लास्टिक के, कभी न मुरझाने वाले,
फूलों से उठती बनावटी खुश्बू।

प्रदूषित जल की यह नदी,
जिसमें प्लास्टिक की तैरती मछलियां।

जिन्हें देख यह चकाचौंध से चौंधियाई,
आंखें, पाती हर्ष, पर रोती अंतडियां।

प्रदूषित हवा में, सांस लेता,
यह जीता जागता मानव,
पैसा खाता, खाता नहीं है अन्न।

देख रहा हूं, मैं जागती आखों से,
कल का यह सच्चा स्वप्न।

मनोज कुमार दीक्षित, स.उ.नि. *(मं.)*
ग्रुप केन्द्र, भुवनेश्वर, के.रि.पु.बल

निश्चय की निधि न्यारी

दृढ़ निश्चय है जिसके मन में, वह निश्चित बलवान है।
उसके सम्मुख नतमस्तक होते सब व्यवधान है।

उसकी सदा विजय होती है, जो दृढ़ निश्चय वाला है।
सदा सफल पग-पग पर होता, और वह सबसे आला है।

दृढ़ निश्चय अभिमान रहित, जिस मानव तन में होता है।
संकट के क्षण, विकट घड़ी में, धैर्य कभी न खोता है।

चकनाचूर ध्वस्त कर सकता, दुश्मन के अरमान सभी।
दृढ़ निश्चय कर खड़ा संतरी, गुंजित हों ब्रम्हान्ड सभी।

दृढ़ निश्चयी पुरूष इस जग में, निर्भर कर्म सदा करते हैं।
सम्मुख काल के आने पर भी, प्राणोपन्न में लड़ मरते हैं।

गांधी जी के दृढ़ निश्चय ने, देश को अपने मुक्त कराया।
सदियों से था पराधीन जो, सच के बल स्वाधीन कराया।

राणा प्रताप का दृढ़ निश्चय, कुछ अपने आप निराला था।
स्वाभिमान की मूरत जग में देश प्रेमी मतवाला था।

रानी झांसी जैसे तुम भी, दृढ़ निश्चयी बन आगे आओ।
भीष्म पितामह जैसे तुम भी, इस वसुन्धरा पर नाम कमाओ।

रचयिता : हंसराज ओझा (प्रभात) ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल मोकामाघाट

पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार के स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सैंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1.	प्रकाशन का स्थान	- नई दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	- वर्ष में आठ बार
3.	प्रिंटर का नाम	- डी.जी. महापात्र
4.	नागरिकता	- भारतीय
5.	पता	- ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003
6.	प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	- डी.जी. महापात्र, भारतीय, ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003
7.	संपादक का नाम, पता और नागरिकता	- डी.जी. महापात्र, भारतीय, ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003
8.	उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।	- महानिदेशक, के.रि.पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

मैं डी.जी. महापात्र एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं।

31 मार्च, 1999

ह.
डी.जी. महापात्र
प्रकाशक के हस्ताक्षर



के.रि.पु. बल के अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था की एक बैठक में सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत एक नृत्य



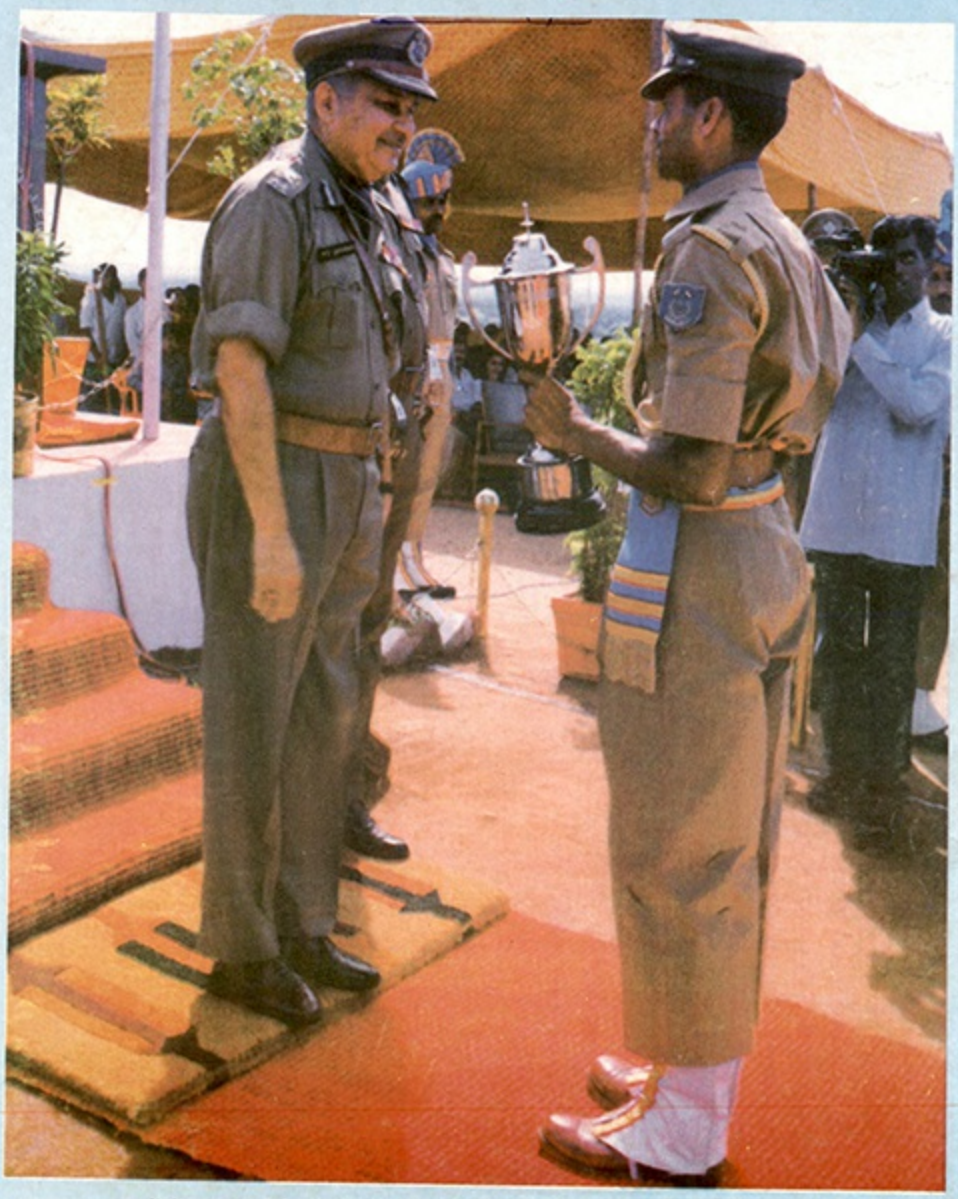
गुवाहाटी में गणतंत्र दिवस परेड के दौरान बल की बैंड टुकड़ी

गुवाहाटी बेस अस्पताल द्वारा आयोजित एक स्वास्थ्य कैंप में भाग लेते नागरिक



सी.आर.पी.एफ. समाचार

31 मई, 1999



68वें बैच के उप निरीक्षकों के दीक्षांत परेड के अवसर पर सब इंस्पेक्टर अनिल शेखावत को सर्वश्रेष्ठ ट्रेनी की ट्राफी प्रदान करते हुए महानिदेशक श्री एम.एन. समरवाल



ग्रुप केन्द केंद्र आवाड़ी में नव निर्मित आवासीय भवनों का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–13 अंक–3
31 मई, 1999
10 ज्येष्ठ, शक 1921

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72



इस अंक में

देश के शांति रक्षक बने

विधवा को अनुदान

अखिल भारतीय पुलिस बैंड जोनल प्रतियोगिता

अवाड़ी में 119 नये आवासीय भवनों का उद्घाटन

के.रि.पु. बल ने पुलिस ड्यूटी मीट प्रतियोगिता जीती

महानिदेशक ने खिलाड़ियों को बधाई दी

के.रि.पु. बल कर्मियों ने अंगदान की प्रतिज्ञा ली

के.रि.पु. बल ने कबड्डी प्रतियोगिता जीती

उत्तरी सेक्टर ने अंतर सेक्टर तैराकी प्रतियोगिता जीती
के.रि.पु. बल के 14 कार्मिकों को शौर्यता पदक
पं.गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार योजना
के.रि.पु. बल ने किया तालाब का जीर्णोद्धार
संक्षिप्त समाचार
कविताएं

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

“देश के शांति रक्षक बनें”

नव उप निरीक्षकों से महानिदेशक का आह्वान



बल के *68*वें बैच के उपनिरीक्षको की दीक्षांत परेड का निरीक्षण करते हुए महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

“उच्च कोटी के बलिदान और व्यवसायिक दक्षता ही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की देश के शांति रक्षक की ख्याति को बनाए रख सकती है ।” 13 मई, ‘99 को कोयम्बटूर स्थित केंद्रीय प्रशिक्षण कालेज–2 में उप निरीक्षकों के 68वें बैच के प्रशिक्षुओं की दीक्षांत परेड पर बोलते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा कि बल इस वर्ष अपनी 60वीं जयंती मनाने जा रहा है । उन्होंने कहा कि के.रि.पु.बल देश का सर्वाधिक पुराना एवं अनुभवी केंद्रीय पुलिस बल है, जिसे उत्तर पूर्व में विद्रोह, पश्चिम बंगाल तथा आंध्र प्रदेश में नक्सलवाद तथा पंजाब और जम्मू कश्मीर में आतंकवाद के विरूद्ध सफलतापूर्वक चलाए गये अभियानों से जुड़े रहने का गौरव प्राप्त है, साथ ही इसने श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में भी काम किया है, उन्होंने कहा कि परिपक्वता, गतिशीलता, ग्राह्यता तथा व्यावसायिक ज्ञान के.रि.पु. बल की मुख्य विशेषताएं हैं । जिनके बल पर वह स्थानीय पुलिस के साथ आसानी से तालमेल बिठाकर सांप्रदायिक, अलगाववादी तथा असमाजिक तत्वों से आसानी से निबट लेता है । इसके इन्हीं गुणों के कारण देश की आंतरिक सुरक्षा से जुड़ी समस्याओं के दौरान सबसे पहले इसे ही तैनात किया जाता है । इस अवसर पर महानिदेशक महोदय ने नव उपनिरीक्षकों द्वारा प्रस्तुत आकर्षक परेड का निरीक्षण किया तथा उसकी सलामी ली ।

इस मौके पर श्री सभरवाल ने सब–इंस्पेक्टर आनेल शेखावत को सर्वश्रेष्ठ आल राउंडर तथा सर्वश्रेष्ठ इनडोर का खिताब भी प्रदान किया। वेस्ट आउटडोर ट्रेनी का खिताब सब इंस्पेक्टर रमेश सिंह बिष्ट को दिया गया।

इससे पूर्व सी.टी.सी.–2 के प्रधानाचार्य श्री एन.पी. श्रीकुमार ने अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर प्रस्तुत आकर्षक परेड का नेतृत्व डिप्टी कमांडेट राकेश सेठी ने किया।

विधवा को अनुदान

9मई, '99 को ग्रुप केंद्र गांधीनगर में आयोजित एक सादे समारोह के बीच पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा ने 54 बटा. के कांस्टेबल पी.बी. भाई की विधवा श्रीमती कांताबेन को 2 लाख रुपये की अनुग्रह राशि का चैक भेंट किया। पी.बी. भाई 28 सितंबर, '98 को उल्फा आतंकवादियों द्वारा लगाई गई एक घात में उनका सामना करते हुए मारे गये थे।

इस मौके पर श्री मिश्रा ने हैड कांस्टेबल जसवंत सिंह (135 बटा.), हैड कांस्टेबल जाला विजय सिंह (ग्रुप केन्द्र गांधीनगर), हैड कांस्टेबल (बैंड) हंसराज (ग्रुप केन्द्र गांधीनगर) तथा कांस्टेबल दफ्तरी बी.एस. ईगले (उप महानिरीक्षक नागपुर कार्यालय) को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क भी प्रदान की।



पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा *54* बटा. के कांस्टेबल पी.बी. भाई की पत्नी श्रीमति कांताबेन को *2* लाख रुपये की अनुग्रह राशि का चैक भेंट करते हुए



पाश्चमी सेक्टर ने महानेरीक्षक श्री नारायण मिश्रा ग्रुप केंद्र गांधी नगर के एक कामेंक को महानेदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान करते हुए

श्री पी.सी. जोशी महानिरीक्षक पद पर पदोन्नत



श्री पी.सी. जोशी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के स्पेशल सेक्टर में कार्यरत उप महानिरीक्षक श्री पी. सी. जोशी को 21 श्री पी.सी. जोशी मई, '99 को महानिरीक्षक पद पर पदोन्नत कर दिया गया।

श्री पी.सी. जोशी के.रि.पु. बल के परिवार में 1965 में सहायक कमांडेंट के रूप में शामिल हुए, पिछले 34 वर्षों में विभिन्न पदों पर रहते हुए श्री जोशी ने के.रि.पु. बल में लगभग हर क्षेत्र में कार्य किया।

प्रथम अखिल भारतीय पुलिस बैंड उत्तरी क्षेत्र प्रतियोगिता

उत्तर प्रदेश और पंजाब पुलिस के बैंड जीते

प्रथम अखिल भारतीय, पुलिस बैंड उत्तरी क्षेत्र प्रतियोगिता की ब्रास बैंड प्रतियोगिता उत्तर प्रदेश पुलिस बैंड तथा पाईप बैंड प्रतियोगिता पंजाब पुलिस ने जीत ली।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केंद्र झड़ोदाकलां में 22 अप्रैल '99 शाम सम्पन्न हुयी इस प्रतियोगिता में पंजाब, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़ और हरियाणा की सात बैंड टीमों ने भाग लिया था।

अखिल भारतीय पुलिस खेलों में प्रथम बार शामिल हुयी इस प्रतियोगिता के आयोजन की जिम्मेदारी अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड द्वारा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को सौंपी गयी है।

उत्तर, पश्चिम, दक्षिण तथा पूर्वी जोन में अलग अलग आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता की श्रृंखला की यह प्रथम प्रतियोगिता थी।

उत्तरी क्षेत्र की इस प्रतियोगिता में चंडीगढ़, पंजाब तथा हरियाणा पुलिस



कबूतर उड़ा कर प्रतियोगिता का उद्घाटन करते अपर महानिदेशक श्री वाई.एन. श्रीवास्तव

की ओर से पाईप और ब्रास बैंड दोनों टीमें शामिल थी, जबकि उत्तर प्रदेश पुलिस की ओर से केवल ब्रास बैंड प्रतियोगिता में शामिल था।

ब्रास बैंड प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा चंडीगढ़ के बैंड क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। जबकि पाईप बैंड प्रतियोगिता में पंजाब, चंडीगढ़ तथा हरियाणा क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय रहे।

प्रतियोगिता के समापन समारोह के अवसर पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। पंजाब पुलिस के पाईप बैंड के बैंड मास्टर हैड कांस्टेबल निरमल सिंह को उसके शानदार प्रदर्शन के लिए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने 2000 रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया।

के.रि.पु. बल ने पश्चिमी क्षेत्र की पुलिस बैंड प्रतियोगिता जीती

26 से 30 अप्रैल, '99 तक गांधीनगर में हुयी आंखेल भारतीय पुलिस बैंड की पांश्चमी जोन की प्रतियोगिता केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल बैंड ने जीत ली। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाकर के.रि.पु. बल बैंड ने इस प्रतियोगिता के फाइनल के लिए अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है। इस प्रतियोगिता का आयोजन उप महानिरीक्षक (गांधीनगर) श्री शाहीद अहमद तथा ग्रुप केंद्र के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री राजेंद्र सिंह की देखरेख में किया गया।

प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश पुलिस का बैंड दूसरे स्थान पर तथा गुजरात पुलिस का बैंड तीसरे स्थान पर रहा।



पश्चिमी जोन का विजेता के.रि.पु. बल बैंड

आवड़ी में *119* नये आवासीय भवनों का उद्घाटन

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने 12 मई, '99 को ग्रुप केंद्र आवड़ी में 119 नये आवासीय भवनों का उद्घाटन किया। इस मौके पर दक्षिण सेक्टर ने महानिरीक्षक श्री ए. पटनायक तथा उप महानिरीक्षक (चेन्नई) श्री के. केशवन सहित कई वरिष्ठ पुलिस व नागरिक अधिकारी मौजूद थे।

इन 119 आवासीय भवनों में 77 टाइप-2, 33 टाइप-3, दो टाइप-5 तथा 7 टाइप-6 आवास शामिल है।

इन आवासों का निर्माण कुल 4,58,42,781 रुपये की लागत से किया गया है।

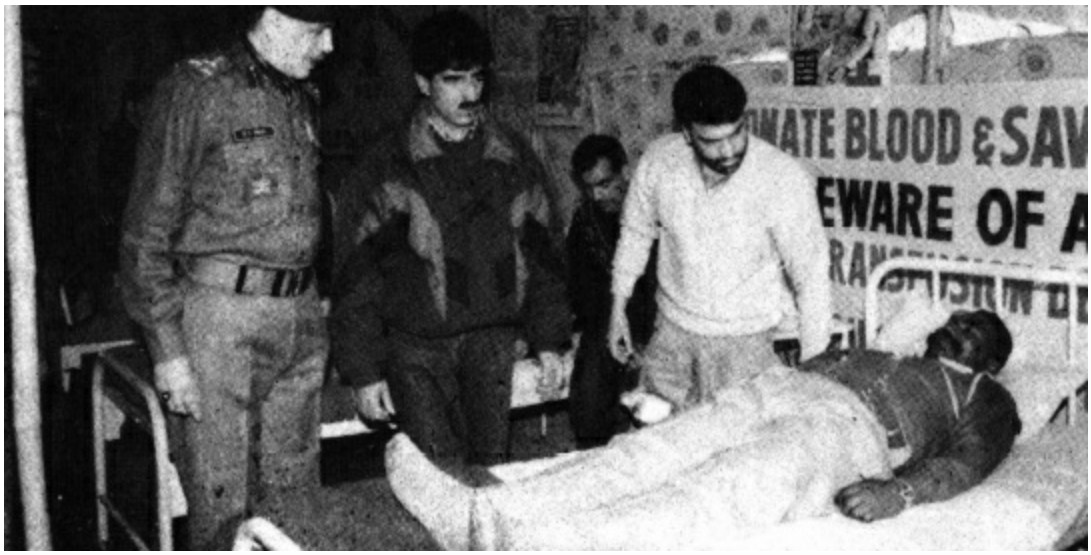


आवासीय भवनों का उद्घाटन करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

28 बटालियन द्वारा रक्तदान शिविर का अयोजन

श्रीनगर स्थित बल की 28 बटालियन ने 31 मार्च, '99 को अपना 23वां स्थापना दिवस मनाया। इस मौके पर टेगौर हाल में स्थानीय रेड क्रास तथा रक्त बैंक के सहयोग से एक रक्तदान शिविर का अयोजन किया गया । रक्तदान शिविर का उद्घाटन उपमहानिरीक्षक (परिचालन) श्री आर.सी. पुरी ने किया। इस मौके पर सौ से अधिक कार्मिकों ने रक्तदान किया।

इस मौके पर बड़ा खाना तथा एक सांस्कृतिक कायक्रम का आयोजन भी किया गया, जिसमें महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर श्री सी.एम. पांडेय तथा महानिरीक्षक काशमीर पी.एल.गिल ने भी भाग लिया।



28 बटालियन द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर का अवलोकन करते उप महानिरीक्षक *(*परिचालन*)* श्रीनगर श्री आर.सी. पुरी

सी.आर.पी.एफ. ने 42वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता जीती

42वीअखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता का अयोजन 21–25 अप्रैल, –99 तक आईटीबीपी कैम्प भानू (चंडीगढ़) में किया गया। हरियाणा के राज्यपाल महामहिम श्री महावीर प्रसाद द्वारा प्रतियोगिता का उद्घाटन कया गया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सहित 25 टीमों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। के.रि.पु. बल की कम्प्यूटर टीम का गठन ब्रिगेडियर जे.एस. साहनी, उप निदेशक (संचार) के निर्देशन में कम्प्यटर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए किया गया था।

श्री ए.आर. आलम, सहायक कमान्डेन्ट के नेतृत्व में के.रि.पु. बल की टीम को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ तथा के.रि.पु. बल की टीम के निरीक्षक अजय द्विवेदी–ईडीपी सैल. महानिदेशालय, हवलदार सावित्री रमोला–ईडीपी सैल महानिदेशालय तथा उप नि(मं.) वेणू गोपाल–जीसी आवडी को क्रमशः प्रोग्रामिंग, डाटा एन्ट्री और वर्ड स्टार में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। के.रि.पु. बल की टीम ने प्रतियोगिता के कुल 4 स्वर्ण पदक में 3 स्वर्ण पदक जीत कर चैम्पियन ट्राफी जीती।



सहायक कमांडेंट ए.आर. आलम को विजेता ट्राफी प्रदान करते हुए भा.ति.सी. पुलिस के महानिदेशक श्री गौतम कौल

के.रि.पु. बल की टीम द्वारा दूसरी बार इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। के.रि.पु. बल द्वारा वर्ष 1994 में प्रथम बार चैम्पियनशिप ट्राफी जीती गयी थी।

प्रतियोगिता के अंत में श्री गौतम कौल, भा.पु.से., महानिदेशक भारत तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा सूचना तकनीकी क्षेत्र में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा अर्जित उपलब्धियों की भूरि–भूरी प्रशंसा की गई।

टीम के वापस आने पर महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने भी टीम के सदस्यों की प्रशंसा की तथा भविष्य में भी इसी तरह से कार्य कुशलता दिखाने पर जोर दिया।

के.रि.पु. बल महानिदेशक ने खिलाड़ियों को बधाई दी

मेलबोर्न आस्ट्रेलिया में हुए राष्ट्रकुल खेलों में पदक प्राप्त करने वाले केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के खिलाड़ियों को बल के मुख्यालय में के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने बधाई दी।

इन खेलों में भाग लेने वाले बल के चार खिलाड़ियों में से महिला भारोत्तोलक एन. कुंजारानी देवी ने 48 कि.ग्रा. श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता, जबकि 69 कि.ग्रा. श्रेणी में नीलम लक्ष्मी तथा 53 कि.ग्रा. श्रेणी में नंदिनी देवी ने भी स्वर्ण पदक जीते।

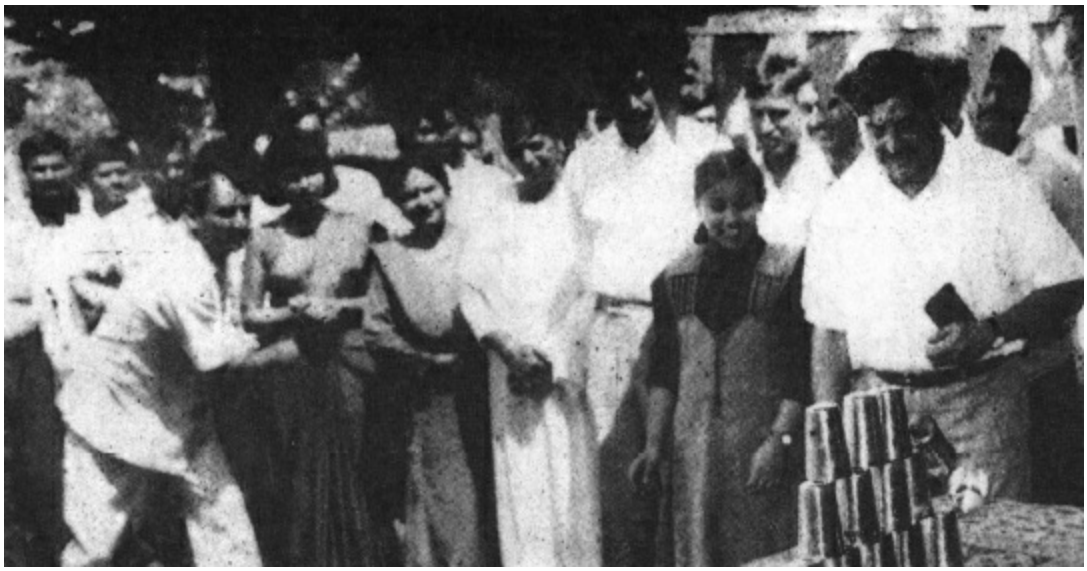


महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल के साथ पदक विजेता खिलाड़ी

के.रि.पु. बल कार्मिकों ने अंगदान की प्रतिज्ञा ली

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 119 अधिकारियों और जवानों ने अपने नेत्र, किडनी, हृदय तथा गुर्दे आदि अंगों को मृत्यु उपरांत दान करने को शपथ ली।

यह अनूठा आयोजन के.रि.पु. बल की 112 बटालियन की 8वीं वर्षगांठ के अवसर पर 23 अप्रैल '99 की शाम नई दिल्ली महावीर नगर स्थित बटालियन मुख्यालय पर हुआ। बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा ने पूर्ण रूप से भरे हुए सभी शपथ पत्र अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के गेस्ट्रोइनटेस्टीनल सर्जरी एण्ड लीवर प्लांटेशन इंस्टीट्यूट डिर्पाटमेंट के एसोसिएट प्रोफेसर डा. पियुष कुमार साहनी को सौंपे। इस मौके पर श्री सिन्हा ने अंगदान करने वाले कार्मिकों को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान द्वारा जारी डोनर कार्ड भी सौंपे। इस मौके पर आयुर्विज्ञान संस्थान के एसोसिएट प्रोफेसर डा. गिरिश पाण्डे भी मौजूद थे।



112 बटा. की *8*वीं वर्षगांठ के मौके पर कई खेलों का आयोजन भी किया गया

अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुए श्री डी.पी. सिन्हा ने मानव जीवन की बेहतरी के लिए इस प्रकार के आयोजनों की जरूरत पर प्रकाश डाला। इस पवित्र कार्य के आयोजन के लिए डा. साहनी ने के.रि.पु. बल अधिकारियों के प्रयासों की प्रशंसा की। अपने स्वागत भाषण में 112 बटालियन के कमांडेट श्री हेमराज ने कहा कि भविष्य में बल के और अधिकारी और जवान अपने अंगदान करेंगे।

के.रि.पु. बल ने अखिल भारतीय पुलिस खेलों की कबड्डी प्रतियोगिता जीती

8से 13 मार्च, '99 तक पूणे, महाराष्ट्र में हुयी अखिल भारतीय पुलिस खेलों को कबड्डी प्रतियोगिता के.रि.पु. बल ने पंजाब पुलिस के मुकाबले 33–19 अंकों से जीत ली। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली बल को कबड्डी टीम में निम्न खिलाड़ी शामिल थे।

निरीक्षक महेन्द्र सिंह, हवलदार अंगद सिंह, हवलदार पी. बलेटेठस, हवलदार ए. जया कुमार, हवलदार योगेन्द्र कुमार, हवलदार कुलदीप सिंह, लांस नायक सुरेन्द्र कुमार, लांस नायक सुरेश कुमार, सिपाही सतीश, सिपाही सुरेश कुमार, सिपाही बी.एफ. बलेटेन्श, सिपाही हरविन्द्र सिंह तथा सिपाही सुन्दर सिंह, श्री अमर सिह, सहायक कमांडेट।



बल की विजेता कबड्डी टीम

के.रि.पु. बल तैराकी प्रतियोगिता उत्तरी सेक्टर ने जीती

नई दिल्ली, आर.के.पुरम तरण ताल में 16 से 18 अप्रैल तक खेली गयी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 9वीं अंतर सेक्टर तैराकी प्रतियोगिता की चैंपियनशिप शील्ड उत्तरी सैक्टर ने 136 अंग प्राप्त कर जीत ली। 135 अंकों के साथ बिहार सेक्टर दूसरे स्थान पर रहा। पूर्वी सेक्टर 93 अंक प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहा। उत्तरी सेक्टर के दीपक कुमार प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किये गये। उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी. पी. सिन्हा इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को ट्राफियां और पुरस्कार भी प्रदान किये।

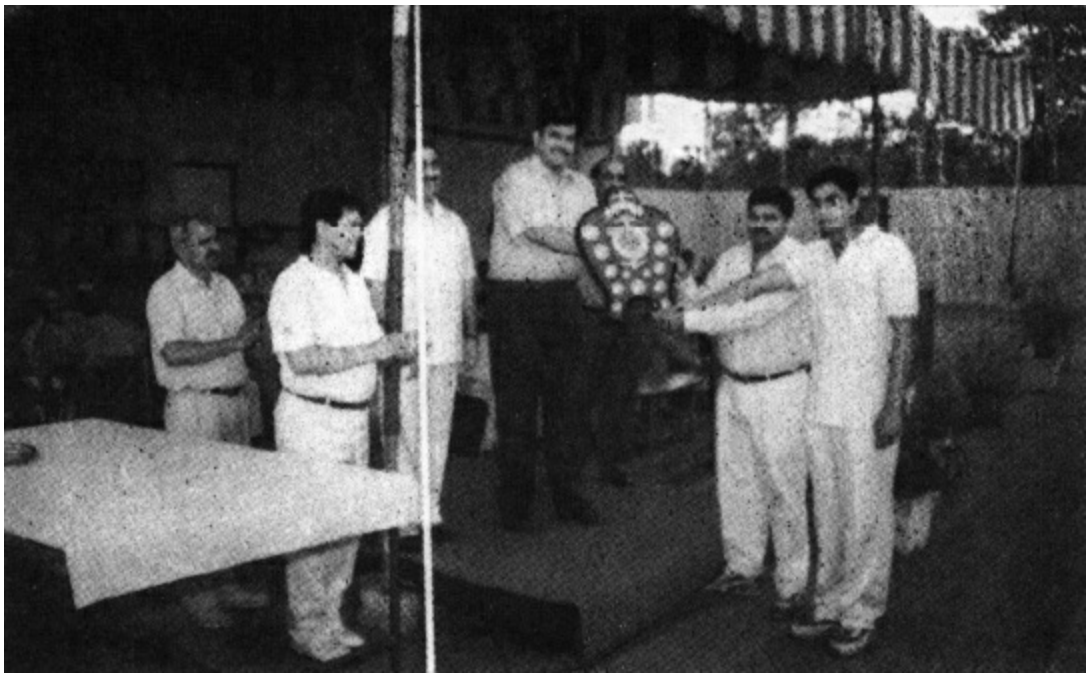
प्रतियोगिता के अंतिम दिन हुए फाइनल मुकाबलों के परिणाम इस प्रकार रहे :–

100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक

प्रथम - दीपक कुमार - उत्तरी सेक्टर

द्वितीय - प्रेमनंद - दक्षिण सेक्टर

तृतीय - उमेश टोकस - पश्चिमी सेक्टर



उत्तरी सेक्टर को विजेता ट्राफी प्रदान करते उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा

50 मीटर फ्रीस्टाइल
प्रथम - एलविस अली - पूर्वी सेक्टर
द्वितीय - सूरज प्रकाश - बिहार सेक्टर
तृतीय - दीपक कुमार - उत्तरी सेक्टर
50 मीटर बैक स्ट्रोक
प्रथम - राजा राम - उत्तरी सेक्टर
द्वितीय - प्रेमानंद - दक्षिण सेक्टर
तृतीय - युद्ववीर टोकस - बिहार सेक्टर
4 × 100 मीटर फ्रीस्टाइल
प्रथम - उत्तरी सेक्टर
द्वितीय - पूर्वी सेक्टर
तृतीय - बिहार सेक्टर

के.रि.पु. बल के *14* कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 14 कार्मिकों को भारत के राष्ट्रपति ने शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया है। इन कार्मिकों को यह सम्मान जम्मू-कश्मीर तथा उत्तर पूर्वी राज्यों में आतंकवादियों के विरूद्ध दिखायी गयी अद्वितीय वीरता, साहस एवं कर्त्तव्य परायणता के लिए दिया गया है।

पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं:-

सहायक कमांडेट आनंद सिंह (5 बटा.), लांस नायक डी.आर. लश्कर (5 बटा.), लांस नायक ए. चौधरी (5 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी आर.एस. मेहरा (53 बटा.), लांस नायक सुलेमान खाम (53 बटा.), लांस नायक गुमान सिंह (53 बटा.), कांस्टेबल एन. सिल्वा राज (68 बटा.), नायक एन.डी. जीना (77 बटा.), लांस नायक राधा कृष्णन (77 बटा.), कांस्टेबल जसबीर सिंह, (77 बटा.), कांस्टेबल पी.सी.के. कुट्टी (77 बटा.), डिप्टी कमांडेट रामा शंकर राय (133 बटा.), लांस नायक ओंकार सिंह (133 बटा.) तथा कांस्टेबल अजीत कुमार सिंह (133 बटा.)

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (गृह मंत्रालय)
पुलिस से संबंधित हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकों के लिए



पं. गोविन्द वल्लभ पंत पुरस्कार योजना

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार न्यायिक विज्ञान, पुलिस प्रशिक्षण, पुलिस प्रशासन, पुलिस अन्वेषण, अंगुलिछाप, अपराध शास्त्र तथा अन्य पुलिस से संबंधित विषयों पर हिन्दी में उत्कृष्ट मूल पुस्तकें लिखने अथवा अनुवाद करने के लिए सृजनशील लेखकों और अनुवादकों को उपर्युक्त योजना के द्वारा प्रोत्साहित करता रहा है। इस योजना के निम्नलिखित दो भाग हैं :

भाग - 1

पुलिस से संबंधित विषयों पर हिन्दी की प्रकाशित पुस्तकों के लिए निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं :-

1. मूल हिन्दी पुस्तकें : 5 पुरस्कार, 10,500 रु. का प्रत्येक
2. अनूदित हिन्दी पुस्तकें : 2 पुरस्कार, 4500 रु. का प्रत्येक

भाग - 2

ब्यूरो पुलिस से संबंधित किसी विषय पर पुस्तक लिखवाने के लिए प्रति वर्ष पन्द्रह हजार रुपये तक का एक पुरस्कार भी प्रदान करता है जिसके लिए इस वर्ष का विषय है "नई सहस्राब्दि में पुलिस कैसी हो"

इस पुरस्कार योजना में भाग लेने के लिए निम्नलिखित शर्तें हैं :-

1. इस योजना में भारत के सभी नागरिक भाग ले सकते हैं।
2. योजना के प्रथम भाग में वे सभी पुस्तकें शामिल की जाएगी जो 31.12.98 तक प्रकाशित हुई हैं।
3. पांडुलिपियां भी प्रविष्टि के रूप में भेजी जा सकती है, परन्तु यदि विचार करने के बाद इन्हें पुरस्कार के लिए अनुमोदित किया गया तो पुरस्कार राशि केवल पांडुलिपि के प्रकाशन के बाद ही दी जाएगी। प्रकाशन करवाने की व्यवस्था स्वयं लेखक/अनुवादक को करनी होगी। भाग-2 के अंतर्गत निर्धारित विषय पर लिखित व पुरस्कृत पुस्तक के प्रकाशन का निर्णय मूल्यांकन समिति स्वयं करेगी।
4. पुस्तकों/पांडुलिपियों की तीन-तीन प्रतियां निर्धारित प्रपत्र के साथ इस ब्यूरो को भेजी जाएगी। ये पुस्तकें/पांडुलिपियां वापिस नहीं की जाती है। पांडुलिपि की तीन प्रतियां टाइप होनी चाहिए।
5. पुस्तकें लगभग 100 पृष्ठों की अवश्य होनी चाहिए।
6. योजना के भाग-2 के लिए आवश्क है कि लेखक उपर्युक्त विषय पर विस्तृत रूपरेखा और अपने बायोडेटा की तीन-तीन प्रतियां भेजे।
7. इस योजना में वे पुस्तकें शामिल नहीं की जाएगी जिन पर पहले ही भारत सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा अन्य किसी सरकारी एजेंसी द्वारा कोई पुरस्कार प्रदान किया जा चुका हो अथवा इसके लिए कोई आर्थिक सहायता प्राप्त हुई हो।

योजना के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकें/रूपरेखाओं का मूल्यांकन एक मूल्यांकन-समिति द्वारा किया जाता है जिसका निर्णय अंतिम और बाध्यकर होगा। यदि समिति निर्णय लेती है कि कोई पुस्तक अपेक्षित स्तर की नहीं है तो उसे अधिकार है कि वह कोई भी पुरस्कार घोषित न करे अथवा पुस्तक के स्तर को ध्यान में रखते हुए पुरस्कार की राशि कम कर दे।

भेजने की अंतिम तिथि

उपर्युक्त संदर्भ में पुस्तक अथवा पांडुलिपि अथवा रूपरेखाएं ब्यूरो के कार्यालय

में 30.9.99 तक अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें :-

संपादक हिन्दी

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, ब्लाक-11, 3/4 मंजिल, लोदी रोड, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, नई दिल्ली-110003

प्रपत्र

1. पुस्तक का नाम और विषय :
2. पुस्तक का संस्करण व वर्ष :
3. लेखक/अनुवादक का नाम और पूरा पता :
4. प्रकाशक का नाम और पता :
5. रायल्टी पाने वाली संस्था :
   अथवा व्यक्ति का नाम और पूरा पताः
6. (क) क्या यह रचना मूल अथवा : अनूदित है ?
   (ख) यह अनूदित कृति है तो मूल : पुस्तक और उसके लेखक और प्रकाशक का पूरा पता
7. प्रमाणित किया जाता है कि यह अनूदित कृति है तथा इसके लेखक और प्रकाशक से हिन्दी अनुवाद तथा प्रकाशित करने की अनुमति ले ली गई है।
8. प्रमाणित किया जाता है कि इस पुस्तक की मूल कृति, अनुवाद अथवा पांडुलिपि पर भारत सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा किसी अन्य एजेंसी द्वारा कोई पुरस्कार अथवा अन्य किसी तरह की कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं है।

दिनांक

हस्ताक्षर

(लेखक अनुवादक)

के.रि.पु. बल ने किया तालाब का जीर्णोद्धार

जगदीश मालवीय-सहा. जन सम्पर्क अधिकारी, नीमच

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अतिरिक्त उप पुलिस महानिरीक्षक श्री अवस्थी के मार्गदर्शन में जवानों की सच्ची लगन व मेहनत से करीब चार वर्ष पहले ओलावृष्टि के कारण क्षतिग्रस्त हुए 1.20 वर्ग किमी जल संग्रहण क्षमता वाले 570 मीटर लंबे और 5.50 मीटर उंचे जलाशय की क्षतिग्रस्त पाल की मरम्मत की गई, वहीं तालाब के

गहरीकरण का कार्य भी कुछ ही दिनों में पूरा कर लिया गया है। अब लेबड़ा तालाब का जीर्णोद्धार हो जाने से इसमें 2.00 मि.घनफीट पानी जमा होगा जिससे के.रि.पु. बल परिसर एवं लेवड़ा गांव के आसपास के क्षेत्र में भूजलन स्तर में वृद्धि होगी और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल परिसर के कुओं व नलकूपों में जल स्तर बढ़ेगा। इससे गर्मी के दिनों में भी क्षेत्र के मवेशियों को पीने का पानी सुलभ हो सकेगा। नीमच शहर से लगे लेबड़ा जलाशय के जीर्णोद्धार की कहानी भी अनूठी है। जिला कलेक्टर श्री पाराशर ने जब क्षेत्र में गिरते भूजल स्तर तथा पेयजल की समस्या को देखा और जाना तो उनके मन में विचार आया कि इस समस्या के स्थाई समाधान के लिए जरूरी है बरसात के बहते हुए पानी को ज्यादा से ज्यादा रोका जाए। इसके लिए उन्होंने पुराने तालाबों का जन सहयोग से जीर्णोद्धार और गहरीकरण के कार्य को प्राथमिकता से करवाने का मन बनाया। जिल में भूजल संरक्षण एवं जल स्तर में वृद्धि के लिए पुराने तालाबों के जीर्णोद्धार की अभिनव शुरूआत हुई लेबड़ा तालाब से जब प्रशासन के ध्यान में आया कि यह जलाशय काफी बड़ा है और मरम्मत के अभाव में अनुपयोगी है तो इस तालाब को जीर्णोद्धार करने की ठानी। इसके लिए न तो कोई धनराशि उपलब्ध थी और न ही संसाधन लेकिन जिला प्रशासन तथा केरिपु बल नीमच की दृढ़ इच्छा शक्ति व लगन के सामने न तो धन की कोई कमी आड़े आयी और न ही सीमित संसाधनों की। इस योजना के क्रियान्वयन में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केन्द्र नीमच के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री जी.जी.ए. शर्मा और एडिशनल डी.आई.जी. श्री एन.के.अवस्थी ने जिला प्रशासन को हर संभव सहयोग का विश्वास दिलाया और इस तालाब की क्षतिग्रस्त ताल की मरम्मत तथा गहरीकरण के लिए बल के जवानों को श्रमदान के लिए लगाया।

प्रशासन की पहल पर इस कार्य के लिए नगरपालिका नीमच से ट्रेक्टर व डम्पर, सीसीआई तथा विक्रम सीमेंट ने डम्पर डीजल की सेवाएं उपलब्ध कराई। वहीं क्षेत्रीय विधायक श्री नंदकिशोर पटेल तथा ग्रामीणों ने भी इस कार्य में हर संभव सहयोग किया। इस तरह कलेक्टर श्री पाराशर की पहल रंग लाई और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस व नगर पालिका नीमच, सीसीआई नयागांव व जलसंसाधन विभाग की संयुक्त प्रयास से आज से करीब एक माह पूर्व इस टूटे हुए लेवड़ा तालाब की मरम्मत व गहरीकरण के कार्य की शुरूआत हुई। देश की सुरक्षा व कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए हाथ में बंदूक थामने वाले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के जांबाज जवानों ने बल के उप पुलिस महानिरीक्षक श्री शर्मा तथा अतिरिक्त उप पुलिस महानिरीक्षक श्री अवस्थी के मार्गदर्शन में श्रमदान के लिए अपने हाथों में गैंती फावड़ा व कुदाल थाम ली और तन मन धन से इस तालाब के जीर्णोद्धार में जुट गए। प्रतिदिन सुबह और अपराहन दो-दो पारियों में केरिपु बल ग्रुप केन्द्र, सीटीसी, आरटीसी, फोर सिगनल और 112 वीं बटालियन के करीब चालीस-चालीस जवानों की करीब एक माह तक की मेहनत रंग लाई और देखते ही देखते लेवड़ा जलाशय के जीर्णोद्धार का कार्य पूरा हो गया। बल के मेहनतकश जवानों ने सबसे पहले से लेवड़ा तालाब की क्षतिग्रस्त पाल की दुरूस्तीकरण के लिए 10 फीट लंबी व गहरी नींव कर उसकी मिट्टी बाहर निकाली

और पानी डालकर मिट्टी दबाकर उसकी मजबूत नींव की भराई की। फिर शुरू हुआ इसकी पाल की ऊंचा करने और तालाब के गहरीकरण का कार्य । इस तरह करीब एक माह तक चले इस कार्य में केरिपु बल ग्रुप केन्द्र ने कमाण्डेंट अब्दुल मजीद, उप कमांडेट गोपीचंद के निर्देशन व उपस्थिति बल के 80 जवानों के द्वारा प्रतिदिन किए गए श्रमदान, जल संसाधन विभाग के अनुविभागीय अधिकारी जी.के. मुदड़ा व उपयंत्री जे.सी. जोशी के तकनीकी मार्गदर्शन, नगरपालिका के टेंकरों व ट्रेक्टरों तथा सीसीआई एवं विक्रम सीमेंट के जम्पर व डोजर की मदद से लेवड़ा तालाब के जीर्णोद्धार का कार्य पूरा हुआ है। इस तालाब के जीर्णोद्धार हो जाने से अब आगामी वर्षाकाल में पूरे तालाब में जल भरने की संभावना है। जिले के नागरिक भूजल संरक्षण की दिशा में किए गए इस अनुकरणीय कार्य से प्रेरणा लेंगे और व्यापक जनभागीदारी से अपने क्षेत्र के ऐसे और भी जलासयों के जीर्णोद्धार की पहल कर जल संरक्षण के कार्यो में भागीदार बनेंगे।

जिले में भूजल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जन सहयोग से किए जा रहे प्रयासों के इस क्रम में 15 मई से जावद तहसील क्षेत्र के दड़ोली तालाब के जीर्णोद्धार की शुरूआत की जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की केंद्रीय जोखिम निधि से माह अप्रैल '99 में मृत्यु के मामलों में कुल 25,20,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के 6 मामलों में कुल 1,26,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

इसी प्रकार जोखिम निधि "बी" से माह अप्रैल '99 में इसके 6 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 2,40,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

के.रि.पु. बल का मानवतावादी कार्य

22 मार्च, '99 को ग्रुप केंद्र नागपुर के नजदीक स्थित महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा कम्पनी की ट्रेक्टर फैक्ट्री में सुबह अचानक आग लग गई। कुछ सूत्रों द्वारा जैसे ही ग्रुप केन्द्र नागपुर को पता चला, ग्रुप केन्द्र की पानी की गाड़ी और जवानों की एक प्लाटुन तुरन्त तत्परता से उस जगह पर भेजी गई, जिन्होंने कम्पनी में लगी आग पर काबू पाने और बुझाने में मदद की। जिससे आग पर जल्दी ही काबू पा लिया गया।

महिन्द्र एण्ड महिन्द्रा कम्पनी के मैनेजर ने बल के जवानों द्वारा की गई इस

तत्काल कार्यवाही की भरपूर प्रशंसा की।

माह अप्रैल, '99 में मृत बल के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अप्रैल, '99 में मृत्यु को प्राप्त हुए। के.रि.पु. बल समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

इंस्पेक्टर (म.) बलवंत सिंह (महानिदेशालय), सब इंस्पेक्टर रतन सिंह (128 बटा.), बारबर मूल चंद (9 बटा.), है.का./रे. आपरेटर बने सिंह (सिंगनल बटा.), वी. मदीअयगन (32 बटा.), इंस्पेक्टर प्रताप सिंह (6 बटा.), है. का. लालजीत प्रसाद (52 बटा.), कां/टेलर रूद्रप्रसाद द्विवेदी (ग्रुप केन्द्र लखनऊ), कां. कुशल सिंह (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर), स.उ.नि. (मं.) शंकर (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), कां. रंजीत सिंह (ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट), कां. पी. भुवन (6 बटा.), कां. नूर मोहम्मद (9 बटा.), कां. रूपलाल भील (9 बटा.), है.कां. बलवान सिंह (55 बटा.), कां. रामनाथ राई (94 बटा.) है.कां./ फिटर एस.टोपनो (116 बटा.), है.कां. मोहम्मद हनीफ (118 बटा.) तथा कांस्टेबल तरसेम लाल (120 बटा.)

आर.ए.एफ. के जवानों ने पाया आग पर काबू

रेपिड एक्शन फोर्स के जवान अगर समय पर नहीं पहुंचते तो साकची बाजार की तबाही का मंजर और भी दुखदायी होता। पूर्वी सिंहभूम के आरक्षी अधीक्षक राकेश कुमार मिश्रा ने 1 अप्रैल '99 को करीब ग्यारह बजे रेपिड एक्शन फोर्स के टेल्को स्थित मुख्यालय को घटना की जानकारी देते हुए सहयोग की गुजारिश की। मात्र बीस मिनट के बाद ही आर.ए.एफ. के जवानों ने अग्निशामक यंत्र तथा आवश्यक उपकरण के साथ मोर्चा बंदी कर ली। आग की तेज उठती लपटों की तपिश इस कदर तीव्र थी कि तमाशबीनों के चेहरे झुलसे जा रहे थे। आर.ए.एफ. के जवान इसकी परवाह किये बगैर आग की लपटों पर काबू पाने के लिए जूझ रहे थे। आर.ए.एफ. की के जवान अपने साथ लाये उपकरणों से आग पर काबू पाने का प्रयास कर रहे थे। वे अग्निशामक विभाग के कर्मचारियों को हटाकर उनके दायित्व का निर्वाह भी कर रहे थे। आर.ए.एफ. के उप समादेष्टा नीरज कुमार, सहायक समादेष्टा समता सिंह, सहायक समादेष्टा नसीम अहमद तथा सहायक समादेष्टा अर्जुन सिंह अपने मातहतों को आवश्यक निर्देश भी दे रहे थे। आर.ए.एफ. के जवान घटना स्थल से जब वापस हुए उस समय तक आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया था। आर.ए.एफ. के जवानों

के साहस की दुकानदारों व स्थानीय लोगों ने सराहना की।

कविताएं

सिपाही का पत्र पुत्र के नाम

ऐ मेरी जान, मेरे लाल, मेरे नूरे-नज़र,

डुब-डंबा आईं मेरी आंखें तेरा ख़त पढ़ कर।

तेरी तस्वीर भी देखी, तेरी तहरीर के साथ,

चांद हो जैसे चमकता हुआ तनवीर के साथ।

मैट्रिक पास हुआ बेटा, मुक्कद्दर मेरा,

तोड़ देगा हर एक दीवार सिकंदर मेरा।

चक्र भारत का दहकता हो तेरे माथे पर,

सैकड़ों तारे चमकते हों तेरे कांधे पर।

मैं न पढ़ पाया था, उस वक़त था गुलामी का चलन,

तुझ को पढ़ना है बहुत अब है ये आज़ाद वतन।

मैं सिपाही हूं मगर तुझ को है बेहतर होना,

तू मेरे देश का सब से बड़ा अफ़्सर होना।

तूने क्यों मुझको लिखा है कि गरानी है बहुत,

सांब्जेयां तेज हैं दालों पे जवानी है बहुत।

लाला-बनियों की नज़र होती है तलवारों पर।

मेरी सरहद पे यूं ही अबरे-करम बरसेंगे,

नेता लड़वाते हैं, और लूटते हैं, उन पे तो ग़म बरसेंगें।

काले जिस्मों पे ये खद्दर के उजयारे कपड़े,

मुर्दा जिस्मों को कफ़न चारों तरफ से जकड़े।

कुर्सी गद्दारों की एक रोज़ निकल जाएगी,

मेरी सीमाओं पे हर सुबह मुसकुराएगी।

-हसन खुर्शीद

निः स्वार्थ भावना

तेजरफ्तार से चलते जीवन की
सुख सुविधाओं की लालसा में भागता मानव हैं
कहां फुरसत इतनी है जो पलट कर देखे।
कितना मतलबी सा लगता है
अपने ही स्वाभिमान को संजोये रखने को।
लोग वो भी तो हैं जो सजाये
सन्तुष्टी, चेहरे पर लिये उम्मीदों के पल।
हर को देखते प्यार भी मुस्कराहट लिये।
प्यार बांटता और प्रेम फैलाता सम्भलता
हुआ दूसरों को भी सहारा देता।
लगता है कि, नहीं कुछ चाहिये उन्हें
सिवाय मानवता की चाहत के, जीवन बिताने के।
सन्तुष्टी का इन्तजार करके

बैठे हैं वे निः स्वार्थ आशा में, कि
बैठे रहो इस दरिया किनारे कभी तो आयेगी लहर।
क्योंकि आशाओं, उम्मीदों और
विश्वास के सहारे टिकी है जमी
निः स्वार्थ क्षितिज, आकाश।
जिन्दा है ये जहां मात्र विश्वास पर।
कद्र क्यूं न करें हम प्यार, प्रेम की
विश्वास विस्तार, क्यूं न करें हम जनहित का
जैसे सबक आर.ए.एफ. और सी.आर.पी.एफ का
निस्वार्थ जन सेवा जन कल्याण का।
उठाये बीड़ा सेवा-भक्ति और प्रेम भावना का
स्वस्थ शहर और स्वस्थ सभ्य गांव का।
दिन हो या रात, धूप हो या बरसात।
सोते रहो तुम, देश वासियों चैन से
क्योंकि जागी है सी.आर.पी.एफ. और आर.ए.एफ.
सुख, शांति, बलिदान का निः स्वार्थ ही प्रतीक है इसका।
बच्चों को टीके लगाने का, निरक्षरों को साक्षर बनाने का
बाढ़ पीड़ितों, तुफान ग्रस्तों को बचाने का।
बूढ़े, बिमारों को बचाने का
साफ-सफाई अभियानों का और
आगजनी, सांप्रदायिक झगड़ों से बचाने का।
एक कदम फिर भी सबसे आगे
सदा रही है सदा रहेगी, कदम मिलाके
आर.ए.एफ. और सी.आर.पी.एफ. एक कदम आगे।

सफाई कर्मचारी कमल ताम्बोली ई कम्पनी, 3 बटा.
सी.आर.पी.एफ.



पूणे ग्रुप केंद्र द्वारा *19* मई, *'99* को आयोजित मुफ्त दंत चिकित्सा शिविर में अपने दांतों का इलाज कराते रोगी

रजि. न. 4767/87



अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट की ट्राफी जीतने वाली टीम महानिदेशालय में महानिदेशक श्री एम.एन. समरवाल के साथ

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 13 अंक - 4 30 जून, 1999



के.रि.पु. बल कार्मिकों के बच्चों के लिए दिल्ली में बनाए गये छात्रावास का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



सिगनल ग्रुप केंद्र रांची में सहायक कमांडेट स्वर्गीय राजमुकुंद की पत्नी श्रीमति सुवर्चला सिंह के एस.टी.डी. बूथ का उद्घाटन करते हुए बिहार क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–13 अंक–4
30 जून, 1999
10 आषाढ़, शक 1921

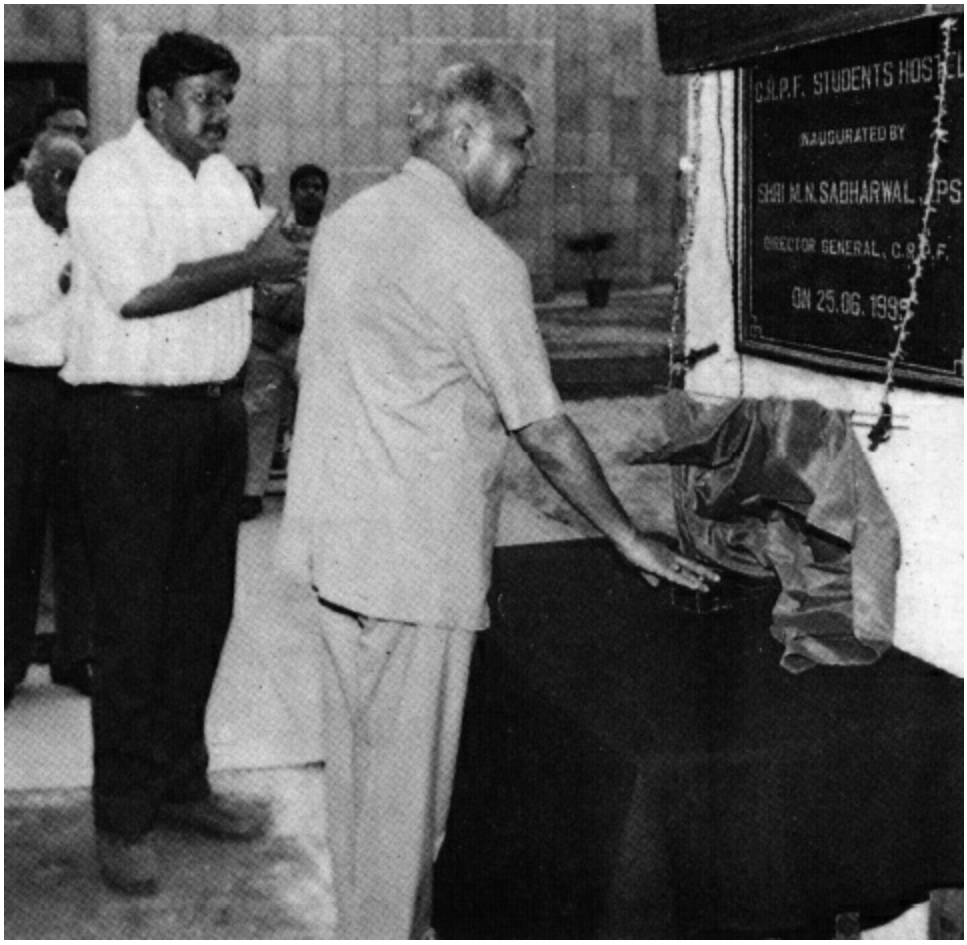
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72



इस अंक में

के.रि.पु. बल कार्मिकों के कालेज जाने वाले बच्चों के लिए छात्रावास

राष्ट्रपति का विशिष्ट सेवा पुलिस पदक पाने वाले कार्मिकों को रेलवे किराये में छूट

जवान देश की सुरक्षा के प्रति सदैव सजग रहे

मंत्रालयिक कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति नीति

आर.ए.एफ. ने कबड्डी प्रतियोगिता जीती

हिंदी में काम के लिए के.रि.पु. बल को द्वितीय स्थान की शील्ड

आश्रिता के लिए एस.टी.डी. बूथ

के.रि.पु. बल की नौंवी क्षेत्रीय जिमनास्टिक प्रतियोगिता

श्रीनगर में हिंदी कार्यशाला

कविताएं

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

के.रि.पु. बल कार्मिकों के कालिज जाने वाले बच्चों के लिए दिल्ली में छात्रावास

वजीराबाद दिल्ली में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों के कालेज में पढ़ने वाले बच्चों के लिए 1.87 करोड़ रुपये की लागत से एक छात्रावास का निर्माण किया गया है, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने 25 जून '99 को इस छात्रावास का उद्घाटन किया।

इस मौके पर अधिकारियों और जवानों को संबोधित करते हुए श्री एम. एन. सभरवाल ने कहा कि देश की आंतरिक कानून व्यवस्था की स्थितियों पर लगातार बढ़ते दबाव के कारण के.रि.पु. बल की व्यस्तता बहुत बढ़ गयी है। पूरे देश में तैनाती के साथ–साथ बल के कार्मिकों को काफी कठिन एवं तनावपूर्ण स्थितियों में कार्य करना पड़ता है। आर्थिक दिक्कतों के बावजूद अपने कार्मिकों के कल्याण कार्यों के प्रति हम हमेशा सजग रहे हैं और इस पक्ष पर हमेशा ध्यान दिया जाता है। दिल्ली में इस तरह के छात्रावास की जरूरत का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इससे बल के कार्मिकों की लम्बे समय से महसूस की जा रही एक जरूरत काफी हद तक पूरी हो सकेगी।



छात्रावास भवन का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक

इससे पूर्व अपने स्वागत भाषण में बोलते हुए बल के उत्तरी सेक्टर के

महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा ने दिल्ली में इस तरह के छात्रावास की उपयोगिता का जिक्र करते हुए इस कार्य में शामिल सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

ज्ञातव्य है कि 103 आर.ए.एफ. बटालियन स्थल वजीराबाद स्थित इस हास्टल में कुल तीस कमरे हैं। जिन में 40 लड़कों तथा 20 लड़कियों के लिए अलग अलग रहने की व्यवस्था है। प्रत्येक कमरे में दो दो विद्यार्थी रह सकेंगे। इसके अतिरिक्त 100 विद्यार्थियों के लिए मैस तथा क्लब, वार्डन हाउस, दो व्यक्तियों के लिए गेस्ट हाउस तथा शापिंग काम्पलैक्स का निर्माण भी इसी परिसर के अंदर किया गया है।

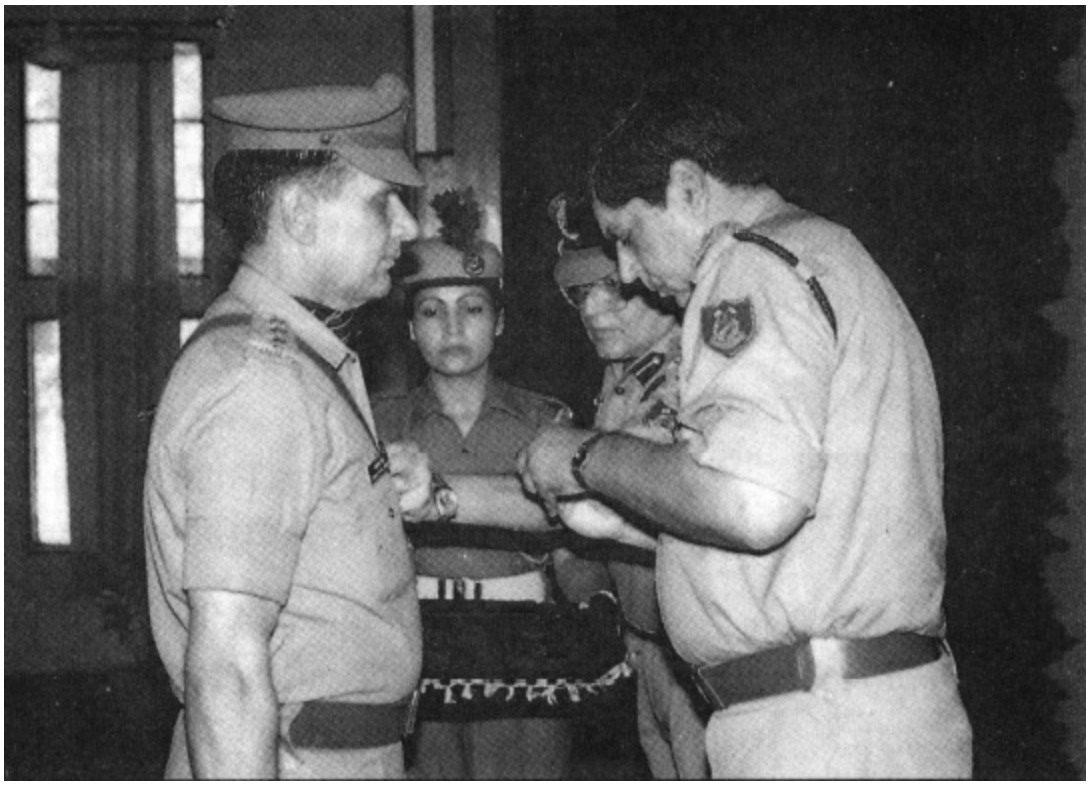
राष्ट्रपति का विशिष्ट सेवा पुलिस पदक पाने वाले कार्मिकों को रेलवे किराये में छूट

60 वर्ष की आयु सीमा पार कर चुके राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवा पुलिस पदक से सम्मानित कार्मिकों को रेल मंत्रालय सभी रेलों के किराये में 30 प्रतिशत तक की रियायत देगा। यह छूट राजधानी तथा शताब्दी रेलों पर भी लागू होगी। यह छूट पदक विजेताओं को गृह मंत्रालय द्वारा जारी फोटो पहचान पत्र दिखाए जाने पर उपलब्ध होगी। संबंधित रेलवे स्टेशन पदक विजेता को इस पहचान पत्र की फोटोप्रति उपलब्ध कराने पर यह छूट देगा। टिकट लेते समय पदक विजेता को पहचान पत्र की मूल प्रति भी दिखानी होगी।

जवान देश की सुरक्षा के प्रति सदैव सजग रहें

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केंद्र रामपुर में 27 मई, 99 की सराहनीय सेवा और बहादुरी का परिचय देने वाले पांच जवानों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर महानिरीक्षक (केन्द्रीय सेक्टर) श्री तिलक काक ने जवानों से उग्रवाद मिटाने और देश की सुरक्षा के प्रति सदैव मुस्तैद रहने का आह्वान किया।

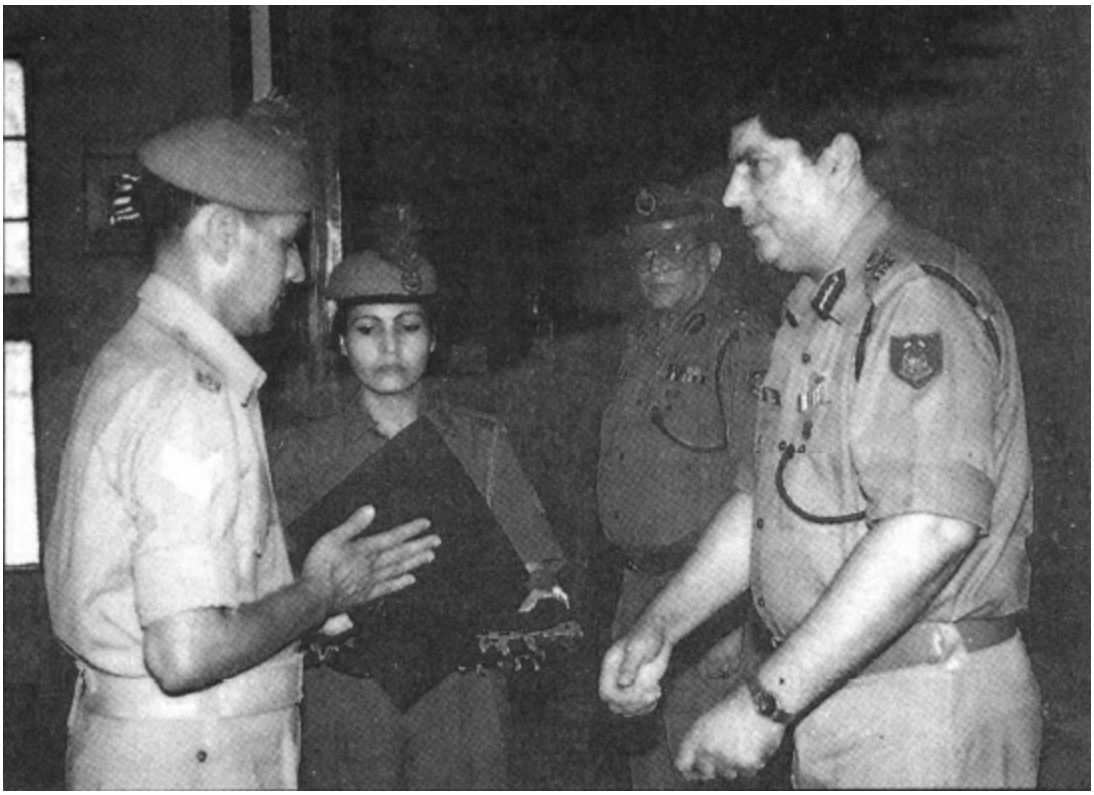
उन्होंने कहा कि हमारी फोर्स के अन्दर जाबांज जवानों की कमी नहीं है। ऐसे जवान समय–समय पर अपने फर्ज को निभाकर बहादुरी का परिचय दे चुके हैं। इसी तरह के पांच जवानों को सम्मानित करने के लिये इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। श्री काक ने फोर्स के बाकी जवानों से भी इसी तरह कर्मठता का परिचय देने को कहा।



निरीक्षक धर्मपाल सिंह को पदक प्रदान करते हुए महानिरीक्षक (केन्द्रीय सेक्टर) श्री तिलक काक

श्री काक ने ग्रुप केंद्र के कुछ बहादुर जवानों के नाम और उनके अच्छे कारनामों का बखान करते हुए आशा जतायी कि सी.आर.पी.एफ. ग्रुप केंद्र के जवान आगे भी अपना, बल व देश का नाम ऊंचा करेंगे। इसके उपरान्त श्री काक के द्वारा सी.आर.पी.एफ. की 21वीं बटालियन के निरीक्षक धर्मपाल सिंह, केन्द्रीय हथियार भंडार (रामपुर) के उपनिरीक्षक जगन सिंह, ग्रुप केन्द्र लखनऊ के हवलदार विस्मिल्ला खां, केन्द्रीय हथियार भंडार के हवलदार आर. मोरा, शिव कुमार और 92वीं बटालियन के सिपाही सहीराम को उनकी सराहनीय सेवाओं और बहादुरी के लिये डिस्क और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

इस दौरान उपमहानिरीक्षक एम. एम. प्रसाद, अपर महानिरीक्षक एस.पी. चावला, तथा श्री एस.के. यादव इत्यादि मौजूद थे ।



लखनऊ ग्रुप केंद्र के हवलदार बिस्मिल्ला खां को सम्मानित करते श्री तिलक काक

मंत्रालयिक कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति नीति

स्थाई आदेश सं. 9/99

मंत्रालयिक कर्मचारियों को विभिन्न संगठनों में प्रतिनियुक्ति पर भेजने के लिए पूर्व में जारी सभी अनुदेशों/आदेशों के अधिक्रमण के निम्नलिखित मार्ग दर्शन निर्धारित किये गये हैं :—

1. नामांकन के लिए पात्रता

(1) **राष्ट्रीय सुरक्षा गारद :**

सभी रैंको के लिए आयु 50 वर्ष से कम

(2) **विशेष कार्य समूह :**

अनुभाग अधिकारी/प्रशासनिक अधिकारी

आयु 45 वर्ष से कम होनी चाहिए

सू*0* मे*0 (*म.*)/*कार्यालय अधीक्षक*/* निरीक्षक *(*मुख्य लिपिक*)*
आयु 40 वर्ष से कम होनी चाहिए

उप निरीक्षक *(*उ.श्रे. लिपिक*)*
आयु 40 वर्ष से कम होनी चाहिए

स.उपनिरीक्षक *(*मं*)/*निम्न श्रेणी लिपिक
आयु 35 वर्ष से कम होनी चाहिए

(3) पिछले 5 वर्ष की सालाना गोपनीय रिपोर्ट की ग्रेडिंग "अच्छी" से कम नहीं होनी चाहिए

(4) प्रतिनियुक्ति के लिए नामित व्यक्ति की रजामंदी ली जानी चाहिए। बहरहाल यदि प्रतिनियुक्ति लोकहित में हो तो कर्मचारी की रजामंदी लिये बिना उन्हें नामांकित किया जा सकता है।

(5) प्रतिनियुक्ति पर कर्मचारी को जिस पद के लिए नामांकित किया जा रहा है वह मूल विभाग में धारित पद के बराबर/उच्च होना चाहिए

(6) प्रतिनियुक्ति के लिए नामांकित कार्मिक सतर्कता दृष्टिकोण से मुक्त होना चाहिए तथा पिछले 5 वर्ष में कोई भी बड़ी सजा नहीं मिली होनी चाहिए।

(7) जिन कार्मिकों के मामलों में प्रतिनियुक्ति पर भेजने के लिए विचार किया जा रहा है वे पिछले 3 वर्ष के दौरान प्रतिनियुक्ति पर नहीं रहे होने चाहिए।

2. प्रतिनियुक्ति का कार्य-काल

(1) प्रतिनियुक्ति पद के लिए उधार लेने वाले विभाग के भर्ती नियमों में निर्धारित प्रतिनियुक्ति अवधि के अनुसार बहरहाल जहां अवधि निर्दिष्ट नहीं की गई हो, वहां प्रतिनियुक्ति की आरम्भिक अवधि 3 वर्ष होगी।

(2) प्रतिनियुक्ति के लिए निर्धारित अवधि से आगे अवधि बढ़ाने के लिए प्रस्ताव पर सहमति देने हेतु विचार तभी किया जाएगा यदि अमुक प्रस्ताव उधार लेने वाले विभाग से सामान्यतः प्रतिनियुक्ति की अवधि समाप्त हाने से छ: महीने पहले प्राप्त होते हैं।

3. राष्ट्रीय सुरक्षा गारद/विषेश कार्य समूह में प्रतिनियुक्ति के लिए कार्मिकों का पैनल बनाना :

राष्ट्रीय सुरक्षा गारद/विशेष कार्य समूह में कार्मिकों की प्रतिनियुक्ति के लिए महानिदेशालय द्वारा पैनल का रख-रखाव किया जाएगा जिसमें प्रतिनियुक्ति पर भेजे जाने वाले कार्मिकों की संख्या निम्न प्रकार निर्धारित की गई है।

राष्ट्रीय सुरक्षा गारद

सहायक कमांडर (मं) :
73 (सू.मे. (मं.)/निरीक्षक (मं) / उप निरी. (मं.)/सउनि (मं.) सहित)
सहायक कमांडर (पीए) :
13 (सू.मे. (आशु.)/निरी. (आशु) उप. निरीक्षक (आशु.) सहित)

विशेष कार्य समूह

नि. सचिव/अनु. अधि/
प्रशा अधि : 05
सू०मे. (का.अ.)
निरीक्षक (मुख्य लिपिक) : 15
उप.नि. (मं)/उ.श्रे.लि. : 12
स.उ.नि. (मं.)/नि.श्रे.लि. : 04
सू.मे. (आशु.)/निरीक्षक
(आशु) : 04
उ.नि. (आशु.) : 01

इसके लिए अंचल/सेक्टर प्रत्येक रैंक के उन 2 कार्मिकों के नामांकन के साथ सर्विस दोजियर निम्नलिखित फार्मेट में प्रत्येक वर्ष नवम्बर महीने में भेजेंगे जो ऊपर निर्धारित अनुसार प्रतिनियुक्ति के लिए शर्तें पूरी कर रहे हैं।

1. क्रम संख्या
2. बल संख्या
3. रैंक तथा नामः
4. जन्म-तिथि/आयुः
5. पिछले 5 वर्ष की सालाना गोपनीय रिकार्ड की ग्रेडिंग :
6. नियुक्ति से लेकर पिछले तैनाती विवरण :
7. प्रतिनियुक्ति ब्यौरे, यदि पूर्व में रहे हों:
8. सम्बद्धता ब्यौरेः
9. नकद पुरस्कार के ब्यौरेः
10. संक्षेप में अपराध का उल्लेख करते हुए : बड़ी छोटी सजाओं की संख्या
11. क्या सर्तकता दृष्टिकोण से मुक्त है ? :
12. अभ्युक्ति, यदि कोई हो।

विशेष कार्य समूह/राष्ट्रीय सुरक्षा गारद के सिवाए अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति के लिए जब कभी भी मांग प्राप्त होगी सभी अंचल/केंद्रों को नामांकन भेजने के लिए अलग से परिचालित किया जाएगा, यदि मंत्रालयिक कर्मचारी अमुक प्रतिनियुक्ति के लिए पात्र होंगे।

4. सामान्य

(1) किसी भी समय प्रत्येक रैंक में विशेष कार्य समूह/राष्ट्रीय सुरक्षा गारद सहित अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति के लिए बल स्तर पर कुल स्वीकृत नफरी का कुल मिलाकर प्रतिशत निम्न प्रकार होगा। यदि प्रतिनियुक्त कार्मिकों की संख्या का प्रतिशत उस रैंक में अधिक हो जाता है तो किसी भी कार्मिक को प्रतिनियुक्त पर जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी :—

संयुक्त सहायक निदेशक से उ.नि. (उच्च श्रेणी लिपिक) : 10 प्रतिशत

सउनि. (नि.श्रे. लिपिक) : 02 प्रतिशत

सू.मे. (आशु.) से उ.नि. (आशु.): 05 प्रतिशत

सू.मे. (हिं.अनु.) से निरीक्षक (हिं.अनु.): 05 प्रतिशत

(2) एक प्रतिनियुक्ति के बाद दूसरी प्रतिनियुक्ति पर जाने के लिए बीच का अंतराल 3 वर्ष का होगा।

(3) जिन्होंने प्रतिनियुक्ति के लिए पहले अपनी इच्छा जाहिर की है तथा चयन के बाद अनिच्छा जाहिर करते हैं तो उनके मामलों में अगले पांच वर्ष के दौरान किसी अन्य प्रतिनियुक्ति के लिए विचार नहीं किया जाएगा। इस प्रकार के मामलों पर निगरानी रखने के लिए संबंधित व्यक्ति की सेवा पुस्तिका में इस आश्य की प्रविष्टि की जाएगी।

(4) प्रवेश ग्रेड अर्थात् स.उ.नि. (मं) ग्रेड में 5 वर्ष से कम नियमित सेवा के कोई भी व्यक्ति प्रतिनियुक्ति के लिए पात्र नहीं होंगे।

आर.ए.एफ. ने आठवीं अंतर सेक्टर कबड्डी प्रतियोगिता जीती

7 से 14 जून '99 तक ग्रुप केंद्र हैदराबाद में हुयी आठवीं अंतर सेक्टर कबड्डी प्रतियोगिता की ट्राफी आर.ए. एफ. सेक्टर ने जीत ली। 14 जून ;99 को आयोजित समापन समारोह में हैदराबाद रेंज के उप महानिरीक्षक श्री टी.पी. दास मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी दिये। प्रतियोगिता में आर.ए.एफ. सेक्टर को प्रथम, दक्षिण सेक्टर की द्वितीय तथा उत्तर पूर्वी सेक्टर को तृतीय स्थान के लिए पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों का चयन केंद्रीय टीम के लिए भी किया गया। इससे पूर्व 7 जून '99 को प्रतियोगिता का उद्घाटन उप महानिरीक्षक हैदराबाद के स्टाफ अधिकारी कमांडेट पोरेद्र प्रताप ने किया। प्रतियोगिता में बल के 11 सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया।

हिन्दी में कार्य के लिए के.रि.पु. बल को द्वितीय स्थान की शील्ड

वर्ष 1996-97 में अपने विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को गृह मंत्रालय ने दूसरी श्रेणी की शील्ड प्रदान की है। विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह के बीच के.रि.पु. बल के महानिरीक्षक श्री ए.एस. गिल को यह शील्ड गृह सचिव श्री कमल पाण्डे ने प्रदान की।

इसके अतिरिक्त हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले कार्मिकों को भी इस समारोह में पुरस्कृत किया गया।



हिंदी में सर्वोच्च कार्य के लिए शील्ड प्राप्त करने वाले अधिकारी गृह सचिव श्री कमल पांडेय के साथ

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परीक्षाओं में सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल का श्रेष्ठ प्रदर्शन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने केन्द्रीय माध्यमिक परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल, रोहिणी, नई दिल्ली के बच्चों तथा उनके शिक्षकों को बधाई दी है।

कक्षा दस की परीक्षाओं में सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के 106 विद्यार्थी शामिल हुए थे, इन सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों में 15 विद्यार्थियों ने सभी विषयों में 75 प्रतिशत से अधिक अंक पाकर विशिष्टता प्राप्त की है, इन में भी विनीत जैन ने विज्ञान विषय में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं।

इस प्रकार कक्षा 12 की परीक्षाओं में शामिल हुए 101 विद्यार्थियों में से 92 ने प्रथमश्रेणी प्राप्त की है तथा नौ द्वितीय श्रेणी से उतीर्ण हुए थे। कुमारी देवयानी डे, जो कि 1997 की कक्षा 10 की परीक्षा में टाप पर रही थी, इस वर्ष भी कक्षा 12 की परीक्षा में जीव विज्ञान में 99 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अग्रणी रही।

आओ हंसे

बस कंडक्टर ने एक जाने-पहचाने यात्री से पूछाः 'क्यों भाई साहब, क्या रात आप सकुशल घर पहुंच गए थे?

'क्यों क्या हुआ?'

'कल रात आपने कुछ ज्यादा ही पी रखी थी।'

'तुम्हें कैसे मालूम हुआ?'

'जब एक स्टॉप से एक देवी जी सवार हुईं तो आपने खड़े होकर उन्हें अपनी सीट ऑफर की थी।'

'इसमें खास क्या बात है? मैं तो हमेशा महिलाओं को सीट आफर करता हूं ।'

'वह तो ठीक है भाई साहब, लेकिन उस समय बस में आप दो ही यात्री थे

–आप और वह महिला।'

आश्रिता के लिए एस.टी.डी. बूथ



एस.टी.डी. बूथ का उद्घाटन करते हुए बिहार क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल विधवा कल्याण योजना के अन्तर्गत श्रीमती सुवर्चना सिंह पत्नी स्वर्गीय राजमुकुन्द पूर्व सहायक कमान्डेट 52 बटालियन केरिपुबल, जिनका आकस्मिक निधन जम्मु-कश्मीर में डयुटी के दौरान हो गया था, को सिगनल ग्रुप केन्द्र केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (दूर संचार), केरिपुबल रांची द्वारा कैम्प परिसर में एस.टी.डी./आईएस.डी./पी.सी.ओ. बूथ आवंटित किया गया, जिसका संचालन वे स्वतः कर रही हैं । इस बूथ का उद्घाटन श्री महेन्द्र प्रसाद, पुलिस महानिरीक्षक, के.रि.पु. बल, बिहार क्षेत्र पटना ने 7 मार्च 99 को किया । इस अवसर पर सिगनल ग्रुप केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। इस टेलीफोन बूथ की एस.टी.डी. बूथ का उद्घाटन करते हुए बिहार सेक्टर के महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद स्थापना से असहाय परिवार को आर्थिक सहायता तो मिली ही है, साथ ही कैम्प के कर्मचारीगण एवं प्रशिक्षणार्थियों को अपने परिवार जनों से सीधा सम्पर्क करने की सुविधा भी उपलब्ध हो गयी है।

माह अपैल-मई *199* में मृत बल के कार्मिक

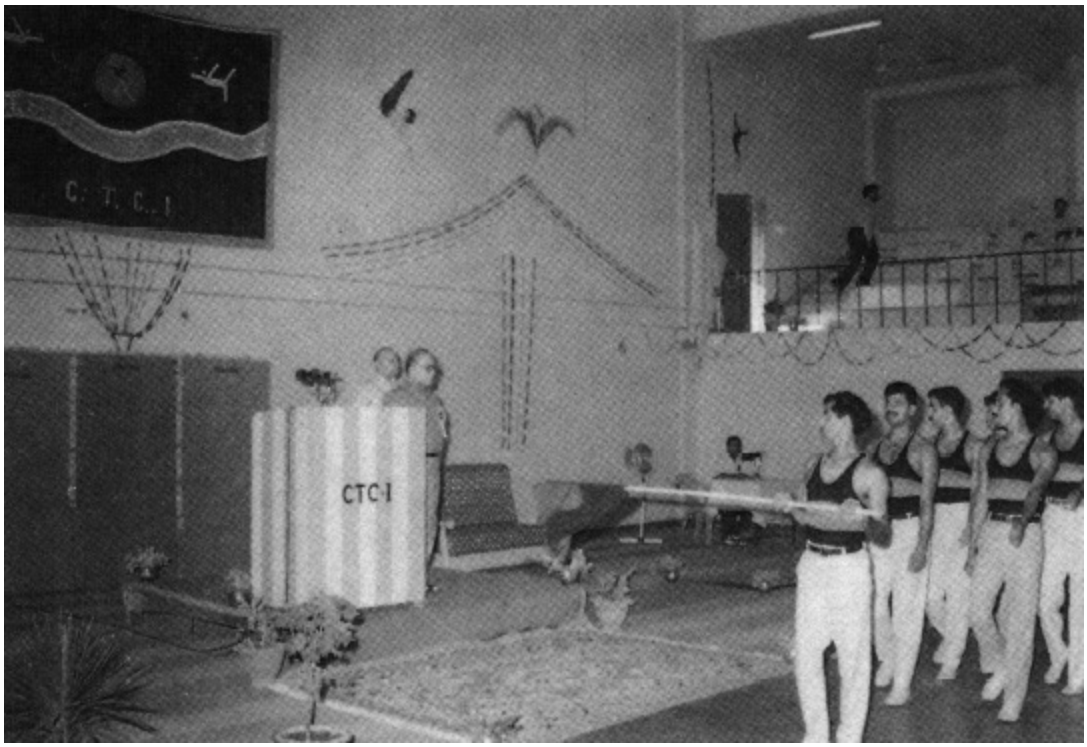
माह अप्रैल-मई '99 में के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए।

सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कां. लल्लन कुमार (14 बटा.), धोबी ए. रविंद्रन (32 बटा.), कां. एम. इसरैल (65 बटा.), कां. पी.डी. वर्मा (83 - बटा.),[[ां. आर. नटराजन (89 बटा.), कां. निरंजन गारतिया (89 बटा.), कां. सी. सीना दुराई (100 आर.ए.एफ.), नर्सिंग सहायक जमीर अहमद (104 आर.ए.एफ.), इंस्पेक्टर इ.एफ. राजन (109 आर.ए.एफ.), कां. एम.एन. यादव (ग्रु.के. मोकामाघाट), धोबी बैजूराम (3 बटा.), धोबी शिवजी रज्जाक (9 बटा.), है.कां. के.के. मंकी (11बटा.), कां. के इलूमाली (27 बटा.), नाई वी. शंकर (33बटा.), इंस्पेक्टर (एम.) इंदर जीत सिंह (72 बटा.), उप कमांडेट विजय पाल सिंह (96 बटा.), है.कां. हैदर लाल (116 बटा.), कां. के. रामराव (118 बटा), कुक भीम सिंह (एस.डी.जी.), है.कां. ब्रिज लखरा (49 बटा.), है.कां. बी.के. मंडल (60 बटा.), कां. मंजीत सिंह (89 बटा), ला. नायक महीपाल सिंह (42 बटा.), कां. इंदरजीत (83 बटा.), धोबी चुन्नी लाल (67 बटा.), कां/फिटर सुच्चा सिंह (68 बटा.) तथा कां. श्री ओम डबास (47 बटा)।

के.रि.पु. बल की नौवी क्षेत्रीय जिमनास्टिक प्रतियोगिता पूर्वी सेक्टर ने जीती

के.रि.पु. बल की नौवीं अंतर क्षेत्रीय जिमनास्टिक प्रतियोगिता पूर्वी सेक्टर ने जीत ली । इस प्रतियोगिता का आयोजन 24 मई से 29 मई 1999 तक केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज प्रथम के.रि.पु. बल के सौजन्य से बल के नीमच स्थित जिमनास्टिक हाल में किया गया । प्रतियोगिता का शुभारंभ 24 मई 99 को शाम 5 बजे श्री तिलक राज अरोड़ा, डी. आई.जी.पी. सी.टी.सी. प्रथम के प्राचार्य द्वारा किया गया । इस प्रतियोगिता में बल के विभिन्न 11 सैक्टरों की टीमों ने भाग लिया।



केंद्रीय प्रशिक्षण कालेज के प्राचार्य श्री टी.आर. अरोड़ा प्रतियोगिता के आरंभ में खिलाड़ियों की परेड की सलामी लेते हुए



नीमच रैंच के उप महानिरीक्षक श्री जी.जी.ए. शर्मा पूर्वी सेक्टर की टीम को विजेता ट्राफी प्रदान करते हुए

इस बल की सेन्ट्रल जिमनास्टिक टीम का गठन सन् 1968 में केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज प्रथम नीमच में हुआ। तब से लेकर 1986 तक लगातार टीम नीमच में रही। उस समय इस क्लब के सेन्ट्रल स्पोर्ट्स अधिकारी का कार्यालय भी सी.टी.सी. प्रथम के अधीन रहा। 1986 में सेंट्रल स्पोर्ट्स अधिकारी का कार्यालय महानिदेशालय नयी दिल्ली स्थानंतरित हो जाने पर सेंट्रल जिमनास्टिक टीम भी अखिल भारतीय पुलिस जिमनास्टिक कैम्पस दिल्ली में स्थानान्तरित कर दी गई। सन् 1986 से 1990 तक जिमनास्टिक टीम दिल्ली में अभ्यास करते हुए विभिन्न स्तर पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेती रही। सन् 1990 तक इस क्लब के स्तर पर अंतर रेंज जिमनास्टिक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता रहा। मगर सबसे पहले 1990 में अंतर क्षेत्रीय जिमनास्टिक प्रतियोगिता का आयोजन आवड़ी (चेन्नई) में शुरू हुआ जिसे प्राप्त आशातीत सफलता को देखते हुए इसे हर वर्ष कराने का निर्णय लिया गया ।

सन् 1991 में केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज प्रथम, नीमच में नवनिर्मित जिमनास्टिक हाल का निर्माण हो जाने के साथ ही इस बल की जिमनास्टिक टीम को भी केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज प्रथम, नीमच की देख रेख में रख दिया गया। तब से लेकर आज तक इस क्लब की जिमनास्टिक टीम यहीं पर अभ्यासरत रहकर विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग ले रही है जिसके साथ साथ हर साल इस बल को अंतर क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज प्रथम के सौजन्य से लगातार नीमच में ही सम्पन्न होता आ रहा है।

इस बल की जिमनास्टिक टीम का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण रहा है। इसमें कई राष्ट्रीय एवं अंतर राष्ट्रीय जिमनास्ट रहे हैं जिन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर इस बल व देश का नाम रोशन किया है और इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जिनमें उल्लेखनीय भूमिका श्री एम.बी. भौंसले, द्वितीय कमान अधिकारी जिन्होंने एशियायी, कोमन वेल्थ गेम्स तथा पाकिस्तान इंटरनेशनल प्रतियोगिता में भाग लेकर कीर्तिमान स्थापित किया। श्री बलराम शील, उप कमांडण्ट जोकि इस टीम के वर्तमान संचालक एवं प्रशिक्षक हैं, जिन्होंने एशियाड 1986 में भाग लिया तथा आठ बार विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं व खेलों में भाग लेकर इस बल की इस क्षेत्र में महत्ता दर्ज की है। श्री विजय कुमार सहायक कमांडेण्ट जोकि वर्तमान में इस टीम के कोच के रूप में कार्यरत हैं, जिन्होंने कई देश व विदेश की प्रतियोगिताओं में भाग लेकर इस बल व देश की कीर्ति बढ़ाई है।

इस प्रतियोगिता का समापन नीमच रेंज के पुलिस उप–महानिरीक्षक श्री जी. जी.ए शर्मा ने 27 मई '99 को किया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न सैक्टरों की स्थित इस प्रकार रही : प्रथम – पूर्वी सैक्टर, द्वितीय – आर.ए.एफ. सैक्टर, तृतीय – दक्षिणी सैक्टर।

जोखिम निधि लाभ

माह मई '99 में केंद्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 46 मामलों में कुल 27,60,000 रुपए देने स्वीकृत किये गये तथा अक्षमता के दस मामलों में कुल 2,50,000 रुपए देने स्वीकृत किये गये।

इसी प्रकार जोखिम निधि 'बी' से इस के तीन सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 1,20,000 रुपए देने स्वीकृत किये गये।

आओ हंसे

घर में अकेली औरत ने चोर पकड़ लिया।

किसी ने उसके पति से कहा : 'आप की पत्नी बहुत निडर और बहादुर है।'

'यही तो मुसीबत है,' पति ने जवाब दिया।

* * *

एक पार्टी में एक महिला ने एक सुंदर युवक की ओर इशारा करते हुए अपनी सहेली से कहा : 'देखो, वह नौजवान नीले सूट में कितना खूबसूरत लग रहा है।'

'तो क्या?'

'क्या वो अच्छा नहीं लगता?'

'लगता तो है। तो क्या ?'

'पहली औरत ने उस नौजवान के पास जाकर कहा : 'जरा ध्यान से खाइएगा।'

वह जरा एक तरफ हुई दूसरी ने पूछा : 'तुम ने उसे यह क्यों कहा ?'

'इसलिए कि उसने मेरे पति का सूट पहन रखा है।

'सूट तुम्हारे पति का है तो क्या हुआ, पति तो मेरा है।'

* * *

एक वजनी औरत सीढ़ियों से फिसल कर गिर पड़ी, टांग की हड्डी टूट गई। डाक्टर ने प्लास्टर करने के बाद हिदायत दी कि कुछ समय के लिए सीढ़ियों का इस्तेमाल बंद कर दें।

समय पूरा होने पर डाक्टर ने प्लास्टर काटा तो महिला ने पूछाः

'क्या अब में सीढ़ियों का इस्तेमाल कर सकती हूं?'

'हां, कर सकती हैं, 'डाक्टर ने जवाब दिया।

देवी जी ने एक लंबी सांस छोड़ी, शुक्र है पाइप के सहारे उतरते चढ़ते में परेशान हो गई थी।'

श्रीनगर में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

श्रीनगर स्थित 28 बटालियन के.रि.पु. बल में 24 अप्रैल '99 से 29 मई '99 का दिन अविस्मरणीय रहेगा जब वर्ष 1999 के लिए घाटी में व्याप्त विषम परिस्थितियों में भी श्रीनगर घाटी में स्थित सभी बटालियन/डेट एवं कार्यालयों के लिए पहली बार इतने व्यापक रूप से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। वैसे तो के.रि.पु. बल भारत सरकार की राजभाषा नीति का पालन करने की दिशा में किसी भी मंत्रालय अथवा विभाग से पीछे नहीं है, फिर भी बल में राजभाषा के व्यापक प्रचार–प्रसार के आशय से आयोजित इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री सी.एम. पाण्डेय पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर द्वारा पुलिस उप महानिरीक्षक परिचालन/प्रशा. श्रीनगर, 28 बटालियन के सभी अधिकारियों के साथ–साथ घाटी में स्थित सभी बटालियन/डेट एवं कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी कार्मिकों से राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दिया और कार्यशाला की सफलता की कामना की।

यद्यपि श्रीनगर घाटी में यह अपने–आप में पहला प्रयास था फिर भी कार्यालय में सामान्य रूप से प्रयोग में आने वाले 20 विषयों को इस कार्यशाला में शामिल किया गया, जिसके ऊपर कार्यक्रम के अनुसार विभिन्न वक्ताओं द्वारा व्याख्यान दिया गया। इस कार्यशाला को संचालित करने के लिए एक संचालन समिति का गठन किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वयं श्री जी.डी.पेवाल कमांडेंट 28 बटालियन द्वारा की गयी।



श्री सी.एम. पाण्डेय पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर, श्री आर.एस. नौटियाल पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर एवं घाटी के अन्य अधिकारीगण श्रीनगर घाटी में आयोजित हिन्दी कार्यशाला में भाग लेते हुए

इस कार्यशाला में 28 बटालियन के कर्मचारियों के अतिरिक्त श्रीनगर घाटी में स्थित 20 बटालियन/डेट तथा कार्यालयों के कुल 102 कार्मिकों ने भाग लिया। हिन्दी कार्यशाला का आयोजन करने का उद्देश्य हिन्दी के प्रचार प्रसार के साथ–साथ अहिन्दी भाषी कार्मिकों को हिन्दी भाषा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना है, इसी से प्रेरित होकर घाटी में स्थित बटालियन/डेट एवं कार्यालयों से निवेदन किया गया था कि वे अधिक से अधिक अहिन्दी भाषी कार्मिकों को ही इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए नामित करें, जिसके परिणाम स्वरूप भाग लेने वाले कुल 102 कार्मिकों में से 59 व्यक्ति अहिन्दी भाषी क्षेत्र के थे।

29 मई '99 को कार्यक्रम के अनुसार कार्यशाला में शामिल किए गए विषयों में से मूल्यांकन परीक्षा का आयोजन किया गया जिसमें सिपाही एम. कन्हैया–28 बटालियन, स.उ.नि (मं) पी. के. पूर्वे–58 बटालियन एवं सिपाही (महिला) सुमन सिंह–88 बटालियन ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। 29 मई '99 को ही 1200 बजे आयोजित समापन समारोह में 28 बटालियन के अधिकारियों के अतिरिक्त 20,69,88 एवं 122 बटालियन के अधिकारीगण भी उपस्थित थे। समापन समारोह के दौरान अपने भाषण में अध्यक्ष महोदय ने भाग लेने वाले कार्मिकों का इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया एवं उनसे हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं बल में भारती की गूंज बढ़ाने का आवाहन किया।

कविताएं

शौर्य गान

सी.आर.पी के जवान, वतन की आन–बान
बढ़े चलो चले चलो, बिना किये आराम
आज तुम हो राष्ट्र के, जवान बेमिसाल
अभुतपूर्व शौर्य है, बल तेरी मशाल
गली–गली में देश की, आज है अनेकता
एकता की डोर में, बांध दो सौहार्दता
चूको न एकलव्य हो, लक्ष्य के विकल्प हो
द्रोण के घमंड को, जहां वहीं मसल बढ़ो
बहो न वक्त है नहीं, भावना के पहलू में
पथ प्रशस्त है तेरा, आराम है हराम
शाम तेरी राहों में, रूकावटें न डालेगी

आंधियों के झोंके भी, तुम्हें नहीं उड़ायेंगे
अमर हो ज्योति देश की, तिमिर नहीं बढ़ेगा अब
तुम्हारी वीरता के बल, देश सो सकेगा अब
पथ मे अनेक कंटक, रूकावटें भी डालेंगे
कुचल दो अपने बूट से, उठा सके न सिर कभी
तेरे ही नाम से जुड़ी, हैं कारगिल की वादियां
मुखड़ चली हैं आज भी, अमर तेरी कहानियां
हॉट स्प्रिंग की धड़कनें, चुप नहीं हैं बोलती
बहादुरी के नाम पर, शान हैं, बखानती
भीष्म हो तुम देश के , भीम मातृभूमि के
विवेक तुम विदुर के हो, और पार्थ के हो सारथी
कंस अब बचे नहीं, देश अब रहे नहीं
बासुकी के फन को तुम, गरूड़ बन मरोड़ दो

एन.के.पी. सिंह
मुख्य लिपिक–*95* बटा.

पढ़ाई

कैसे आप यहां तक पहुंचे,
कैसे मंजिल तक जाना है ?
पढ़ना लिखना, विद्वान बनना,
या निरक्षता को बढ़ाना है ।
पढ़ लिख कर समझदार बनोगे,
एक दूसरे के दिलदार बनोगे ।
अनपढ़ रह कर गंवार बनोगे,
आपसी घृणा का शिकार बनोगे ।
पढ़ लिख कर अपने अधिकार समझ पाएंगे,
दूसरों के प्रति अपने कर्त्तव्य निभाएगे ।
अनपढ़ रह इनका लाभ न उठांएगे,
मंजिल दूसरों की देख खुद पछताएंगे ।
पढ़ाई के महत्व को समझो मेरे भाई,
अधिकारों को समझो, खत्म करो तानाशाही ।
हर क्षेत्र में सफलता देगी पढ़ाई,
पढ़ लिख कर ही तुम कर सकोगे कमाई ।
अब पढ़ाई बन गई है, हर क्षेत्र का आधार,

अनपढ़ व्यक्ति हैं, मजदूरी से भी लाचार।
पढ़ाई करो हर क्षेत्र में सफलता पाओ,
करके कठिन मेहनत अपनी रोजी कमाओ
तकनीकी शिक्षा से उत्पादन बढ़ाओ,
अमीर बनो, देश को खुशहाल बनाओ

–दिनेश कुमार शर्मा, एफ/*134* बटा.

जनता की आवाज

उल्फा के रास्ते, आसामवासियों नहीं तुम्हारे वास्ते।
इनके लीडरों के नकली चेहरे हैं, मर रहे उनके मोहरे हैं।

इनसे पैसा इकट्ठा करवाते हैं, विदेश में मंगवाते हैं।
क्रान्ति के नाम पे, उनसे ये मौज उड़ाते हैं।

असम में उल्फा के गरीब भाई, इनको पता नहीं क्या है लड़ाई।
आजादी का नाम लेते हैं, पर गरीबी के गुलाम बनते जाते हैं।

खाने को दाना नहीं, नहीं पीने को साफ पानी।
भटक–भटक के इन सभी ने, लुटा दी अपनी जवानी।

माता–पिता बूढ़े हैं, घर में बैठी बहन जवान।
विदेश में बैठे लीडर इनको लूट रहे, कैसे हैं ये इन्सान।

अगर तुम बहादुर हो, खुद इनके सामने आओ।
चाहे खुद भूखे रहो, पर उनको खाना खिलाओ।

दुनियां कितनी आगे बढ़ गई, पर ये कितने पीछे हैं।
भारत सरकार का दोष नहीं, पर इन के विचार ओछे हैं।

असम की जनता को, आधुनिक सुख नसीब नहीं।
पर उल्फा का कोई लीडर, एक भी यहां गरीब नहीं।

जनता के अगर सेवक हो, जनता के सामने आओ।
उनके सीधेपन का, नहीं तुम फायदा उठाओ।

जनता के पास जाकर, उन्हें सही मार्ग बतलाओ।
सही माने में सेवा करो, उन्नति का मार्ग दिखलाओ।

जिस दिन जनता जाग गई, तुम नहीं बच पाओगे।
भागने को रास्ता न मिलेगा, बेमौत मारे जाओगे।

रोटी कपड़ा सड़क पानी और मकान, ये हैं पहले जरूरी।
जनता जब खुशहाल होगी, तभी मिटेगी आपस की दूरी।

विदेशी ताकतों की साजिश है, हमको आपस में लड़ाना।
देश के टुकड़े–छुकड़े कर, उस पर अधिकार जमाना।

देश के बच्चे समझदार बनो, इनके चक्कर में नहीं आना है।
इनकी साजिश विफल करो, तुमको बहुत ऊपर जाना है।

मानता हूं गद्दी कम होने का, नेताओं को भारी नुकसान होगा।
पर सबके हित में एक मजबूत देश, बनाना तो आसान होगा।

अरे अब बस करो, तुमने अब तक बहुत लूटा है।
जनता अब जागरूक हुई, तुम्हारा भंडा फूटा है।

जनता को जिस दिन गुस्सा आया, नहीं तुम बच पाओगे।
अपनी आदतें बदली करो, नहीं तो बहुत पछताओगे।

जनता का खून पीकर, तुम कभी चैन न पाओगे।
दर–दर की ठोकरें खाओगे, घुट–घुट कर पछताओगे।

मत समझना, "विजय" का अनर्गल प्रलाप।
एक दुखियारे की आवाज है, है ये जनता का तुम्हें श्राप।

– विजय बिहारी शरण, कमांडेण्ट *29*वीं वाहिनी



आंतरिक सुरक्षा ड्यूटी के लिए तैनात बल की एक महिला कर्मी

रजि. न. 4767/87



महानिरीक्षक (मुख्या.) श्री ए.एस. गिल हिंदी में सर्वाधिक काम के लिए के.रि.पु. बल को मिली द्वितीय श्रेणी की शील्ड गृह सचिव श्री कमल पांडेय से ग्रहण करते हुए

31 अगस्त, 1999

सी.आर.पी.एफ. समाचार





नीमच में प्रशिक्षण सेमिनार के दौरान एक पत्रकार सम्मेलन को संबोधित करते हुए महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



पत्रकार सम्मेलन में भाग लेते पत्रकार

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-13 अंक-5
31 अगस्त, 1999
9 भाद्रपद, शक 1921

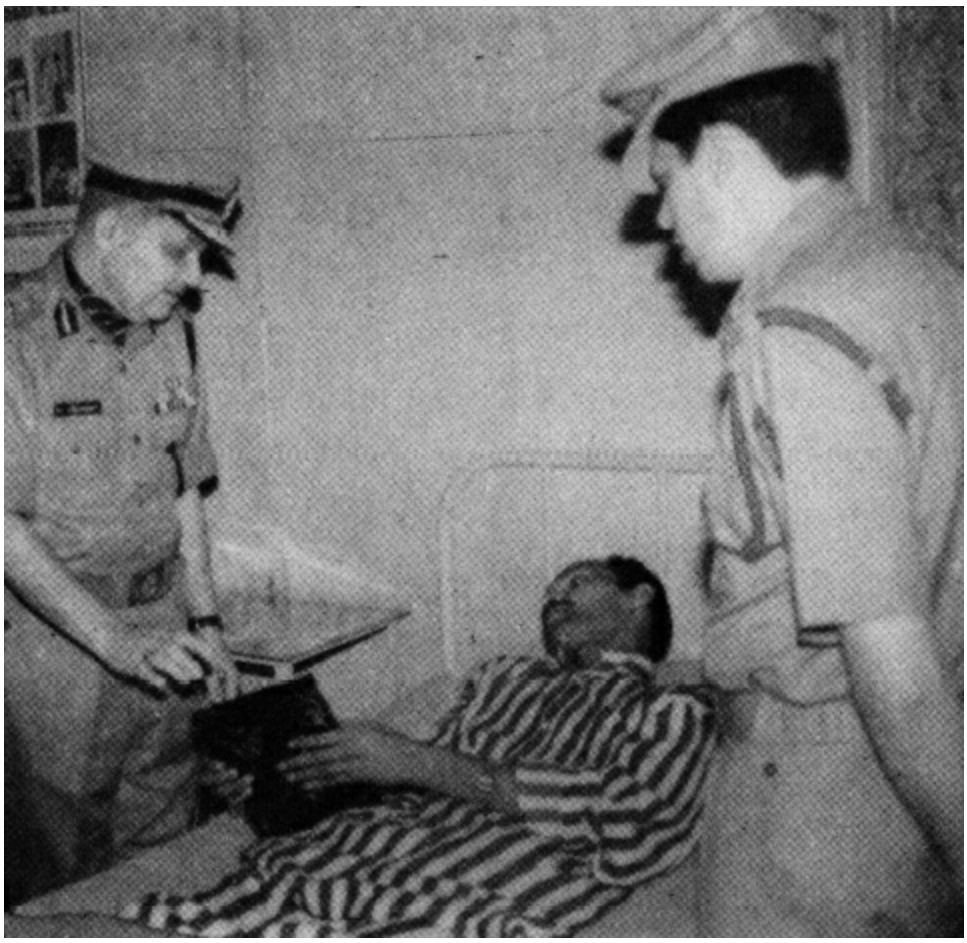
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

नीमच में प्रशिक्षण गोष्ठी

महानिदेशक का आर.टी.सी.-4 का दौरा

विश्व पुलिस खेलों में पदक जीतने पर खिलाड़ियों को बधाई

अमरनाथ यात्रा में के.रि.पु. बल का योगदान

जालंधर में मुफ्त चिकित्सा कैंप

64 बटालियन का प्रशंसनीय कार्य

मुठखेड़ में मांटेसरी स्कूल के विकास के लिए अनुदान

सांक्षेप्त खबरें
भोजपुर का मंदिर
कविताएं

प्रथम आवरण : आर.टी.सी.-4 में क्वार्टर गार्ड का निरीक्षण करते हुए महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक

नीमच में प्रशिक्षण गोष्ठी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के हीरक जयंती समारोह के अंतर्गत केंद्रीय प्रशिक्षण कालिज-1 नीमच (म.प्र.) में 27 जुलाई को दो दिवसीय प्रशिक्षण गोष्ठी शुरू हुयी। बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने गोष्ठी का उद्घाटन किया। गोष्ठी में सारे देश में आए 50 से अधिक फील्ड कमांडरों और प्रशिक्षण संस्थानों के प्राचार्यों ने भाग लिया।

महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए हर स्तर के सब बल के कार्मिकों के समय समय पर प्रशिक्षण को जरूरी बताते हुए कहा कि इस से परिचालनिक जरूरतों के अनुरूप उनके मानसिक दृष्टिकोण और दक्षता में बदलाव और सुधार आएगा। उन्होंने कहा कि बल की 60वीं सालगिरह के मौके पर बल की जन्मस्थली नीमच में इस सेमिनार का आयोजित किया जाना एक सुखद अनुभव है। उन्होंने कहा कि इस मौके पर हमें अपनी विगत की उपलब्धियों की दृष्टि में रखते हुए स्वयं को बेहतर सेवा एवं प्रशिक्षण के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि देश के वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य को दृष्टि में रखते हुए यह बहुत जरूरी हो जाता है कि हमारा प्रशिक्षण आज की जरूरतों और जमीनी हकीकतों के साथ जुड़ा हो। उन्होंने कहा कि देश बहुत बड़ा है तथा उसी के अनुरूप देश की सुरक्षा जरूरतें भी कठिन हैं। अतः यह सोचना की प्रशिक्षण का कोई एक फार्मूला हमें प्रशिक्षण में पारंगत बना देगा गलत होगा। अतः हमें अपने प्रशिक्षण को बहु आयामी बनाना होगा।

उन्होंने कहा कि भविष्य की चुनौतियों को दृष्टि में रखते हुए प्रशिक्षण की जरूरतों पर हमें ध्यान केंद्रित करना होगा। हमें विचार करना होगा कि हमारे प्रशिक्षण संस्थान किस प्रकार और अधिक सक्षम हों। उन्होंने कहा कि हमें अपने कार्मिकों की फिजीकल फिटनेस पर भी ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि हमें देखना होगा कि बल का जो मूल चरित्र है वह बना रहे।

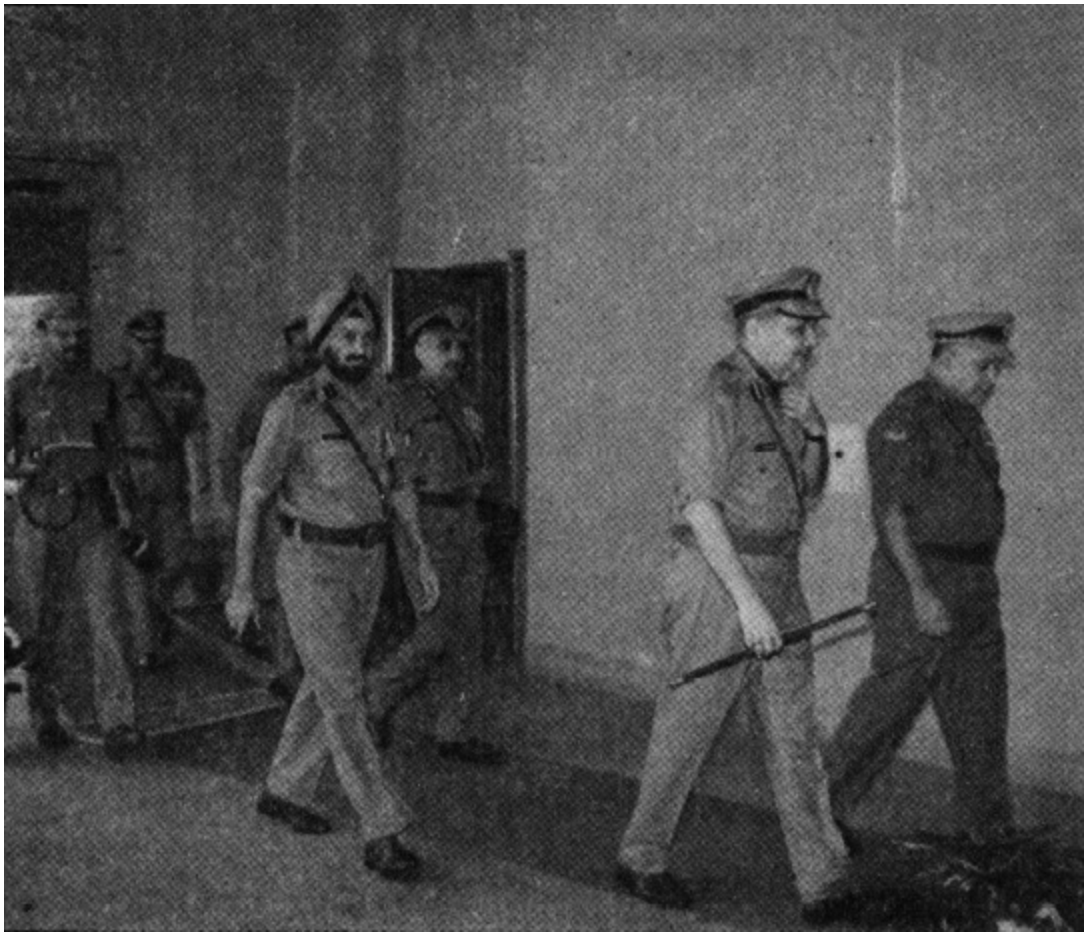


शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र चढ़ाते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

देश की आंतरिक सुरक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बल कार्मिकों की तैनाती उत्तर पूर्वी राज्यों तथा जम्मू कश्मीर में अधिक है। नक्सलवादी समस्या से निबटने के लिए बल के कार्मिक बिहार और आंध्र प्रदेश में भी तैनात हैं। अपनी इस भारी तैनाती के कारण उनकी रोटेशनल ट्रेनिंग प्रभावित हो रही है। उन्होंने कहा कि बल की बटालियनों में बढ़ोत्तरी से संभव है यह समस्या कुछ हद तक हल हो सकेगी। उन्होंने कहा कि आने वाले चुनाव तथा अमरनाथ यात्रा के दौरान बल की व्यस्तता और बढ़ जाएगी। उन्होंने कहा कि गोष्ठी में परिचालनिक जरूरतों के अनुरूप प्रशिक्षण को

ढालने पर विचार विमर्श करके व्यावहारिक और सकारात्मक योजना बनायी जानी चाहिए।

प्रारम्भ में अपने स्वागत भाषण में केंद्रीय प्रशिक्षण कालिज-1 के प्राचार्य श्री टी.आर. अरोड़ा ने कहा कि गोष्ठी का उद्देश्य प्रशिक्षकों और उपयोगकर्ताओं के बीच विचारों का आदान प्रदान कराना है, जिस से प्रशिक्षण को और अधिक व्यवहारिक व प्रभावी बनाया जा सके।



गोष्ठी में भाग लेने के लिए आते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



गोष्ठी को संबोधित करते हुए महानिदेशक

इस मौके पर महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की तथा बाद में एक पत्रकार सम्मेलन को भी सम्बोधित किया।

के.रि.पु. बल के उप निदेशक (प्रशिक्षण) ब्रिगेडियर (सेवानिवृत) श्री गोविंद जी मिश्रा ने इस मौके पर 'बल में प्रशिक्षण की स्थिति और भविष्य की जरूरत' विषय पर अपना पत्र भी प्रस्तुत किया।

गोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता के.रि.पु. बल के महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री ए.आर.पवार ने की।

गोष्ठी में प्रशिक्षण के विभिन्न पक्षों आदि पर विस्तार से चर्चा हुयी।

महानिदेशक का आर.टी.सी.-*4* का दौरा

19 जून '99 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने श्रीनगर जम्मू कश्मीर स्थित रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-4 का दौरा किया। रंगरूट

प्रशिक्षण केंद्र में उनकी आगवानी महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर पी.सी. जोशी तथा रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र के प्राचार्य श्री डी.सी. डे ने की। इस मौके पर महानिदेशक ने क्वार्टर गार्ड सहित पूरे रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र का दौरा किया। उन्होंने युनिट अस्पताल में भर्ती मरीजों से भी मुलाकात कर उनका कुशल क्षेम पूछा।

अपने इस दौरे के दौरान उन्होंने रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र द्वारा अधिगृहित की जाने वाली अतिरिक्त 25 एकड़ भूमि के बारे में भी जानकारी ली। उन्होंने 124 एकड़ भूमि में फैले प्रशिक्षण शिविर के विकास कार्यों का भी जायजा लिया। उन्होंने निर्माणाधीन अधिकारी मैस का दौरा कर उसके संबंध में कई सुझाव भी दिये। इस मौके पर महानिदेशक महोदय ने प्रशिक्षण केंद्र में एक चिनार का पौधा भी लगाया।



युनिट अस्पताल में एक मरीज से कुशल क्षेम पूछते हुए महानिदेशक



आर.टी.सी.-4 में चिनार का वृक्ष लगाते हुए महानिदेशक

सेवानिवृत्त कार्मिकों को चिकित्सा सहायता

गृह मंत्रालय के एक आदेश के अनुसार अब केरिपु बल के सेवानिवृत कार्मिकों तथा उनकी पत्नी व पतियों को न कि सम्पूर्ण परिवार को, कैंसर, ट्यूमर, गुर्दे संबंधी बीमारियों, गुरदे का प्रतिरोपण, हृदय रोगों तथा यकृत प्रतिरोपण के उपचार हेतु जीवन काल में एक बार वित्तीय सहायता दी जा सकती है। केन्द्रीय कल्याण निधि से विरले से विरले मामले में अधिकतम वित्तीय सहायता 50,000 रुपये तक देय है।

विश्व पुलिस खेलों में पदक जीतने पर के.रि.पु. बल खिलाड़ियों को बल के महानिदेशक ने बधाई दी

16 से 24 जुलाई, '99 तक स्टाकहोम, स्वीडन में हुए विश्व पुलिस एवं फायर खेलों में 24 पदक जीतने पर केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने खिलाड़ियों को बधाई दी है।

इन खेलों में बल के खिलाड़ियों ने 16 स्वर्ण, चार रजत तथा चार कांस्य पदक जीते। इनमें से एथलेटिक्स में इंस्पेक्टर परमजीत सिंह ने दो स्वर्ण तथा एक रजत, इंस्पेक्टर (महिला) गीता मनराल ने चार स्वर्ण एवं एक रजत व इंस्पेक्टर (महिला) जिंसी फिलिप ने तीन स्वर्ण व दो रजत पदक जीते। तैराकी में इंस्पेक्टर कैलाश नाथ ने तीन स्वर्ण व दो कांस्य तथा इंस्पेक्टर राजाराम टोकस ने दो कांस्य पदक जीते। भारोत्तोलन में इंस्पेक्टर (महिला) सोनामाचा मानू तथा इंस्पेक्टर उज्ज्वला माने ने दो दो स्वर्ण पदक जीते।



गीता मनराल और जिंसी फिलिप के पदक देखते हुए महानिदेशक

पश्चिमोत्तर अंचल ने वालीबाल प्रतियोगिता जीती

हलो माजरा चंडीगढ़ स्थित 127 बटा. स्थल पर 5 से 12 जुलाई '99 तक आयोजित अंतर सेक्टर वालीबाल प्रतियोगिता पश्चिमोत्तर अंचल ने जीत ली। आर.ए.एफ. तथा केंद्रीय सेक्टर की टीमें क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थानों पर रही। प्रतियोगिता के अंतिम दिन 12 जुलाई को आयोजित समापन समारोह में पश्चिमोत्तर अंचल के अपर महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं को ट्राफियां तथा पुरस्कार भी प्रदान किये। प्रतियोगिता में बल की नौ सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया। इससे पूर्व 5 जुलाई '99 को प्रतियोगिता का उद्घाटन बल की

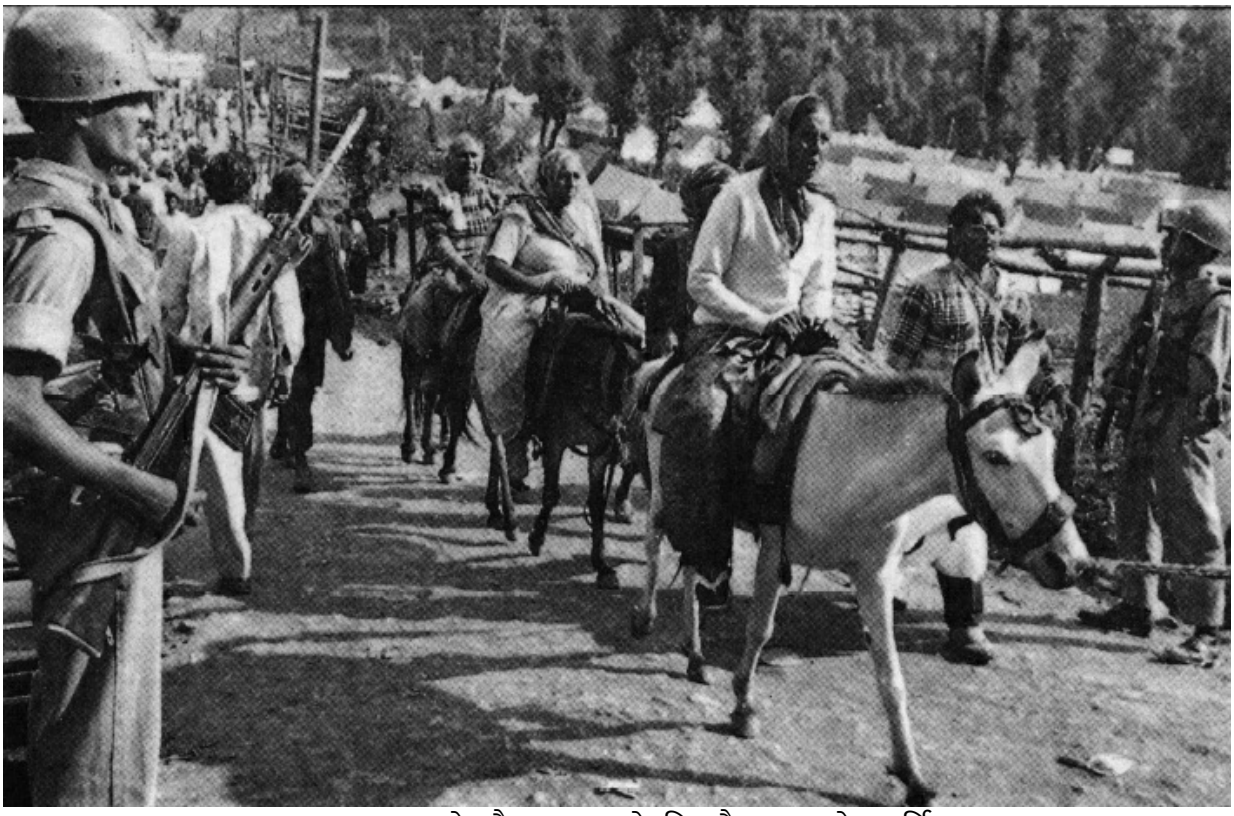
चंडीगढ़ रेंज के उप महानिरीक्षक श्री एस.सी. राड ने किया।

बल के कार्मिक के बच्चे की खेल उपलब्धि



केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय में कार्यरत उप निरीक्षक (मं) पवन कुमार के पुत्र विकास कौशिक ने दिल्ली राज्य सीनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप की ऊंची दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। 30 जुलाई '99 को नेहरू स्टेडियम, नई, दिल्ली में हुयी इन प्रतियोगिताओं में केंद्रीय विद्यालय झड़ौदा कलां के कक्षा 12 के विद्यार्थी ने हाई जम्प प्रतियोगिता में 1.60 मीटर की कूद लगाने पर यह सम्मान प्राप्त किया।

अमरनाथ यात्रा के दौरान के.रि.पु. बल का उल्लेखनीय योगदान



अमरनाथ यात्रा के दौरान सुरक्षा के लिए तैनात बल के कार्मिक

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल अमरनाथ यात्रा के सुचारू संचालन में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। अमरनाथ यात्रियों की सुरक्षा के लिए काशमीर तथा जम्मू ज़ोन में बल की एक महिला कम्पनी सहित कुल 30 कम्पनियों की तैनाती की गयी है। इनमें से 6 कम्पनियों को जम्मू से बनिहाल मार्ग के बीच संवेदनशील स्थानों पर यात्रियों के पहुंचने से पहले मार्ग को सुरक्षित रूप से खोलने के लिए तैनात किया गया है। और इसी मार्ग पर तीन कम्पनियों को यात्रियों के साथ सुरक्षा के लिए तैनात किया गया है। जबकि दो प्लाटून यात्रियों के काफिले के साथ जम्मू से बनिहाल और वापसी तक साथ देती हैं।

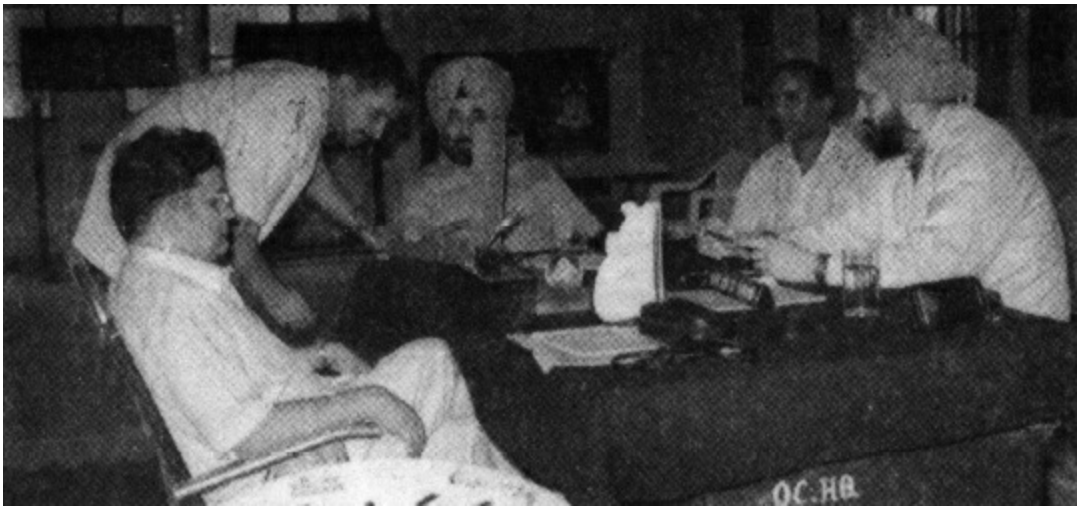
काशमीर ज़ोन में इस कार्य के लिए 21 कम्पनियों को तैनात किया गया है। के.रि.पु. बल को पहलगाम चंदनवाडी मार्ग के अतिरिक्त बलताल मार्ग पर भी सुरक्षा के लिए तैनात किया गया है।

बल की एक कम्पनी यात्रियों के काफिले की सुरक्षा के लिए जखूरा से बलताल और वापसी के लिए तैनात है। जखूरा और बलताल में यात्री कैंपों की सुरक्षा के लिए भी एक कम्पनी तैनात है। इसी प्रकार बनिहाल से पहलगाम तथा वापसी के दौरान यात्रियों की सुरक्षा के लिए दो कम्पनियां तैनात हैं।

पहलगाम में आठ नियमित कम्पनियों तथा 5 महिला सेक्शन की तैनाती दोहरे कारणों से की गयी है। यात्रियों की सुरक्षा के साथ-साथ ये कार्मिक पहलगाम कस्बे

को भी सुरक्षा कर रहे हैं, क्योंकि यहां भीड़ काफी बढ़ गयी है।

जालंधर में मुफ्त चिकित्सा कैंप



कैंप में अपने रक्त की जांच कराते अपर उप महानिरीक्षक श्री गुर चरण सिंह

20 जून '98 को ग्रुप केंद्र जालंधर में हृदय रोग, मधुमेह, शिशु रोगों तथा अन्य बिमारियों की जांच तथा उपचार के लिए एक मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन केयर हैल्थ सोसायटी चंडीगढ़ के सौजन्य से किया गया । इसके अतिरिक्त इस शिविर के हृदय विशेषज्ञ डा. आर.पी. दास, डा. एच.एस. बेदी, डा. नंदिनी बेदी तथा टैगोर हर्ट केयर सेंटर तथा दोअबा अस्पताल के डाक्टरों तथा आम स्टाफ की भी सहायता ली गयी। ग्रुप केंद्र में रहने वाले परिवारों के 300 से अधिक सदस्यों ने इस शिविर का लाभ उठाया । रोगियों को मुफ्त ई.सी.जी. तथा शुगर टेस्ट की सुविधा भी प्रदान की गयी। तथा दवाएं भी उपलब्ध करायी गयीं।

इसी श्रृंखला के दूसरे चरण में 11 जुलाई को आंखों, शिशुओं, स्त्रियों तथा अन्य बिमारियों के उपचार के लिए फिर एक शिविर लगाया गया। जिसमें 700 से अधिक महिलाओं तथा बच्चों का परिक्षण किया गया तथा उन्हें दवाएं उपलब्ध करायी गयी।

इन दोनों ही शिविरों का उद्घाटन अपर उपमहानिरीक्षक श्री गुरचरण सिंह ने किया। ग्रुप केंद्र अस्पताल के चिकित्सकीय तथा अर्द्ध चिकित्सकीय स्टाफ के कर्मचारियों ने इन शिविरों के आयोजन में बराबर भागीदारी की।

के.रि.पु. बल द्वारा राजभाषा स्वर्ण जयंती के अवसर पर

अनेक कार्यक्रम

14 सितंबर, ;99 से शुरू हो रहे राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने वर्ष भर चलने वाले अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

इस अवधि में पूरे देश में फैले बल के कार्यालयों में अधिकतम कार्य हिन्दी में करने पर जोर दिया जाएगा। राजभाषा से संबंधित कार्यशालाओं तथा गोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। साथ ही हिन्दी और गैर हिन्दी भाषी कार्मिकों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाएगा।

महानिदेशालय द्वारा अपने अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण कर राजभाषा के कार्यान्वयन का निरीक्षण किया जाएगा तथा सर्वोत्तम सेक्टर को राजभाषा शील्ड प्रदान की जाएगी।

हिन्दी टाइपिंग तथा स्टेनोग्राफी के लिए कार्मिकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा बल की पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार का राजभाषा स्वर्ण जयंती अंक भी प्रकाशित किया जाएगा।

बल के सभी फार्म, पत्र व ज्ञापन हिन्दी में जारी किए जाएंगे तथा हिन्दी में सर्वाधित कार्य करने वाले कार्मिकों को नकद पुरस्कार प्रदान किये जाएंगे।

के.रि.पु. बल ने *2825* आतंकवादी गिरफ्तार किये

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश के अंदर कानून व्यवस्था बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विशेष कर जम्मू कशमीर तथा उत्तर पूर्वी राज्य में आतंकवाद विरोधी मुहिम में इसका योगदान उल्लेखनीय रहा है। वर्तमान में के.रि.पु. बल की कुल 766 कम्पनियों में से 294 कम्पनियां जम्मू कशमीर तथा 295 कम्पनियां उत्तर पूर्वी राज्यों में तैनात है।

इसके अलावा आंध्र प्रदेश में 18 तथा बिहार में 24 कम्पनियां नक्सलवादियों का सामना करने के लिए तैनात हैं। वर्ष 1999 की प्रथम छमाही 01 जनवरी से 30 जून, '99 तक देश भर में बल के कार्मिकों की आतंकवादियों के साथ हयी मुठभेड़ों में 99 आतंकवादी मारे गये तथा 2825 को गिरफ्तार किया गया। इस दौरान बल के कार्मिकों ने 409 घातक हथियार तथा 8181 गोला बारूद भी बरामद किया, मगर इस दौरान हुयी कुल 123 मुठभेड़ों में बल के 36 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 66 गंभीर रूप से घायल।

64 बटा. का प्रशंसनीय कार्य



स्थानीय अधिकारियों के साथ बात करते हुए पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा

64बटा. नागालैंड में अप्रैल '98 से तैनात है। इस का मुख्यालय मोकाक चुंग में स्थित है। बटालियन की कम्पनियां अति संवेदनशील इलाकों में कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात है। साथ ही वह कई महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा भी कर रही है। इस वर्ष शुरू में नागालैंड के मुख्यमंत्री श्री एस.सी. जमीर ने बटालियन के मुख्यालय का दौरा कर इस द्वारा किये जा रहे कार्यों को प्रशंसा की। हाल ही में पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा ने भी बटालियन का दौरा कर इस का निरीक्षण करने के साथ साथ स्थानीय अधिकारियों के साथ कानून और व्यवस्था की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया।

*85*वीं बटालियन का स्थापना दिवस

के.रि.पु. बल की 85वीं बटालियन का गठन 1 जून 1985 में ग्रुप केंद्र - दो अजमेर में किया गया था। 1 जून 1999 को इस बटालियन का 14वां स्थापना दिवस बटालियन मुख्यालय बोकाजान में मनाया गया । इस अवसर पर बटालियन में सप्ताह भर विभिन्न कार्यक्रम जिनमें खेल–कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम मनाये गये इसके साथ–साथ सैनिक सम्मेलन व बड़ा खाना का भी आयोजन किया गया । इसी सप्ताह के दौरान अन्तर कम्पनी वालीबाल टूर्नामेन्ट का भी आयोजन किया गया । इस टूर्नामेन्ट में "बी"

कम्पनी प्रथम रही।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय जोखिम निधि से माह जून '99 में मृत्यु में 42 मामलों में कुल 25,20,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार जोखिम निधि 'बी' से इसके 6 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 2,40,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

माह जुलाई '99 में मृत्यु के 41 मामलों में जोखिम निधि से कुल 24,60,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये अक्षमता के 6 मामलों में कुल 1,40,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। जोखिम निधि 'बी' से इसके 12 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 4,80,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

बोध प्रसंग

एक बार

एक बार एक विदेशी ने गांधी जी से पूछा कि "यदि आपको एक दिन के लिए भारत का बड़ा लाट बना दिया जाए तो आप क्या करेंगे?" गांधी जी ने कहा, "राजभवन के पास दलितों की जो गंदी बस्ती है, मैं उसे साफ करूंगा।" उसने फिर पूछा कि "मान लीजिए कि आपको एक दिन और उस पद पर रहने दिया जाए तो?"

"दूसरे दिन भी वही काम करूंगा," गांधी जी ने तुरंत मुस्करा कर कहा।

मुठखेड़ में मांटेसरी स्कूल के विकास के लिए अनुदान

मूठभेड़ स्थित के.रि.पु. बल का केंद्रीय प्रशिक्षण कालेज अब पूरी तरह से अपना कार्य कर रही है। बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवरल ने 21 जुलाई '99 को इस प्रशिक्षण स्थान का पहला दौरान किया। इस प्रशिक्षण स्थल पर निर्माण के पहले चरण में 34 टाइप–1, 54 टाइप–2, 11 टाइप–3, 2 टाइप–4, एक टाइप–5 तथा 120 व्यक्तियों की क्षमता वाली बैठकों सहित, सड़कों, बिजली, पानी की आपूर्ति, सीवेज, बांउड्री तथा तारबंदी आदि का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। क्वार्टर गार्ड, कार्यालय, सिगनल सैंटर, स्टोर, क्लास रूम, लाइब्रेरी, मनोरंजन कक्ष तथा अधिकारी मैस आदि का भी अर्द्ध स्थायी निर्माण कर लिया गया है।



सी.टी.सी.–3 परिसर में प्रथम चरण के निर्माण कार्यों का उद्घाटन करते महानिदेशक

महानिदेशक महोदय ने इन सभी कार्यों का निरीक्षण किया तथा प्रशिक्षण स्थल पर एक वृक्ष भी लगाया। महानिदेशक महोदय ने स्वयं सेवा के आधार पर शुरू किये गये मांटेसरी स्कूल तथा कैंप को हराभरा बनाने के कार्यों की प्रशंसा की। इस मौके पर मूठभेड़ के वरिष्ठ नागरिक अधिकारी भी मौजूद थे। मांटेसरी स्कूल के विकास के लिए महानिदेश महोदय ने 80,000 के अनुदान की भी घोषणा की।

निर्माण के प्रथम चरण के स्थानों का उद्घाटन करने के बाद महानिदेशक ने युनिट अस्पताल का दौरा कर मरीजो से भी भेंट की। इस मौके पर एक प्रशिक्षण प्रर्दशनी का भी आयोजन किया गया था। जिस में विभिन्न आधुनिक इलेक्ट्रानिक प्रशिक्षण उपकरणों का प्रदर्शन किया गया था।

दक्षिण सेक्टर ने हैंडबाल प्रतियोगिता जीती



दक्षिण सेक्टर की टीम को विजेता शील्ड प्रदान करते ब्रिगेडियर राणावत

26 से 29 मई '99 तक ग्रुप केंद्र गांधीनगर में आयोजित की गयी अंतर सेक्टर हैंडबाल प्रतियोगिता दक्षिण सेक्टर ने जीत ली। पश्चिम सेक्टर दूसरे स्थान पर तथा आर.ए.एफ. सेक्टर तीसरे स्थान पर रहा। प्रतियोगिता का उद्घाटन ग्रुप केंद्र गांधी नगर के उप महानिरीक्षक श्री शाहिद अहमद ने किया। प्रतियोगिता में मणिपुर नागालैंड के अतिरिक्त बल की सभी सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के मैच लीग कम नाक आउट आधार पर खेले गये। प्रतियोगिता के समापन पर 85 इनफेंटरी ब्रिगेड के ब्रिगेडियर आर.एस. राणावत मुख्य अतिथि के रूप में मौजद थे, उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये।

माह जून, जुलाई '99 में मृत बल के कार्मिक

बल के निम्न कार्मिक माह जून व जुलाई '99 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

माह जून '99 में मृत बल के कार्मिक –

सब इंस्पेक्टर एम. कोशी (1 बटा), है. कां. डी.जी. पांडे (1 बटा.), सब इंस्पेक्टर देवी सिंह (13 बटा.), है.कां. कमालुद्दीन खान (21 बटा.), कां. सी. चार्लिस (30 बटा.), है.कां. रामसिंह थापा (33 बटा.), वाशर मैन राम गुलाम (37 बटा.), है.कां. राजेंद्र पाल (39 बटा.), है. कां. नंद किशोर (48 बटा.), कां. ए.बी. दोतबारे (67 बटा.), कां. प्रमोद कुमार (67 बटा.), कां. बी.एन. मुरमु (67 बटा), ला. ना. जगदीश सिंह (67 बटा.), कां. मनोज कुमार सिंह (67 बटा.), कां. बलदेव सिंह (67 बटा.), है.कां. गजराज सिंह (67 बटा.), कां. बाबूसिंह (67 बटा), कां. मोहम्मद अली (18 बटा.), कां. फिटर परमिंदर सिंह (86 बटा.), कां. जी. टंडन (86 बटा.), कां./ड्राईवर बलविंदर सिंह (86 बटा.), कां. साहेश राव चौहान (86 बटा.), कां. देवेंद्र कुमार सिंह (95 बटा), है. कां. राजबीर

सिंह (97 बटा.), कां. एम. जे. गायकवाड़ (99 बटा.), है. कां./रे. आपरेटर बी.एस. बिष्ट (3 सिग. बटा.), स.उ.नि.एस.एम. जमाल अहमद ग्रु.के. मोकामा घाट), है. कां. एस. थंकापन मंगत सिंह (112 बटा.), कां./बिगुलर मधु ई.पी. (115 बटा.), कां. शिर्यादा गोदा पाटिल (128 बटा.), कां. धरमबीर सिंह (26 बटा.), कां. बलबीर सिंह (84 बटा), कां. अमरनाथ सिंह (133 बटा.), कां. /ड्रा. बलवान सिंह (35 बटा.), ला. ना. एन.डी. राय (ग्रुप के. इलाहाबाद), ला. ना. भगवान सिंह (120 बटा.), कुक प्रेम वल्लभ (ग्रुप के. नागपुर), सफाई कर्मचारी गणेश कुमार (78 बटा.), कां. आर. रमेश (109 बटा.), कां. विरेंद्र कुमार शर्मा (72 बटा.), कां. परवेज अहमद (76 बटा.), वाशरमैन एन. नायडू (86 बटा.), कां. कांडरा ओरेन (ग्रुप के. खटखटी), है. कां. माणिक चंद शुक्ला (132 बटा.), तथा है. कां. रामनाथ बैथा (ग्रुप के. दुर्गापुर)।

माह जुलाई '*99* में मृतक बल के कार्मिक –

है. कां./क्रिष्टा राखाल सूत्रधार (एस.जी.सी.), कां. हुरदा नंद स्वैन (123 बटा), सुरजन सिंह (ग्रुप के. लखनऊ), कां. नील कांत बासूमतारी (127 बटा.), है.कां. एम.के. झा (6 बटा.), सब इंस्पेक्टर रोशन लाल (7 बटा.), सहा. कमां शैलेष कुमार सरकार (18 बटा.), कां. वी विट्ठल रेड्डी (18 बटा.), कां. पंचम लाल पांडे (65 बटा.), कां. सूरज भान (5 सिग.), है. कां. शफीक अहमद (14 बटा), है. कां. राम कुमार सिंह (11 बटा.), है. कां. मुन्ना लाल (1 बटा.), कां. पी.टी. खंडारे (45 बटा.), कां. जी.पी. यादव (126 बटा.), है. कां. पत्ती राम (7 बटा), है. कां. मतबर राम (109 बटा.), कां. महिंदर (2 बटा.), है. कां. देवी दत्त (107 आर.ए.एफ.), का. मंजर हुसैन (84 बटा) कां. बी.एन. मिश्रा (35 बटा.), है. का. एस के. मुखर्जी (3 बटा.), कां. तपन कुमार पाल (3 बटा.), ला. ना. द्वारका प्रसाद (42 बटा.), है. कां. तेजा राम (84 बटा.), ला. ना. भगवान सिंह (115 बटा.), है. कां. राम निवास (130 बटा.), कां. सुखविंदर सिंह (ग्रुप केंद्र पिंजौर), कां. नरेंद्र सिंह (130 बटा), कां. राम परवेश पाल (121 बटा), कां. गणपति निवारे (4 सिग.), कां. विनोद चंद्रा टोडू (43 बटा.), सब इंस्पेक्टर राई सिंह (127 बटा.) तथा बाबू राव राम घाट (30 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार जनवरी '99 में सफाई कर्मचारी मनफूल सिंह (2 सिग बटा.), तथा मई '99 में सब इंस्पेक्टर जे.के. दास (5 बटा.), का. वाई. सोंदराज (12 बटा), कां. रामदास (27 बटा.), लां. ना. श्यामलाल दूबे (41 बटा.), कां. कशमीर सिंह (41 बटा.), है. कां. गोकुल चंद (53 बटा.), कां. रणबीर सिंह (60 बटा.), है. कां. यशवंत राव (68 बटा.), सब इंस्पेक्टर शेर सिंह (71 बटा.), है. कां. कंवर राम (71 बटा.), स.उ.नि. पी.एम. नेगी (1 सिग), है. कां. कैलाश सिंह (3 सिग.), कां. गुमान ध्वज चेरती (ग्रुप के. गुवाहाटी), कां. पलविंदर सिंह (102 सिंह), है. कां. तिलक राज (120 बटा.), कां. जी.एस. पूर्ती (71 बटा.), कां. कपिल देव सिंह (1 बटा.) तथा ला. ना. गोपाल सिंह (1 बटा) भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

114 बटा. द्वारा राहत कार्य

26 जुलाई '99 को उत्तरी कामरूप जिले में रामौरी के नजदीक एक नागरिक बस के खड्ड में गिर जाने से कई नागरिक उस में फंस गये। सूचना मिलने पर 114 बटालियन की 2 प्लाटून तत्काल घटना स्थल पर पहुंची और बचाव व राहत कार्य शरू कर दिया। बल के कार्मिकों ने चार घायलों को बचाने के अतिरिक्त 10 व्यक्तियों के शव भी खोज निकाले। घायलों को तुरंत उपचार दिया गया तथा बाद में बस को भी बाहर निकाल लिया गया।

आकर्षक पर्यटक स्थल

भोजपुर का मंदिर

– कमांडेंट प्रकाश वसंत बेलगांवकर

के.रि.पु. बल ग्रुप केंद्र भोपाल बंगलसिया गांव से लगा हुआ है। यहां से केवल 5-7 कि.मी. की दूरी पर एक बहुत विशाल एवं प्रसिद्ध शिव मंदिर है। यहां विशालकाय शिवलिंग अपने आप में अद्वितीय है। जिसकी ऊंचाई 26 फीट है। इस शिवलिंग का आधार चौरस है। इसका गर्भ – गृह लगभग 54-60 फिट ऊँचा है। यह मंदिर राजा भोज़ ने बनाया है जो कि परमार वंश के प्रसिद्ध राजा हुए। भोपाल का नाम पहले भोजपाल था जो कि राजा भोज की राजधानी थी। यह मंदिर एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है, जिसके दोनों ओर से बेतवा नदी बहती है।

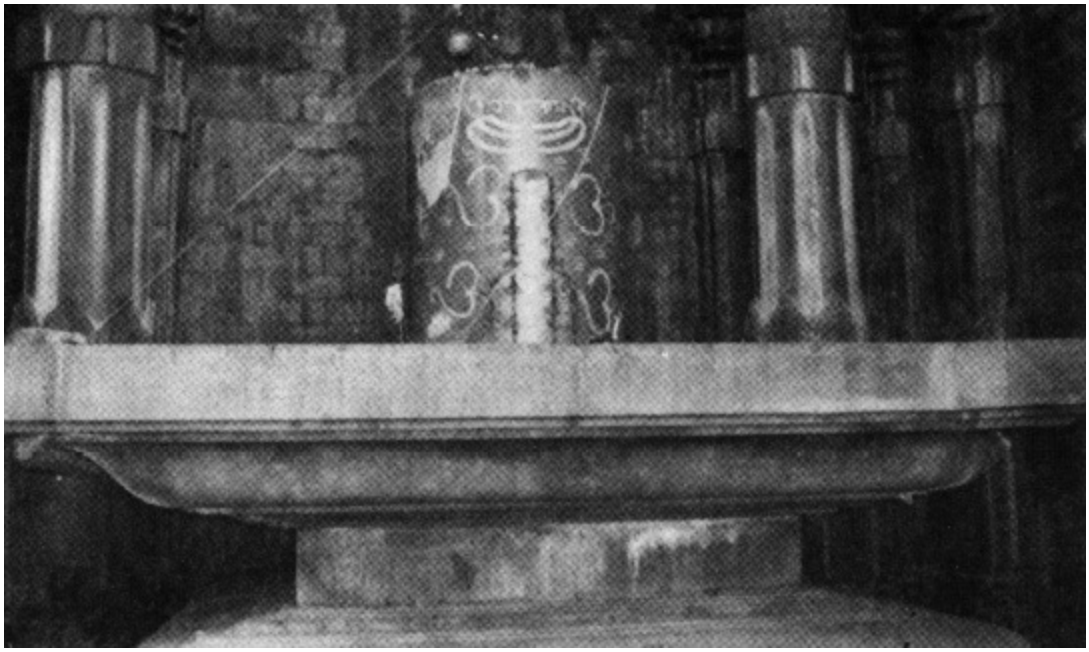
इसकी पत्थर की कलाकृतियों में भी हिन्दू एवं जैन संस्कृति का दर्शन होता है। कहा जाता है कि यह मंदिर केवल एक रात में निर्मित किया गया था और राजा भोज के स्वप्न में भविष्यवाणी हुई थी कि सुबह होते ही मंदिर का आगे निर्माण नहीं हो पाएगा। अभी भी बड़ी बड़ी शिलाएं, खम्बे, दीवार के पत्थर नदी से पहाड़ी के ढलान पर पड़े हुए इस बात के द्योतक हैं कि यह सब पत्थर ढोने की प्रक्रिया का अंग था। यहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि को बहुत बड़ा मेला लगता है।

मंदिर की उत्तर दिशा में बेतवा नदी के पार गुफा में एक प्राचीन दुर्गा (देवी) का मंदिर है। छोटी नौका से नदी को पार करना पड़ता है। कहा जाता है कि पहले भोजपुर पहाड़ी और भीमबेटका के बीच तालाब था जिसे राजा भोज नौका से पार कर दर्शन करने आते थे।

दूसरा आकर्षण का केन्द्र है - भीमबेटका (भीम वाटिका) जो ओबेदुर्गागंज से लगभग 7 कि.मी. मी दूरी पर प्रदेश राजमार्ग पर तथा भीयानपुर रेलवे क्रॉसिंग से लगभग 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ग्रुप केन्द्र से इसकी कुल दूरी लगभग 25

कि.मी. है।

भीमबेटका की पहाड़ी बिंध्य पर्वत के उत्तरी छोर पर दर्रे की तरह है जो कि मालवा के मैदान से मिला हुआ है। इस पहाड़ी पर पत्थर दूर से अलग उभरते हैं तथा सबको आकर्षित करते हैं । इस स्थान के नाम भीमवाटिका से स्वतः स्पष्ट होता है, तथा मान्यता है कि यह बलवान भीम के बैठने का स्थान था। मैदान में बह रही बाण गंगा नदी के बारे में यह कहा जाता है कि वीर अर्जुन ने पानी की सदा उपलब्धि के लिए इसे साक्षात किया था।



26 फुट ऊंचा शिवलिंग

भीम बेटका की गुफाओं या शिलाखंडों से निर्मित आश्रय पर आदिमानवों द्वारा बनाए गए चित्र, कलाकृतियां एवं चिकारिताएं मौजूद हैं। इन कलाकृतियों की खोज श्री वाकनकर द्वारा 1957 में की गई थी। आगे किए गए खनन में भारतीय संस्कृति एवं कला का अनोखा दर्शन होता है। भीम बाटिका शायद भारत में एक ही स्थान हैं, जहां संस्कृति एवं कला का एक क्रम (निरंतर पृथक रूप से कालक्रमिक) नजर आता है। यह पत्थरों पर बनी पुरातन कलाकृति किसी मायने में रूस के डराल पर्वतों की दीवारों पर बनी चित्रकारिता, चीन तथा पुराने दक्षिण रोडेसिया से मेल खाती है।

गुफाओं और शिलाखंडों के आश्रयों पर बनी तथा प्राचीन इक्लेमेंट्स पाषाण युग करीब 10 हजार वर्ष से 2000 वर्ष तक के होने का अनुमान है। यद्यपि सही-सही तारीख अभी निर्धारित नहीं हुई है।

लाल, सफेद, काले, हरे रंग का इस्तेमाल आमतौर पर कलाकृतियों में मिलता है। ये कलाकृतियां आदिमानव के शिकार करने के साधन, जैसे - तीर-कमान, भाले आदि की जानकारी देते हैं तथा उसके अग्निपूजन, उसके नृत्य आदि को दर्शाते हैं।

लगभग 750 कलाकृतियों में से 500 रंगीन हैं।

मानव आकृति का पहले क्रम में चौकोर वदन, तिकोना सिर होता था। जानवरों के चित्र में यह अलग तरीके का है।

इन आकृतियों से अलग-अलग समय का ज्ञान होता है। अलग-अलग समूह और क्रम में मिले चित्रों से कहीं मानव आकृति में सिर तिकोने व बदन चौकोर हैं। जानवरों की आकृति भिन्न रूप में तथा रेखागणित की तरह हैं। कहीं वे आकृतियां बिलकुल सही अनुपात में अर्थात सिर, बदन, हाथ, पैर बराबर बने हुए मिलते हैं। जानवरों की आकृतियों से भी अलग-अलग समय का अनुमान लगता है।

इन चित्रों एवं कलाकृतियों के अलावा प्रकृति ने पत्थरों को बड़ी अलग-अलग अकृतियां दी हैं। कुछ पत्थर बिलकुल कछुवे की तरह हैं तो कोई पत्थर गोरिल्ला के मुख जैसे और कोई हाथी की सूंड जैसे हैं। यह सारी करामात सैंडस्टोन पर हवा और पानी के प्रभाव की है।

कविताएं

वीर जवान

कुर्बानी की डगर चले
जवानी की लहर लिए
दुश्मनों पे टूट 'पड़े'
मौत का सा कहर लिए।
कीमत न कोई जान की
पहचान हिन्दुस्तान की
दिल में देश प्रेम भरे
मिसाल दे बलिदान की।
परवाह नहीं मौत की
चिन्ता नहीं परिवार की
देश का खतरा मिटाओ
मां भारती पुकारती।
लगन एक दिल में बसी
दुश्मनों पे वार है
ज़ख्म खुद के सज गये
खून की बौछार है।
खून की होली वो खेलें

शत्रु पर गोली चलेंगी
खाक में मिला के दम लें
वीरों की टोली चलेंगी।
नदी पर्वत पार करते
कदम सिर्फ आगे बढ़ते
दुश्मनों के छक्के छूटें
वीर जब अपने झपटते।
कांप उठे गगन सारा
ढ़ोल पर डंका सा मारा
जय घोष भारत मां का कर
वीरों ने जब भी ललकारा।
गर्व करती माता उनकी
देश के वे हो गये
वे सुनहरे कल के लिए
आज अपना खो गए।
नाम अमर कर लिया
सर्वोच्च शिखर पर रहे
याद में उनकी सभी
वीर गीत गा रहे।

-विक्रम सिंह *(*उप निरीक्षक*)*
126 बटा. के.रि.पु. बल

आपकी याद

सफर छोटा है जिंदगी का, मुलाकात शायद न हो।
आपको हम याद न आए शायद ऐसा न हो।
काँटे तो अक्सर फूलों में ही मिलते हैं।
पर वो काँटे भी आज फूल लगते हैं।
दर्द भी दिये आपने कितने।
गुदगुदाते हैं वो, आज लगते हैं अपने।
आप थे कल मेरे, आज भी लगते हैं अपने।
आप ही की याद से हैं रंगीन सपने।
मौत हंसेगी या जिन्दगी मुस्कायेगी।
आप हैं याद करे न करें, पर आपकी हमें बहुत याद आएगी

मनोज कुमार दीक्षित, स.उ.नि. *(*पं.*)*
प्रशा. दो/कल्याण, महानिदेशालय, केरिपुबल



7 से *9* अगस्त *1999* तक बैंगलूर में हुई पांचवी फेडेरेशन कप एथलेटिक चैंपियनशिप में बल की विनिता कुमारी हैमर थ्रो प्रतियोगिता में भाग लेते हुए

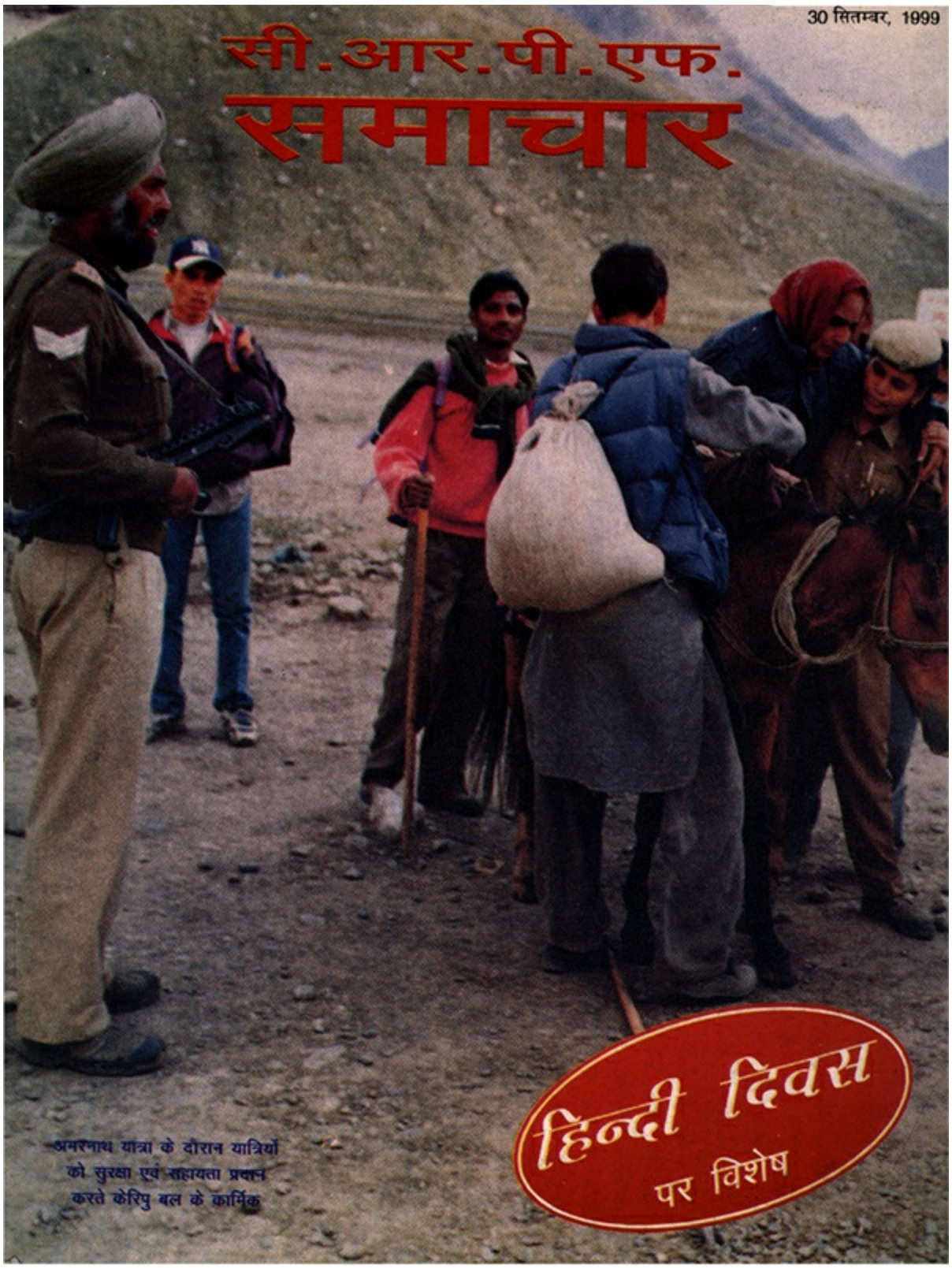
रजि. न. 4767/87



विश्व पुलिस खेलों में पदक जीतने वाले खिलाड़ी महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल के साथ

30 सितम्बर, 1999

सी.आर.पी.एफ. समाचार



अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों को सुरक्षा एवं सहायता प्रदान करते केरिपु बल के कार्मिक

हिन्दी दिवस पर विशेष



के.रि.पु. बल के समस्त सदस्यों द्वारा कारगिल के शहीदों के लिए एकत्र की गयी राशि एक करोड़ 25 लाख का चैक प्रधान मंत्री कोष में भेंट करने के बाद प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ अन्य पुलिस बलों के प्रमुखों के साथ के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों की मदद करते केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिक

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–13 अंक–6
31 सितंबर, 1999
8 आश्विन, शक 1921

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस
झड़ौदा कलां,
नई दिल्ली–72

इस अंक में



महानिदेशक की ओर से
रक्षा बलों तथा अर्द्धसैनिक बलों के कार्यों की प्रशंसा की राष्ट्रपति ने
राजभाषा अपनाएं
संघ की राजभाषा नीति
महानिदेशालय में हिंदी कार्यशाला
कुंजी न खो जाए
हिंदी देश की गंगा है
हिंदी में कंप्यूटर व्यवस्था
हिंदी भाषा विविध रूप

राष्ट्र भाषा हिंदी
हिंदी है भारत की बोली
स्वतंत्रता दिवस पर बल के 31 कार्मिक
पुलिस पदकों से सम्मानित
संक्षिप्त समाचार
कविताएं

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

महानिदेशक का राजभाषा संदेश



14 सितम्बर का दिन हम सभी के लिए एक विशेष महत्व का दिन है, क्योंकि इसी दिन सन् 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को केन्द्र सरकार की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। खेद की बात है कि कागजों में राजभाषा बनाने की सारी औपचारिकताएं तो पूरी हो गई, घोषणा भी हो गई, किन्तु हिंदी को राजभाषा का अधिकार दिलाने में जो कशमकश चल रही है, उससे यही अंदाज लगाया जा सकता है कि अपनी भाषा व संस्कृति के प्रति समर्पण में कहीं कमी जरूर है।

हिंदी को राजभाषा के रूप में आगामी 14 सितम्बर को पूरे 50 वर्ष होने जा रहे हैं तथा सरकार ने आगामी वर्ष को "राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष" के रूप में मनाने की घोषणा भी की है। अब समय आ गया है कि हम स्वयं इस बात का विश्लेषण करें कि वे कौन से कारण हैं जो इतने लम्बे समय से हिंदी को राजभाषा का स्थान दिलाने में बाधक रहे हैं। ये बाधाएं केवल मानसिक रुकावटें हैं और जब तक वे दूर नहीं होंगी, हिंदी में काम करने की जो झिझक बनी हुई है वह दूर नहीं होगी।

ऐसा नहीं है कि कुछ काम नहीं हुआ है, हिंदी में विभिन्न विषयों की शब्दावली, प्रशिक्षण सामग्री, सहायक साहित्य, शब्दकोष, स्थायी नियमों व मैनुअलों तथा चार्ट, नामपट्ट, बोर्ड, स्टाम्प, फार्म आदि की द्विमाषी (हिंदी–अंग्रेजी) में छपाई के काम में प्रगति तो जरूर हुई है, किन्तु इस द्विभाषिक स्थिति से अभी तक उभर कर मूलतः हिंदी में सकारात्मक कार्य की ओर अग्रसर नहीं हुए हैं। मेरे विचार से, होना यह चाहिए था कि हिंदी को राजभाषा घोषित करने के साथ ही हिंदी में मूलतः काम करने की आदत बनाई जाती, जो नहीं हुआ। हिंदी शब्दावली बनाने, सहायक साहित्य तैयार करने तथा नियमों के अनुवाद आदि का कार्य स्वतः ही पीछे–पीछे पूरा होता चला जाता क्योंकि "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।" अतः हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिलाने के लिए जरूरी है कि हम मूलतः केवल हिंदी के प्रयोग को

अधिक से अधिक बढ़ावा दें, द्विभाषिक स्थिति से बचें।

जहां तक के.रि.पु. बल में राजभाषा हिंदी के बढ़ते हुए प्रयोग का सवाल है, कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग बढ़ाने की प्रतियोगिताओं में कभी प्रथम, तो कभी द्वितीय स्थान प्राप्त कर राजभाषा शील्ड जीती हैं और हाल ही में दिनांक 11.6.99 को गृह सचिव ने बल को हिन्दी में उत्तम कार्य के लिए राजभाषा शील्ड प्रदान की है। अधीनस्थ कार्यालयों ने भी अपने–अपने क्षेत्रों में राजभाषा शील्डें जीती हैं, जो इस बात का सबूत हैं कि राजभाषा के विकास में हम अन्य सरकारी विभागों से बहुत आगे हैं। आशा है भविष्य में आप सभी इसी भावना के साथ हिंदी प्रयोग बढ़ाने में सहयोग प्रदान करेंगे।

जय हिन्द !

(एम.एन. सभरवाल)
महानिदेशक के.रि.पु. बल

नई दिल्ली
16.8.99

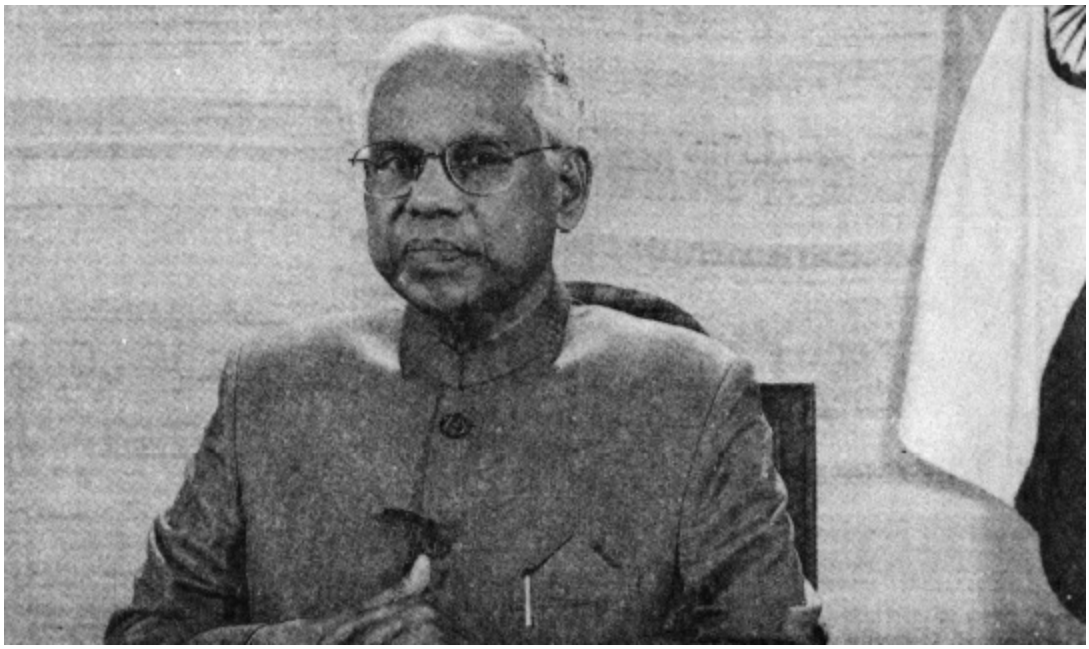
रक्षा बलों तथा अर्द्धसैनिक बलों के कार्यों की प्रशंसा की राष्ट्रपति ने

देशवासियों से एकजुट रहने तथा समग्रता की भावना को बनाए रखने की अपील करते हुए राष्ट्रपति के.आर. नारायणन ने स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम प्रसारित संदेश में कहा कि स्वतंत्रता व शांति – दोनों का मूल्य सतत् सतर्कता ही होती है। दोस्ती का दृष्टिकोण सदा अपनाए जाने के बावजूद हमें एक से अधिक बार निराश होना पड़ा है, इसलिए बुद्धिमत्ता तैयार रहने में है।

रक्षा सेनाओं तथा अर्द्धसैनिक पुलिस बलों के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्होंने कहा कि कारगिल, बटालिक और द्रास की निर्जन और दुर्गम ऊंचाइयों पर लड़ रहे हमारे जन–साधारण के इन सपूतों ने मौत से टक्कर लेकर जम्मू और कश्मीर में भारत की नियंत्रण रेखा के इस ओर हमारी पवित्र भूमि से घुसपैठियों को भगाकर, भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को बचाया है।

राष्ट्रपति ने कहा कि हमारी परम्परा और हमारा स्वभाव शांतिप्रिय है। हम अपने

पड़ोसियों और पूरे विश्व के साथ शांति से रहना चाहते हैं। वास्तव में शांति के प्रति हमारी आसक्ति और इस उपमहाद्वीप में भाई–भाई के बीच गृहयुद्ध न होने देने की हमारी इच्छा ही थी कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस हमारी मातृभूमि को भारत और पाकिस्तान के रूप में विभाजित करने के लिए राजी हुई थी। यह एक विडम्बना है कि हमारा यह बलिदान और पाकिस्तान के साथ शांति के साथ रहने की हमारी इच्छा हमारे देश पर इस अकारण युद्ध और विद्रोह को नहीं रोक पाई।



स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम अपना संदेश देते राष्ट्रपति

हमारी स्वतंत्रता के पहले ही वर्ष अक्तूबर, 1947 में पाकिस्तान ने जम्मू और कश्मीर को भारतीय संघ से छीनने के लिए हम पर आक्रमण कर दिया। 29 अक्तूबर को महात्मा गांधी ने दिल्ली में अपनी प्रार्थना सभा में कहा था कि चूंकि अब 'कश्मीर के महाराजा ने भारतीय संघ में शामिल होने के निर्णय की घोषणा कर दी है और यह कि उन्होंने भारतीय संघ में शरण ले ली है इसलिए उनकी रक्षा की जानी चाहिए।' इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि वायु मार्ग से श्रीनगर भेजे गए मुट्ठी पर भारतीय फौजी भला क्या कर सकेंगे, गांधीजी ने कहा थाः 'उन्हें अंत तक लड़ना चाहिए। फौजी जवानों का काम है आगे बढ़ना और आक्रमणकारी दुश्मन को पीछे भगाना। वे लड़ते–लड़ते मर जाते हैं लेकिन कभी पीछे नहीं हटते।' यही वह परामर्श था, राष्ट्रपिता और शांति के दूत का, जिसका हमारे सैनिकों ने 1947 में और हाल में जम्मू–कश्मीर में कारगिल क्षेत्र में हम पर हुए ताजा आक्रमण के दौरान अनुसरण किया है। जनवरी, 1948 में गांधी जी ने कहा था कि 'हमें कभी भी, किसी भी परिस्थिति में किसी को अपना दुश्मन नहीं मानना चाहिए ... मेरा मन और विवेक मुझसे यही कहता है कि यदि हम किसी कारणवश न केवल भारतवर्ष में बल्कि पाकिस्तान और विश्व भर में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच दोस्ती कायम नहीं कर सके तो हम

भारत को ज्यादा देर आजाद नहीं रख पाएंगे। यह दूसरों के हाथों में चला जाएगा और भारत और पाकिस्तान दोनों ही देशों ने यह जो आजादी हासिल की है, वह छिन जाएगी।' भारत और पाकिस्तान के बीच भावी युद्ध की भयावह स्थिति के संबंध में उन्होंने विश्व के वास्तविक राज्यतंत्र के बारे में अपनी गहरी पैठ और समझबूझ के आधार पर यह चेतावनी दी थी कि 'यदि आज आप यह सोचें कि हम लड़ सकते हैं और लड़कर जीत सकते हैं तो मैं कहूंगा कि आपके ऐसा करने से पहले ही विश्व की कोई दूसरी शक्ति हमें निगल जाएगी। यदि मेरे वे सभी मित्र, जो समझदार लोग हैं और मेरे कार्यों में अनेक वर्षों से मेरे साथ रहे हैं, इतनी–सी बात समझ ले तो हम सभी बच जाएंगे।

यह मूल बात बताते समय गांधीजी वस्तुस्थिति से पूरी तरह अवगत थे। उन्होंने कहा था कि 'तथ्य यह है कि पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया है।

राजभाषा–अपनाएं

– वाई एन. श्रीवास्तव, अपर महानिदेशक *(मुख्यालय)*



14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर के.रि.पु. बल का राजभाषा अंक प्रकाशित हो रहा है, यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई है। मैं चाहूंगा कि इस अंक में ऐसी रचनाओं एवं जानकारियों का समावेश हो जिनके पाठन से वास्तव में राजभाषा के प्रति। हमारा सोया हुआ स्वाभिमान जाग सके।

भारतवर्ष एक विविधताओं का देश रहा है। हर भाग अपने में भिन्न–भिन्न भाषाओं, धर्मों व जातियों को समेटे हुए एक समान सांस्कृतिक स्वरूप में ढला हुआ है। इन भिन्न–भिन्न भागों के बीच एकता को पुष्ट करने वाली, आपस में जोड़ने वाली एक लिंक भाषा भी रही है जिसके पक्ष में 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा में डा. गोपाल

स्वामी आयंगर, कन्हैया लाल माणेक लाल मुंशी और डा. भीमराव अंबेडकर ने आवाज उठाकर राजभाषा का दर्जा दिलाया था। यह लिंक भाषा किसी क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा नहीं है बल्कि पूरे देश में बोली व समझी जाती है। यह लिंक भाषा ही हमारी राजभाषा है। मेरे विचार में राजभाषा को हिन्दी में जोड़ना ठीक नहीं होगा क्योंकि हिंदी के तो अनेक स्वरूप हैं जैसे बृजभाषा, बुन्देलखड़ी, खड़ी हिन्दी, हरियाणवी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, मैथिली, अवधी आदि।

राजभाषा ऐसी भाषा व शब्दों से मिलकर बनी है जिसे सभी वर्गों के लोग जानते हैं, समझते हैं किन्तु दुर्भाग्य यह रहा है कि हमने सरल व आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग कर राजभाषा का विकास करने की जगह क्लिष्ट व बोझिल शब्दों का प्रयोग कर इसके विकास के मार्ग को अवरूद्ध किया है। दूसरे राजभाषा के विकास का मार्ग प्रशस्त करने में सबसे बड़ा रोड़ा हमारी आशंका रही है जो 14 सितम्बर, 1949 से लेकर अब तक समाप्त नहीं हुई है। अभी भी आशंका की जाती है कि हिन्दी को सरकारी काम–काज की राजभाषा बनाने के लिए पारिभाषिक शब्दावली पर्याप्त नहीं है और ऐसा वातावरण बनाया गया है कि जैसे हिन्दी को अभी उंगली पकड़ कर चलना सीखना होगा। बस यहीं से चूक हो गई और आज भी हिन्दी भाषा को वह स्थान नहीं मिला जो मिलना चाहिए था। परिणाम यह हुआ कि संविधान लागू होने के 15 वर्ष की अवधि तक अर्थात 25 जनवरी, 1965 तक संघ सरकार के काम–काज में अंग्रेजी के प्रयोग की अनुमति दे दी गई। इसके बाद कई आयोग व कमेटी बनीं, अधिनियम व नियम भी जारी किए गए, पूरे देश को "क", "ख" व "ग" क्षेत्रों में बांट कर अलग–अलग कार्यक्रम भी निर्धारित किए गए, प्रशिक्षण संस्थान खोले गए, हिन्दी कार्यशालाएं चलाई गईं, हिन्दी अनुभाग बनाए गए किन्तु खेद है कि अभी तक राजभाषा प्रयोग के संबंध में दिखावा व आंकड़े इकट्ठे करने या अधिक से अधिक द्विभाषी मदें बनवाने, द्विभाषी–नियम आदेश जारी करने की बजाए कभी मूल रूप से राजभाषा हिन्दी में काम करने पर कोई गंभीर प्रयास नहीं किए गए हैं।

सरकारी काम–काज में हिन्दी प्रयोग के बारे में सरकार की नीति बड़ी स्पष्ट रही है कि तकनीकी या वैज्ञानिक शब्दों को या किसी अंग्रेजी शब्द का हिन्दी में कोई समानार्थी शब्द नहीं मिल रहा है तो उसको ज्यों का त्यों देवनागरी में लिखा जाए, नामों का अनुवाद नहीं किया जाए, तब हिन्दी लिखते समय न तो शब्द कोष की जरूरत होगी और न समानार्थी शब्द ढूंढने की जहमत उठानी पड़ेगी।

मेरे विचार में हिन्दी में काम नहीं करने का मुख्य कारण इच्छा शक्ति की कमी और अन्दरूनी झिझक का होना है। एक बार अपनी झिझक तोड़ कर हिन्दी में काम करना शुरू तो करें। आप स्वयं देखेंगे कि अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी में काम करना कितना सरल और स्वाभाविक है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा आदि राज्यों में शत–प्रतिशत सरकारी काम राजभाषा में बड़ी सरलता में किया जा रहा है। केन्द्र में ऐसा नहीं होने का एकमात्र कारण दृढ़ राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी है और कुछ नहीं। हम सबको मिल कर इसे दूर करना है।

आइये, हम सब मिलकर संकल्प करें कि आज से ही हम अपना पूरा सरकारी काम, राजभाषा में ही करने का यथा संभव प्रयास करेंगे और राष्ट्र के स्वाभिमान को बढ़ायेंगे।

संघ की राजभाषा नीति

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी संघ की राजभाषा घोषित की गई है। परन्तु संविधान के अनुच्छेद 343(2) में 15 वर्ष की अवधि तक अर्थात् 26 जनवरी, 1965 तर सरकारी काम-काज में अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखने की व्यवस्था भी की गई। इसके साथ ही संविधान में यह भी प्रावधान किया गया कि राष्ट्रपति इस अवधि के दौरान भी निर्दिष्ट कार्यों के लिए आदेश निकालकर अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी का प्रयोग करने की अनुमति दे सकते हैं। इस सम्बन्ध में संविधान के अनुच्छेद 343(3) के अनुसार संसद को भी यह शक्ति प्रदान की गई है कि वह अधिनियम पारित करके 26 जनवरी, 1965 के बाद भी सरकारी काम-काज में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रख सकती है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 344 में यह उल्लिखित है कि संविधान के प्रारम्भ होने के पांच वर्ष बाद और फिर उसके दस वर्ष बाद राष्ट्रपति एक आयोग बनाएंगे। यह आयोग अन्य बातों के साथ-साथ संघ के सरकारी काम-काज में हिन्दी भाषा के उत्तरोत्तर प्रयोग के बारे में संघ के राजकीय प्रयोजनों में से सब या किसी एक के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर रोक लगाए जाने के बारे में राष्ट्रपति को सिफारिश करेगा। आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए इस अनुच्छेद के खण्ड (4) के अनुसार 30 संसद-सदस्यों की एक संसदीय समिति के गठन की भी व्यवस्था की गई थी।

सन् 1955 में राजभाषा आयोग की स्थापना हुई। इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट सन् 1956 में दी। आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए 1957 ई. में एक संसदीय समिति गठित की गई। आयोग और संसदीय समिति दोनों का अभिमत था कि 1965 ई. के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग कायम रहना चाहिए। संविधान के उपर्युक्त अनुच्छेदों में प्रदत्त शक्तियों के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा क्रमशः राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा संकल्प-1968 और राजभाषा नियम-1976 पारित किए गए। जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

राजभाषा अधिनियम - 1963

राजभाषा आयोग और संसदीय समिति की सिफारिशों को कार्यरूप देने की दृष्टि से सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम पास किया गया ताकि अंग्रेजी का प्रयोग चालू

रखा जा सके। इस अधिनियम का 1967 ई. में संशोधन किया गया। यथा संशोधित अधिनियम की मुख्य व्यवस्थाएँ इस प्रकार है —

(1) अधिनियम की धारा 3 (1) के अनुसार (क) संघ के उन सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए, जिनके लिए 26 जनवरी, 1965 के तत्काल पूर्व अंग्रेजी का प्रयोग किया जा रहा था और (ख) संसद में कार्य-निष्पादन के लिए 26 जनवरी, 1965 के बाद भी हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में जारी रखा जा सकेगा।

(2) केन्द्रीय सरकार और हिन्दी को राजभाषा के रूप में न अपनाने वाले किसी राज्य के बीच पत्राचार अंग्रेजी में होगा, बशर्ते उस राज्य ने इसके लिए हिन्दी का प्रयोग करना स्वीकार न किया हो। इसी प्रकार हिन्दी-भाषी राज्यों की सरकारें भी ऐसे राज्यों की सरकारों के साथ अंग्रेजी में पत्राचार करेंगी और यदि वे ऐसे राज्यों को कोई पत्र हिन्दी में भेजती है तो साथ में उसका अंग्रेजी अनुवाद भी भेजेंगी। पारस्परिक समझौते से यदि कोई भी दो राज्य आपसी पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करें तो इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी।

(3) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों आदि के बीच पत्र-व्यवहार के लिए हिन्दी अथवा अंग्रेजी का प्रयोग किया जा सकता है। लेकिन जब तक सम्बन्धित कार्यालयों आदि के कर्मचारी हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त न कर लें, तब तक पत्रादि का दूसरी भाषा में अनुवाद उपलब्ध कराया जाता रहेगा।

(4) राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अनुसार निम्नलिखित कागज-पत्रों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग अनिवार्य है —

1. संकल्प, 2. सामान्य आदेश, 3. नियम, 4. अधिसूचनाएँ, 5. प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, 6. प्रेस विज्ञतियां, 7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, 8. सरकारी कागज-पत्र, 9. संविदाएं, 10. करार, 11. अनुज्ञप्तियां, 12. अनुज्ञापत्र, 13. टेंडर नोटिस और 14. टेंडर फार्म ।

(5) धारा 3 (4) के अनुसार अधिनियम के अधीन नियम बनाते समय सुनिश्चित कर लेना होगा कि केन्द्रीय सरकार का कोई कर्मचारी हिन्दी या अंग्रेजी में से किसी एक ही भाषा में प्रवीण होने पर भी अपना सरकारी काम-काज प्रभावी ढंग से कर सके और केवल इस आधार पर कि वह दोनों भाषाओ में प्रवीण नहीं है, उसका कोई अहित न हो।

(6) राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967 द्वारा अधिनियम की धारा 3 (5) के रूप में यह उपबन्ध किया गया है कि उपर्युक्त विभिन्न कार्यों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने सम्बन्धी व्यवस्था तब तक जारी रहेगी जब तक हिन्दी को राजभाषा के रूप में न अपनाने वाले सभी राज्यों के विधान मण्डल अंग्रेजी का प्रयोग समाप्त करने के लिए आवश्यक संकल्प पारित न करें और इन संकल्पों पर विचार करने के बाद संसद का प्रत्येक सदन भी इसी आशय का संकल्प पारित न कर दे।

(7) राजभाषा अधिनियम की धारा 4 में 26 जनवरी, 1975 के बाद एक संसदीय

राजभाषा सांमोते के गठन का उपबन्ध है। इस सांमोते में 20 लोकसभा सदस्य और 10 राज्यसभा सदस्य होंगे। यह समिति संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की जांच करेगी। समिति अपनी सिफारिशों सहित अपना प्रतिवेदन राष्ट्रपति को प्रस्तुत करेगी। समिति का यथासमय गठन कर दिया गया था और यह इस समय भी कार्य में संलग्न है।

(8) अधिनियम की धारा 7 के अनुसार किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से, उस राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए अथवा पारित किए गए किसी निर्णय, डिक्री अथवा आदेश के लिए, अंग्रेजी भाषा के अलावा, हिन्दी अथवा राज्य की राज्यभाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकता है। तथापि यदि कोई निर्णय, डिक्री या आदेश अंग्रेजी से भिन्न किसी भाषा में दिया या पारित किया जाता है तो उसके साथ-साथ सम्बन्धित उच्च न्यायालय के प्राधिकार से अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद भी दिया जाएगा। अब तक उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और बिहार के राज्यपालों ने अपने-अपने उच्च न्यायालयों में उपर्युक्त उद्देश्यों के लिए हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दे दी है।

राजभाषा संकल्प - 1968

2 दिसम्बर, 1967 में संसद के दोनों सदनों ने सरकार की भाषा नीति के सम्बन्ध में एक सरकारी संकल्प भी पारित किया, जिसे 18 जनवरी, 1968 को अधिसूचित किया गया। इस संकल्प के पैरा 1 के अनुसार केन्द्रीय सरकार हिन्दी के प्रसार तथा विकास और संघ के विभिन्न सरकारी प्रयोजनों के लिए उसके प्रयोग में तेजी लाने के वास्ते एक अत्यन्त गहन और विस्तृत कार्यक्रम तैयार करेगी और उसे कार्यान्वित करेगी। केन्द्रीय सरकार इस सम्बन्ध में किए गए उपायों तथा उनमें हुई प्रगति का ब्यौरा देते हुए एक वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट भी संसद के दोनों सदनों के सभा पटल पर प्रस्तुत करेगी। इस सम्बन्ध में निरन्तर आवश्यक कार्रवाई की जाती रही है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित होने के बाद से संघ के सरकारी काम-काज में एक लम्बी द्विभाषिक स्थिति शुरू हुई है, जिसमें कुछ कामों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाना अनिवार्य है और केन्द्रीय सरकार का प्रत्येक कर्मचारी अपने सरकारी काम-काज में हिन्दी या अंग्रेजी दोनों में से किसी भी भाषा का प्रयोग करने के लिए स्वतन्त्र है। राजभाषा नियम, 1976 में इन बातों की पुष्टि की गई है, लेकिन सरकार की यह सुविचारित नीति है कि संघ के काम-काज में हिन्दी का प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ाया जाए ताकि वह संघ की राजभाषा के रूप में अपना उचित स्थान ग्रहण कर सके। द्विभाषिक नीति की सफलता के लिए यह बहुत जरूरी है कि हिन्दी न जानने वाले केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को हिन्दी सिखाई जाए ताकि कम से कम वे हिन्दी में लिखी गई टिप्पणियों और मसौदों को पढ़ सकें और समझ सकें। इसके लिए हिन्दी शिक्षण योजना के माध्यम से समुचित व्यवस्था की गई है।

राजभाषा नियम - 1976

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 (2) के अधीन 1976 में राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम 1976 बनाए गए। सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में इन नियमों का जारी किया जाना एक महत्वपूर्ण कदम है। इन नियमों की कतिपय महत्वपूर्ण व्यवस्थाएं इस प्रकार हैं :—

(क) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश राज्य और संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली को, जिन्हें 'क' क्षेत्र कहा जाता है या ऐसे राज्यों में स्थित किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को भेजे जाने वाले पत्र आदि हिन्दी में भेजे जाएंगे। यदि किसी खास मामले में ऐसा कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद भी साथ भेजा जाएगा।

(ख) केन्द्र सरकार के कार्यालयों से पंजाब, गुजरात और महाराष्ट्र राज्य तथा चण्डीगढ़ और अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह (अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह अब 'क' क्षेत्र में आता है।) को, जिन्हें 'ख' क्षेत्र कहा जाता है, भेजे जाने वाले पत्र आदि सामान्यतः हिन्दी में भेजे जाएंगे। यदि ऐसा कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद भी साथ भेजा जाएगा। इन राज्यों में रहने वाले किसी व्यक्ति को हिन्दी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में पत्र भेजे जा सकते हैं।

(ग) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से 'ग' क्षेत्र के किसी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र (जिसमें 'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल न होने वाले सभी राज्य और संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं) के किसी कार्यालय या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाएंगे। यदि ऐसा कोई पत्र हिन्दी में भेजा जाता है तो उसका अंग्रेजी अनुवाद भी साथ भेजा जाएगा।

(घ) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्र-व्यवहार हिन्दी या अंग्रेजी में किया जा सकता है। किन्तु केन्द्र सरकार के किसी मंत्रालय/विभाग और 'क' क्षेत्र में स्थित सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों के बीच होने वाला पत्र-व्यवहार सरकार द्वारा निर्धारित अनुपात में हिन्दी में होगा । वर्तमान व्यवस्था के अनुसार कम से कम शत-प्रतिशत पत्र-व्यवहार हिन्दी में होना चाहिए। 'क' क्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकार के किन्हीं दो कार्यालयों के बीच सभी पत्र-व्यवहार हिन्दी में ही किया जाएगा।

(च) हिन्दी में प्राप्त पत्रों आदि के उत्तर अनिवार्य रूप में हिन्दी में ही दिए जाएंगे। हिन्दी में लिखे या हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए आवेदनों या अभिवेदनों के उत्तर भी हिन्दी में दिए जाएंगे।

(छ) राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाएगा और इसे सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की होगी।

(ज) केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी अपनी फाइलों में हिन्दी या अंग्रेजी में टिप्पणी या कार्यवृत्त लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह

उसका अनुवाद दूसरी भाषा में भी प्रस्तुत करे।

(झ) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से सम्बन्धित सभी मैनुअल, संहिताएं और अन्य प्रक्रिया-साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में द्विभाषिक रूप में तैयार और प्रकाशित किए जाएंगे। सभी फार्मों और रजिस्टरों के शीर्ष, नामपट्ट, मुहरें, स्टेशनरी आदि की अन्य मदें भी हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में होंगी।

(ञ) जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत या उससे अधिक कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान हैं और नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किया जाएगा। इस प्रकार अधिसूचित कार्यालयों को नियम 8 (4) के अन्तर्गत अवनिर्दिष्ट (स्पेसीफाई) करके उनमें काम करने वाले हिन्दी में प्रवीण कर्मचारियों को टिप्पणियों, मसौदों आदि में केवल हिन्दी का इस्तेमाल करने के लिए कहा जा सकता है।

(ट) प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह दायित्व होगा कि वह राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों को समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करे।

महानिदेशालय में हिंदी कार्यशाला

हिंदी दिवस के अवसर पर महानिदेशालय, केरिपु बल के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 24 अगस्त, 99 से 8 दिन की हिंदी कार्यशाला शुरू की गई जिसका विधिवत उद्घाटन श्री अरूण कुमार सिंह, उप निदेशक (प्रशासन) ने किया। इस अवसर पर प्रशासन शाखा के सभी अधिकारी व सभी 32 प्रतिभागियों सहित हिंदी कार्यशाला के प्रवक्ता श्री प्रेम चन्द्र धस्माना, सहा. निदे (राजभाषा), एन.सी.सी. निदेशालय भी मौजूद थे। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्री सिंह ने हिंदी कार्यशाला भी महत्ता व आवश्यकता पर बल डालते हुए बताया कि कार्मिक मानसिक झिझक के कारण हिंदी में काम नहीं कर पाते। उनकी इस झिझक को मिटाकर उनमें आत्म-विश्वास पैदा करके हिंदी में काम करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करते हेतु ही ऐसी कार्यशालाओं का हर विभाग व कार्यालय में आयोजन किया जाना बहुत ही जरूरी हो गया है।



हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए उप निदेशक (प्रशासन) श्री ए.के. सिंह

अंत में उन्होंने 14 सितंबर, 99 से आगे एक वर्ष तक राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के कार्यक्रम भी चलते रहने की जानकारी दी जिसमें दो सम्मेलनों सहित अनेक प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों के आयोजन किए जाएंगे। उन्होंने हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए राष्ट्र का गौरव बढ़ाने का आह्वान किया तथा वर्तमान हिंदी कार्यशाला की सफलता की शुभकामना की।

कुंजी न खो जाए

सबसे बदतर बुराई है – दिमागी गुलामी।

इसकी पुश्तैनी ताकत है, समझदार लोगों को भी अपनी चपेट में लपेट लेने की करामात। इसके चंगुल से छुटकारा पाने के लिए सही, सुलझी सोच-समझ की निजी "मंजुषा" चाहिए। इसे खोलने, फिर अपनी मर्जी से बन्द कर रखने हेतु जरूर चाहिए अपनी चाबी। अपना जीवन, समाज, प्रान्तर, राष्ट्र, साहित्य, संस्कार संवारने, अपनी भाषा, संस्कृति, जिजीविषा और जिज्ञासा साधने के लिए निजी मंजूषा और निजी कुंजी परम आवश्यक हैं।

वर्तमान स्थिति-गति यह है, अधिकांश प्रबुद्ध, शिक्षित भारतीय प्रजानन, आयातित पराई "मंजूषा" को अपना "सेफ्टी लॉकर" मानकर अपनी पहचान, सोच-समझ सबको उसमें बन्द करके आए हैं, चाबी खो भी जाए कोई परवाह नहीं।

एक पुरानी बात भुलाई नहीं जाती, जो आज भी अपनी प्रासंगिकता के बल पर झूमती है -

सन् 1835 में ब्रिटिश कम्पनी सरकार ने बौद्धिक शोषण के विशेषज्ञ लार्ड मेकाले

की सलाह पर, उसकी सुझाई गई "शिक्षा पद्धति" को परतन्त्र भारत में चालू कर दिया। तत्कालीन गवर्नर जनरल बेण्टिन्क ने ऐलान किया –

"ब्रिटिश साम्राज्य की इस सरकार का प्रधान उद्देश्य यह होना चाहिए कि भारतीय विद्यार्थियों को यूरोपीय साहित्य और ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराया जाए। भारत में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए स्वीकृत धनराशि पूरी तरह अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के लिए ही खर्च की जानी चाहिए।"

बाईस साल के बाद सन् 1857 में, कलकत्ता, मुंबई और मद्रास में अंग्रेजी विश्वविद्यालय शुरू किए गए। आज भी ये ज्ञान-विज्ञान के केन्द्र विदेशी गरिमा के विजय-स्तूप बनकर चमक रहे हैं। अब भी यहां "अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी", "छांड़ि रे मन निजभाषा विमुखन को संग", "हा : हा । भारत दुर्दशा न देखी जाई । ....." आदि उद्गार रूदाली के प्रलाप माने जाते हैं।

फिर भी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की यह पुरानी शुभाशंसा " .... भारतीय भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत-भारती होकर विराजती रहे।" फलने लगी है।

– र. शौरिराजन

पुस्तक 'प्रशासनिक कार्यालय मंजूषा' की भूमिका में साभार

हिन्दी देश की गंगा है

यहां हम अनेक महापुरूषों, लेखकों, कलाकारों, मनीषियों एवं चिन्तकों द्वारा समय-समय पर अभिव्यक्त किए गए भाव-पुष्पों को उद्घृत कर रहे हैं :–

कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतन्त्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।

–महात्मा गांधी

हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल की सींचती है और दृढ करती है।

–राजर्षि टण्डन

कोई भी देश अपनी भाषा, संस्कृति की उपेक्षा करके उन्नति नहीं कर सकता।

–कुशोक बकुल

हिन्दी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुंचा जा सकता।

–डॉ. लोथर (जर्मनी)

दुनिया भर में भारत को छोड़कर कोई भी ऐसा देश नहीं मिलेगा, जहां एक विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है।

–महाकवि पी. कुंजि

हिन्दी सीखने का कार्य ऐसा त्याग है जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को राष्ट्रहित में करना चाहिए।

–एनी बेसेन्ट

हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य के अभाव का नारा भ्रामक है।

–पीताम्बर दास

जो जाति अपनी भाषा को भुला देती है वह दुनिया से समाप्त हो जाती है।

–बादशाह खान

हिन्दी सारे विश्व को एक परिवार में पिरोने वाली भाषा है, जिसका शब्द-भण्डार सागर की भांति विस्तृत व गहरा है।

–सर अनिरूद्ध जगन्नाथ

अंग्रेजी विकल्प के रहते हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं की उन्नति सम्भव नहीं।

–डॉ नगेन्द्र

"दुनिया से कह दो गांधी अंग्रेजी नहीं जानता।"

–महात्मा गांधी

सचमुच उस समय मेरी आंखे भर आती है, जब मेरे पास लोगों के पत्र अंग्रेजी में आते हैं।

–महादेवी वर्मा

मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि हिन्दी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।

–बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

हिन्दी भारत के लिए प्रकृति का वरदान है।

–गिरिधर शर्मा

हिन्दी को गंगा नहीं समुद्र बनाना होगा।

–आचार्य विनोबा भावे

हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।

–माखन लाल चतुर्वेदी

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है।

–सुमित्रनन्दन पन्त

मेरे लिए हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।

–राजर्षि टण्डन

भाषा जिस तरह बोली जाय उसी तरह लिखी भी जाय, बनावटी भाषा, भाषा नहीं।

–आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।

–आचार्य विनोबा भावे

हिन्दी प्रेम की भाषा है।

–महादेवी वर्मा

हमारी राष्ट्रभाषा की गंगा में देशी और विदेशी सभी शब्द मिलकर एक हो जाएंगे।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

हिन्दी और संस्कृत में समस्त भारत की आत्मा मुखरित है।

–औडोलेन स्मेकल

भारतीय जनता के बीच काम करने के लिए हिन्दी ही एकमात्र साधन है।

–जय प्रकाश नारायण

हिन्दी भाषा एस समृद्ध जल-राशि के सदृश है, जिसमें अनेक नदियां मिली हों।

–डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।

–लाल बहादुर शास्त्री

हिंदी में कंप्यूटर व्यवस्था

आमतौर पर जब हम कंप्यूटर की बात करते हैं तो उसमें तीन पहलू शामिल होते हैं (1) हार्डवेयर (2) साफ्टवेयर तथा अनुप्रयोग साफ्टवेयर। जहां तक कंप्यूटरों में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं का संबंध है, इन पहलुओं की स्थिति निम्न प्रकार है :-

(1) हार्डवेयर प्रणाली

कंप्यूटर न तो अंग्रेजी समझता है और न हिंदी इसकी अपनी भाषाएं होती हैं यह दिआधारी अंकों (0 तथा 1) पर कार्य करता है इसलिए इनका इस्तेमाल किसी भी भाषा में करने में कोई कठिनाई नहीं है। कंप्यूटर में आमतौर पर दो प्रकार के कुंजीपटल का प्रयोग किया जाता है (क) टाइपराइटर ढांचा (ख) ध्वन्यात्मक ढांचा। कुंजीपटल के स्टिकर होते हैं जिन्हें उखाड़कर संबंधित कुंजियों पर लगा देने मात्र से ही कुंजीपटल द्विभाषी बन जाता है। इसी तरह कंप्यूटर पर तैयार की गई सामग्री का मुद्रण करने के लिए कई किस्मों के प्रिंटरों का प्रयोग किया जाता है। हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में 300 से 550 लाइन प्रति मिनट की गति से मुद्रण के लिए मेसर्स

लिपि डेटा सिस्टम द्वारा विकसित एक लाइन मैट्रिक प्रिंटर उपलब्ध है। लेजर प्रिंटर तथा बबलजेट से भी द्विभाषी मुद्रण कर सकते हैं।

(2) साफ्टवेयर/अनुप्रयोग साफ्टवेयर

कोई भी हार्डवेयर तब तक कोई काम नहीं कर सकता है जब तक कि इनके लिए प्रणाली साफ्टवेयर नहीं तैयार किया जाए। प्रयोगकर्ताओं को कंप्यूटर पर काम करने की सुविधा प्रदान करने के लिए फोट्रनि, कोबार, प्रोलांग तथा पास्कल आदि जैसी कंप्यूटर भाषाओं में प्रोग्राम तैयार किये जाते हैं। इन्हें कंपाइलर कहते हैं। ये मूलतः अंग्रेजी में हैं तथा हिन्दी भारतीय भाषाओं में काम करने वाले कंप्यूटरों में इनका इस्तेमाल किया जाता है। इस क्षेत्र में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के लिए काफी कुछ कार्य किया गया है। कुछ अनुप्रयोगों को छोड़कर शब्द संसाधन, डेस्कटाप प्रकाशन, आंकड़ा संसाधन तथा स्प्रेड सीट जैसे क्षेत्रों में प्रयोगकर्ता के लिए उपयोगी इनपुट/आउटपुट क्षमताएं भारतीय भाषाओं में सफलतापूर्वक उपलब्ध हैं।

इस कार्य में कई कम्पनियों ने सामग्री/पैकेज तैयार किए हैं जो बाजार में उपलब्ध हैं जिनमें शब्द सम्राट, चित्र लेखा, लीप, इंडिका, श्रीलिपि, कैराली, हिंदी स्क्रिप्ट, मोजेक, सर्वर टोपी, प्रतीक, रूपांतर, रंगोली, विजन, वर्ड्टार, अक्षर इंटरफेस, विजन सर्वेयर, विजन फोटो ग्राफर, आकृति टेराफांट, स्वदेशवर्ड, स्वदेश आफिस, स्वदेश क्लासिक आदि। इस दिशा में इलेक्ट्रानिकी विभाग ने "भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (टीडीआईएल) नामक कार्यक्रम शुरू किया है। इसका उद्देश्य भारतीय भाषाओं में सूचना संसाधन के लिए प्रौद्योगिकी साधनों का विकास, भाषाओं के अध्ययन शोध कार्यों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी भाषा विज्ञान तथा कंप्यूटर साधित ज्ञानार्जन एवं शिक्षण पर, शैक्षणिक/प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ करवाना है।

कंप्यूटर पर हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु राजभाषा विभाग द्वारा किए गए प्रयास।

राजभाषा विभाग का तकनीकी कक्ष पिछले कई वर्षों से देवनागरी में इलेक्ट्रोनिक सुविधाओं के प्रयोग व प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस क्षेत्र में राजभाषा विभाग के निम्नलिखित प्रयास उल्लेखनीय हैं :–

(1) कंप्यूटर पर अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में कार्य करने के लिए 1994 में एक प्रोत्साहन योजना चलाई गई है जिसके तहत टंकक/आशु लिपिकों को 120/80 रुपए प्रति माह प्रोत्साहन भत्ता दिया जाता है।

(2) हिंदी न जानने वाले अधिकारीगण कंप्यूटर की सहायता से स्वयं प्रबोध स्तर का हिंदी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं भी इसके लिए "लीला-हिंदी प्रबो, नामक" सेल्फ ट्यूटर का विकास किया गया है। इस पैकेज की सहायता से हिंदी के अक्षर, शब्द तथा वाक्यों को लिखना व बोलना सीखा जा सकता है। यह 1995 में तैयार किया गया।

(3) राजभाषा विभाग, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र नई दिल्ली के माध्यम से लखनऊ, पूणे, हैदराबाद, नई दिल्ली केन्द्रों पर कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक वर्ष 11 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है जिनमें 6 राजभाषा विभाग द्वारा तथा 5 रा.सू.वि. केन्द्र द्वारा आयोजित किए जाते हैं।

(4) राजभाषा विभाग द्वारा ई.आर. एण्ड. डी.पी.आई. नोयडा (उ.प्र.) के माध्यम से 5 दिन का कंप्यूटर का आधारभूत ज्ञान (विंडोज पर) प्रशिक्षण प्रयोजित किया गया है। यह प्रशिक्षण सरकारी विभागों/उपक्रमों/बैंकों के कर्मचारियों के लिए निःशुल्क दिया जाता है। प्रत्येक वर्ष 6 कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

(5) राजभाषा विभाग ने अपट्रान इंडिया लि. के द्वारा दो हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रायोजित किए हैं। यह कार्यक्रम कंप्यूटर एप्रीसियेशन प्रोग्राम के नाम से है जो 5 दिन की अवधि का है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी में कंप्यूटर पर कार्य करने के लिए काफी कुछ सामग्री उपलब्ध है तथा प्रायवेट कम्पनियों/संस्थाओं के साथ-साथ सरकार द्वारा भी काफी प्रयास किए गए हैं। जहां तक केरिपुबल में हिंदी कंप्यूटर पर कार्य करने की बात है, इस दिशा में प्रयास जारी हैं, प्रशिक्षण पर कार्मिकों को नामित किया जा रहा है तथा कुछ प्रशिक्षण भी प्राप्त कर चुके हैं। आशा है, इस पर आगे विचार किया जाएगा ताकि यह बल इस कार्य में भी पीछे न रहे।

– शांति स्वरूप हिन्दी अनुवादक, महानिदेशालय

हिंदी भाषा - विविध रूप

– निरीक्षक शिव कुमार खंडेलवाल, ग्रुप केन्द्र नीमच

भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में जब हिंदी की बात करते हैं तो सामने एक लम्बा इतिहास आ खड़ा होता है। मुगल काल के पहले से लेकर आज तक इसके नाम के साथ ही इसकी प्रकृति और इसके स्वरूप में भी लगातार परिवर्तन परिवर्धन और विकास की गति देखने को मिलती हैं। इस रूप में हिंदी, हिन्दुस्तानी, देविस्वनी – खड़ी बोली अथवा हिंदी, इसे जिस किसी नाम से भी क्यों न पुकारा गया है, इसने व्यापक समान के अवबोध को अपने साथ लेकर चलने और व्यापक से व्यापकतर परस्पर भिन्न भाषा-भाषी समाज के पारस्परिक आदान-प्रदान के माध्यम के रूप में, संपर्क भाषा के रूप में अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है।

हम हिंदी के प्रयोग क्षेत्र से परिचित होने के लिए हिंदी भाषा के वर्तमान रूपों को देखने का प्रयास करते हैं।

हिंदी भाषा के रूप -

व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने पर हिंदी भाषा के मौटे तौर पर तीन रूप दृष्टिगोचर होते हैं :- (1) सामान्य हिंदी (2) साहित्यिक हिंदी (3) प्रयोजन-मूलक अथवा व्यावसायिक हिंदी।

(1) सामान्य हिंदी

व्यक्तिगत स्तर पर प्रयुक्त हिंदी भी लोकभाषा या बोलचाल की भाषा का रूप सामान्य हिंदी का रूप हैं। जिसमें क्षेत्र, राज्य और इलाके के शब्दों का खूब इस्तेमाल होता है। यही कारण है है कि पूर्वी भारत, उत्तरी भारत, हरियाणा, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि हर क्षेत्र की हिन्दी अलग है।

(2) साहित्यिक हिंदी

सामान्य हिंदी का परिस्कृत रूप, शब्दशक्ति, अलंकार आदि के सम्यक परिणाम से ललित हिंदी अथवा साहित्यिक हिंदी का रूप ले लेता है। इसकी परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है तथा जिसने भाव, रूप तथा अभिव्यक्ति की अनेक यंत्रिकाओं, शैलियों तथा पद्धतियों को लिया भोगा तथा विकसित किया है। हिंदी का यह साहित्यिक रूप बड़ा समृद्ध तथा सम्पन्न हैं।

(3) प्रयोजन मूलक अथवा व्यावसायिक हिंदी

यह व्यावहारिक जीवन से सम्बद्ध है और मानव के जीवन यापन और व्यावसाय परक क्रिया कलापों का सशक्त माध्यम हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी को व्यावहारिक हिंदी कामकाजी हिंदी आदि नाम से भी जाना जाता है।

प्रयोजनमूलक अथवा व्यावसायिक हिंदी रोजी-रोटी तथा जीवन के अभिप्रेत लक्ष्यों से सम्बद्ध क्षेत्रों यथा-प्रशासन समाज, राजनीति, कृषि व्यापार उद्योग विधि, अर्थ प्रशिक्षण, चिकित्सा अभियांत्रिकी, ज्योतिष, अध्यात्मदर्शन मनोविज्ञान आदि ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं के चिंतन-मनन एवं अभिव्यक्ति की हिंदी हैं। प्रयोगमूलक हिंदी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिये तो व्यवहार में आती ही हैं, व्यापक भविष्य की योजनाओं को रूपायित करने वाली प्रयोजनाओं, सम्बद्ध तकनीकी एवं व्यावसायिक अध्ययनों और प्रचालित क्रिया कलापों को सवहन करने वाला भाषाई माध्यम भी हैं। व्यवहार-परक शब्दावली, प्रयुक्तियों और अभिव्यक्तियों के वैशिष्ट्य को लेकर प्रयोजनमूलक हिंदी को मोटे-तौर पर चार वर्गों में विभक्त कर देखा जा सकता हैं।

(क) वाणिज्यिक (ख) शास्त्रीय (ग) वैज्ञानिक (घ) तकनीकी।

(क) वाणिज्यिक

वाणिज्यिक हिंदी से तात्पर्य है जिसकी शब्दावली वाणिज्यिक व्यवसाय में परंपरित रूप से प्रयुक्त रूढ़ शब्दावली हैं। ऐसी हिंदी के अंतर्गत गांव के हाट बाजार से लेकर बड़ी-बड़ी मण्डियों की हिंदी व्यावसायिक लेन-देन की हिंदी आदि आती हैं। विज्ञापन जगत की हिंदी भी इसी प्रकार की हिंदी है। दाल गरम, चावल नरम, सोना उछला, चांदी लुढ़की, मूल्य सूचनांक स्थित, मन्दी का रूख, चना तेज आदि प्रयुक्तियों के उदाहरण कहे जा सकते हैं।

(ख) शास्त्रीय हिंदी

इसके अंतर्गत समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, पाक-शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र आदि विषय लिए जा सकते हैं। ऐसे शास्त्रों की विशेषता यह होती है कि इनकी विषयानुसार अपनी-अपनी पारिभाषिक शब्दावली होती है। अनेक स्थितियों में इनकी प्रयुक्तियां भी एक दूसरे से भिन्न होती है। सामाजिक विघटन, शरारती तत्व, धीमी आंच, उफनते दूध इसके उदाहरण हैं।

(ग) वैज्ञानिक हिंदी

इससे तात्पर्य है भू-विज्ञान, मनोविज्ञान, आंतरिक विज्ञान आदि विशिष्ट ज्ञान और अनुसंधान से संबद्ध ऐसे क्षेत्र से है जो एक से एक उपलब्धियों से लैस करते हैं। इसमें विषयानुसार भाषा के रूप बदलते चले जाते हैं और उनकी प्रयुक्तियां भी परिवर्तित होती चली जाती हैं। तेजी के साथ विकास की गति में भाषा की गतिमानता स्वाभाविक हैं।

मौसम अध्ययन आम्लिक प्रभाव, ध्वनि, तरंगे, गुरूवात्कर्षण से युक्त आदि इसकी प्रयुक्ति के उदाहरण कहे जा सकते हैं।

(घ) तकनीकी हिंदी

तकनीकी हिंदी वस्तुतः तकनीकी हिंदी के साहित्य कारोबार और व्यवहार में प्रयोग में आने वाली हिंदी हैं।

आज का युग तकनीकी और प्रौद्योगिकी का युग है। इसमें प्रयुक्त भाषा स्वाभावतः तकनीकी भाषा है। प्रयोगजनमूलक हिंदी में अन्य वर्गों की तरह ही तकनीकी हिंदी की भाषा आम तौर पर अपनी रचनाधर्मिता में सहज स्वाभाविक होती है, किन्तु

इसकी शब्दावली रूढ़ और एकार्थक होती है। स्वाभाविक है कि इसकी प्रयुक्तियाँ भी आम फहम न होकर गंभीर होगी।

प्रक्षेपास्त्र तकनीक, आणविक तकनीक जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों हिंदी को तकनीकी हिंदी के अन्तर्गत लिया जा सकता है।

पहिया जाम, स्क्रू ढीला, संयत्र चालक, ब्रेक फेल आदि प्रयुक्तियां तकनीकी हिंदी के उदाहरण कहे जा सकते हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी

–उप कमांडेंट के.पी. उन्नीकृष्णन, ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम

शरीर में रक्त संचार के लिए जितना महत्व धमनियों का है, उतना ही महत्व किसी प्रशासन के चलाने के लिए भाषा का है। भाषा रूपी पहिये के बिना एक पग भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता है। व्यक्ति, परिवार, समाज व सरकार के संबंधों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। जब नन्हा बच्चा परिवार के साथ अंगुलियों के सहारे गिरते-फिरते चलते हुए कुछ शब्दों को सिखता है, वह उसकी मातृभाषा कहलाती है, जिस भाषा में राज का काम काज चलता है, वह उस देश की राजभाषा कहलाती है। जहां तक हमारे देश का प्रश्न है, हमारा देश बहुरंगी, बहुभाषी व बहुधर्मी है, फिर भी अनेकता में एकता रूपी शब्द विद्यमान हैं जो कि इस देश की सबसे गौरव की बात है।

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी को राजकाज की भाषा, सम्पर्क की भाषा की मान्यता दी गयी। यह किसी हिन्दी भाषी का जोर नहीं था, इस भावना से वह दिन कितना सुखद व अच्छा रहा होगा कि जब राजभाषा की जो समिति बनायी गयी थी उसमें ज्यादा अहिन्दी भाषी लोग ही थे, जिनकी आंखों में दूरदर्शिता थी कि राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्रभाषा का होना जरूरी है और वह हिन्दी ही हो सकती है।

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा क्यों ? यह प्रश्न भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के बाद भी उठना या उठाना, देश पर घाव करने जैसा लगता है, आज “क्यों” का प्रश्न ही नहीं होना चाहिए। हिन्दी को अधिक लोगों के द्वारा बोले जाने के कारण राजभाषा का दर्जा दिया गया, ऐसा सोचना भी गलत है।हिन्दी को राजभाषा की दर्जा इसलिए नहीं दिया गया कि हिन्दी अधिक लोगों के द्वारा बोली जाती है, बल्कि हिन्दी आसानी से बोली, समझी जा सकती है। इसकी लिपि वैज्ञानिक, पूर्ण व सरल है, यह सबसे बड़ी एकता रूपी भाषा है। महर्षि दयानंद ने हिन्दी के प्रति कहा था कि, “हिन्दी के द्वारा ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।”

देश के इतिहास की ओर नजर डालें तो साफ दिखता है कि अंग्रेजी ने स्थानीय भाषाओं का अतिक्रमण कर, हमारी संस्कृति को खोखला करने का प्रयास किया है।

क्योंकि भाषा ही संस्कृति की आत्मा है। हमारी मातृभूमि ने ऐसे वीर सपूतों को जन्म दिया है जिन्होंने अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए अपना सर्वस्व न्यौच्छावर कर दिया। आज विश्व के नक्शे में कुछ देश विकसित देशों के नाम से जाने जाते हैं, वहां का इतिहास भी बहुत कुछ भूत में ऐसा ही रहा था, लेकिन आज वह दूसरी भाषा की वैशाखी पर नहीं चल रहे हैं, उनकी अपनी राष्ट्रभाषा है और वहां के लोग राष्ट्रभाषा को ही बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प हैं। फिर हम लोग अपनी राष्ट्रभाषा को अपने ही देश के अंदर क्यों नहीं अपना पा रहे हैं ?

आज हम लोग हिन्दी को राजभाषा के साथ-साथ सम्पर्क की भाषा मानते हुए इसे प्रेम अनुराग की भाषा मानें, तभी इसका विकास संभव है। हर काम हिन्दी में संभव है, समझना आसान, समझाना आसान, शुरू तो कीजिए।

हिन्दी है भारत की बोली

–स.उ.नि (म.) राम नारायण चौधरी, पूर्वी सेक्टर मुख्यालय

आत्माभिव्यक्ति की इच्छा मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है। अपनी बात दूसरों से कहने एवं दूसरों के विचारों को ग्रहण करने में उच्चारित शब्द ही बोली है और बोली का विकसित रूप भाषा है।

जिस हिन्दी को चन्दवरदाई से लेकर विद्यापति ने चमकाया, कबीर से लेकर मीरा ने भक्ति की धारा बहाई, जायसी से लेकर तुलसी दास ने जिसे जनता के गले का हार बनाया, रसखान से लेकर बिहारी तक ने जिसे आभुषणों से सजाया, गुरू अर्जुन देव से लेकर गुरू गोविन्द सिंह जी तक ने जिसे अपना माध्यम बनाया, देव से लेकर पद्माकर तक ने जिसे अलंकारों से जड़ दिया और भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द से लेकर जयशंकर प्रसाद तक ने इसे समृद्धि के जिस शिखर पर पहुंचाया उसका लेखा जोखा इतिहास करेगा, हम क्या करें।

नौवीं शताब्दी से लेकर आज तक हिन्दी की गाड़ी अनवरत जन सामान्य की आशा, आकांक्षा को अपने साथ लेकर बढ़ रही है, उसे आप राष्ट्रभाषा कहिए राजभाषा कहिए, संपर्क भाषा कहिए या जनभाषा कहिए कोई फर्क नहीं पड़ता। हिन्दी भारत मां के ललाट की बिन्दी है, हिन्दी चंदन लेप है और धूप दीप, अक्षत तथा हल्दी के समान पवित्र समभाव है।

जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं थी उन्होंने भी महसूस किया कि हिन्दी के बिना राष्ट्र की अस्मिता, एकता खतरे में पड़ जायेगी। इतिहास साक्षी है कि देश के स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। गांधी जी के प्रयासों से हिन्दी को बढ़ावा मिला तथा हिन्दी ने विभिन्न भाषा-भाषी स्वतंत्रता के आन्दोलनकारियों को एक सूत्र में बांध दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका का ही परिणाम था कि गैर हिन्दी भाषी राजा राम मोहन राय ने 1838 में, केशव ने 1875 में तथा उसके बाद रविन्द्र नाथ टैगोर, बंकिम चन्द्र चटर्जी और सुभाष चन्द्र बोस आदि ने

हिन्दी को राजभाषा बनाने की ओर देश का ध्यान आकर्षित किया।

भारत राष्ट्र की राष्ट्र भाषा हिन्दी हो चुकी है। लोगों ने हिन्दी को अपनी राष्ट्र भाषा माना है सारे भारत में जम्मू कश्मीर से कन्याकुमारी तक कितनी ही भाषाएं प्रचलित हैं उनमें से हिन्दी भाषा सर्वत्र प्रचलित है जिसे भारत की एक मात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाय जो सहज में ही एकता का प्रतीक है। हिन्दी एक ऐसा बिन्दु रही है जहां सभी ने अपना मजहबी एवं भाषाई भेदभाव मिटाकर एकता का परिचय दिया इसलिए हम गर्व से कह सकते है कि "हिन्दी है भारत की बोली"।

स्वतंत्रता दिवस पर के.रि.पु. बल के *31* कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के 31 कार्मिकों को उनकी सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इनमें से दो अधिकारियों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 29 अधिकारियो तथा कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :–

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



अपर पुलिस उप महानिरीक्षक पी.जे. शेट्टी *(*महानिदेशालय*)*



अपर पुलिस उप महानिरीक्षक बलवंत सिंह *(*ग्रुप केन्द्र गुडगांव*)*

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



सहा. निदे. रत्नाकर रमन *(*आंतरिक सुरक्षा अकादमी*)*



सहा. निदे. एस.एम.जेड. रिजवी *(*महानिदेशालय*)*



कमां. एन. जी. सुब्रह्मणय *(70* बटा.*)*



कमां. बी.के. शर्मा *(31* बटा.*)*



कमां. देवेन्द्र सिंह *(80* बटा.*)*



द्वितीय कमान अधि. जगमेहर सिंह *(89* बटा.*)*



द्वितीय कमान अधि. ओ.पी. डागर *(*ग्रु. केन्द्र भोपाल*)*



डिप्टी कमां. एस.डी. त्रिपाठी *(केन्द्रीय प्रशि. कालिज-1)*



डिप्टी कमां. के. बाबू *(58* बटा.*)*



डिप्टी कमां. ए. अब्दुल रहीम *(18* बटा.*)*



डिप्टी कमां. बच्ची सिंह नेगी *(55* बटा.*)*



डिप्टी कमां. राजेन्द्र सिंह यादव *(103* बटा. आर.ए.एफ.*)*



सहायक कमां. *(*अब डिप्टी कमां.*)* श्रवण सिंह *(*आर.टी.सी-*1)*



सहायक कमां. आर.एस. सिंह *(53* बटा.*)*



इंस्पेक्टर बन्ना राम *(96* बटा.*)*



इंस्पेक्टर वी.आर.डी. कैमल *(2* सिग. बटा.*)*



इंस्पेक्टर नारायण सिंह *(47* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर रोशन लाल यादव *(127* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर एन. योगीदासन *(91* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर शंकर किशन *(सी.टी.सी.-3)*



सब इंस्पेक्टर आर.पी. शर्मा *(76* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर प्रबत सिंह *(131* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर गुमान सिंह *(70* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल रामानंद *(61* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल जेम्स कंडोलाना *(96* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल रामानुज राम *(74* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल बालन परमबाथ *(*ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम*)*



हैड कांस्टेबल आर.पी. मौर्या *(39* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह *(41* बटा.*)*

संक्षिप्त समाचार

गृह मंत्रालय के संबद्ध अधीनस्थ कार्यालयों में सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए लागू राजभाषा शील्ड योजना के तहत वर्ष 1996-97 के दौरान हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन करने के लिए केरिपुबल को द्वितीय स्थान के लिए चुना गया तथा विज्ञान भवन में दिनांक 11.6.99 को आयोजित समारोह में गृह सचिव द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। राजभाषा शील्ड श्री आ.एस. गिल, पुमनि (मुख्यालय) ने ग्रहण की। इस कार्यान्वयन कार्य में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए श्री टी.आर. अरोड़ा, पुउमनि, के.प्र.का.-1, नीमच तथा निरीक्षक (म.) ओम प्रकाश शर्मा-106वीं बटालियन केरिपु बल, इलाहाबाद को स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

* * *

वर्ष 1998-99 के दौरान की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सराहनीय योगदान के लिए ग्रुप केन्द्र केरिपु बल, बनतलाब को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जम्मू द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

* * *

बल के 11 हिंदी अनुवादकों को केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग में 5 दिन

का पुश्चर्या अनुवाद प्रशिक्षण दिलाया गया।

* * *

बल के 100 कार्मिकों को हिंदी भाषा, 112 को हिंदी टंकण तथा 10 आशुलिपिकों को हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिलाया गया।

* * *

बल के 14 कर्मचारियों को केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान नई दिल्ली में चलाए गए 5 दिवसीय इलैक्ट्रोनिक टाइपराइटर का प्रशिक्षण दिलाया गया है। इसी तरह महानिदेशालय के 3 कार्मिकों को राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र में चले 5 दिवसीय हिंदी कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिलाया गया।

जय हिन्द

हिंदी है हम वतन है हिन्दुस्तां हमारा – (इकबाल)
कहने को कह रहे हैं हिन्दुस्तां हमारा – (गुलशन)
हिन्दी हमारी माता क्या ये हक नहीं हमारा,
अब तक रहा है दुशमन सारा जहां हमारा
हिन्दी हैं हम फकत यही जुर्म है हमारा,
रहा सदियों की दासता से बेजुबां बेचारा
अपनों ने इसको हारा गैरों ने इसको मारा,
लाचार है दलित है अब ढूंढता सहारा
उठो ए नौजवानों अब वक्त है तुम्हारा,
लेना पड़े न इसको बैसाखियों का सहारा
हिन्दी हमारी माता हिन्दुस्तां हमारा,
हम हिन्द के सिपाही करते नमन तुम्हारा
हम एक हैं वतन है हिन्दुस्तां हमारा,
“जय-हिन्द” बोलो मिलकर ये एकता का नारा

डी.एस. पुंडीर
अपर पुलिस उप महानिरीक्षक
ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर – केरिपु बल

हिन्दी का क्या कहना

“भारत” का है गहना।
राजमुकुट पर चमके बन बिंदी।
भाषाओं में निराली हिंदी।
सब मिल कर बोलो, जय हिंदी।

जय हिंदी, जय हिंदी, जय जय जय हिंदी।
यदि हिंदी का जयकार करोगे।
यदि हिंदी में काम करोगे।
यदि हिंदी का सत्कार करोगे।
शुद्ध भारतीय कहलाओगे।

म.कु. दीक्षित स.उ.नि.
प्रशा. दो/कल्याण, महानिदेशालय, के.रि.पु. बल

राष्ट्रभाषा हिंदी

स्वतंत्र भारत - हिन्द की भाषा
राष्ट्रभाषा हिन्दी है।
स्वागत करती हूं मैं तेरा,
तुझे पढ़कर आज हो रहा,
दूना प्रमुदित मन मेरा।
दीप-शिखा है यह अंधकार की
बनी दीनों की उजियाली,
जीवन-ज्योति है भारतवासियों की,
है पतझड़ की हरियाली।
परिचय पूछ रहे हो मुझसे
कैसे परिचय दूं इसका
वही जान सकता है इसको,
हिन्दी भाषा से प्रेम है जिसको।
14 सितम्बर 1949 को मिला दर्जा इसे राजभाषा का
लागू किये गये नियम कई धीरे-धीरे इसे अपनाने में
पढ़ रहे हैं बच्चे आजकल
कॉन्वेंट और पब्लिक स्कूलों में,
कैसे बढ़ेगा प्रयोग इसका, ऐसे आधुनिक जमाने में ?
भाषा त्यागो विदेशी, अपनी भाषा अपनाओ,
सहज सरल भाषा में काम कर,
देश को समृद्ध बनाओ।
नहीं है दुष्कर हिंदी भाषा
शुरू करो लिखना एक बार।
बढ़ाओ अपने देश की शान,

होगा अपना देश महान्।

श्रीमती मनोरमा देवी, सउनि. (मं.)
महानिदेशालय (हिंदी अनुभाग)

यह अतुलित अमृत-धारा

अपने अन्तर्मन की भाषा, निर्भय हो कर बोलो।
तेजवन्त गुणवन्त सलिल की, धारा के संग हो लो।
मधुर मनोहर हिन्दी से ही हो कल्याण हमारा।
सरस-सरल है हिन्दी की यह अतुलित अमृतधारा।
अपनाओ देशी सम्बोधन, बात विदेशी त्यागो।
परभाषा के मोह में खोये, अब तो सब मिल जागो।
गूंज उठेगा भुव में फिर से हिन्दी का जयकारा।
सरस-सरल है हिन्दी की यह अतुलित अमृतधारा।
अपनी माता से बढ़ कर जो, माने बात पराई।
उन पुत्रों पर सुख-वैभव की, पड़े नहीं परछाई।
पढ़े-पढ़ाए मिल कर इसका फैलाएं उजियारा।
सरस-सरल है हिन्दी की यह अतुलित अमृतधारा।

– हंसराज ओझा प्रभांत उप नि. (मं)
ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट

मेरी हिंदी

जो सोचूं हिन्दी में सोचूं
जब बोलूं हिन्दी में बोलूं।
ओझल-ओझल भीतर का सच
जब खोलूं हिन्दी में खोलूं।
आत्मा के आंसू का अमृत
जब घोलूं हिन्दी में घोलूं।
जो कुछ हूं हिन्दी में हूं मैं।
जो होलूं-हिन्दी में होलूं।
शेष गुलामी के दागों को
जब धोलूं हिन्दी में धोलूं।
जब जागूं हिन्दी में जागूं

जब सो लूं हिन्दी में सो लूं

– डा. तारा प्रसाद जोशी

*(*हंसराज ओझा प्रभात, उप निरी. *(*म*)* ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट द्वारा संकलित*)*

कविताएं

आपरेशन विजय *1999*

आया समय जवानों जागो
भारत भूमि पुकारती।
जाग उठो शत्रु की सेना
सीमा पर ललकारती।
शत्रु हमारी मातृभूमि पर
करता कितनी मनमानी।
आज दिखा दो उन दुष्टों को
है हम में कितना पानी।
अभी जवानों की रग रग में
गरम खून की धारा है।
द्रास, कारगिल, मश्कोघाटी
टाईगर हिल हमारा है।
मत भूलो अजय आहूजा
और दूसरा नचिकेता।
मत भूलो मेजर कालिया
जिसने लगाया यह पता।
भूल न जाना शहीदों को
यातनाओं में जान गंवाई है।
देश के खातिर लड़ते-लड़ते
दुश्मन से लाशें पाई हैं।
वर्षों बाद फिर देश के आगे
आज दिन यह आया है।
दोस्ती की आड़ लेकर
दुश्मन ने कदम बढ़ाया है।
वह हथियार उठाओ वीरों
सीमा पर तुम जाओ सारे
निश्चम विजय तुम्हारी होगी

हिम्मत को तुम मत हारो।
बतला दो कैसे भारत की
सेना है हूंकारती
आया समय जवानों जागो
भारत भूमि पुकारती।
जय हिन्द जय भारती जय देश के वीर जवान

सिपाही, राम अवतार लाखलाण ए*101*. द्रुत कार्य बल

कारगिल की कुर्बानियां

बिगुल बज उठा सीमा पर,
देशवासियों जागो।
पुकार रही है मां भारती,
संकट में आगे आओ।
आज फिर हमें ललकारा है,
सीमा पर तोपों की दहाड़ों ने।
अपने घर में घुस आया है,
दुश्मन छुपे पहाड़ों में।
अपनी जमीं पर गिर रही,
लाशें अपने वीरों की।
शहीद हो गए वतन पे,
आज बारी किन सपूतों की।
कदम कदम पर गोले गिरते,
झुलस रही हैं वादियां।
फिर भी कदम बढ़ते जाते,
कहते इसे कुर्बानियां।
पर्वत शिला रक्त रंजित,
लाल खेत की क्यारी।
इंच भर भी न छोड़ेंगे,
भारत भूमि प्यारी।
हमारे "कल" के लिए दे रहे हैं जो,
अपने "आज" सीमा पर।
कल वे देखें या न देखें,
हम देखेंगे आंसू भर।
जिन माताओं के लाल बिछड़े,

बहनों के सुहाग उजड़े।
उनके ऊचे हौसलों पर आज,
नत मस्तक है हिमराज।
युगों का इतिहास गौरव,
जब जब युद्ध हुआ भारी।
विजय-श्री की कलश में,
प्रेरणा-नीर भरती है नारी।

– नारायण प्रसाद सिंह *(*हिन्दी अनुवादक*)*, ग्रुप केन्द्र पुणे



के.रि.पु. बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था की अध्यक्षा श्रीमती वीणा सभरवाल ने *20* जुलाई *'99* को हैदराबाद में परिवार कल्याण केंद्र का उद्घाटन किया

रजि. न. 4767/87



के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. समरवाल ने 19 जुलाई '99 को ग्रुप केंद्र रंगारेड्डी में बने पारिवारिक आवास खंडों का उद्घाटन किया

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 13 अंक - 7 30 नवंबर, 1999



रेपिड एक्शन फोर्स की सातवीं वर्षगांठ के मौके पर गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी को स्मृति चिह्न भेंट करते बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

14वें बैच के अधिकारियों के पुनर्मिलन पर विशेष लेख



आर.ए.एफ. द्वारा दिल्ली में लगाए गए मेडिकल कैम्प में मरीजों का निरीक्षण

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–13 अंक–7
30 नवंबर, 1999
9 अग्रहाणय, शक 1921

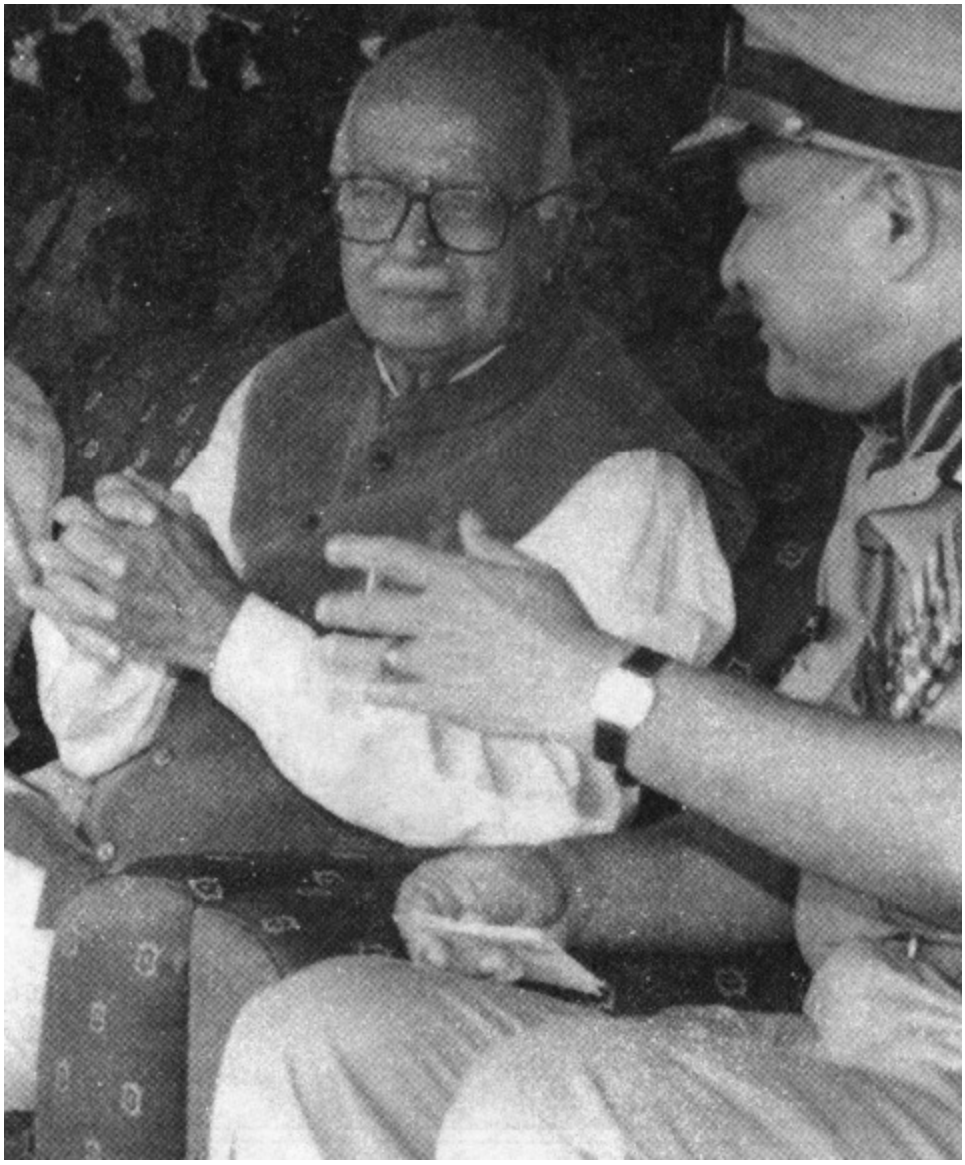
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस
झड़ौदा कलां,
नई दिल्ली–72



इस अंक में

आर.ए.एफ अमन का पहरेदार
उड़ीसा के तुफान पीड़ितों के लिए के.रि.पु. बल द्वारा राहत कार्य
आर.ए.एफ. मेडिकल कैंपों में रोगियों का इलाज
दिल्ली में के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी

ाकि वो कैसे ादेन थे

माह सितंबर/अक्टूबर ‘99 में मृत कार्मिक

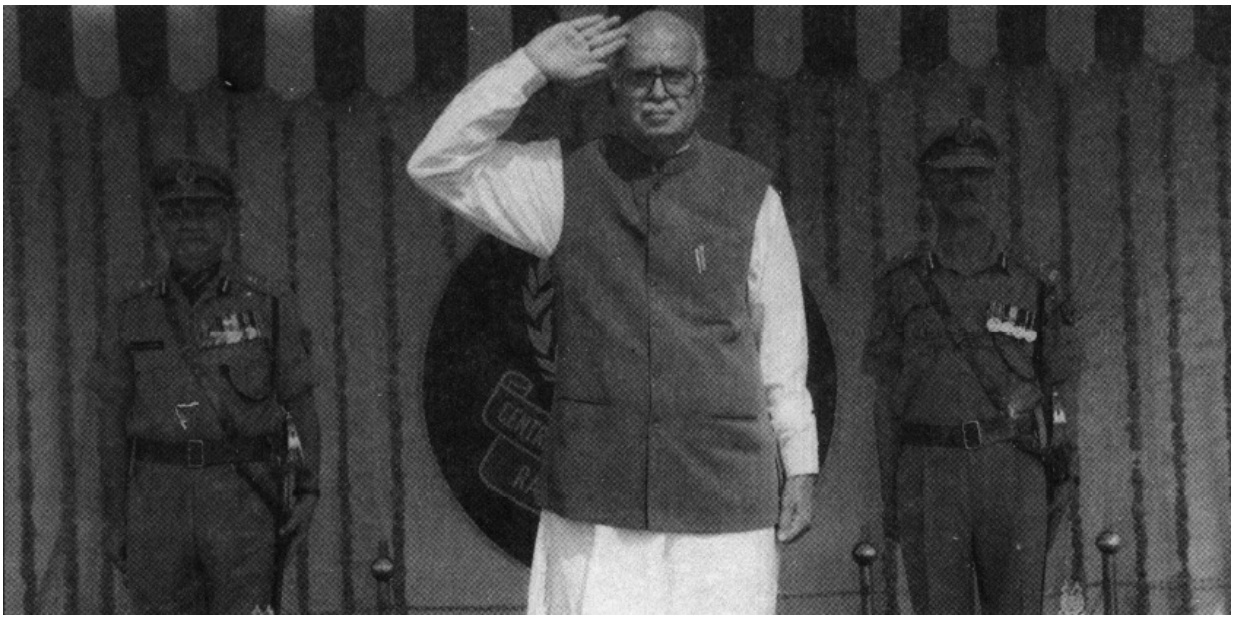
आर.ए.एफ. की दो कम्पनियां कोसोवो जाएंगी

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

आर.ए.एफ. की सांतवीं वर्षगांठ

आर.ए.एफ. अमन का पहरेदार है – गृहमंत्री



आर.ए.एफ. परेड की सलामी लेते हुए गृहमंत्री

"रैपिड एक्शन फोर्स देश की विविधता में एकता का रक्षक है "केन्द्रीय गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि सरकार का पहला दायित्व देश के नागरिकों की सुरक्षा करना है और फिर उसका अगला दायित्व समाज में सामाजिक, साम्प्रदायिक, जातीय तथा अन्य सभी प्रकार का सौहार्द बनाए रखना है। नागरिकों की सुरक्षा का दायित्व सीमा पर सेना और देश के अंदर केंद्रीय और राज्यों के पुलिस बल बाखूबी निभा रहे हैं। मगर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अमन और सौहार्द बनाए रखने का काम रैपिड एकशन फोर्स बाखूबी पूरा कर रहा है। गृह मंत्री अलीगढ़, उत्तर प्रदेश स्थित आर.ए.एफ. की 104 बटालियन स्थल पर रैपिड एकशन फोर्स की सांतवीं वर्षगांठ के अवसर पर 1 नवंबर '99 को एक भव्य समारोह को सम्बोधित करते हुए बोल रहे थे। गृह मंत्री ने कहा कि आर.ए.एफ. देश के अमन का पहरेदार है, उन्होंने कहा कि किसी भी घटना या चुनौती के उपरांत तुरन्त हरकत में आना आर.ए.एफ. की विशेषता है। उन्होंने कहा कि इसका नाम ही इसके कार्य की कसौटी है। उन्होंने आगे कहा कि विभिन्न साम्प्रदायिक व जातीय दंगों तथा प्राकृतिक आपदाओं के दौरान आर.ए.एफ. ने तरन्त हरकत में आकर लोगों की सेवा कर अपने नाम को ही सार्थक किया है। बाद में पत्रकारों को संबोधित करते हुए गृह मंत्री ने

कहा कि आने वाले वर्षों में के.रे.पु. बल की 50 और बटालियनें गठित करने का प्रस्ताव है। गृह मंत्री ने इस मौके पर एक शानदार परेड का निरीक्षण कर उसकी सलामी ली। परेड में महिला टुकड़ी सहित आर.ए.एफ. की छः टुकड़ियां शामिल थीं।

गृहमंत्री ने इस अवसर पर बल के 49 अधिकारियों और जवानों को विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक भी प्रदान किये।



परेड का निरीक्षण करते गृह मंत्री

इससे पूर्व बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए आर.ए.एफ. के गठन और उसके कार्य का विवरण दिया। उन्होंने बताया कि आर.ए.एफ. की दसों बटालियनें देश के साम्प्रदायिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात हैं तथा प्रत्येक बटालियन के मुख्यालय से 400 कि.मी. के दायरे में आने वाले क्षेत्र उस बटालियन की जिम्मेदारी के क्षेत्र है। उन्होंने बताया कि 7 अक्टूबर, '92 को अपने गठन के बाद से ही आर.ए.एफ. साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों पर काबू पाने में सफल रहा है, इस फोर्स की तैनाती मात्र से ही गम्भीर से गम्भीर स्थिति को दंगे का रूप लेने से रोका जा सका है। इस बल ने हमारे समाज के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बनाए रखने में बहुत विशिष्ट भूमिका निभायी है। उन्होंने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि अपने गठन के इतने अल्प कार्यकाल में ही इस बल ने उच्च श्रेणी की व्यावसायिक दक्षता हासिल कर जन विश्वास अर्जित कर लिया है।

इस मौके पर पूरे देश में फैली आर. ए.एफ. की बटालियनों से आए जवानों ने लोक नृत्यों का भी प्रदर्शन किया। इस मौके पर उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री कल्याण सिंह गृह सचिव श्री कमल पांडे तथा कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।



परेड के अवसर पर प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम

उड़ीसा के तुफान पीड़ितों के लिए के.रि.पु. बल द्वारा राहत कार्य

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के कार्मिक उड़ीसा के तुफान पीड़ितों की सहायता के लिए जोर शोर से जुटे हैं। कम से कम संभव समय में तुफान पीड़ितों तक राहत और

बचाव सहायता पहुंचाने के प्रयास किये जा रहे हैं ।

गृह मंत्रालय के निर्देश पर तूफान पीड़ितों की सहायता के लिए के.रि.पु. बल ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में रैपिड एक्शन फोर्स की 6 कम्पनियों को तैनात किया है । इसकी दो कम्पनियां जगतसिंह पुर, तथा एक एक कम्पनी जाजपुर, कटक, भद्रक तथा केंद्रपाडा जिलों में राहत कार्य चलाने के लिए तैनात की गयी ।

1 नवम्बर '99 से ही अनेक अवरोधों के बावजूद इस बल के अधिकारी और जवान व्यापक स्तर पर जरूरत मंद लोगों तक राहत और बचाव सहायता के अतिरिक्त चिकित्सा सहायता भी पहुंचाने में जुटे हैं । वे सड़कों को साफ करने, पीने का पानी उपलब्ध कराने तथा संचार व्यवस्था को दुरूस्त करने में लगे रहें । उन्होंने लूट पाट रोकने तथा सरकारी सम्पति की सुरक्षा के साथ साथ कानून व्यवस्था बनाए रखने के कार्य को भी अंजाम दिया। वे राहत सामग्री को विभिन्न गंतव्यों तक भी सुरक्षा के साथ पहुंचाने में भी मदद दे रहे हैं । बल के जवान ग्राम पंचायत तथा गांवों के स्तर पर स्वयं भी राहत सामग्री पहुंचाने में जुटे हैं। इस बल के जवानों ने तुफान में मारे गये सैंकड़ों लोगों की अंत्येष्टि भी की। किसी भी वर्दी धारी बल द्वारा इस आपदा के दौरान किया जाने वाला यह अपनी तरह का अनूठा कार्य था। तुफान प्रभावित क्षेत्रों में अनेक लोग आंत्रशोध, हैजा, वाइरल, बुखार तथा फिलेरिया आदि बिमारियों के शिकार हो रहे हैं। के.रि.पु. बल के 10 चिकित्सा दल (जिन में पड़ोसी राज्यों के चिकित्सा अधिकारी तथा अन्य अर्द्ध चिकित्सकीय कर्मचारी शामिल हैं) तुफान प्रभावित क्षेत्रों में भेजे गये। यह दल तुफान प्रभावित क्षेत्रों में जरूरतमंद बिमार लोगों को सहायता देने में जुटे हैं। अब तक ये दल लगभग 10,000 रोगियों की जांच कर उन्हें दवाएं तथा अन्य चिकित्सकीय सुविधाएं उपलब्ध करा चुके हैं।

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल वेब साइट पर

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल, रोहणी दिल्ली ने 25 अक्टूबर '99 को अपने वेब साइट (डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू सी आर पी एफ पब्लिक स्कूल.कोम) की शुरूआत की । अब स्कूल में दाखिले तथा अन्य उपलब्धियों संबंधी जानकारी इस वेबसाइट पर उपलब्ध होगी। वेब साइट का उद्घाटन स्कूल के वार्षिक उत्सव के अवसर पर विशेष रूप से आयोजित एक समारोह में के.रि.पु. बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था की अध्यक्षा श्रीमति वीणा सभरवाल ने किया। इस मौके पर बोलते हुए श्रीमति सभरवाल ने कहा कि स्कूल में अपने बच्चों को दाखिल कराने के इच्छुक अभिभावक व अन्य लोग जो इस स्कूल के बारे में जानना चाहते हैं, इस सुविधा से लाभान्वित होंगे। अब उन्हें यह सूचनाएं घर बैठे ही प्राप्त हो सकेंगी।

इस मौके पर बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल भी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां हासिल करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार भी प्रदान किये। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने स्कूल की उपलब्धियों की प्रशंसा की तथा विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे आने वाले समय में अपनी

प्रतिभा को और अधिक निखार कर श्रेष्ठता प्राप्त करें।

इस मौके पर स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। विद्यालय के प्रबंधक तथा उप निदेशक श्री ए.के. सिंह ने भी अतिथियों को संबोधित किया। विद्यार्थियों ने इस मौके पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

आर.ए.एफ. मैडिकल कैंपों में रोगियों का इलाज

रैपिड एक्शन फोर्स द्वारा नन्दनगरी तथा सराये काले खां में लगाए गये मैडिकल कैंपों में 9000 से अधिक रोगियों की जांच कर उन्हें मुफ्त दवाएं उपलब्ध करायी गयी। 11 से 13 नवम्बर '99 तक चले इन कैंपों में आने वाले रोगियों में हर आयु वर्ग की महिलाएं बच्चे तथा पुरूष शामिल थे। तीन दिनों तक चले इन मैडिकल कैंपों का आयोजन रैपिड एक्शन फोर्स की 103 तथा 108 बटालियन ने दिल्ली के स्वास्थ्य विभाग, दिल्ली होम्योपैथिक एसोसिएशन तथा मेरठ रोटरी क्लब के सहयोग से किया था। 11 नवम्बर '99 को नन्दनगरी में दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री डा. ए. के. वालिया ने स्वास्थ्य कैंप का उद्घाटन किया।

इन कैंपों में रोगियों को एलोपैथिक तथा होम्योपैथिक दोनों ही तरह की उपचार सुविधाएं तथा दवाएं मुफ्त उपलब्ध करायी गयी। महिला डाक्टरों सहित एलोपैथिक व होम्योपैथिक डाक्टरों ने इन कैंपों में मरीजों की जांच की। सुबह से शाम तक चलने वाले इन कैंपों में आंखों तथा रक्त की जांच की भी व्यवस्था थी।



दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री ए.के. वालिया नंद नगरी में स्वास्थ्य कैंप का उद्घाटन करते हुए

इन कैंपों के समापन दिवस पर 13 नवंबर '99 को केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने सराये काले खान कैंप का दौरा कर मरीजों से बात की। रैपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक श्री ताशी दावा, उप महानिरीक्षक श्री एम.एल.शर्मा तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी इन कैंपों का दौरा कर इन की प्रगति का जायजा लिया। कैंपों का संचालन 108 बटालियन के कमांडेंट श्री जे.एस. गिल, 103 बटालियन के कमांडेंट श्री आर.के. स्वामी तथा डा. जी.एस. सोनी ने किया।



कैम्प में एक मरीज का निरीक्षण करती हुयी बल की डॉक्टर

दिल्ली में के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा पूर्वी किदवई नगर मैदान (मैडिकल के सामने) लगाई गयी प्रदर्शनी और मेला 17 नवंबर '99 से विधिवत शुरू हो गया। भारत सरकार के वित्त मंत्री श्री यशवंत सिन्हा ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। मेले में बल के पूरे देश में फैले ग्रुप केन्द्रों तथा कल्याण केन्द्रों ने अपने स्टाल लगाए, जिनमें उन क्षेत्रें में मिलने वाली वस्तुएं बिक्री के लिए रखी गयी। प्रदर्शनी प्रति दिन सुबह 10 बजे से रात्रि 9 बजे तक खुली। प्रदर्शनी 17 से 23 नवम्बर तक चली। तथा इसमें प्रवेश निशुल्क था।

प्रदर्शनी में बच्चों के लिए खेल, मनोरंजन तथा भोज्य पदार्थों के स्टालों के अतिरिक्त लगभग 40 स्टालों पर बिक्री के लिए विभिन्न क्षेत्रों की वस्तुएं रखी गयी। "अमन के प्रहरी" फोटो प्रदर्शनी के द्वारा देश की आंतरिक सुरक्षा में के.रि.पु. बल के योगदान को भी दर्शाया गया।

इस प्रदर्शनी से होने वाली आय बल के विकलांग कार्मिकों, कर्तव्य पर मारे गये कार्मिकों के परिवारों, बच्चों तथा विधवाओं के कल्याण कार्यक्रमों पर खर्च की जाएगी।

दिल्ली में इस तरह आयोजित की जाने वाली यह पांचवी प्रदर्शनी है।



केंद्रीय वित्त मंत्री श्री यशवंत सिन्हा कल्याण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए

63 बटालियन द्वारा पल्स पोलियो अभियान में योगदान

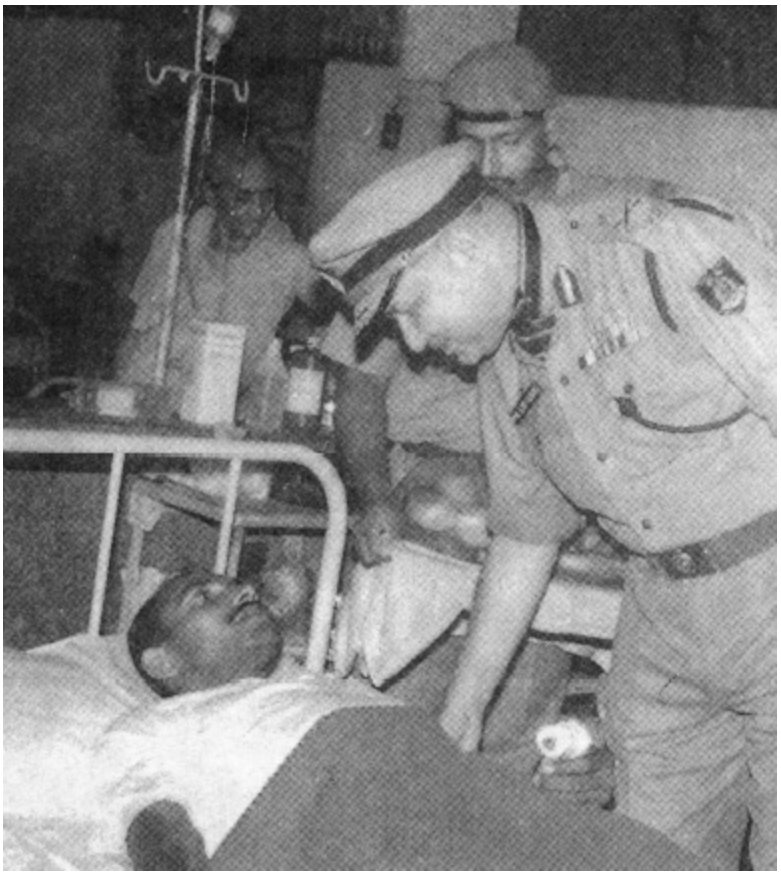
श्रीनगर में तैनात बल की 63 बटालियन ने पल्स पोलियो अभियान के पहले चरण में 24 अक्टूबर '99 को श्रीनगर के जवाहर नगर इलाके में पल्स पोलियो कैंप लगाया।

इस कैंप में इलाके के लगभग 560 बच्चों को पोलियो की खुराक दी गयी।

कैम्प का उद्घाटन 36 बटालियन के कमांडेंट अशोक मुंशी ने एक बच्चे को पोलियो ड्राप देकर किया।



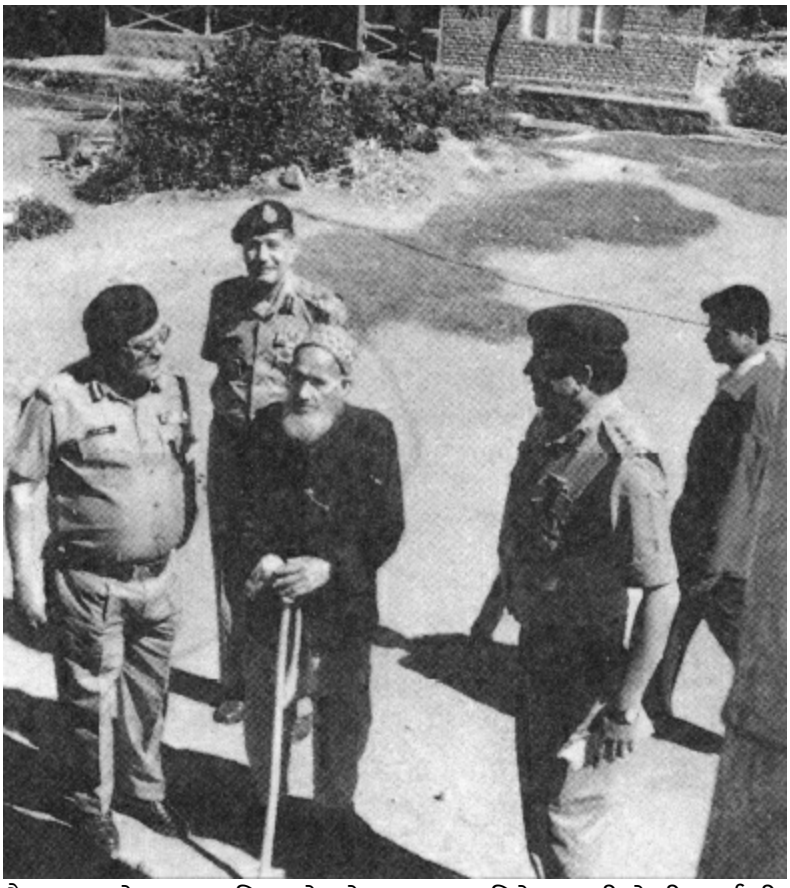
कमांडेंट अशोक मुंशी एक बच्चे को पोलियो खुराक देते हुए



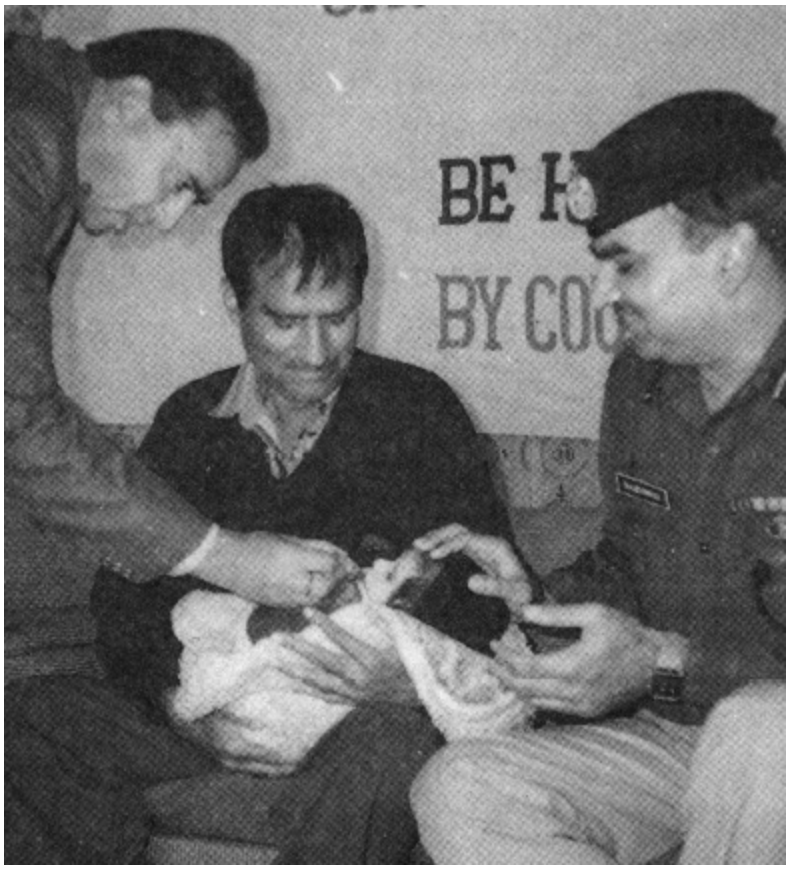
त्रिपुरा में चुनावों के दौरान आतंकवादियों द्वारा लगाई गई घात में घायल हुए जवान का हाल चाल पूछते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



पटना में *134* बटालियन द्वारा आयोजित पल्स पोलियो अभियान में एक बच्चे को पोलियो खुराक देते हुए बिहार सेक्टर के महानिरीक्षक महेंद्र प्रसाद



संसदीय चुनावों के दौरान बल के उत्तर पश्चिम जोन के अपर महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा श्रीनगर में सुरक्षा प्रबंधों का जायजा लेते हुए



पल्स पोलियो अभियान के दौरान *31* बटा. के कमांडेंट श्री बी के शर्मा एक बच्चे को पोलियो खुराक देते हुए।

14वें बैच के अधिकारियों के पुनर्मिलन समारोह के मौके पर

कि वो दिन कैसे थे

– कमांडेंट जी.डी. पेवाल, एन.एस.जी. में प्रतिनियुक्ति पर

25 साल बाद जब हमने एक दूसरे को देखा तो कुछ बैचमेट को पहचान ही नहीं पाए और तब लगने लगा कि 25 साल कैसे गुजर गए। 25 साल की पुरानी रील जैसे रिवाइंड होने लगी। नवंबर 1974 नीमच रेलवे स्टेशन पर जब कुछ अफसर जो 14वें डी.ए.जी.ओ. कोर्स के लिए आए थे, तो इतने एक–दूसरे के परिचित नहीं थे और एकदम अलग थे। सी.आर.पी. के आर.पी. ने सभी का स्वागत किया और सी.टी.सी.–1 में चले गए। सी.आर.पी की गाड़ी से उतरने के बाद सामने फौजियों वाला कैम्प देखा और आर.पी. ने बताया आप लोग इसी कैम्प में रहेंगे तो ऐसा लगने लगा शायद

ट्रेनिंग से पहले ही जंगल कैम्प में जाना पड़ेगा।

शाम तक और दूसरे अफसर, कुछ दक्षिण भारतीय, कुछ दूसरे राज्यों के पहुंच गए थे, सब एक–दूसरे का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे और आपस की शंकाएं उजागर कर रहे थे। दूसरे दिन सी.आर.पी. की ट्रेनिंग की शुरुआत हुई। ट्रेनिंग तभी शुरू हो सकती थी कि जब पहले अपना हेअर कट करवाएं। बारी–बारी से एक पेड़ के नीचे सभी बाल कटवाने लगे और कॉलेज वाली जुल्फों को अपने ही आंखों के सामने गिरते हुए देखने लगे। जब अपना हेअर कट करवाने के बाद अपनी फोटो घरवालों को भेजी और बाद में मध्यावधि में घर गए तो घरवालों तथा दोस्तों ने फोटो का मजाक उड़ाया।



*14*वें बैच के अधिकारी प्रशिक्षण के दौरान

श्री कलिराम शर्मा और ज्ञानसिंह दो ही ऐसे अफसर थे जिनको फोर्स के बारे में पहले से जानकारी थी और बाकी सभी नौसिखिए थे। ये दोनों अफसर तथा दूसरे नौसिखिए कभी–कभी ऐसी शरारत करते कि पूरे कोर्स को सजा मिलती। उस्ताद ध्यान सिंह और तुकाराम शाम को जब दूसरे दिन के लिए हुक्म सुनाते, थके होने के बावजूद भी शरारत सुझती और हम बाज नहीं आते। इस पर उस्ताद ध्यान सिंह कहते "साहब आप लोग अनुशासन में रहिए, क्योंकि जिस गाड़ी से आप लोग आए हैं, वह अभी तक स्टेशन पर ही खड़ी है और उसी में आपको वापस बैठाकर भेज दिया जाएगा।" शरारत का यह आलम चलता रहा और माहौल ऐसा बना कि हमारी रिपोर्ट उप–प्राचार्य श्री के.बी.एल. दुबे तक पहुँच गई और हमें अनुशासन में लाने के लिए पट्टी पैरेड का हुक्म दिया गया। पट्टी पैरेड का मतलब है कि पैरेड करने के बाद घुटनों और कोहनियों से खून निकले और उन पर पट्टी बांधी जा सके और जब हमारी पहली पट्टी पैरेड हुई तो कई अफसरों को पट्टी बांधने की जरूरत पड़ी।

कैम्प से रोजाना हम पी.टी. के लिए सुबह दौड़कर जाते, बाद में दूसरी ट्रेनिंग के लिए साइकिल से जाते थे। श्री मदन सिंह हैंकी को पहाड़ी होने की वजह से साइकिल कम चलानी आती थी और शाम के समय ट्रेनिंग समाप्त होने के बाद वापस होते तो दो लाइन में हमें आना पड़ता था और अक्सर जानबूझकर एक–दूसरे की साइकिल को धक्का मारना या ऐसी हरकत करना कि एक–आध अफसर की साइकिल गिर जाती थी। एक ऐसी ही हरकत से हमें काफी बड़ी सजा मिली। श्री शेखावत जो सहायक प्राचार्य थे, ने हमें दूर से देख लिया और सबके सिर पर साइकिल रखवा कर कैम्प तक भेजा।

इंस्पेक्टर बलबीर सिंह ने जो बाद में द्वितीय कमान अधिकारी के पद से रिटायर हुए, फील्ड क्राफ्ट का पहला लेक्चर, "चीजें क्यों नजर आती है" लिया। लेक्चर की शुरूआत करने से पहले उन्होंने श्री देशमानिया से सीधा ही सवाल किया कि चीजें क्यों नजर आती हैं और श्री देशमानिया साहब का जवाब था – क्योंकि हम अंधे नहीं हैं, पर इस जवाब से इंस्पेक्टर बलबीर सिंह संतुष्ट नहीं हुए और हमें बताया चीजें 6–एस और 1–एस की वजह से दिखाई देती हैं और एक एक करके इनके बारे में बताया। हम 2–3 दिन तक यही बताते रहे कि बलबीर सिंह की 6–एस और 1–एस की वजह से ही दूसरी चीजें दिखाई दे रही हैं।

एन.पी.ए. माउंट आबू से हैदराबाद चला गया और एन.पी.ए. को "आंतरिक सुरक्षा" अकादमी में बदल दिया गया और सी.आर.पी. के अफसरों के लिए ट्रेनिंग अकादमी बना। हमारा कोर्स जनवरी में माउंट आबू ट्रेनिंग के लिए भेजा गया। 14वां डी.ए.जी.ओ (डागो) कोर्स सबसे पहला कोर्स है जिसको इन्टरनल सिक्योरिटी अकादमी में प्रथम कोर्स करने का गौरव प्राप्त है। सी.टी. सी.–1 के प्रिंसिपल तथा सभी अफसर व कर्मचारियों ने हमें भावभीनी विदाई दी।

इनटरनल सिक्योरिटी अकादमी के नए डायरेक्टर श्री वीरभद्रया, भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी, को प्रभार दिया गया। वे हमें दो महीने की ट्रेनिंग के बावजूद भी कॉलेज से आए हुए नवयुवक विद्यार्थी ही समझते थे और साथ ही हमारा इतना ध्यान रखते थे जैसे कोई अपने बच्चे को प्यार कर रहा हो। इन्टरनल सिक्योरिटी अकादमी माउंट आबू का एक अलग ही माहौल था और जब श्री मोहन कुदुर जो कि अपने कॉलेज में लम्बी दौड़ के धावक थे – ने कह दिया कि जितनी कड़ी ट्रेनिंग नीमच में थी उतनी यहां पर नहीं है तो श्री सी. पाल सिंह, ए.डी., इन्टरनल सिक्यारिटी अकादमी ने इसको उल्टा लिया और हमारे उपर कहर की वर्षा होने लगी। सुबह–शाम एक घंटा अलग से भाग दौड़ होती, पर इन्हीं सब ने बाद में हमें और दृढ़ बना दिया।

इस रील में, जब रिवाइंड हो रही थी तो स्वर्गीय एन.पी. भल्ला, के आर.बी. सागर रौबर्ट के सुन्दर चेहरे, भाग–दौड़, गुस्सा, मजाक, गाने, सब साथ–साथ नजर आ रहे थे। पर आज ये दोनों अफसर इस दुनियाँ में नहीं हैं, पर उनकी याद आज भी बनी हुई है जैसे कल की बात हो। रोबर्ट सागर के वो गाने "इफ यु वेयर ....", सबको रोमांचित करने वाला था आज भी कानों में साफ सुनाई देता है।

श्री अमरजीत सिंह चहल हमारे कोर्स इंजार्च थे, जो आज अतिरेक्त उपमहानिरीक्षक हैं। वे एक योग्य और कुशल प्रशिक्षक थे, वे केवल कुशल प्रशिक्षक ही नहीं, एक योग्य शासक, अनुशासन प्रिय और हमेशा अफसर/ प्रशिक्षुओं को प्यार करने वाले और उनकी देखभाल करने वाले थे। कोर्स के दौरान उनके द्वारा हमारे लिए किया गया सहयोग और योगदान आज भी यादगार है, जिनके बिना शायद हमारा कोर्स करना सुगम और आसान नहीं होता।

अगस्त 1975 में 15वें डागो कोर्स का ऐसा सामंजस्य हुआ। एक यह ही ऐसा कोर्स था जिसका सामंजस्य किया गया और 14वें डागो कोर्स द्वारा 15वें डागो कोर्स के प्रशिक्षणार्थियों की रैगिंग की गयी जो बाद में एक–दूसरे के प्रति प्यार और विश्वास में परिवर्तित हुयी। अक्टुबर 1975 में पास आउट हुए तो हम 33 अफसर थे जिनमें 6– भारत तिब्बत सुरक्षा बल के और 27 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के। आज हम सी.आर.पी. में सिर्फ 18 रह गए और जब हम रियुनियन सेमिनार में मिले तो ऐसा लगा कि अभी भी एक दूसरे की छवि धुमिल नहीं हो पाई है पर एक अलग एहसास, एक अलग प्यास, महसूस हो रही थी “कि वो कैसे दिन थे”।

14वें बैच के अधिकारी

1. ए जब्बार
2. अनिल मोहन – सराहनीय सेवा पदक
3. अनुराग सक्सेना – शौर्यवीरता का पुलिस पदक
4. बी.बार. कामथ
5. दलजीत सिंह
6. डी. राम
7. दिनेश कुमार – सराहनीय सेवा पदक
8. जी.डी. पेवाल
9. ज्ञान सिंह
10. जी.के. दत्ता
11. के.आर. शर्मा
12. के.एस. राठी
13. एम.डी. देशमानिया
14. एम.के. शेषाद्री
15. एम.एस. भूरजी
16. एम.एस. हैंकी
17. नारायण के भट्ट
18. पी. वल्सा कुमार – सराहनीय सेवा पदक

19. राम अनुज
20. आर.सी. सेठी – सराहनीय सेवा पदक
21. आर.के. स्वामी – सराहनीय सेवा पदक
22. आर.एस. पुंडीर
23. आर.एस. शरद
24. राजीव सानवाल
25. राम टेकर
26. एस.एस. अली खान
27. सिकंदर कंदे
28. टी.बी. राव
29. टी.बी.एन. प्रेम सूरी
30. टी.सी. शेकरन – सराहनीय सेवा पदक
31. टी.एच. काम्बले
32. वी.बी. शरण
33. स्वर्गीय के.आर.बी. सागर
34. स्वर्गीय एन.पी. भल्ला

माह सितंबर/अक्टूबर '99 में मृत बल के कार्मिक

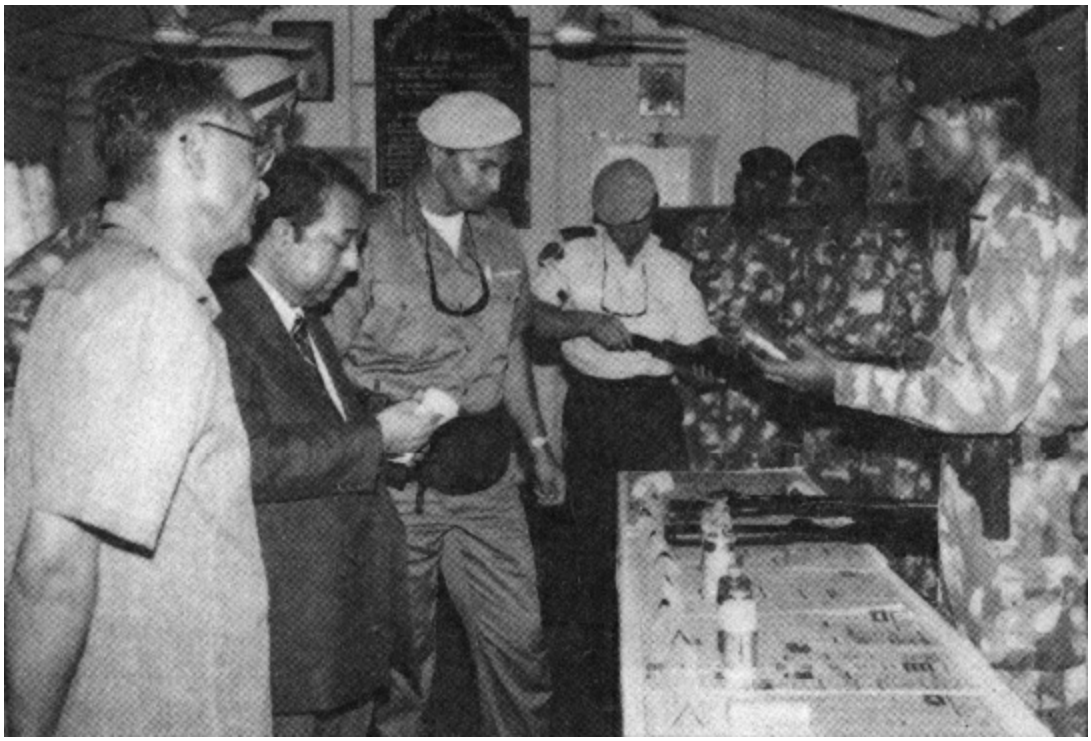
बल के निम्न कार्मिक माह अगस्त, सितंबर तथा अक्तूबर '99 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

ला.ना. अम्बा लाल (60 बटा.), है. का. एम.एल. साहब (आर.टी.सी.-दो), कां. अनिल मधुकर सुरजुसा (97 बटा), ला.ना. महाबीर सिंह (130 बटा.), ल.ना./ड्रा. जगदीश सिंह (71 बटा.), कूक हरी सिंह (94 बटा.), कां.जी. येरना (40 बटा), है.कां.एस.एफ. माली (30 बटा.), डब्ल्यू/सी चन्द्र सिंह (92 बटा.), कां. गनेश एम. नारल (31 बटा.), ला.ना. किशोरी लाल (98 बटा.), का. हेमेन्द्र चन्द्र दास (124 बटा.), का. महादेव ईष्वर वाग (आर.टी. सी.-4), है.कां.वी. राजा सिंह (110 बटा), सब इंस्पेक्टर रूपकान्त झा (89 बटा.), का.पी. पशुपति (74 बटा.), का. प्रभाकर राय (72 बटा.), सब इंस्पेक्टर रामजीत सिंह (131 बटा.), सब इंस्पेक्टर के.डी. दुबे (106 आर.ए.एफ.), सब इंस्पेक्टर बाली राम (106 आर.ए.एफ.), कां. शम शेर सिंह (120 बटा.), कां. नन जया (65 बटा.), है.कां. चतुर सिंह (12 बटा.), कां. चैन सिंह (124 बटा.), कां.डी. शंकर (आर.टी.सी.-दो, कां बलदेव सिंह (72 बटा.), कां.जे. जोगेन्द्र सिंह (01 बटा.), का. लखबीर सिंह (124 बटा.), हैड कां. जुलफी राम (50 बटा.), सब

इंस्पेक्टर प्रताप सिंह (98 बटा.), ला.ना.जे.सी. बरूआ (39 बटा.), सब इंस्पेक्टर भूरे लाल यादव (118 बटा.), कां. तनुराम नायक (123 बटा.), है.कां./ड्रा.पन्च देव सिंह (114 बटा.), ला.ना. बलवन्त सिंह (26 बटा.), ला.ना. जगदीश कुमार (55 बटा.), कांएल.बी. छत्री (26 बटा.), कां पी.डी. नाथ (26 बटा.), कां.उतम चन्द बोरो (26 बटा.), कां. दिलीप चौधरी (26 बटा.), उप कमां. श्री लाल सिंह (19 बटा), एस./के.के. शशी (63 बटा.), कां. आई.एस. वीनकेन्ट (26 बटा.), कां. वाई. शोले सिंह (26 बटा.), कां. भगवान सिंह (26 बटा.), कूक आर.एन. गवास (ग्रुप के. पुने), है.का. आर.के. सोनर (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), सब इंस्पेक्टर/आर.ओ.पी. आर.सी. नायर (एस.जी.सी.), स.उ.नि./एम सुनीता ग्रुप के पिन्जौर), कां./टे. चेतराम (02 बटा.), है.कां. शिकन्द्र दास (72 बटा.), कूक पी.के. नन्दा (ग्रुप के. मोकामा), कां. ए.आर.के. राव (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), सब इंस्पेक्टर एम.आर.पी. जाट (26 बटा.), कां. रति राम (07 बटा), कूक रूप सिंह (13 बटा.), कां. अजब सिंह (72 बटा.), है.कां. विरेन्द्र कुमार पाण्डे (26 बटा.), है.कां./रे.ओ.बृज राज सिंह (5 सिंग.), सब इंस्पेक्टर जगमाल सिंह (83 बटा.), कां. खुरसिद अहमद (96 बटा.), कां. बी.के. पाटील (68 बटा), कां./ड्रा. बलवान सिंह (ग्रुप केन्द्र बनतलाब), कां जया कुमार शर्मा (68 बटा.), कां.एम. सुरापति (76 बटा.), लां. ना. ओम प्रकाश (129 बटा.), कां. के.सी. के. भाई (121 बटा.), कां. अरीक मसही (22 बटा.), है.कां. सुरत सिंह (111 बटा), कां पी.एच. नीमाई चन्द सिंह (44 बटा), है.कां. मनी राम (33 बटा.), कां एम. तीगमपू (13 बटा.), कां. रणबीर सिंह (20 बटा.), द्वितीय कमा.अधि श्री आर.के. सिंह (35 बटा.), है.कां./ड्रा अजाजुद्दीन खान (35 बटा.), कां. सुशील सेनापति (35 बटा.), कां. राकेश कुमार (35 बटा), कां. नायब सिंह (81 बटा.), कां./जी. जगदीश चन्द (81 बटा.),कां. यदवीन्दर (81 बटा.), है.कां.ए.के. तिवारी (116 बटा), कां. सी. ईलया राजन (116 बटा), कां. जगदीश प्रसाद (116 बटा.), कां के.पी. मोरे (116 बटा.), डब्ल्यू/के. बजरंग लाल (85 बटा.), डब्ल्यू/के. भारत रजक (105 बटा.), कां अनिल वास्के (120 बटा), कां. मेजोर सिंह (120 बटा.), सब इंस्पेक्टर प्रभु दयाल (131 बटा.),,कां. सुनील कुमार (ग्रुप केन्द्र जाल), ए/सी श्री राजेश राठोर (81 बटा.), कां./जी. माधेशवर शर्मा (ग्रु.के. इला.) है.कां. मोती राम (46 बटा.),कां. रामाधर कटीहार (125 बटा.), हे.कां. राजनाथ सिंह (ग्रुप केन्द्र पिंजोर), कां. सारेथ कुमार (26 बटा.), कां. सत्यनारायण गुजर (19 बटा), है.कां. सिया राम (99 आर.ए.एफ), कां. ब्रजेश कुमार (103 आर.ए.एफ.), ला. ना. दिनेश प्रसाद त्रिपाठी (125 बटा.), है.कां. इमटीयाज अहमद (ग्रुप केन्द्र खटखटी), कां./जी. बलविन्दर सिंह (02 बटा.), हे.कां. सुखदेव सिंह (१२१ बटा.), ला.ना. एम.एस. नागेश्वर राव (118 बटा), सब इंस्पेक्टर किशन लाल (45 बटा.), है.कां. तिलक राज (36 बटा.), एस./के. राधाकृष्णन! (09 बटा.), कां. आई.एम. सुलेमबा (ग्रं.के. गोहाटी), सब इंस्पेक्टर सूरज सिंह (120 बटा.), कां./ड्रा. रामनरेश (120 बटा.), है.कां./रे.ओ. नमदेव कसीद (5 सिग.), है.कां./रे.ओ. कमल सिंह (5 सिग. बटा.), है.कां./रे.ओ. एन.सी.डे (3 सिग.), हव. हरी चौधरी (21 बटा.), कां. सतबीर सिंह (22 बटा.), एस./के. सावित्री देवी (एस.जी.सी.), है.कां. सुखदेव सिंह (121 बटा.), कां. गुरनाम सिंह

(38 बटा.)।

आर.ए.एफ. की दो कम्पनियां कोसोवो जाएगी



संयुक्त राष्ट्र अधिकारी आर.ए.एफ. टुकड़ियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के विशेष अंग रैपिड एक्शन फोर्स की दो कम्पनियां संयुक्त राष्ट्र मिशन की भारतीय टुकड़ी के अंग के रूप में कोसोवो जाएंगी। यह विशेष पुलिस दल संयुक्त राष्ट्र अधिकारियों को सुरक्षा एवं निगरानी प्रदान करेगा। हिंसक प्रदर्शनों तथा नागरिक अशांति के दौरान स्थानीय पुलिस को उन्हें नियंत्रित करने में सहयोग देगा तथा मानवीय कार्यों में लगी संस्थाओं को सहयोग देगा।

संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत कोसोवो जाने वाली इन दो आर.ए.एफ. कम्पनियों के बारे में जानकारी लेने के लिए संयुक्त राष्ट्र पुलिस के सलाहकार श्री ओ.पी. राठौर तथा उनके सहयोगी कोसोवो में संयुक्त राष्ट्र मिशन के पुलिस अधिकारी श्री गोरेन पेरग स्ट्रोम तथा श्री स्टीव मोवारनोक 14 अक्टूबर, '99 को आर.के. पुरम नई-दिल्ली स्थित आर.ए.एफ. मुख्यालय आए। आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री ताशी दावा ने इन अधिकारियों का स्वागत किया।

कोसोवो जाने वाली टुकड़ी के कमांडर श्री जे.एस. गिल ने आर.ए.एफ. की कार्यशैली के बारे में उन्हें जानकारी दी। उसके बाद उन्हें आर.ए.एफ. मुख्यालय से लगभग 55 किमी दूर बवाना स्थित के.रि.पु. बल कैंप में ले जाया गया। जहाँ कोसोवो जाने वाली आर.ए.एफ. की टुकड़ी ने अपनी तैयारी का प्रदर्शन किया। मिशन के

अधिकारियों ने कोसोवो में उनकी ड्यूटी के बारे में टुकड़ी को जानकारी दी।

रिंग्जेन अंगमो-दक्षेस खेलों में स्वर्ण

के.रि.पु. बल की ऐथलीट (महिला) रिग्जेन अग्मों ने 2 घंटे 55 मिनट तथा 36 सेकेन्ड में 42.195 किमी. मैराथन दौड़ जीतकर भारत के लिए स्वर्ण पदक लेकर दक्षेस खेलों में खाता खोला। श्री-लंका की डी.ए. अनोका तथा वाद चन्द्रकांति को उनके मुकाबले में क्रमशः रजत व कांस्य पदक लेकर संतोष करना पड़ा।

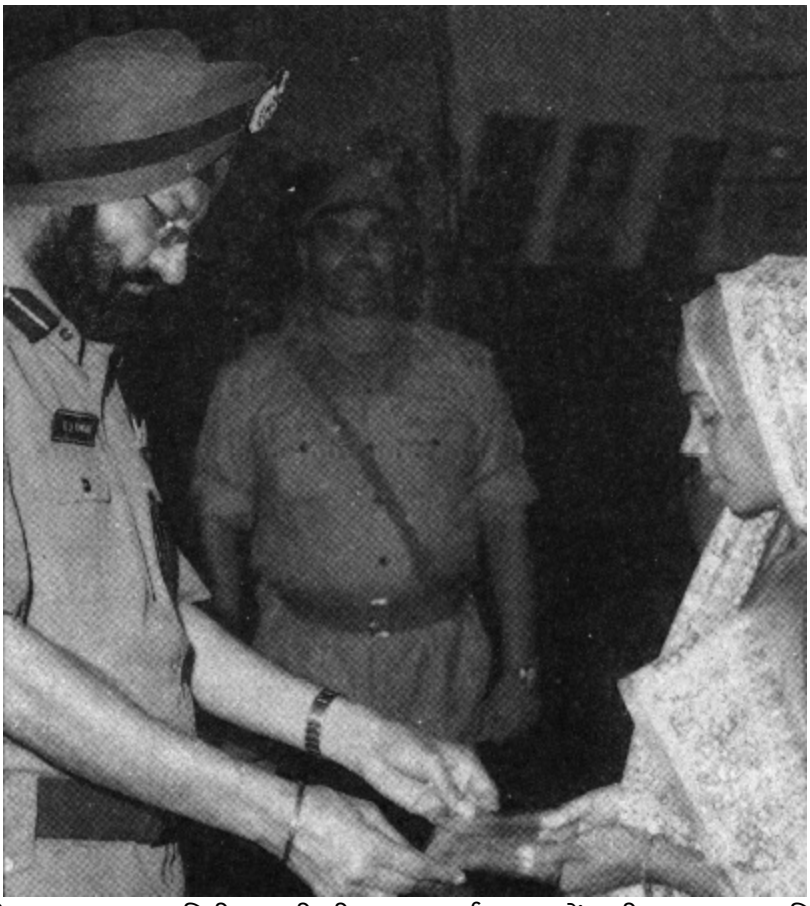
रिग्जेन अंग्मों विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मैराथान प्रतियोगिताओं में ढेर सारे पदक जीतकर ख्याति प्राप्त कर चुकी है। उन्होंने वर्ष 1994 व 1995 में कुला-लम्पुर, काठमांडु तथा बैंकाक में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मैराथान प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक प्राप्त किये। वर्ष 1995 में इंडोनेशिया तथा चेन्नै में आयोजित क्रमशः अंतर्राष्ट्रीय मैराथान तथा दक्षेस प्रतियोगिताओं में भी दो बार कांस्य पदक जीते।

उपर्युक्त के अलावा वह दिल्ली में आयोजित इंडियन ओपन रथ मैराथान प्रतियोगिता में वर्ष 1995 व 1996 के दौरान स्वर्ण पदक और वर्ष 1997 व 1998 के दौरान रजत पदक की विजेता रही हैं। वह 1998 में बड़ौदा राष्ट्रीय तथा इम्फाल में 5वें राष्ट्रीय खेल - 1999 में स्वर्ण पदक और वर्ष 1996 में इलाहाबाद में आयोजित इंदिरा ओपन नेशनल मैराथन में रजत पदक जीता।

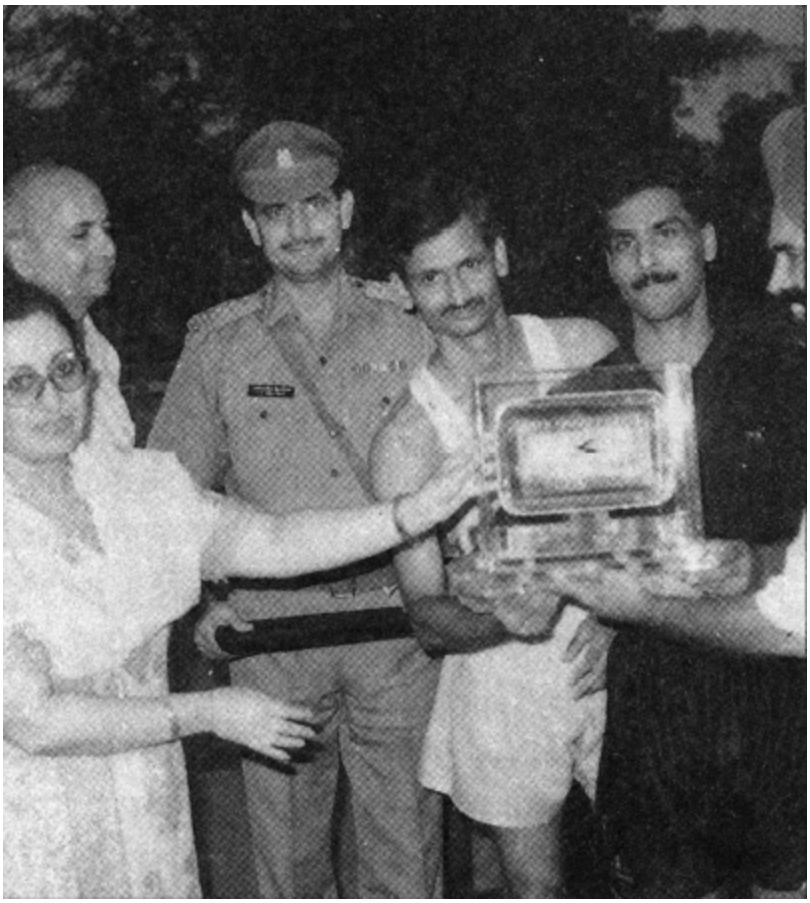
महिला मैराथान अंग्मों लद्दाख में लेह की निवासी है, उनकी शादी हो चुकी है और अक्टूबर 1997 से एक बच्चे की मां भी है। उन्होंने के.रि.पु. बल में मार्च 1995 में उप-निरीक्षक के रूप में कार्यग्रहण किया था । एथलीट में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें 1998 में महानिदेशक की "प्रशंसा डिस्क" से सम्मानित किया जा चुका है।



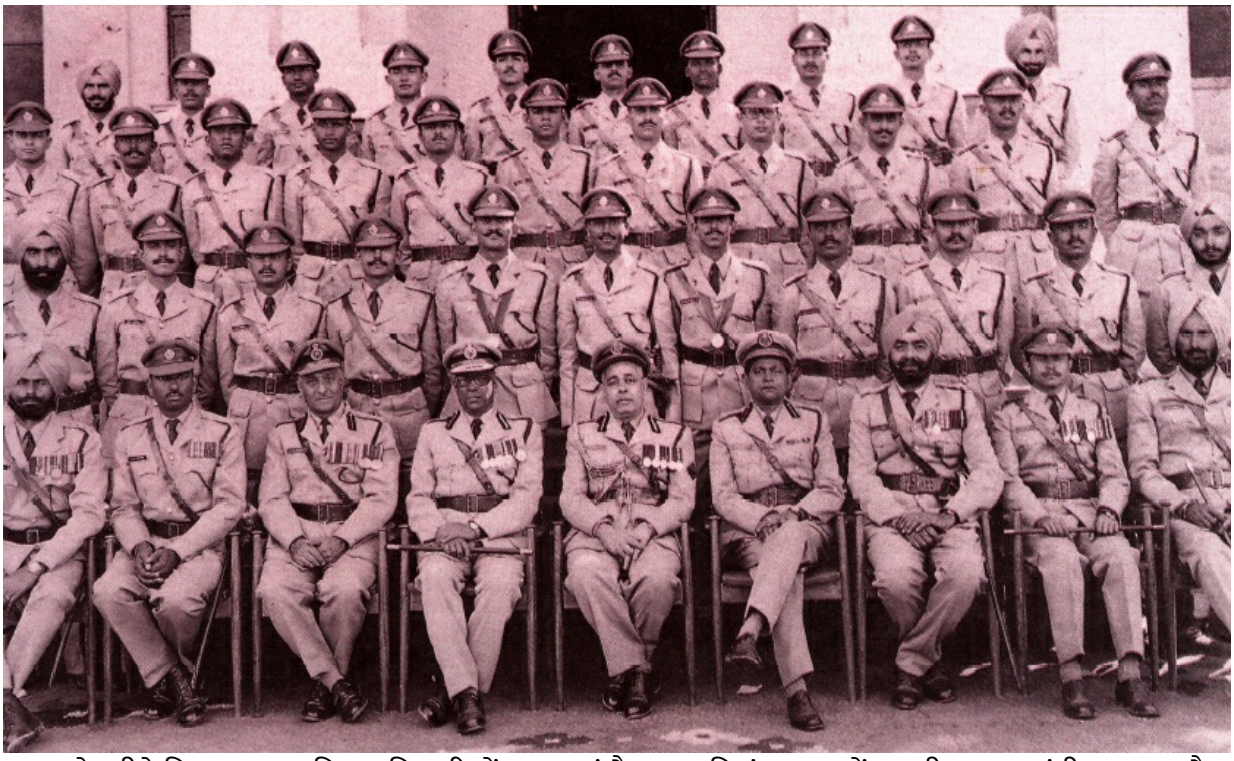
83 बटालियन के कांस्टेबल इन्द्रजीत की विधवा मधु को *8,60,000* रुपए की अनुग्रह राशि का चेक भेंट करते हुए पुलिस महानिरीक्षक *(*परिचालन*)* जम्मू श्री पद्मन सिंह



ग्रुप केंद्र नागपुर के अपर उप महानिरीक्षक श्री जी.एस. कहाई असम में शहीद हुए *20* बटालियन के कांस्टेबल अशोक गेदाम की विधवा को *5.5* लाख रूपये की अनुदान राशि का चेक भेंट करते हुए



दिल्ली में हुयी अंतर सिगनल बटालियन खेल प्रतियोगिता की विजेता प्रथम सिगनल बटालियन की टीम की विजेता ट्राफी प्रदान करते हुए श्रीमति जे.एस. साहनी



बल के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों का *14*वां बैच माह दिसंबर *'99* में अपनी रजत जयंती मना रहा है



काशमीर में *28* बटालियन द्वारा *24* अक्टूबर को आयोजित पल्स पोलियो अभियान में एक बच्चे को पोलियो खुराक देते अधिकारी

रजि. न. 4767/87



साल्ट लेक कलकत्ता में के.रि.पु. बल के आवासीय काम्पलैक्स का उद्घाटन महानिदेशक ने 23 सितंबर '99 को किया

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

31 दिसम्बर 1999



गौरवशाली परंपरा के
60
वर्ष

हीरक जयंती विशेषांक



के.रि.पु. बल के समस्त सदस्यों द्वारा कारगिल के शहीदों के लिए एकत्र की गयी राशि एक करोड़ 25 लाख का चैक प्रधान मंत्री कोष में भेंट करने के बाद प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ अन्य पुलिस बलों के प्रमुखों के साथ के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



आंतरिक सुरक्षा अकादमी माउंट आबु में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 30वें बैच की दीक्षांत परेड का निरीक्षण करते गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-13 अंक-8
31 दिसंबर, 1999
10 पौष, शक 1921

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

इस अंक में

महानिदेशक की ओर से

के.रि.पु. बल देश का शांति प्रहरी

हाट स्प्रिंग्ज – पुलिस बलों का तीर्थ

प्राकृतिक विपदा में भी सच्चा मित्र

30वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड

राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष-एक समीक्षा

केरिपु बल कल्याण प्रदर्शनी

रैपिड एक्शन फोर्स की सातवीं वर्षगांठ

केरिपु बल में खेल

जम्मू कश्मीर में केरिपु बल

मोटर साइकिल अभियान

CRPF-A Versatile Force

CRPF-A Force with the Mission

The Terror of the situation-About Training in CRPF

Environment protection & CRPF

Preparing CRPF Beyond 2000

CRPF-Country's Reliable Police Force

CRPF-Across the Frontiers

CRPF & Human Rights

Emerging Challenges Before Police

Leadership in the 21st Century

Rapid Action Force - Sentinels of Peace

The Imperatives of Changes

Human Rights and Internal Security

Need for Legal Awareness in CRPF

Tripura-Another Strife-Torn State

CRPF-its Achievements and Future Challenges

Human Rights Awareness in Police Ranks

A Sussessful Counter-Ambush

Medical Set-up in CRPF

Modernisation in Training

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक



महानिदेशक की ओर से

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इस वर्ष अपनी हीरक जयंती मना रहा है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में हम सब लोगों के लिए यह न केवल खुशी का एक मौका है, अपितु यह एक ऐसा अवसर है, जब कि हम देश की एकता और अखंडता के प्रति प्रतिबद्धता की अपनी प्रतिज्ञा को दोहराते हैं। और देश की आंतरिक सुरक्षा और सद्भाव को बनाए रखने के लिए अपने को सहर्ष अर्पित करने को तत्पर होते हैं।

60 वर्ष पूर्व *1939* में क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के रूप में गठित किया गया केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल विगत में देश के विभिन्न भागों में डकैत गिरोहों, अलगाववाद तथा आतंकवाद के उन्मूलन के लिए सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। विदेशी आक्रमणों के समय भी यह बल भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिला कर दुशमनों के दांत खट्टे करता रहा है। साम्प्रदायिक दंगों और प्राकृतिक विभीषिकाओं के दौरान पीड़ित मानवता के समक्ष के.रि.पु. बल हमेशा राहत और शांति का पैगाम लेकर पहुंचा है।

21 अक्टूबर, *1959* को लद्दाख हाट स्प्रिंग्ज में बल की एक टुकड़ी पर चीनी सैनिकों ने घात लगाई। संख्या में अत्याधिक रूप से कम होने के बावजूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान बहादुरी के साथ लड़े और *10* जवान देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। बाकी जवानों को भी दुश्मन तब तक हाथ नहीं लगा सका, जब तक कि उनके पास एक भी गोली रही। इन शहीदों की याद में पूरे देश के पुलिस बल *21* अक्टूबर को पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाते हैं।

साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए तैयार किये गये के.रि.पु. बल के विशिष्ट अंग रैपिड एक्शन फोर्स ने अपने गठन के सात साल के अल्प काल ही में देशवासियों और सरकार का भरपूर विश्वास और सहयोग पाया है। प्राकृतिक आपदाओं और भयंकर रेल दुर्घटनाओं आदि के बाद आर.ए.एफ. के

जवानों ने सबसे पहले पहुंच कर बड़े पैमाने पर राहत और बचाव कार्य चलाये हैं। हाल ही में उड़ीसा में आए भयंकर तूफान के बाद भी आर.ए.एफ. की *6* कम्पनियां और *10* मैडिकल टीमें रात दिन पीड़ितों की सेवा और राहत, बचाव और पुनर्निर्माण कार्यों में लगी रही।

देश के उत्तर पूर्वी राज्यों तथा जम्मू कशमीर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान भारी रूप से तैनात हैं। यहां हमें उल्लेखनीय सफलताएं मिली हैं।

सिर्फ देश ही नहीं मौका मिलने पर इरा बल के जवानों ने देश से बाहर भी अपनी वीरता और साहस के जौहर दिखाए हैं। श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में के.रि.पु. बल की टुकड़ियां भी तैनात रही। संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन के एक अंग के रूप में के.रि.पु. बल की टुकड़ियां कम्बोडिया, हैती, बोस्निया, अंगोला, नामीबिया तथा सोमालिया में भी तैनात रही।

हमारे अधिकारियों और जवानों को भारी संख्या में शौर्य और युद्ध सेवा पदक मिले हैं। हमें अपने धर्मनिरपेक्ष एवं सार्वदेशिक स्वरूप पर गर्व है। हमारे जवान देश के हर वर्ग, क्षेत्र, धर्म और जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। समाज के हर वर्ग को इस बल में उचित प्रतिनिधित्व मिला है, और इस प्रकार के.रि.पु. बल की हर बटालियन अपने आप में एक छोटे भारत का प्रतिनिधित्व करती है।

पूरे देश में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही एक मात्र ऐसा बल है जिस के पास दो महिला बटालियनें हैं, यह बटालियनें पूरे विश्व के सम्मुख यह साबित करती हैं कि भारत की नारी देश की एकता और अखंडता की रक्षा के मामले में किसी से पीछे नहीं है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के बहुआयामीय स्वरूप के दर्शन इसी बात से होते हैं कि जहां एक और चुनावों के दौरान हर राज्य से इस की तैनाती की मांग की जाती है, वहीं अमरनाथ यात्रा जैसी गतिविधियों के दौरान भी इसे यात्रियों की सुरक्षा तथा सहायता के लिए तैनात किया जाता है। यही नहीं खेलों के क्षेत्र में भी के.रि.पु. बल छिपी प्रतिभाओं की खोज कर सामने लाने और उन्हें प्रशिक्षित करने का कार्य करता रहा है। के.रि.पु. बल के कई खिलाड़ी आज अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रौशन कर रहे हैं।

60 वर्ष पूर्व मध्य प्रदेश के एक छोटे से कस्बे नीमच में एक बटालियन से गठित हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के परिवार में आज *137* बटालियनें हैं। इसके सदस्य आज हर उस भूमिका को निभाने में सक्षम हैं, जिसकी एक प्रशिक्षित पुलिसकर्मी और सैनिक से उम्मीद की जाती है।

के.रि.पु. बल इस समय आतंकवादियों तथा विघटनकारी शक्तियों द्वारा देश की एकता और अखंडता के सम्मुख खड़ी की जा रही चुनौतियों से निबटने में पूरी तरह व्यस्त है। इस कार्य में के.रि.पु. बल के जवानों ने भारी संख्या में अपने प्राणों की आहूति दी है, इस मौके पर हम अपने उन बहादुर साथियों को याद करते हुए उन्हें सलाम करते हैं। इन शहीद हुए जवानों के परिवारों के प्रति भी हमारे मन में गहरी

संवेदना है। हम इन परिवारों को यह यकीन दिलाना चाहेंगे कि हम हमेशा उन के साथ हैं। उनका हित हमारे लिए सर्वोपरि है।

के.रि.पु. बल को अपने अतीत और उपलब्धियों पर गर्व है। हम देश के सम्मुख खड़ी चुनौतियों के प्रति भी सजग हैं। देश के द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रति व्यक्त किये गये विश्वास को पूरा करने के लिए हम अपने जवानों को सघन प्रशिक्षण दे रहे हैं, अपनी क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं। और अपने जवानों को नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बना रहे हैं। हम अपने उद्देश्य वाक्य "सेवा और भक्ति" को हमेशा दिमाग में रखते हैं।

इस मौके पर के.रि.पु. बल में हम सभी यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि देश की एकता और अखंडता, शांति और सद्भाव को बनाए रखने के लिए हम कोई भी कदम उठाने से नहीं चूकेंगे, ताकि देश शांति और समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ सके।

इस मौके पर मैं बल के सभी सदस्यों और उनके परिवारों को हार्दिक बधाई देता हूं।

जय हिंद !

महेन्द्र सभरवाल

(महेंद्र सभरवाल)
महानिदेशक, के.रि.पु. बल

के.रि.पु. बल

देश का शांति प्रहरी

– डी.जी. महापात्र, जन सम्पर्क अधिकारी, के.रि.पु. बल



19 मार्च *1950* को दिल्ली में बल को ध्वज प्रदान करते सरदार पटेल

देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने वाला केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्र का एक प्रमुख सशस्त्र बल है, 1939 में क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के रूप में गठित किया गया यह देश का सर्वाधिक पुराना अर्द्धसैनिक पुलिस बल है। देशी राजे रजवाड़ों को कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद देने के उद्देश्य से 27 जुलाई 1939 को सेना की तर्ज पर इस बल की एक बटालियन के गठन की स्वीकृति प्रदान की गयी और इस प्रकार इस बहुमुखी तथा बहुआयामीय बल की शुरूआत हुयी।

स्वतंत्रता के बाद संसद के एक विशेष अधिनियम के द्वारा 28 दिसंबर, 1949 को इसका नाम बदल कर सेंट्रल रिजर्व पुलिस कर दिया गया। इस अधिनियम के द्वारा इस बल को भारतीय संघ का एक सशस्त्र बल बना दिया गया। तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने नव स्वतंत्र हुए देश की भविष्य की जरूरतों के अनुरूप

इस बल के महत्व को पहचान लिया था। भारत के राष्ट्रपति की ओर से बल को 19 मार्च, 1950 को ध्वज प्रदान किया गया।

के.रि.पु. बल का प्राथमिक कार्य आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने के लिए राज्यों को मदद देना है। अतः इस दृष्टि से इस बल की तैनाती का कोई निश्चित क्षेत्र नहीं है, तैनाती तथा संगठन की दृष्टि से एक लाख साठ हजार सदस्यों वाला यह बल पूर्ण रूपेण अखिल भारतीय स्वरूप वाला है।

1950 के दशक में भुज, पेप्सू तथा चंबल के इलाकों में के रि.पु. बल द्वारा चलाए गए डकैत विरोधी अभियान को भारी सफलता मिली। बल ने स्वतंत्रता के बाद छोटे-छोटे राज्यों के भारत में विलय के समय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इस बल ने विद्रोही जूनागढ़ राज्य तथा काठियावाड जैसे छोटे राज्यों द्वारा उस समय किए जा रहे विद्रोह को दबाने में अहम् भूमिका निभाई।

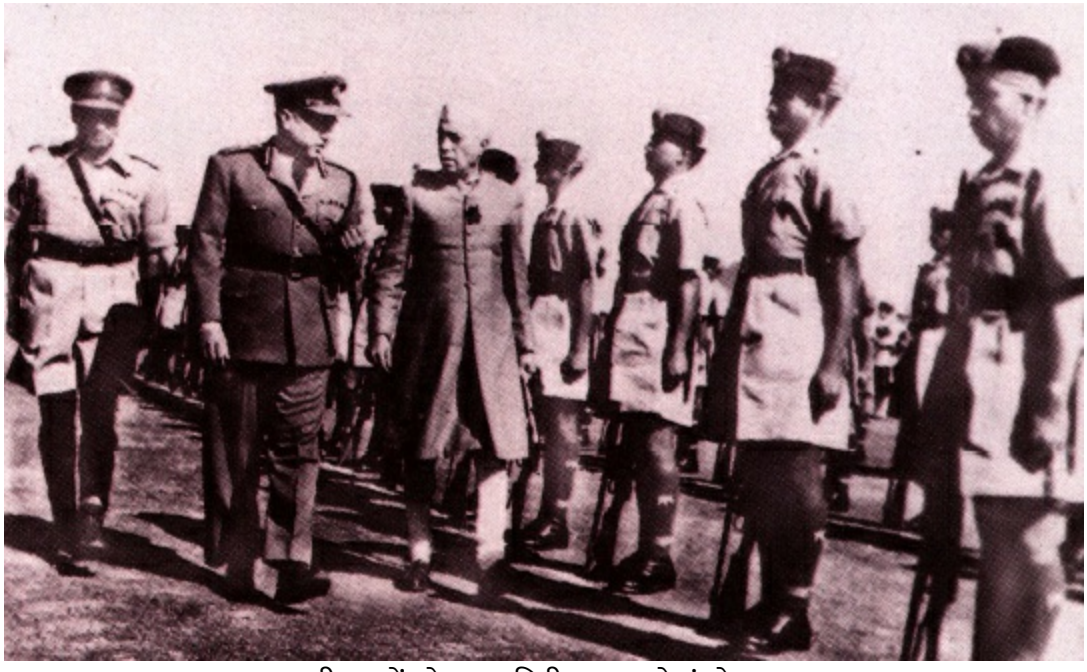
आजादी के तत्काल बाद बल की टुकड़ियों को कच्छ, भुज, राजस्थान तथा सिंध से लगी सीमा पर घुसपैठ को रोकने तथा सीमा से जुड़े अपराधों की रोकथाम के लिए तैनात किया गया। जम्मू-कश्मीर से जुड़ी पाकिस्तान की सीमा पर भी पाकिस्तानियों तथा देशद्रोही तत्वों की घुसपैठ को रोकने के लिए बल की टुकड़ियों को तैनात किया गया। 21 अक्तूबर, 1959 को भारत तिब्बत सीमा पर स्थित हाट रिप्रंग्ज (लद्दाख) में अपने से बहुत बड़ी चीनी सेना की एक टुकड़ी के साथ लड़ते हुए बल के 10 वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी। उनकी शहादत की याद में 21 अक्टूबर को पूरे देश में पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

1962 में चीनी आक्रमण के समय नेफा क्षेत्र में भी बल ने भारतीय सेना को कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग दिया। इस युद्ध में अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए बल के आठ जवान वीरगति को प्राप्त हुए। 1965 के भारत पाक युद्ध के दौरान भी बल की चार कंपनियों ने रण आफ कच्छ की सरदार पोस्ट की एक पाकिस्तानी ब्रिगेड के विरूद्ध लड़ते हुए रक्षा की। के.रि.पु. बल ने भारी गोलीबारी करते हुए पाकिस्तानी ब्रिगेड को पीछे लौटाने को मजबूर कर दिया। शत्रुपक्ष के कई सैनिक मारे गए। 1971 के युद्ध में भी बल की टुकड़ियां पूर्वी तथा पश्चिमी सेक्टर में सेना के साथ लड़ी। बंगलादेश स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बल की दो टुकड़िया सेना के साथ लड़ी। साथ ही के.रि.पु. बल ने हजारों की तदात में पाकिस्तानी युद्ध बंदियों की निगरानी का दायित्व भी सफलता के साथ संभाला।

देश के अर्द्धसैनिक बलों के इतिहास में पहली बार के रि.पु. बल की 13 कंपनियों को देश के बाहर श्रीलंका में तमिल विद्रोहियों से निबटने में लगी भारतीय शांति रक्षक सेना के सहयोगों के तौर पर तैनात किया गया। लिट्टे विद्रोहियों के साथ लड़ते हुए बल के 14 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा कई घायल । बल के एक वीर जवान को यहां मरणोपरांत वीर चक्र प्रदान किया गया तथा एक अधिकारी को युद्ध सेवा पदक। दो अन्यों को जिनमें एक महिला कांस्टेबल शामिल है सेना पदक से सम्मानित किया गया। देश में सेना पदक प्राप्त करने वाली यह देश की पहली पुलिस महिला कर्मी थी।

इसके अतिरिक्त बल के कार्मिक संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों के तहत हैती नामीबिया, सोमालिया तथा बोस्निया हर्जेगोविना आदि में भी भेजे जाते रहे हैं। इस वर्ष भी के.रि.पु. बल की दो टुकड़ियां संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत कोसोवा में तैनात रही।

सत्तर के दशक के अंत में जब कुछ आतंकवादी तत्वों ने त्रिपुरा और मणिपुर में शांति भंग करना शुरू किया तो के.रि.पु. बल को बटालियनों को वहां शांति स्थापना की लिए तैनात किया गया। इसी दौरान अपेक्षाकृत शांत माने जाने वाली ब्रह्मपुत्र घाटी में भी अशांति भड़क उठी। यहां बहुत छोटे पैमाने पर शुरू हुए इस आंदोलन ने आगे चलकर पूरे असम को अपनी चपेट में ले लिया। के.रि.पु. बल को यहां अपनी पूरी शक्ति के साथ न केवल कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया, अपितु यहां की संचार व्यवस्था को बनाए रखने का जिम्मा भी के.रि.पु. बल के ही पास था। उत्तरपूर्वी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा स्थिति को देखते हुए बल की इस क्षेत्र में प्रतिबद्धता बहुत अधिक बढ़ गयी। उत्तर पूर्व में आतंकवादी गतिविधियों पर काबू बनाए रखने में के.रि.पु. बल का बहुत बड़ा योगदान है। 1988 से 1999 के बीच उत्तर पूर्वी राज्यों में के.रि.पु. बल ने 16,327 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। विभिन्न मुठभेड़ों में 229 आतंकवादी मारे गये। मगर इस सबके एवज में के.रि.पु. बल को भी भारी कीमत चुकानी पड़ी। यहां इस अवधि के दौरान बल के 363 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 661 गंभीर रूप से घायल हुए।



नीमच में परेड का निरीक्षण करते पं. नेहरू

80 के दशक में जब पंजाब में आतंकवाद का उदय हुआ तो राज्य सरकार ने बड़े पैमाने पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की तैनाती की मांग की। 1981 में पंजाब में बल की 50 कंपनियों की तैनाती की गयी, जो आगे चल कर 336 कम्पनियों यानि लगभग

56 बटालियनों के बराबर हो गयी। अपनी इस भारी तैनाती तथा कार्य कुशलता के बल पर के.रि.पु. बल ने राज्य



का. टी. मोहनन (इनसेट) को मरणोपरांत वीर चक्र प्रदान करते राष्ट्रपति

सरकार को आतंकवाद खत्म करने में मदद दी। इस दौरान बल के जवानों ने यहां 12,997 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा 2551 आतंकवादी विभिन्न आपरेशनों में मारे गये। यहां बल 192 वीर अधिकारी और जवान शहीद हुए तथा 500 गंभीर रूप से घायल।

अक्टूबर 1988 में जम्मू कश्मीर में आतंकवाद का फिर आगमन हुआ। 1990 से 1992 के दौरान यहां आतंकवाद पर नियंत्रण पाने के लिए के.रि.पु. बल को काफी नुकसान उठाना पड़ा। यहां आतंकवाद पर काबू पाने के लिए के.रि.पु. बल द्वारा किये गये प्रयासों की सर्वत्र सराहना हुयी है। 1988 से यहां बल के जवानों की आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 561 आतंकवादी मारे गये हैं तथा 4021 को गिरफ्तार किया गया। मगर इस सबके एवज में यहां बल के 170 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 1679 गंभीर रूप से घायल।

के.रि.पु. बल की एक विशिष्ट शाखा रैपिड एक्शन फोर्स का गठन अक्टूबर 1992 में सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए किया गया। इसका गठन के.रि.पु. बल की मौजूदा 10 बटालियनों को परिवर्तित करके किया गया। सांप्रदायिक दंगों तथा तनावों के दौरान तुरंत हरकत में आकर तथा निरपेक्ष ढंग से कार्य कर इस बल ने जनता, विशेषकर अल्पसंख्यक वर्गों का विश्वास अर्जित किया है। इसकी तैनाती मात्र से संवेदनशील स्थितियां सामान्य होती देखी गयी हैं। दंगों, बाढ़, भूकंप, तूफान, डेंगू, प्लेग आदि प्रकोपों तथा दुर्घटनाओं के दौरान तुरंत हरकत में आकर बचाव और राहत कार्यों में आर.ए.एफ. के योगदान ने सरकार तथा इस बल

के मानवीय पहलु को उजागर किया है।

अक्टूबर 1999 में उड़ीसा में आए विनाशकारी तूफान के बाद वहां बचाव व राहत कार्यों के लिए रैपिड एक्शन फोर्स की 6 कम्पनियां तैनात की गयी। बल की 10 मैडिकल टीमों ने तूफान प्रभावित जिलों में लगभग 20,000 मरीजों का इलाज किया।

यहां बल के जवानों ने पूर्ण समर्पण एवं सेवा भाव के साथ एरेस्मा ब्लाक में लगभग बुरी तरह सड़ चुकी लगभग 300 लाशों का अंतिम संस्कार भी किया।

के.रि.पु. बल देश का अकेला ऐसा अर्द्धसैनिक पुलिस बल है जिसकी अपनी दो महिला बटालियनें है। 1986 में के.रि.पु. बल की 88 महिला बटालियन का गठन किया गया। जिस का मुख्यालय नई दिल्ली में था। दूसरी 135 महिला बटालियन का गठन 1996 में किया गया, जिसका मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात में है। सांप्रदायिक दंगों, आतंकवाद तथा आंदोलनों के दौरान अपनी प्रभावी भूमिका के लिए इन बटालियनों ने प्रर्याप्त प्रशंसा अर्जित की। 88 महिला बटालियन की एक कंपनी ने श्रीलंका में तैनाती के दौरान काफी ख्याति पायी।



देश के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद नीमच में प्रथम बटालियन के कमांडेंट सुच्चा सिंह से परिचय प्राप्त करते हुए

जम्मू कशमीर तथा उत्तर पूर्वी राज्यों जैसे अशांत क्षेत्रों में अपने कर्तव्य को अंजाम देने के अतिरिक्त महिला बटालियन की लड़कियों ने राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में भी नाम कमाया है।

के.रि.पु. बल ने भारी तादाद में वृक्षारोपण के कार्यक्रम को अपनाया है। उड़ीसा में के.रि.पु. बल ने 1994 में भुवनेश्वर के पास 24,000 हेक्टेयर क्षेत्र के बरबरा वन क्षेत्र को संवर्धन एवं संरक्षण के लिए अंगीकृत किया है। बल के कार्मिक अपनी तैनाती के

बाद से इस वन क्षेत्र में अवैध कटायी तथा शिकार आदि पर पाबंदी लगाने में कामयाब रहे हैं।

के.रि.पु. बल ने खेल तथा खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। के.रि.पु. बल ने देश को जी.एस. रंधावा, हरिचंद, ईश्वर सिंह, खजान सिंह, बन्नू सिंह, सुखवंत सिंह, सुरेश चंद, आर.एस. बल, एन. कुंजारानी देवी, जीवन ज्योति, एन. लक्ष्मी, राजाराम टोकस, तिलक थापा, परमजीत सिंह तथा रिग्जेन अगमों जैसी चोटी के खिलाड़ी दिये है। जी.एस. रंधावा अर्जुन अवार्ड प्राप्त करने वाले पहले धावक हैं। इसी क्रम में हरि चंद, खजान सिंह, कुंजारानी देवी, आर.एस. बल तथा एन. लक्ष्मी अर्जुन अवार्ड प्राप्त करने वाले अन्य खिलाड़ी हैं। रोमांचक खेलों के क्षेत्र में भी के.रि.पु. बल ने पर्वतारोहण, नोकायान, मोटर साइकिल अभियान जैसे अभियानों का आयोजन किया है।

27 जुलाई, 1939 को अपने गठन के बाद से अब तक के के.रि.पु. बल ने एक जोर्ज क्रास (जी), एक वीर चक्र, एक पदम श्री, तीन किंग्स पुलिस मेडल फार गैलेंटरी, 49 राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं तथा शौर्यवीरता के लिए पुलिस फायर सर्विस पदक, 201 शौर्यवीरता तथा विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक, 1585 शौर्यवीरता तथा सराहनीय सेवाओं के लिए पदक, 4 विशिष्ट सेवा मेडल, 1 युद्ध सेवा मेडल, 5 सेना मेडल 77 प्रधानमंत्री के जीवन रक्षा पदक तथा एक जीवन रक्षा पदक प्राप्त किया है।

1939 में एक बटालियन से गठित किया गया यह बल आज 137 बटालियनों, 13 सेक्टरों, 28 रेंजों, 30 ग्रुप केंद्रों, 8 प्रशिक्षण संस्थानों तथा तीन बेस अस्पतालों का विशाल परिवार है।

के.रि.पु. बल का स्वरूप अखिल भारतीय है। इसमें देश के हर हिस्से तथा हर धर्म के लोग हैं। यह सही मायनों में एक राष्ट्रीय बल है। इसका राष्ट्रीय तथा निरपेक्ष स्वरूप ही इसकी शक्ति है। इसी स्वरूप के कारण इसे जन विश्वास तथा सहयोग प्राप्त है।

हाट स्प्रिंग्ज पुलिस बलों का तीर्थ



हाट स्प्रिंग्ज स्थित पुलिस स्मारक के.रि.पु. बल के 10 वीर जवानों की शहादत का अमर प्रतीक है।

हाट स्प्रिंग्ज लद्दाख में 16,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है, यहां तापमान शून्य से 47 डिग्री तक नीचे चला जाता है। 21 अक्टूबर, 1959 को चीनी सेना की एक टुकड़ी ने यहां पेट्रोल कर रही के.रि.पु. बल की टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया। अपने से बहुत बड़ी सेना का बहादुरी से सामना करते हुए के.रि.पु. बल के 10 जवान शहीद हो गये।

उस समय तिब्बत से जुड़ी 2500 मील की इस अपेक्षाकृत शांत सीमा पर चौकसी का काम भारतीय पुलिस के पास था। दुर्भाग्य वश 1959 के मध्य में चीनी टुकड़ियों के अतिक्रमण से सीमा के इस हिस्से में हलचल शुरू हो गयी थी। 21 अक्टूबर, 1959 को के.रि.पु. बल के 10 जवान जो कि तब भारत तिब्बत सीमा पुलिस में प्रतिनियुक्ति पर थे, अपनी सामान्य गश्त पर थे, जबकि उन पर चीनी टुकड़ी ने भारी स्वाचालित हथियारों तथा मोर्टारों के साथ हमला किया। के.रि.पु. बल जवानों के पास सिर्फ उनकी रायफलें थी, मगर फिर भी वे बहादुरी से अपने से बहुत शक्तिशाली चीनी टुकड़ी का तब तक सामना करते रहे, जब तक उनमें शक्ति रही। इस हमले में बल के दस जवान मारे गये तथा नौ को चीनी सैनिकों ने हिरासत में ले लिया। हमले में शहीद हुए के.रि.पु. बल जवानों में इमान सिंह, पूरन सिंह, नोरबू लामा, बेगराज मल, मक्खनलाल, शिवनाथ प्रसाद, हरजीत सूबा, धरम सिंह, स्वर्ण दास तथा तेसरिंग नोरबू शामिल थे। वे सभी के.रि.पु. बल की 1, 2 तथा 3 बटा, के सदस्य थे। शहीदों में तीन

दार्जीलिंग, प. बंगाल, दो–दो हरियाणा, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश तथा एक हिमाचल प्रदेश का निवासी था। इस प्रकार मातृभूमि की रक्षा के लिए शहीद होने वाले ये कार्मिक लगभग पूरे देश में आए थे। इन कार्मिकों की शहादत पर पूरे देश सहित कई अन्य देशों में भी शोक व्यक्त किया गया। 7 नवंबर, 1959 को अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट के लिए पटना में एकत्र हुए पूरे देश के पुलिस कर्मियों ने अपने इन वीर साथियों की स्मृति को बनाए रखने की शपथ ली। इन शहीद कर्मियों के मृत शरीर चीनी अधिकारियों ने 13 नवंबर, 1959 को भारत को सौंपे और उससे अगले दिन हाट स्प्रिंग्ज में उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।



का. नोरबू लाम्बा



कां. पूरन सिंह



कां. धरम सिंह



कां शिवनाथ प्रसाद

जनवरी, 1960 को हुयी पूरे देश के पुलिस महानिरीक्षकों को द्विवर्षीय बैठक में यह निर्णय लिया गया कि 21 अक्टूबर शहीद हुए पुलिस कर्मियों की याद में प्रतिवर्ष पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

भारत सरकार ने इन पुलिस कर्मियों की याद में हाट स्प्रिंग्ज में स्मारक का निर्माण किया। इस स्मारक के निर्माण के लिए पूरे देश के पुलिस कर्मियों ने स्वेच्छा से अनुदान दिया। स्मारक का निर्माण 1962 में पूरा हुआ। तभी से पूरे देश के पुलिस कर्मियों की एक प्रतिनिधि टुकड़ी प्रति वर्ष इस स्मारक पर अपने शहीद हुए साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने इस दुर्गम स्थल पर आती है। स्मारक पर खुदे शब्द – "जब आप घर आओ, तो देश वासियों को हमारे बारे में बताना और कहना कि उनके कल के लिए हमने अपना आज कुर्बान कर दिया।" काफी समय तक मस्तिष्क को झकझोरते रहते हैं।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने 20 अगस्त '98 को. हाट स्प्रिंग्ज (लद्दाख) स्थित ऐतिहासिक पुलिस स्मारक पर देश सेवा में अपने प्राण न्यौछावर कर देने वाले पुलिस शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्मारक पर आकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले श्री सभरवाल पहले के.रि.पु. बल महानिदेशक हैं।

प्रकृतिक विपदा में भी सच्चा मित्र

-चन्द्र मोहन बहुगुणा, अपर उप महानिरीक्षक, पूर्वी सेक्टर



केरल में आयी बाढ़ के दौरान राहत कार्यों में लगे बल के कार्मिक

साधारणतया आम जनता किसी भी खाकी वर्दीधारी पुलिस वाले को देखकर यह महसूस करती है कि वह चोर, डकैत, असामाजिक तत्वों या अन्य उपद्रवियों से ही निपटने में सक्षम होगा उसके प्रशिक्षण की शैली, रहन-सहन, सेवा की कठिन शर्ते इत्यादि उसकी मानवता के प्रति अभिरूचि दिखाने में बाधक हो जाते हैं। धीरे-धीरे पुलिस वालों की आदतें निरन्तर ड्यूटी एवं अक्सर कमाण्डरों का कड़ा स्वभाव उनको समाज की आम जनता से लगाव या अपनापन कम कर देता है जिसके फलस्वरूप लोगों में अक्सर यह भावना घर कर जाती है कि पुलिस वाले दयाहीन ही नहीं बल्कि कठोर, निष्ठुर एवं निर्दयी स्वभाव के होते हैं, जिससे वे पुलिस वालों से मिलना भी पसंद नहीं करते।



उड़ीसा में तुफान पीड़ितों को दवाएं वितरित करते बल के कार्मिक

इसके अपवाद में यह एक अति प्रशंसनीय उपलब्धि है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की स्थापना के बाद ही इसकी ड्यूटी में अन्य बातों के अलावा यह भी उल्लेख है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को प्राकृतिक आपदा जैसे भूकम्प, बाढ़, अकाल, आगजनी आदि में स्थानीय/जिला प्रशासन की मदद के लिए भेजा जा सकता है। यह किसी भी पुलिस बल या फोर्स की विश्वसनीयता, कार्य-कुशलता, कर्तव्य परायणता एवं उसकी उत्कृष्टता को दर्शाता है। अतः संगठनात्मक दृष्टिकोण से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम इस तरह से तैयार किया जाता है कि उसे जब भी किसी प्राकृतिक त्रासदी से निपटने के लिए बुलाया जाय तो वह उन क्षणों में भी अनुकरणीय सहायता प्रदान करे एवं भारत सरकार और आम जनता की आशा के अनुरूप खरी उतरे। सी आर पी एफ ही एक ऐसा केन्द्रीय पुलिस बल है जिसको स्वाधीनता से पूर्व अंग्रेजों ने सोच विचार कर खड़ा किया और विश्वास का बीज प्रस्फूटित किया ताकि उन दिनों के मादक पदार्थ के तस्करों एवं डकैतों से ब्रिटिश सरकार की हुकूमत और आला अफसरों तथा समाज को बचाया जाए।

सी.आर.पी.एफ. की गाथाएं, गौरवमय उपलब्धियों से देश की जनता भलीभांति परिचित रही है : चाहे उसे भारतीय सेना के साथ श्रीलंका में आधुनिक हथियारों से लैस तमिल छापामारों से लड़ने के लिए भेजा गया हो, नागालैण्ड या अन्य पूर्वोत्तर राज्यों के पहाड़ी एवं दुर्गम क्षेत्रों में देश द्रोहियों का आतंक हो, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल, केरल, बिहार इत्यादि राज्यों में नक्सलवादियों का खौफ हो, असम एवं

उत्तर प्रदेश एवं गुजरात राज्यों में साम्प्रदायिक दंगे हो, पंजाब एवं जम्मू कश्मीर का खूंखार कट्टरवादी, अलगाववादी या आतंकवादी हो, अरूणाचल प्रदेश में फेरी ड्यूटी हो या कैदी गृह की सुरक्षा हो, उड़ीसा में बरबरा जंगल की बहुमूल्य लकड़ियों को तस्करों से बचाना हो यानि जिस किसी भी चुनौतिपूर्ण स्थिति के लिए सी.आर.पी.एफ. को तैनात किया गया हो उन सभी में यह फोर्स अव्वल रही है। इन्हीं कारणों की वजह से इस फोर्स के सदस्यों को आजकल अतिसंवेदनशील प्रतिष्ठानों, राजनयिकों, मंत्रियों, विशिष्ट व्यक्तियों, लोक सभा एवं विधान सभा के चुनाव, महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों की सुरक्षा के अलावा विदेशों में भी संयुक्त राष्ट्र संघ के अधीन अन्य देशों के सैनिकों के साथ अपना जौहर दिखाने का मौका मिल रहा है। आज जो हम लोग पुलिस शहीद दिवस प्रत्येक वर्ष 21 अक्तूबर को मनाते हैं उसका भी आधार बिन्दु सी.आर.पी.एफ. के जवानों का बलिदान ही है, जो हंसते-हंसते देश की सीमा की रक्षा करते हुए लद्दाख क्षेत्र में चीनियों के हाथों सन् 1959 में शहीद हुए थे। इसकी विश्वसनीयता, निर्भरता एवं कार्य कुशलता को देखकर कितने ऐसे अवसर बीते है जब प्रान्तीय सरकार या उन राज्यों के सांसदों ने आवाज लगाई कि सी.आर.पी.एफ. ही एक ऐसा चरित्रवान, साफ सुथरी छबि का पुलिस बल है जो किसी धार्मिक दंगे, आगजनी या धार्मिक स्थलों की विध्वंसता से समाज की रक्षा कर सकता है और उसकी शीघ्र तैनाती उन परिस्थितियों में की जाती रही है।

29 एवं 30 अक्तूबर को उड़ीसा राज्य में अति प्रचण्ड विध्वंसकारी समुद्री तूफान आयी था। तूफान की गति करीब 260 कि.मी. प्रति घंटा थी, जिसके साथ प्रलयकारी तूफानी वर्षा आया। समुद्री लहर का आक्रोश करीब 40 फीट ऊंचाई तक उठा जो मुंह फाड़े किसी भी व्यक्ति, जानवर या मकान को निगल जाना चाहता था। प्रकृति की इस प्रचण्डता में प्राणी त्राहि-त्राहि कर रहे थे और भयावह स्थिति को देखकर उनके रोंगटे खड़े हो गये थे, नुकसान एवं मौत को नजदीक देखकर वे लोग कांप गये थे और जगह-जगह सुरक्षित स्थानों की खोज में रोते-बिलखते एवं सर पटकते, चीखते चिल्लाते दौड़ भाग रहे थे। इस समुद्री तूफान में यह अनुमान लगाया जाता है कि लगभग 8-9 हजार लोगों की जाने गई और लाखों घर उजड़ गए। लाखों पेड़-पौधे धराशायी हो गए और जानवरों की लाशों के ढेर जहां-तहां देखने को मिले। वातावरण इस कदर प्रदूषित हो गया कि महामारी फैलने की नौबत आ गई। सड़क, रेल यातायात ठप्प हो गया, दूर संचार संपर्क टूट गया एवं बिजली के प्रकाश में जगमगाते शहर अंधेरे के आगोश में समा गये। इलाका सुनसान एवं विरान बन गया और चारों ओर भय का वातावरण था।

ऐसी प्राकृतिक आपदा की सूचना मिलते ही सजग के.रि.पु. बल ने अपना कदम रक्षा एवं बचाव कार्य में तत्काल प्रभावकारी रूप से उठाया। सी.आर.पी.एफ. की करीब तीन कम्पनियां एवं उसका अभिन्न अंग द्रुत कार्य बल की छः कम्पनियों आसपास के राज्यों से अतिशीघ्र तूफानग्रस्त उड़ीसा राज्य के इलाकों में भेजी गई। सबसे खराब स्थिति कटक, जाजपुर, जगतसिंपुर एवं केन्द्रपाड़ा जिलों की थी, जहां पर मानव मौतें अपना ताण्डव नृत्य कर रही थीं। के.रि.पु. बल एवं द्रुत कार्य बल के

जवानों एवं अधिकारियों तूफान पीड़ित जगहों पर पहुंचकर हजारों बेघर लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। अपनी मेडिकल टीम एवं डाक्टरों की मदद से लोगों का उपचार किया, दवायें वितरित की एवं विभिन्न जगहों पर राहत शिविर लगवाये। विभिन्न समाज सेवी संगठनों एवं केन्द्रीय/प्रान्तीय सरकारों द्वारा भेजी गई, खाद्य सामग्रियों का वितरण दुःखी एवं भूखे लोगों के बीच सुनिश्चित किया। खुद अपने विभाग से भी भोजन सामग्री बचाकर असहाय जनता के बीच बांटी। घर-घर जाकर इस बल के सदस्यों ने सहमे लोगों के मन में मित्रता का आभास जताया और यह धारणा पैदा की कि वे लोग वास्तव में उनके सच्चे मददगार हैं। ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर ने अपनी क्षति को भूलकर आम जनता की सहायतार्थ भुवनेश्वर शहर में मेडिकल टीम भेजी और अनेकों प्रयास किये। भारत सरकार के आदेशानुसार ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर में करीब सात सौ केन्द्रीय औद्योगिक बल के जवानों के लिए रहने का समुचित इन्तजाम भी किया।



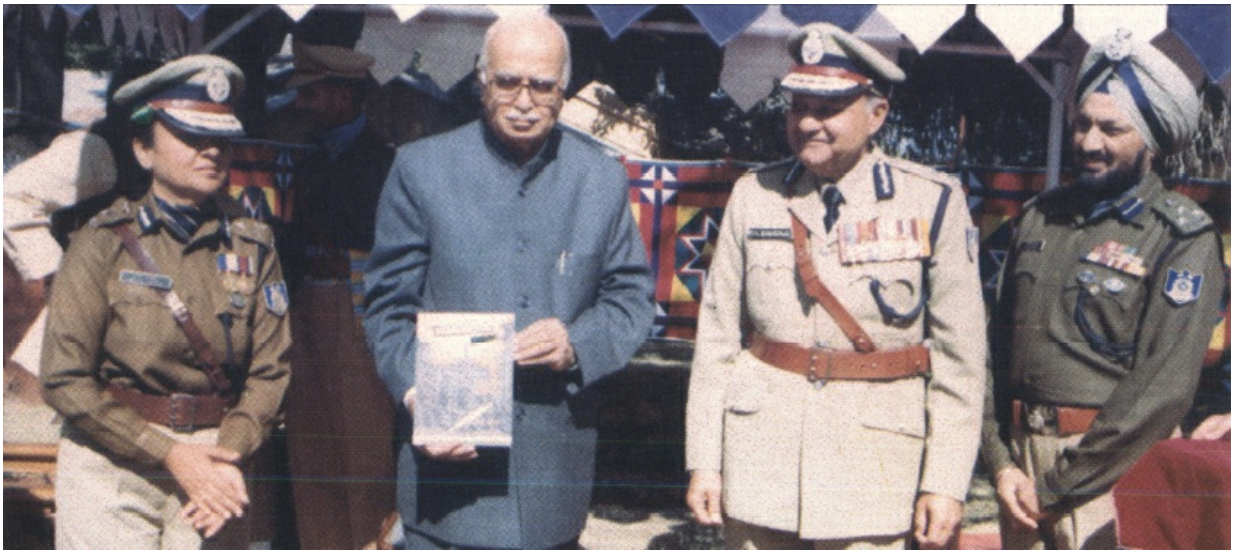
उड़ीसा में तुफान पीड़ितों की मदद करते बल के कार्मिक

प्रधानमंत्री एवं केन्द्रीय गृह मंत्री ने भी उड़ीसा राज्य में इस सुपर तूफान की प्रलयकारी नृत्य को देखकर के.रि.पु. बल में आस्था जतायी एवं केन्द्रीय स्तर पर यह निर्णय लिया गया कि उच्च स्तर के अधिकारी को दिल्ली एवं कलकत्ता से राहत कार्यों की देख-रेख के लिए तुरन्त भेजा जाए। अपर महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा एवं पूर्वी सेक्टर कलकत्ता के महानिरीक्षक आर.पी. सिंह मौके पर पहुंच कर के.रि.पु. बल एवं द्रुत कार्य बल द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न राहत कार्यों का जायजा ले रहे थे। इस

विपत्ति की घड़ी में इन बलों की सहिष्णुता, जागरूकता एवं अग्र कदमों को देखकर विभिन्न अखबार और प्रयार माध्यमों ने भी उनकी प्रशंसा की।

उपर्युक्त राहत कार्यों की उपलब्धियों को देखते हुए हमें यह कहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि केरिपु बल, भारत सरकार का एक सशस्त्र फोर्स ही नहीं अपितु प्राकृतिक त्रासदी में भी एक दक्ष एवं कुशल पुलिस बल है जो अपनी विलक्षणता एवं कार्य कुशलता किसी भी परिस्थिति में अपेक्षानुसार दर्शाता है। इसका निष्ठावान चरित्र, रहन-सहन एवं तकनीकी कार्यकुशलता एवं धर्म निरपेक्षता को देखकर सभी राज्य सरकारें यह चाहती हैं कि के.रि.पु. बल के जवान संकट एवं कानून व्यवस्था की बिगड़ती घड़ी में उनकी मदद को आगे आये। आम जनता में भी केरिपु बल अपने कार्यों से एक घनिष्ठ, निर्भर एवं विश्वसनीय मित्र बन बैठा है। यही कारण है कि गृह मंत्री ने अभी हाल ही में इसके विस्तार के लिए पचास और बटालियनों को बनवाने की घोषणा की।

30वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड



दीक्षांत परेड के मौके पर अकादमी की पत्रिका का विमोचन करते गृह मंत्री

4दिसंबर '99 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महत्वूपर्ण प्रशिक्षण संस्था आंतरिक सुरक्षा अकादमी माउन्ट आबू में 30वें बैच के राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षांत परेड का भव्य आयोजन हुआ। परेड की सलामी गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने ली।

अपने दीक्षांत भाषण में श्री आडवाणी ने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा ठीक करने में आंतरिक सुरक्षा अकादमी की महत्वपूर्ण भूमिका है और यहां से प्रशिक्षित

होकर निकलने वाले अधिकारियों का इस भूमिका में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से पड़ोसी देश ने कारगिल में भारत पर हमला किया लेकिन देश के जवानों ने, अर्धसैनिक बलों ने, सी.आर.पी.एफ. व बी.एस.एफ. ने मिलकर सामना किया और पाकिस्तान को विफल होना पड़ा है। इसलिए अब उन्होंने उनके प्राक्सी वार को तेज कर दिया है लेकिन उसमें भी उनको पराजय मिलेगी।

श्री आडवाणी ने नव प्रशिक्षित युवा अधिकारियों ने कहा कि वे उनकी शपथ कि वे पंक्तियाँ याद रखें जिसमें उन्होंने देश के राष्ट्रपति और अपने अधिकारी की आज्ञा पालन करने की शपथ ली है और जरूरत पड़ने पर प्राणों को बलिदान देने की शपथ ग्रहण की है। वे अपने जीवन में उस शपथ का अक्षरशः पालन करें।

बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा को विभिन्न चुनौतियों और धमकियों का सामना करना पड़ रहा है। इनसे हमें उचित तरीकों से निपटना होगा और ध्यान देना होगा।

दीक्षांत परेड को संबोधित करते हुए अकादमी की निदेशिका श्रीमती मंजरी जारूहार ने कहा कि वर्तमान सामाजिक व राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में अधिकारियों का प्रशिक्षण बह आयामी बनाया गया है ताकि अधिकारियों में दृढ़ आत्म विश्वास पैदा हो सके।

दीक्षांत समारोह में श्री आडवाणी ने सलामी ली और परेड का निरीक्षण किया। इस परेड में एक महिला अधिकारी सहित कुछ 60 अधिकारी शामिल थे। उन्होंने अधिकारियों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए शील्ड और ट्राफियां भी प्रदान की। श्री बी. किशोर कुमार को सोर्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया। इनडोर प्रशिक्षण के लिए ट्राफी कुमारी विजया रावत को प्रदान की गई एवं आउट डोर प्रशिक्षण की ट्राफी भी संजय कुमार सिंह को दी गई। श्री बसंत कुमार सिंह को फिजिकल प्रशिक्षण के लिए डाइरेक्टर्स बेटन प्रदान की गई। बेस्ट ड्रिल, बेस्ट शॉट और बेस्ट वेपन के लिए क्रमशः श्री विशाल खण्डवाल, एच.एन.एस. बिष्ट और श्री अवधेश ध्यानी को मिली।

राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष-एक समीक्षा

– अरूण कुमार सिंह, पु.उप महानिरीक्षक (प्रशा.)



हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता महानिदेशक के साथ

स्वराज के बाद हम भारतीयों के सामने एक ही प्रश्न, एक ही सामाजिक समस्या और एक ही सांस्कृतिक चुनौती है - स्वदेश में स्वभाषा की प्रतिष्ठा। एक लम्बे समय तक हम अंग्रेजों के अधीन रहे जिसके कारण अंग्रेजी का प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहा और अब विभिन्न प्रयासों के बावजूद इस प्रभाव को हम कम करने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं। विवशता यह है कि इस प्रभाव से मुक्ति के लिए दो कदम आगे बढ़ते हैं कि तीन कदम पीछे आ जाते हैं। जिसके पीछे मुख्य कारण अनुरोध की बैसाखी का सहारा लेना रहा है। हर सरकारी कार्मिक व अधिकारी का कर्तव्य है कि वह संघ द्वारा बनाए गए नियमों व विनियमों का पूरी कर्तव्यबद्धता एवं सत्यनिष्ठा से पालन करे। कोई भी व्यक्ति चाहे भारत के किसी भी प्रांत व राज्य का हो इन नियमों का पालन करने के लिए बाध्य है। एक सरकारी कार्मिक व अधिकारी होने के नाते सरकारी नियमों को मानना हमारा दायित्व है जिस प्रकार अन्य सरकारी नियमों को मानना सरकारी कर्मचारी व अधिकारी का दायित्व है। अब 14 सितंबर '99 से राजभाषा स्वर्ण जयन्ती वर्ष भी मनाया जाना शुरू हो गया है। हर कार्यालय व संस्था इस अवसर पर हिंदी पखवाड़ा, हिंदी दिवस, राजभाषा संगोष्ठी व सम्मेलन, प्रतियोगिताएं आदि करने की होड़ में शामिल हो गई है।

यहां यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि शासन द्वारा कार्मिकों व व्यक्तियों को अनेकानेक प्रोत्साहनों का लालच देने के बावजूद हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का पद सही अर्थों में अभी भी नहीं मिल पाया, क्योंकि अंग्रेजी का मोह हम छोड़ नहीं पाए हैं। खेद है कि जिन प्रांतों की मातृभाषा हिंदी है आज वहां का शिक्षित वर्ग भी आपस में अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार करता है, बातचीत अंग्रेजी में करता है। सर्वविदित है कि जब किसी को गुस्सा दिखाना हो, गाली देनी हो, आरोप लगाने हो, भ्रष्टाचार

छिपाने हों, किसी का शोषण करना हो, किसी को बड़प्पन दिखाना हो, नियमों का उल्लंघन करना हो तो अंग्रेजी ढाल का काम करती है, सिर को ऊंचा करने में मदद करती है।

उक्त बातों से यह अर्थ नहीं है कि कुछ नहीं हुआ है, जो होना चाहिए था वह नहीं हुआ। सभी मानते हैं हिंदी राष्ट्रभाषा है, हिंदी राजभाषा है, हिंदी जन-जन की भाषा है, हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, यह सभी तथ्य स्वीकार किए जाने पर भी लोग या सरकारी कर्मचारी व अधिकारी वस्तुतः किसी सीमा तक अपने व्यवहार व जीवन में हिंदी का समावेश कर पाए हैं यह आज एक विचारणीय प्रश्न है। अगर हम सरकारी कार्यालयों में हिंदी काम-काज की समीक्षा करें तो प्रगति के आंकड़े तो बढ़ते हुए नजर आते हैं किन्तु हिंदी, पत्र व्यवहार में बढ़ती हुई नजर नहीं आती। हिंदी पत्राचार में प्रगति का मूल्यांकन इस बात पर होता है कि किसी अधिकारी के पास आने वाले कुल पत्रों में कितने हिंदी में हैं और उसके हस्ताक्षरित पत्रों में कितने हिंदी में हैं। इसके साथ ही यदि अधिकारी वर्ग इस बात के प्रति सचेत रहें कि स्टेंसिलों व कार्यालय आदेशों तथा कार्यालयों के एक समूह को जाने वाले पत्रों पर तभी हस्ताक्षर करें जब वह मूल रूप से हिंदी में हो या हिंदी रूपांतर साथ लगा हुआ हो तो कार्मिकों को हिंदी के काम करने के प्रति अभ्यास करने व हिंदी प्रयोग की मात्रा बढ़ाने में काफी सफलता मिल सकती है। नियमानुसार अब यह सभी को स्पष्ट हो जाना चाहिए कि कोई भी पत्र या मद या तो द्विभाषी या केवल हिंदी में ही प्रस्तुत की जाएगी।

जहां तक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण व परीक्षाओं में माध्यम अपनाए जाने का प्रश्न है, सरकारी नियम स्पष्ट है कि पढ़ाई हिंदी में या मिली-जुली हिंदी-अंग्रेजी में की जाए ताकि अहिंदी भाषी या हिंदी भाषी किसी कार्मिक को असुविधा नहीं हो। जहां तक परीक्षा में माध्यम का विकल्प है - प्रश्न-पत्र दोनों भाषाओं (अंग्रेजी-हिंदी) में तैयार किए जाएं तथा प्रशिक्षार्थी उत्तर देने में किसी भी भाषा को चुन सकता है। ये कुछ बातें हैं जिनको अगर हम ध्यान में रखकर सरकारी काम-काज को निपटाएं तो इससे नियमों का अनुपालन भी होगा तथा हिंदी प्रगति में भी बढ़ोत्तरी होगी। राजभाषा स्वर्ण जयन्ती वर्ष चल रहा है, अतः अधिकारी व कर्मचारी स्वयं अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें व करवाएं इससे उनका हिंदी में कार्य करने का अभ्यास बढ़ेगा एवं भाषा के प्रति भय की भावना समाप्त होगी।

राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष में बल के अन्दर हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के उद्देश्य से दिनांक 28 जुलाई, 99 को आयोजित महानिदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में निर्णय लिए गए कि स.उ.नि. (मं) व उप-निरी. (आशु.) की वर्तमान रिक्तियों पर उपलब्धता के आधार पर हिंदी टाइपिंग व आशुलिपि जानने वालों से भरी जाएं, हिंदी में प्रशिक्षण व मूल हिंदी टिप्पण आलेखन की मात्रा के आधार पर सर्वोत्तम सेक्टर को ट्राफी देना, विभागीय शब्दावली व प्रारूपों की किश्तें जारी करना, सी.आर.पी.एफ. समाचार का

राजभाषा अंक जारी करना, दो राजभाषा संगोष्ठी आयोजित करना, हिंदी कार्यशालाएं व प्रतियोगिताएं करना, केवल द्विभाषी इलैक्ट्रॉनिक टाइपराइटरें खरीदना, बल आदेश का शतप्रतिशत हिंदी में प्रकाशन करना आदि। इन सभी कार्यक्रमों पर नजर रखी जा रही है तथा हाल ही में 3 दिसम्बर, 1999 को पहला राजभाषा सम्मेलन, ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, हैदराबाद में सम्पन्न हुआ। हर्ष की बात है कि पूर्वात्तर सेक्टर, केरिपु बल, शिलांग को वहां स्थित केन्द्र सरकार के 102 कार्यालयों में हिंदी प्रयोग के लिए सर्वोत्तम मानते हुए नराकास के अध्यक्ष महानिदेशक, असम राइफल ने 8 दिसम्बर, 1999 को शील्ड प्रदान की।

बल के प्रशिक्षण कार्यक्रम में तेजी लाने के उददेश्य से दिल्ली तथा बाहर स्थित हिंदी शिक्षण योजना के संस्थानों में सीटें रिजर्व कराई गई हैं तथा उनका पूरा-पूरा उपयोग करते हुए वर्तमान वर्ष 1999 में अब तक 132 कार्मिकों को हिंदी भाषा में, 163 को हिंदी टंकण में तथा 25 आशुलिपिकों को हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षित कराया जा चुका है। इलैक्ट्रानिक टाइपराइटरों तथा कंप्यूटर के जरिए काम-काज में गति लाने के उद्देश्य से 5 दिन के प्रशिक्षण के लिए कार्मिकों को क्रमश : पृथ्वीराज रोड स्थित हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा राष्ट्रीय सूचना केन्द्र पर्यावरण भवन, लोदी रोड नई दिल्ली के लिए नामित किया जा रहा है।

मूल पत्राचार हिंदी में करने तथा रा.भा. नियम की धारा 3(3) का अनुपालन करने में भी बल पीछे नहीं है। "क" क्षेत्र के साथ 64 प्रतिशत, "ख" क्षेत्र के साथ 58 प्रतिशत तथा "ग" क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के साथ 51 प्रतिशत पत्राचार हिंदी में किया जा रहा है। इस प्रतिशत में सिगनल द्वारा किए गए पत्राचार को शामिल नहीं किया गया है। सभी युनिटों के बल आदेश व कैश-बुक अब हिंदी में लिखी जा रही है। कल्याण बैठकों की कार्यसूची व कार्यवृत्त तथा सभी प्रकार की जांच रिपोर्ट अब हिंदी में लिखी जा रही है। इन सभी काम-काजों के आंकड़ों के आधार पर गृह मंत्रालय व कार्यालय में बल को वर्ष 1996-97 की द्वितीय राजभाषा शील्ड गृह सचिव महोदय के कर कमलों से 11 जून, 1999 को महानिदेशालय ने ग्रहण की थी। आशा की जाती है कि बल में चलाए जा रहे अभियान/कार्यक्रमों से प्रेरणा पाकर बल के सभी अधिकारी व कार्मिक सरकारी काम-काज में हिंदी प्रयोग बढ़ाने में सहयोग करेंगे तथा राष्ट्र का गौरव बढ़ाएंगे।

के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी

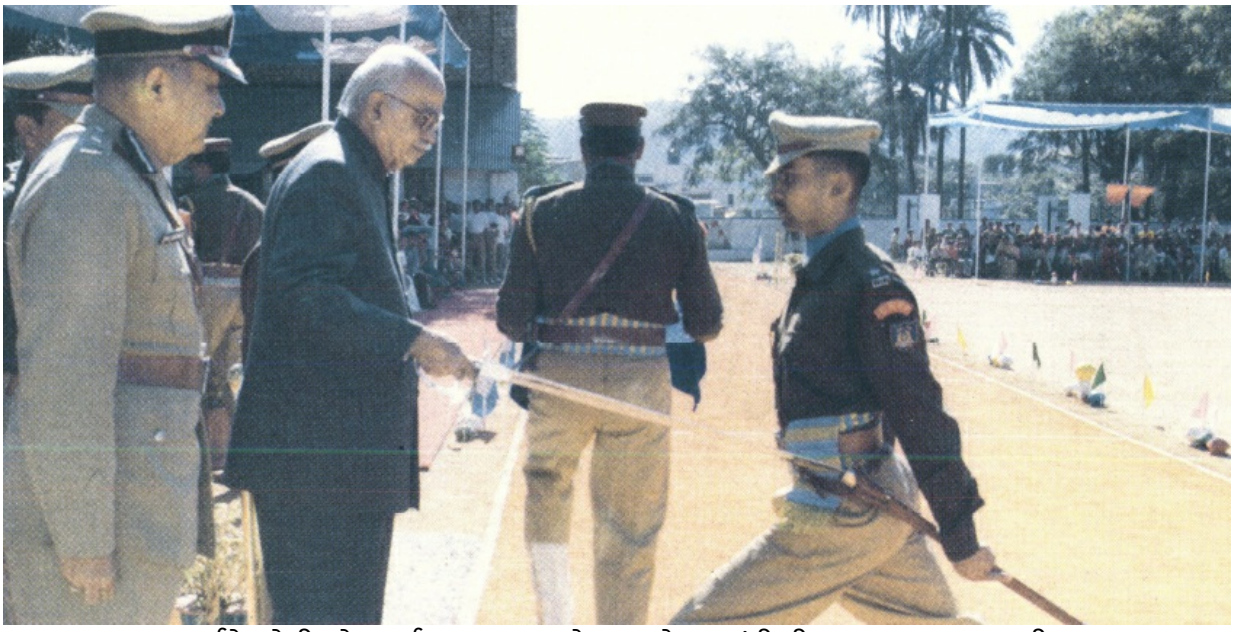


के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी का दीप जलाकर उद्घाटन करती श्रीमति यशवंत सिन्हा



प्रदर्शनी में सर्वश्रेष्ठ स्टाल के लिए ग्रुप केंद्र-*2* अजमेर को ट्राफी प्रदान करती श्रीमति आडवाणी *(*बाएं*)*

*30*वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड



सर्वश्रेष्ठ ट्रेनी को स्वार्ड आफ आनर पेश करते गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी



अधिकारियों को उनका रैंक लगाते गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी

रैपिड एक्शन फोर्स की 7वीं वर्षगांठ



रैपिड एक्शन फोर्स की सातवीं वर्षगांठ के अवसर पर अलीगढ़ में आयोजित परेड का निरीक्षण करते गृह मंत्री श्री आडवाणी



परेड की सलामी लेते गृह मंत्री श्री आडवाणी



गृह मंत्री श्री आडवाणी को स्मृति चिह्न भेंट करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



गृह सचिव श्री कमल पांडे को स्मृति चिह्न भेंट करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

के.रि.पु. बल में खेल

– वाई.एन.श्रीवास्तव, अपर महानिदेशक, केरिपु बल

खेल कूद केरिपु बल के जीवन का अभिन्न अंग है और इस बल की पहचान है। केरिपु बल हमेशा ही खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करता रहा है। बल के प्रशिक्षण संस्थान व यूनिटें खेल-कूद की नर्सरी हैं, जहां प्रतिभाशाली युवकों की पहचान कर उन्हें कोचिंग दी जाती है और उच्चकोटि का खिलाड़ी बनाया जाता है। अखिल भारतीय खेलों में हिस्सा लेने के साथ-साथ हमारे खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में इंडियन पुलिस टीम का प्रतिनिधित्व भी किया है। खेल के क्षेत्र में केरिपु बल की उपलब्धियों की शुरूआत हम साहसिक खेलों से करते है। वर्ष 1994 में बल ने साहसिक खेलों की शुरूआत गंगा नदी में नौका अभियान से की, जिसने हरिद्वार से कलकत्ता तक 2151 कि.मी. की दूरी 61 दिन में पूरी की थी। केरिपु बल ने मई 1995 में क्रमश: 6546 मी. तथा 6116 मीटर ऊंची जोगिन-1 एवं जोगिन-3 चोटियों पर पर्वतारोहण किया। सेना द्वारा आयोजित हिमेक्स-95 के एक भाग के रूप में कार-रैली में केरिपु बल, हिस्सा लेकर तीसरे स्थान पर रहा। महिलाओं को साहसी बनाने के लिए नवम्बर-दिसम्बर 1996 में श्रीनगर (गढ़वाल) से ऋषिकेश तक केरिपु बल ने फर्स्ट वोमेन व्हाइट-वाटर राफ्टिंग एक्सपीडीशन का आयोजन किया तथा करीब 105 कि.मी. की दूरी सफलतापूर्वक पूरी की। सितम्बर 1997 के दौरान सराहन (हि.प्र.) से चंड़ीगढ़ तक “ऑल वोमेन माउंटेन वाईकिंग एक्सपीडीशन” ने साईकिलों पर 300 कि.मी. की दूरी तय की। हीरक जयन्ती वर्ष के दौरान एक मोटर-बाइक एक्सपीडीशन का आयोजन किया गया है, जो देश के सभी कोनों को छूते हुए अधिकांश राज्यों के बड़े-बड़े शहरों से गुजरते हुए 8000 कि.मी. से भी अधिक दूरी तय करेगा।



कुंजारानी को राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार प्रदान करते राष्ट्रपति



खेलों के क्षेत्र में उपलाब्धेयों के लिए परमजोत सिंह को बधाइ देते प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी

1964 के ओलंपिक खेलों में डिकेथलेट गुरबचन रंधावा ने 110 बाधाओं को 14 सेकेंड में पार कर खेल-कूदों में केरिपु बल को पहली पंक्ति में ला दिया था तथा इस रिकार्ड को अभी तक कोई भारतीय नहीं तोड़ पाया है और खेलों में प्रथम अर्जुन पुरस्कार का विजेता होने का उन्हें गौरव प्राप्त है। केरिपु बल 1972 से 1989 तक प्रत्येक अखिल भारतीय पुलिस खेलों में सिवाय 1978 के, ट्रैक व फील्ड एरेना में चैंपियनशिप ट्राफी जीतकर अग्रणी रहा है। इस अवधि में डी. मुजावर तथा जे.एस. जेंडा जे से एथलीट लम्बी दूरी की प्रतियोगिताओं में छाये रहे। 1990 से 1994 तक खेलकूदों में केरिपु बल का प्रदर्शन पतन की ओर रहा परंतु 1995 के बाद फिर उभार आया और अभी तक फोर्स के लिए अच्छा नाम कमा रहे हैं। खेलकूदों ने हमें कई सितारे दिये हैं जैसे आर.एस. बल, हरीचन्द, रसदेव सिंह, ए.एस. योनन, गुरमुख सिंह, रामभगत, श्यामुद्दीन, राजेन्द्रसिंह, प्रभजोतसिंह, रामपथ, मुकेश सिंह तथा अंतिम परमजीत सिंह जिन्होंने हाल ही में 1999 का अर्जुन पुरस्कार प्राप्त किया है।

केरिपु बल ने पहली बार अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में 1960 में भाग लिया था। 1977 में तैराकी चैंपियनशिप जीतकर इसने अपनी पहचान बनाई थी। तब से इसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा तथा 13 साल तक लगातार चैंपियन ट्राफी पर कब्जा बनाए रखा। खजान सिंह जैसे तैराकों ने केरिपु बल के लिए नाम ही नहीं कमाया बल्कि सियोल में आयोजित एशियाई खेलों में रजत पदक जीतकर देश का नाम ऊंचा किया। उसने 8 राष्ट्रीय रिकार्ड बनाए हैं तथा 1984 में अर्जुन पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया। एस. राधाकृष्णन, के. सोम शेखरन, पी.वी. पिल्ले, आर.के. रोजन, महिन्दर कुमार, डी. क्लीमेंट, श्यामलाल तथा के. अवोरन्यास की उपलब्धियां भी कोई कम नहीं रही है। महावीर शेखावत, बी.एस. रविशंकर, पवित्र शर्मा तथा धारा सिंह भी बहुत वर्षों तक गोताखोरी में राष्ट्रीय चैंपियन रहे हैं। 47वीं अखिल भारतीय तैराकी चैंपियनशिप-98 में इंस्पेक्टर कैलाशनाथ को सर्वोत्तम तैराक माना गया तथा केरिपु बल वाटर पोलो टीम ने स्वर्ण पदक हासिल किया।

हॉकी में केरिपु बल ने कई बड़े-बड़े टूर्नामेंटों जैसे नेहरू हॉकी, श्रीराम डी.सी.एम. हॉकी, महाराज गोल्ड कप, बंबई गोल्ड कप तथा के.डी. सिंह बाबू टूर्नामेंट में जीत हासिल की। केरिपु बल ने कई उत्कृष्ट हॉकी खिलाड़ी पैदा किये हैं, जैसे एस.एस. मान, प्रमोद कुमार तथा सतिन्दर सिंह।

बल की फुटबॉल टीम का 1950 में नीमच में गठन हुआ था और तब से इसका भी एक इतिहास रहा है। इसने डुरंड-कप, रोवर्स कप, ओलिव-गोल्ड-कप तथा सुखाड़िया गोल्ड कप टूर्नामेंटों में भाग लिया। टीम 1967 तथा 1984 में रनर्सअप रही थी तथा अखिल भारतीय पुलिस खेलों में 1984 में चैंपियन रही थी।



खेलों में उल्लेखनीय योगदान के लिए कुंजारानी को सम्मनित करते केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी

बल की बास्केटबाल टीम ने पहली बार 1966 में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में हिस्सा लिया तथा 1976 से 1982 तक फाइनल में खेलों तथा 1981, 1984, 1986 तथा 1989 में ट्राफी अर्जित की। वर्ष 1977, 1979, 1980 में अखिल भारतीय भगतसिंह टूर्नामेंट तथा 1982 और 1985 में गरवारे पेन्टस टूर्नामेंट पर जीत हासिल की थी। एम.वी. सिंह, पी.पी. सिंह, बी.एन. कुट्टी, जगजीत सिंह तथा जसविन्दर सिंह जैसे बास्केट बॉल-खिलाड़ी केरिपु बल की ही देन हैं, जिन्होंने देश का प्रतिनिधित्व किया। 1998 में सीआरपीएफ की टीम ने पुलिस खेलों में कांस्य पदक जीता था।

बॉलीबॉल भी केरिपु बल में बहुत ही लोकप्रिय खेल रहा है तथा केरिपु बल की टीम 1981 तथा 1982 में ही अखिल भारतीय पुलिस खेलों में चैंपियन रह चुकी है। इसने 1988 में चौधरी चरण सिंह मेमोरियल बॉलीबॉल टूर्नामेंट में जीत हासिल की तथा 1989 में अखिल भारतीय रिवेन्यू इंस्टीटयूशनल ट्राफी जीती। सतिन्दर सिंह तथा अर्जुन सिंह जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी केरिपु बल की ही देन हैं।

बल के पहलवान पहली बार अखिल भारतीय पुलिस खेलों में 1953 में अखाड़े में कूदे थे तथा 1975 व 1977 में चैंपियन बन गए। 1970 के दौरान इंस्पेक्टर सुखवंतसिंह को "हिंद केसरी व रूस्तमे हिन्द" का खिताब दिया गया। वर्ष 1975-76 में श्री ईश्वरसिंह को हरियाणा केसरी तथा वर्ष 1978 में रूस्तमे हिन्द का खिताब मिला। राष्ट्रमंडल खेलों में उसने देश का प्रतिनिधित्व किया तथा 1978 में सुपर हैपी वेट वर्ग में कांस्य पदक जीता। बल के सुरेश चन्द को भी "रूस्तमे हिन्द" तथा "हिन्द केसरी" का खिताब प्राप्त है। दीवान सिंह, मेहर सिंह तथा किशन चन्द ने राष्ट्रीय स्तर पर खूब नाम कमाया तथा रघुवीर सिंह, बिरेन्दर कुमार, पतीराम तथा दादा कानी ने अखिल

भारतीय पुलिस खेलों में नाम कमाया।

केरिपु बल पहला ऐसा संगठन है जिसने सबसे पहले जूडो टीम का गठन किया। इस खेल को अखिल भारतीय पुलिस खेलों में शामिल किया गया तथा केरिपु बल 8 स्वर्ण पदक जीतकर चैंपियन घोषित हुआ था। सियोल में आयोजित एशियाई खेलों में बल के जूडो का बनीसिंह ने अपने वजन के वर्ग में कांस्य पदक जीता था, राधेश्याम चौथे स्थान पर रहे। वर्ष 1987 में आयोजित वर्ल्ड जूडो चैंपियनशिप ने बल के रामनिवास ने भाग लिया तथा इसी वर्ष टूरन्टो में आयोजित वर्ल्ड पुलिस खेलों में मोहिन्दर सिंह ने देश का प्रतिनिधित्व किया। वर्ष 1999 में बल ने राष्ट्रीय कराटे चैंपियनशिप में टीम चैंपियनशिप जीती।

बल के जिम्नास्टों ने 1975 से 77, 1978 से 82 तथा 1984 में पुलिस खेलों में चैंपियनशिप अर्जित की थी। जिमनास्ट एन.बी. भोंसले ने राष्ट्रमंडल खेलों में देश का प्रतिनिधित्व किया। 1982 तथा 1986 में नई दिल्ली तथा सियोल में आयोजित एशियाई खेलों में जिमनास्ट बलराम शील ने देश का प्रतिनिधित्व किया। के. राजेन्द्रन, वी.के. भोंसले, समीर भट्टाचार्य, विजय कुमार, चमू सिंह तथा एल.एम. खन्ना ने भी अखिल भारतीय पुलिस खलों में चैंपियनशिप हासिल करने में भारी योगदान दिया। 1999 में राष्ट्रीय जिमनास्टिक चैंपियनशिप में बल के जिमनास्ट 10 स्वर्ण पदक तथा एक रजत पदक जीत चुके हैं।

वर्ष 1975, 78, 82 तथा 1995 में पुलिस खेलों में बल की कबड्डी टीम ने चैंपियनशिप जीती थी। 1982 के एशियाई खेलों में केरिपु बल की कबड्डी टीम के जसविन्दर सिंह ने देश का प्रतिनिधित्व किया था। लाल चंद एक ऐसा दूसरा खिलाड़ी है जिसने विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामेंटों में देश का प्रतिनिधित्व किया था।

शूंटिग एक बहुत ही शौकिया खेल है, परंतु केरिपु बल के लिए यह एक व्यवसाय है। बल के निशानेबाजों ने अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट में शानदार प्रदर्शन किया। उत्तर भारत शूटिंग चैम्पियन शिप में टी.एस. ढिल्लन को सर्वोत्तम निशाने बाज घोपित किया गया था। 1982 में एशियाई खेलों में और 1989 में वर्ल्ड पुलिस ऐन्ड फायर गेम्स, टोरेन्टो में उन्होंने देश का प्रतिनिधित्व किया। वह अंतर्राष्ट्रीय शूटिंग कोचिंग एसोसिएशन के सदस्य हैं तथा भारत के लिए एसोसिएशन के निदेशक नियुक्त किए गए हैं। 1986 में दिल्ली में आयोजित प्रथम कम्बेट शूटिंग चैंपियनशिप में केरिपु बल दूसरे स्थान पर रहा था। मानिकराम, तारू राम, हिम्मत सिंह, देवी सिंह, दिलबाग सिंह, के, माधवन तथा सर्वजीत सिंह आदि कई निशानेबाज केरिपु बल की ही देन है।

1986 में महिला बटालियन का प्रादुर्भाव हुआ जिसने 1987 में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस खेलों में पहली बार भाग लिया। 1988 में ऑल इंडिया ओपन रथ मैराथन में सीता केशर ने कांस्य पदक जीता तथा 1989 में महिला टीम ने प्रथम वाकिंग तथा मैराथन चैंम्पियनशिप जीती। 1990 में ऑल इंडिया पुलिस एथलेटिक चैम्पियनशिप ट्राफी में केरिपु बल की महिलाएं दूसरे नम्बर पर रही। 1995 में बैंकाक

इन्टरनेशनल मैराथन में प्रथम स्थान पर तथा इंडोनेशिया में मलोंग इन्टरनेशनल मेराथन कम्पटीशन में तृतीय रही थी। 1996 में शीजा मोले ने ऊंची कूद में ऑल इंडिया पुलिस रिकार्ड बनाया



परमजीत सिंह-मिल्खा सिंह का रिकार्ड तोड़ने का श्रेय

तथा इस वर्ष दोबारा भी यह प्रतियोगिता जीती। महिला टीम को ए.ए.एफ. आई नेशनल क्रास कम-1996 में तीसरा स्थान मिला। टीम ने शिमला व दिल्ली में आयोजित 31वीं राष्ट्रीय क्रांसकंट्री चैंपियनशिप भी हासिल की थी। 1996 में स्टेट वोमेन फैस्टीवल में कुमारी कुंजा रानी देवी, एन. लक्ष्मी ने भारोत्तोलन में ख्याति प्राप्त की। 47वीं ऑल इंडिया पुलिस एथलेटिक मीट, 1998 में केरिपुबल महिला टीम ने टीम चैंपियनशिप जीती तथा गीता मनराल ने नया मीट रिकार्ड बनाते हुए 3 स्वर्ण पदक जीते तथा उन्हें प्रतियोगिता का सर्वोत्तम खिलाड़ी घोषित किया गया। महिला वाटर-पोलो खिलाड़ियों ने पुलिस टीम का प्रतिनिधित्व किया तथा 98 में वाटर पोलो में स्वर्ण पदक जीता। महिला भारोत्तोलकों की टीम पुलिस खेलों में 1998 में प्रथम स्थान पर रहीं। बैंकाक में 1998 में आयोजित एशियाई खेलों में जिन्सी फिलिप ने 4 × 400 मी. रिले दौड़ में रजत पदक प्राप्त किया। वर्ष 1999 की राष्ट्रीय शूटिंग चैम्पियनशिप में महिला निशानेबाजों ने 1 रजत तथा 3 कांस्य पदक जीते।

खेल-कूदों तथा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने में केरिपु बल का बहुत बड़ा योगदान रहा है और राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में काफी नाम कमाया है।

इम्फाल में आयोजित 5वें राष्ट्रीय खेलों में केरेपु बल द्वारा प्राप्त 21 स्वर्ण, 29 रजत तथा 19 कांस्य तथा विश्व पुलिस खेलों में 16 स्वर्ण, 4 रजत तथा 4 कांस्य, साउथ एशियन फेडरेशन खेलों में 13 स्वर्ण, 2 रजत तथा 2 कांस्य, राष्ट्रमंडल खेलों में 3 स्वर्ण, 1 रजत तथा जूनियर वुमन एशियन भारोत्तोलन में 1 स्वर्ण, 1 रजत प्राप्त पदकों की संख्या इस बात का स्वयं प्रमाण है।

यह हम सभी के लिए बड़े गर्व की बात है कि वर्ष 1999 की अखिल भारतीय पुलिस खेल-कूद प्रतियोगिता में जो अभी अहमदाबाद में संपन्न हुई है, केरिपु बल ने पुरूषों और महिलाओं दोनों की टीम चैंपियनशिप जीती है।

हमें पूरा विश्वास है कि केरिपु बल के ये होनहार खिलाड़ी इस बल तथा देश का नाम सदैव इसी प्रकार रोशन करते रहेंगे।

जम्मू कशमीर में के.रि.पु. बल





लाल चौक श्रीनगर में तैनात बल के जवान



लोक सभा चुनावों के दौरान बल की तैनाती



अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों को चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराते बल के कार्मिक

मोटर साइकिल अभियान

बल की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में 25 नवंबर '99 को जम्मू से एक मोटरसाइकिल अभियान शुरू किया गया। लगभग 30 दिन में पूरे देश में लगभग 8000 किमी की दूरी तय करने वाले इस दल को जम्मू कशमीर के मुख्य मंत्री श्री फारूख अब्दुल्ला ने झंडी दिखा कर विदा किया।



आभियान में भाग लेने वाले कार्मिकों से परिचय प्राप्त करते जम्मू कशमीर में मुख्य मंत्री श्री फारूख अब्दुल्ला



अभियान दल को झंडी दिखा कर विदा करते जम्मू कशमीर के मुख्य मंत्री श्री फारूख अब्दुल्ला

CRPF-A Versatile Force

Dr. D.R Karthikeyan, DG, NHRC



CRPF contingent in Republic Day Parade

It is a versatile Force which can fight wars shoulder to shoulder with the Army and fight insurgency, terrorism and extremism in various parts of the country working along with various Police Forces", says Shri D.R Karthikeyan, DG, NHRC. Because of its flexibility, adaptability, versatility, secular outlook, impartiality, dedication and discipline, there is constant demand for CRPF from all parts of the country irrespective of the political complexion of the Governments concerned, he adds.

Conveying his best wishes to every member of the Force on the occasion of the Diamond Jubilee of its Anniversary Shri Karthikeyan says that. "I have had the privilege of being associated with the CRPF for 8 long years. I have seen almost all Group Centres and training institutions. I have seen the functioning of the Force in almost all theatres of its operations including Sri Lanka.

Whether it is dealing with militancy in Punjab or insurgency in North-East, terrorism in J&K, extremism in the Naxalite infested Andhra Pradesh, communal flare-ups in sensitive parts of the country or explosive law and order situations in several parts of the country, the CRPF has given a commendable account of itself".

"In extreme and different climatic conditions and in totally hostile terrain, the Forces had functioned with utmost discipline and dedication", he adds.

"This Force which has been continuously deployed has moved from one operational area to another operational area in quick time and functioned effectively, very often, even without the minimum required facilities". Lauding the role of the Force he says that "Despite suffering casualties, the Force has

almost always functioned with great restraint . In times of natural calamities like earth-quake in Maharashtra, cyclone in Andhra Pradesh and Orissa, CRPF has rendered yeoman service in rescue, relief and rehabilitation operations".

Describing the Force as a green outfit he says that," "at macro-level, CRPF has done great service to the nation by its policy of afforestation, where all its camps have been turned green, thus enriching the ecology and environment. At micro-level, practically every member of the Force has

donated blood to save precious lives of the people".

"The Force has lived up to its reputation as peace keeper of the nation. It has also lived up to its motto of service and loyalty", he concludes.

CRPF - A Force with a Mission

S.V.M. Tripathi Ex DGP
UP & DG CRPF



CRPF men deployed at Dal Lake Srinagar

The Central Reserve Police Force has grown in strength and professional stature since its small origin on July 27, 1938 at Neemuch. It has responded creditably in performing an ever expanding range of tasks. It is high time that the mission of CRPF should be enunciated. The structure and the operational framework should facilitate a proactive orientation and promote excellence in the fulfilment of its mission.

CRPF has to operate as a highly mobile all-India force; managing the widest, ever growing and diverse range of internal security concerns. It is

the only central police organisation that has to operate as unarmed police as well as armed combat force. It is often deployed without even pre-induction training, rest and recuperation, and stays for long in the field unlike a ‘reserve’ force.

An Action Group was appointed by Government of India in 1994 with the author as its Chairman. The primary objective of this action group was to optimise the utilisation of resources of the Force.

The Mission Statement for CRPF

This was formulated by the group and presented to Government of India in October 1995. It read as follows:

“Maintenance of rule of law, order and Internal Security so as to promote social harmony and development, and national integrity, sharing its growing expertise in the management of Internal Security with the states”.

Objectives of the Force:

CRPF has a complimentary role to play, derived from the constitutional and statutory provisions; as clarified and built up by the judicial dicta, parliamentary debates and various statement of policy. Some of the objectives may be noticed here.

It lends specialist services to the states in the maintenance of internal security, affected by factors within or outside the national boundaries. This role has been traditionally performed by CRPF since its inception and they have acquired considerable experience in this field. The operational and logistic procedures for these functions work smoothly even in crisis. CRPF has handled dacoity problem in western and central states, Naga insurgency, Naxalite movement, insurgency/terrorism in the states of Bihar, Andhra Pradesh, Punjab and Jammu & Kashmir amongst others. Procedures for coordination with state authorities are well settled. Coordination with the Army for training and operations also works well.

It supports civil authority in states and protects the life and property of citizens. In some instances, even for tasks, which can be handled by the state police, CRPF is requisitioned due to its perceived impartiality and absence of bias. It is frequently deployed during communal, caste and ethnic

clashes. National and other elections are another activity where there is great demand for the force. One reason for greater faith in the force may be that all regions and every language are almost proportionately represented in each unit. Forces handling riotous situations face frequent criticism that they take actions not warranted by the laws of the land, which can be termed as high handed. CRPF has been in the thick of such situations in one or the other part of the country almost continuously. Due to its credible professionalism, impartiality and restraint, such complaints have been rare. The force has developed expertise so that it is effective and humane at the same time. A system of pre-induction training ensures that the personnel appreciate the customs and sensitivities of the inhabitants and are also familiar with threat levels and terrain of the state.

It has to aid and assist civil authority in the management of disasters and calamities. India is a country of continental proportions and a population approaching one billion. Calamities like floods, cyclones, earthquakes and major train and air crashes keep occurring. In these cases the responsibility of all security forces increases considerably. CRPF renders effective help to the state authorities in search, rescue and life saving tasks as its personnel are trained and equipment for this purpose is available. This effort needs to be augmented. It should be possible for the state police, supplemented by CRPF, to handle these tasks without any help of the Army, except in very rare cases such as the recent devastation brought about by the super cyclone in Orissa. The relevant aspects of training as well as acquisition of equipment will have to be upgraded.

CRPF should document and share expertise, derived from wide range of rich experience, with other forces and the states in the management of internal security. CRPF has very rich experience in handling almost every conceivable internal security problem throughout the country. There is need to document these actions realistically and to draw appropriate inferences from the successes and the rare failures. Appropriate forums should be constituted and regular structured interactions should be organised. These will enrich the experiences of both parties and help them in scanning the horizon.

Strategies:

The objectives of the CRPF can be secured by shaping the dominant

organisational ethos on the following lines:

i. Acquire knowledge and skills on a continuing basis in keeping with the ongoing and futuristic demands of internal security. For this purpose massive and rapid upgradation of training inputs, including training institutions, is indicated. The Internal Security Academy, which handles training not only of CRPF officers but conducts courses for IPS officers and for magistrates in the handling of internal security should be developed as a centre of excellence. Strategic Training Systems will have to be adopted and designed to further the long term plans and objectives of the force.

ii. Promote through training the leadership, dedication to the mission and operational excellence. CRPF is a very large force spread over the whole of India. The mission of the force has to be made familiar to the rank and file and reiterated frequently. The force has to be prepared to perform for the success of the mission. For this purpose the role and action to be taken by each sub unit and even individual will have to be clearly delineated. It is necessary to prepare all ranks to handle their allotted task competently and develop belief in the mission. Operational excellence has been the hallmark of the force. In this area, however, obsolescence sets in very quickly. There is need to orient the operations so that these can anticipate the changes in threat perceptions and activities adversely affecting internal security of our country. The force cannot afford the time lag, which usually afflicts large organisations, in meeting changing scenarios.

iii. Operate as a specialised force with both combat and non-combat capabilities. This has been an attribute peculiar to the force as it handles a wide spectrum of internal security duties in the states. In some of the north-eastern states, for example, CRPF serves court summonses and executes warrants. In those very areas they are sometimes called upon to combat hardened and externally supported insurgents and militants, armed with sophisticated weapons. Apart from different skills and tactics required for these actions and collective mindset of the force also needs considerable adjustment.

Maintain effectiveness through a preventive ethos and use of minimum force, rather than through remedial engagement. This is achieved through quantum accretion in professional knowledge and skills. In this context the role of state authorities is crucual as they have to decide about the stage of intervention. CRPF should be assigned tasks and then given operational

autonomy. Use of minimum force is already a habit with the force.

v. Maintain alert for rapid entry, effective assistance and quick withdrawal. This accurately describes the correct role of a central reserve force. Unfortunately deployment and relief of CRPF units almost solely depends on the states. The percentage of deployment has become alarmingly high. This is bound to adversely affect efficiency.

vi. Maintain impartiality and secular outlook with due respect to human rights. Both these objectives have been reinforced by the presence of Rapid Action Force. The conduct of CRPF in these fields has been exemplary.

vii. Maintain highest level of dedication and discipline through appropriate and effective organisational management. The early leaders of the force have set very high standards. The force goes by the book in the best sense of the term. The system enables CRPF to achieve the requisite objectivity and accountability.

viii. Undertake periodical performance audit in order to redefine and reinforce role, and effect mid-course corrections as part of organisational development. This is meant to inject an element of dynamism in evaluating performance. At present this exercise is largely a postmortem examination.

A wide range of changing, expanding, overlapping, competing and sometimes conflicting expectations are generated in the society concerning security. These are translated into increasing demands on CRPF. Government and the force leadership have to take decisions about priorities so that scarce resources are best utilised to make it a forward looking operational force.



CRPF men in Punjab during turbuient times

“The Terror of the Suation”about training in CRPF

— S.D. Pandey, Ex DG, CRPF

There are two aspects of training to which I wish to draw attention. Together they constitute the terror of the situation pertaining to training in CRPF.

First is the sheer inadequacy of Professional training.

I do not wish to discuss the quality of training. Being out of touch with the profession for over a decade now I don‘t know what all has been done to update both the material and the method of training in CRPF. I presume that this has been taken care of and is being periodically reviewed in the context of national and international developments. But I still feel concerned about the quantum of training. May be it is a neurotic residue from the trauma of ‘my days’ in the Force. It had not taken me very long to realize that most, if not all of our training was on paper, in our well drafted training manuals. There was very little on the training grounds and the class rooms. Why ? For the very simple reason that most of those who were required to be in on training were out in the field - in the service of the motherland.

We wrote angry notes to the Govt. We put up presentations about the

“numbers game”, highlighting the unsatisfactory conditions of our “Chalte raho pyare Force”. We stood on our hind legs and shouted that we were being reduced to a tired, semi-trained mob. We were listened to patiently. We were promised a lot. New raisings were sanctioned-only to disappear in the bottomless basket of routine deployments. The boys continued to move from one corner of the subcontinent to another and some times even beyond when they were required to be learning their profession on training grounds. All talk of “on the job training” appeared mere slogans in the face of the actual situation.

This is medieval, if not ancient history. I hope and pray that things have changed since but I suspect and fear that they have not. If the fear is reasonably well founded efforts to stop the rot should go on. We should continue to shout-whenever any opportunity presents itself. This need not be confined to our ‘in house’ training conferences. It should be done when the Home Minister addresses the senior officers and when the Prime Minister comes to conference of Central Police Organisations. Every forum should be made use of to highlight this face of the terror. Inadequately trained men are bound to fire not where the most dangerous sections of a violent mob is but where some innocent spectators of a football match are sitting. Semi trained officers are bound to forget to use very light pistols at a suitable time thus letting a dangerous terrorist escape. I say this with the traumatic memory of some specific instances of those days. The joke about the rescuing commando killing the kidnapped sheriff and letting the kidnappers escape is bound to be a reality in any Force where training is thoughtlessly sacrificed because a certain number of coys





have to be sent now to this state, now to another-endlessly. And this and more should be said clearly, even bluntly. Let no one have any illusions about the idea of ‘service to the nation’. Badly done service, specially by firearms wielding uniformed men can easily turn into dangerous disservice.

Isn’t it possible to do something more besides fretting and fuming ? Perhaps we can, within our limited area of autonomy, draw a line somewhere and take a stand: thus far and no further. Refusal to deploy recruits under any circumstances can be one such lines. I do seem to remember that suggestions on these lines were made not necessarily by the

‘government’. Over enthusiastic professionals are also often found coming up with such ingratiating proposals. Such ‘resourcefulness’ must be firmly discouraged.

The second aspect of training that I wish to stress pertains to training of ‘the man behind the machine’. I must hasten to clarify that the idea is not to undervalue the importance of professional training. That is where all training must begin. But my submission is that it must not end there. In fact it would be a disaster if it did. And indeed a double disaster if it did not properly begin where it should not graduate to the level to which it should viz. the man behind the machine.

It really needs very little pondering to realize the importance of this aspect of training. A well trained ‘jawan’ without good discipline and loyalty can be more of a loyalty than an asset. In our officers the first quality that is needed is leadership. Above all comes moral courage without which whatever one does is likely to ‘turn to ashes’. These are some of the inner qualities that shape the ‘man’ in us. There are many others. Can we ignore that the spirit of service, the attitude of subordinating one’s selfish interests to the need of the other - the colleagues, the regiment, the force, the ‘country’ - is an indispensable factor ? These inner qualities are certainly present in all including the meanest among us. But they are there only potentially. How much they actualize depends a great deal on the kind of outer life circumstances and challenges that we come face to face with. At the same time the process is also influenced by the guidance provided by parents, teachers, mentors and peers. That is where the role of training in developing this potential comes. To the best of my knowledge, this is the most neglected area of our training. In the armed forces, I believe, they try to do something in this respect, through ‘off parade’ measures like boosting of the ‘regimental spirit’ and generally promoting an ethical code of ‘this is done and this is not done’ both among officers and other ranks. A little anecdote that I heard from an ex-army colleague illustrated this point to me. During one of the Indo-Pak wars he was leading an infantry column along with a JCO when an artillery shell landed very close to them. They both fell flat with their faces to the ground. When they raised their heads after a while each asked the other, simultaneously, ‘are you all right’. The spirit of caring for a colleague before caring for oneself had been inculcated in both of them. I have also heard about one interesting ‘off parade’ device used in the Air Force of a western country to promote ‘self-confidence’ in the other

ranks.

My plea, however, is that this important aspect of training should not be left to be dealt with only through ‘off parade’ techniques. They should be given a place-the pride of place-in the regular training of all ranks. How can this be done ? I would not attempt to answer this question here. A proper answer requires the combined effort of many training experts. But I have no doubt that it can be done. However, more important is the acceptance of the urgent need to do it with as much care and zest as is given to what is called professional training.

In a force like the CRPF - large, growing and deployed on a very sensitive area of national security - ignoring this aspect of training will only add to the terror of the situation. A two fold effort is thus urgently called for -ensuring firstly that all ranks are spared for the required training and secondly that the contents and techniques of training are revised and reoriented to include the ‘man’ besides his machine.





Environment Protection & CRPF

— A.V. Liddle, Ex DG CRPF



DG CRPF Shri M.N. Sabharwal planting a tree in Rajiv Smriti Van, New Delhi

During the rainy season in 1995, while on a routine inspection trip to Orissa, I decided to visit the company deployed for the protection of Barbera Forest. This thick jungle is a couple of hours drive from Bhubaneswar in the coastal area and includes plantations of teak, sal and other valuable timber. Many of the trees which were planted during the British rule towards the end of the nineteenth century, have a circumference of more than fifteen feet at the base and a height of nearly hundred feet. The total value of the timber in the forest which covers an area of about 24000 hectares has been assessed by experts to be above ten thousand crores. There are several tribal villages

located within the forest area-some of them near the periphery.

As is generally the case, the forest department staff deployed for the protection and management of this rich heritage is grossly inadequate. Besides, they are largely unarmed. The result is predictable.

Forest Mafia, which are in league with criminals and enjoy political patronage as well, have had a field day. Not only have they been indulging in illicit felling but have also been terrorising and bullying the poor tribals for years, even though the latter have exclusive customary rights over minor forest produce-such as fruits.

During my visit, we went around the lush green forests and also visited a tribal village. As it came down raining heavily, we took shelter in a small hall and chatted with the villagers. They were extremely satisfied with the impact of the CRPF, which had taken over the protection of the Reserve Forest at the instance of the state Govt. a few months earlier. They gave me two reasons for their happiness. Firstly, for years the antisocial elements belonging to the Mafia gang got them to chop down trees and then forced them to get them dragged out the forest area with the help of male buffalows. Very often they were not paid any thing. In addition, on the rare occasion they were caught red-handed by the authorities, the antisocial elements got away scotfree and it was the poor tribal who landed up at the receiving end. Secondly, the mafia also forced the tribals to pay regular commission on each head load of jackfruit (which is in plenty) carried out of the forest, even though the tribals enjoy traditional rights over the same. These nefarious activities came to an end once CRPF was deployed.

The District Forest Officer informed me that the CRPF personnel had apprehended scores of antisocial elements indulging in illicit felling and had seized timber worth several lacs within a few months of their deployment. They also helped in dismantling of illegally functioning sawmills, which was indeed a great achievement.

Back in Bhubaneswar it was indeed a pleasure to take a morning walk in the Group Centre campus when one could see a variety of wild life such as deer, wildboar, rabbits and birds in their natural habitat.

It is extremely satisfying to notice a rapid greening of CRPF Group Centres all over the country. One reason why CRPF is in a position to play such a crucial role in the preservation and development of the environment is that such centres are scattered all over. Besides, each group centre has a

considerable percentage of locals in the shape of families and dependents of personnel. Almost all these stations have excellent school for children, which also serve the local civilian population including the wards of State Govt. officials. As a result whatever issue is taken up, its impact is transferred to the local population as well.

In my opinion, the CRPF should now take up two other issues concerning environment. The first and foremost matter of concern is the colossal waste generated every day in the shape of empty plastic bags, pouches and other items of garbage which now mark not only the railway tracks but also both sides of the road and streets, recreational parks and residential areas in almost all cities, towns and villages of the country. The plastic bags which are non-biodegradable are the main culprits in the choking up of our sewers, drains and nullahs. When they are burnt, as in the usual method of disposing them, they emit dangerous chemicals into the atmosphere. As a result of the complete collapse of the garbage disposal system of the municipal bodies and Panchayats our residential areas are being reduced to garbage heaps.



Crack down on Sandal Wood Smugglers cought red handed by CRPF men.

In metropolitan cities the municipal authorities have been spending crores on cleaning the drains every year. As regards the smaller towns and villages, during the monsoon, as the result of choked drains sewage flowing out into the streets and entering low lying houses is not uncommon.

Another issue, which is equally important, is the urgency to avoid all wastage of treated water. With the rapid growth of our population the water supply systems are not able to cope up with the demands. On the one hand we are definitely over-exploiting our ground water by indiscriminately sinking of tube wells which is fast depleting our ground water. Several experts believe that at this rate within the next couple of decades many fertile areas of this country will be transformed into deserts. On the other

hand abundant supply of natural water in the shape of rain every year is wasted. Nearly 85 percent ends up in the sea, taking with it precious topsoil through our numerous streams, nullahs and rivers - often causing great misery and devastation in the shape of floods. If only a small portion of this rain water could be stored, it could retard the depletion of ground water successfully. The experiments conducted at the Jawahar Lal Nehru University, New Delhi Campus bear adequate proof of this fact.

We ought to generate awareness and a sense of participation of our personnel, and in particular the children who study in our schools, towards solving these problems.

PREPARING

CRPF BEYOND 2000

— T.G.L. Iyer, Ex-DG, CRPF

We are always in the midst of change. Change is a Great Teacher and we are compelled to evolve all the time. Like Charles Darwin's Struggle for Existence and survival of the Fittest', we go through Natural selection and come out more polished and refined. The first step we have to take to manage change is to change ourselves to be in tune with the happenings around. The second step is to look around and adjust our focus and set a new goal. The third step is to have a self-talk, have an Auto-suggestion and plan the journey ahead. The last step is to commence the journey and complete it successfully.

Effect of Change

Change brings turbulence and violence and there is increasing pressure on the law Enforcement machinery to tackle these emerging challenges. Wherever disorder breaks out, CRPF is summoned to back up the State Police machinery. One of the reasons for the unprecedented Expansion of the Force from one Battalion in 1939 to 137 Battalions in 1999 and heading for a further in1939 to 137 crease is its inherent strength of quelling disturbances swiftly on one location and proceeding to a fresh destination to

handle a disaster. The force is versatile and can now be known as the 'Committed Restorer of Peace and Fraternity'. In other words, the role of CRPF as crisis Managers will continue forever.

Impact of Crisis Management

Continuous crisis Management can have the following effect on the Force (1) impairing effectiveness (2) Disrupting training and Preparedness (3) Diluting control and decision making and (4) Lowering leadership standards. A Para-military Force like the CRPF mainly makes its impact on Managing crisis successfully because its impact on Managing Crisis successfully because of its leadership. The quality of leadership gets affected because of the Rapid Expansion resulting in undeserving promotions and positioning of personnel who cannot withstand pressure. Experts have identified that there is leadership failure due to the following reasons (1) Inability to organise details (2) Unwillingness to face, change and challenges (3) Fear of competition from followers (4) Lack of Imagination (5) selfishness and inability to carry the followers along (6) Rank consciousness and unwillingness to work as a Team (7) Absence of a Plan, Blue-Print and a direction to proceed ahead etc. If Leaders can battle through crisis, they can always



Shri K.P.S. Gill, Former DGP, Punjab Police speaking in the seminar "CRPF in the year 2003"

remain at the helm & summit. Most of leadership comes from within and it has to be mixed with Experience and the ability to work with others.

Experience has revealed that there are five Basic laws of crisis Management. The first law is to lengthen the time scale and the crisis becomes more manageable. It does not mean that action should be delayed but the situation should be studied closely to decide whether or not force should be used and the duration of such action. The second law of crisis Management is to get opinions of others to see the crisis through the eyes of others but reserving the right to make the correct decision out of all alternatives. The Third law is not to over-react or un-der-react to crisis situations but to react in a balanced objective manner. The fourth law is to assess whether the crisis will get better or worse due to intervention or nonintervention. For example, some Crisis may blow over and others persist. In the latter case only intervention is required. The fifth law is not to allow a crisis to escalate or allow an inexperienced crisis Manager to handle the crisis. For example, there may be a real genuine crisis or a pseudo-Crisis which has to be distinguished and discriminated. Whatever may be the law, the efffort of the crisis Manager should be to prevent the blow, soften the blow or neutralise the blow by erecting a proper shield to reduce the impact.

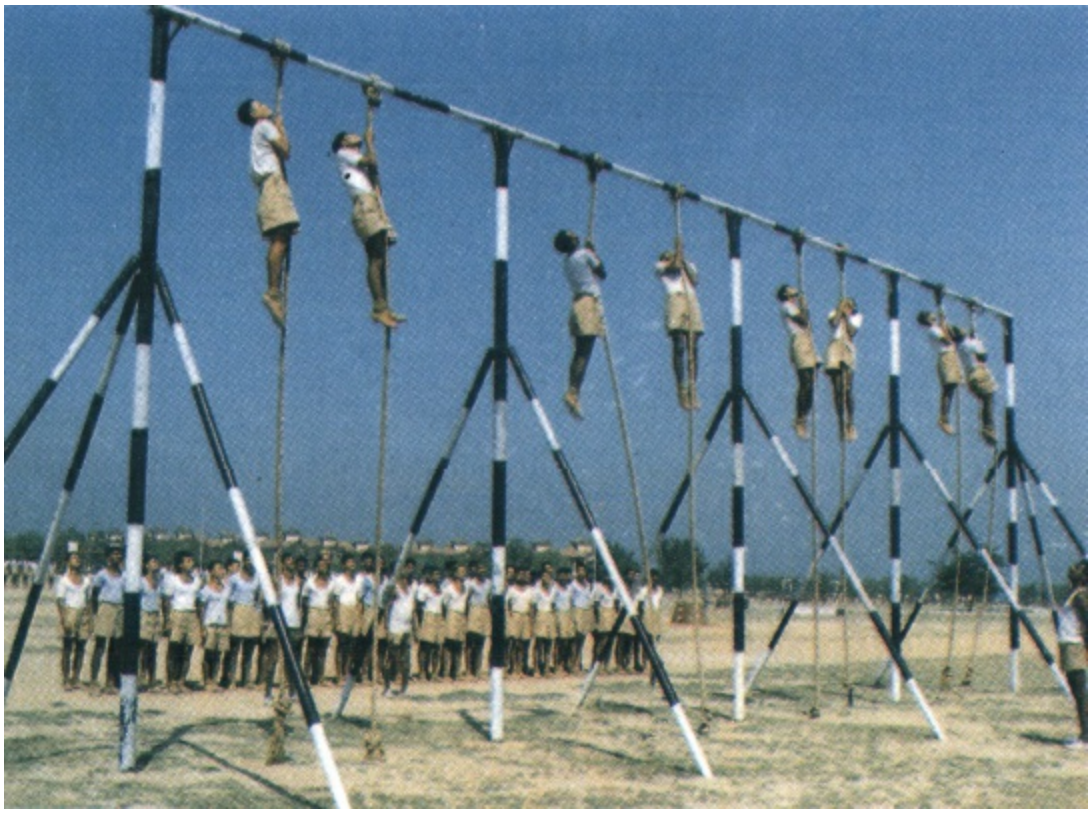
Overcoming Work Fatigue

Another aspect which deserves attention is the continuous deployment of officers and men which causes monotony because of repetitive work. It also reduces Reflex action. To overcome this ‘work fatigue’, regular training is essential. Training programmes have to be continuously revised by dovetailing it with the feedback from the field to make the individual more professional. Rather than mere increase in numbers, the skill of the Jawan and Officer has to be upgraded focussing on quality rather than quantity. Also the deployment has to be designed to break monotony and reduce routine reaction and reflex Action.

Preparing for the Future

To prepare the CRPF for the next Century the following steps are recommended (1) To prepare every soldier and officer as a Commando to combat any emerging crisis. In the CRPF there should be no distinction between a ‘Generalist’ and a ‘Specialist’. All should be put through a programme to prepare them as crisis Managers (2) The Force should be 100 percent mobile (3) Deployment should be in Platoon strength and not

sections and half-sections. (4) No emergent deployment should be made by drawing strength from Group Centres and Static institutions (5) There should be frequent co-ordination meetings between the CRPF and State Police at the regional level to bring about understanding and smooth working relationship (6) The Khaki dress Colour should be abandoned to give the CRPF a distinct identity. This can be gradual and in stages. (7) Arms and Ammunitions should be uniform for peace and insurgency areas to enable quick switch over from one role to another. (8) There should be a review of all standing instructions to eliminate the obsolete and retain the relevant.



Rigorous training is must for a better soldier

In sum, there can be no standard medicine for all ailments. Study and Research will go on to evolve new measures, techniques and styles to combat the volatile changing social scenario. Nothing can be fool proof and perfect but the attempt should be to move towards perfection. Improvement is a continuous Journey with only wayside stations and no destination. Every crisis is a lesson but the learning should be preserved and circulated so that all get the benefit and advantage. We can only prepare ourselves to face the future but how the future will unfold is a mystery. Preparedness

will give that confidence to face the mystery!

CRPF-Country's Reliable Police Force

Dr. S. Subramanian, Ex-DG CRPF



Central Reserve Police Force (CRPF) is celebrating its Diamond Jubilee on December 28, 1999. This historical occasion, not only marks a chronological milestone but also signifies an era of stunning successes and stupendous sacrifices. Both during Wars and Peace, CRPF has served the Nation with devotion, dedication and sincerity and has won praise from one and all in the Country. A grateful Nation gave it the sobriquet-Country's Reliable Police Force.

Established in 1939 by the British to assist the Crown's Representatives in the Princely States in maintaining Public Order with a strength of one Battalion, today CRPF is over 137 Battalion strong. Much of this growth was necessitated by the Security needs of the Country and was unplanned and ad-hoc. Such piecemeal and unplanned accretion to the strength, brought in its wake organisational and administrative problems and resulted in avoidable hardships to the personnel. Internal Security management called for extensive deployment of CRPF all over the country. Even today,

thousands of CRPF personnel are performing internal security duties in the High Mountains, Desert, Swamps and the Rann of Kutch. CRPF is battling the extremists in Andhra

Pradesh and Bihar, insurgents in the Northeast and Pakistani infiltrators in J&K. As crisis situations developed one after another all over the country, CRPF personnel were moved from one hot spot to another constantly. Unlike Army and other Para Military Organisations, CRPF has no 'Peace Stations'. Constant moves from one crisis to another and changes in climate and food take its toll on the morale of the personnel. CRPF personnel derisively describe themselves as 'Chalte Raho Pyare Force' - keep on moving Buddy! Force.

CRPF's record of service is unmatched. Be it dealing with law and order situations in Princely States during British Rule; combating dreaded decoits and criminals in Central India; handling of the pre-partition communal conflagrations; dealing firmly with Communal, Caste, Linguistic and other sectarian strifes in Free India; assisting the country in dealing with natural calamities; providing peaceable conditions for Elections; meeting the threats to national security from Sikh Extremists, militants in J&K, insurgents in Northeast etc., CRPF has come out with flying colours. States of the Union constantly clamour for the deputation of CRPF from the Centre to deal with large-scale disturbances and Law and Order problems.

In wars too, be it, facing the Chinese intruders in the 'Hot Springs' in Ladakh; getting the better of a Pakistan Brigade in the Kutch in 1965 War; excellent support to the Army in 1971 War; active participation in the IPKF operations in Sri Lanka; participation in UN Peace Keeping Operations etc., CRPF has distinguished itself. Thousands of CRPF personnel have laid down their lives at the altar of duty. They have won many a Gallantry Award and Battle Honours. They have distinguished themselves in the National and International sports and athletic meets.

CRPF is the only Central Police Organisation trained and equipped to deal with Civil Disorders. The Rapid Action Force, a specialist wing of the CRPF, is trained to deal with Communal Riots. Minorities are welcoming it all over the country for its impartiality and efficacy in handling riots and its capacity to bring relief and succour to the affected. During Natural Calamities like the recent one in Orissa, CRPF has rendered Yeoman Service. It is the only PMF to have exclusive Mahila Battalions. There is

hardly any one in India who has not come across CRPF in action. Its personnel are known for their disciplined behaviour and excellent Human Rights record. They keep their cool under all provocations. CRPF represents the spirit of National Integration and each one of its Battalions is a Mini-India, with personnel hailing from different regions belonging to different religions, castes and speaking different lanauaaes.

While the past has been glorious, we have to consider the future. Recent developments in Pakistan and social, political and economic problems in the neighbouring countries, presage that India should take adequate measures to safeguard her Borders. Kargil and the Punjab tunnels give a clear indication that we can not let down our Guard.

Consequently, the Border Security Force and the Indo-Tibetan Border Police will not be available for internal security duties. Dissonance is endemic in a Democracy. Rising expectations of the people, economic problems and social tensions resulting out of the upward mobility of the downtrodden, will create many law and order problems in the coming decade. As CRPF is the only specialist order maintenance organisation in the country, there is urgent need to reorganise, reorient, retrain and reequip this Force.

The strength on paper may appear very impressive but the reality is the nearly 45 per cent of the personnel are not available for deployment due to reasons like annual and casual leaves, sickness, training and vacancies. It is therefore necessary to increase the strength of CRPF to 2.50 lakhs personnel so that we can have the full existing strength for deployment. To economise on expenditure involved in the movement of the personnel CRPF will have to be administratively decentralised.

Each of the five geographical zones of the country should be placed under a Special Director General and the personnel should be deployed only within the zone to which they are allotted. The entire Force should be divided into 25 sectors under an Inspector General each and each zone Special DG should have five sectors under him Mahilas will have to be integrated into the regular Battalions and the strength of Mahilas in the CRPF should be raised to one fifth of the total.

To be effective, CRPF should be organised into four Specialist Wings viz., Internal Security or Counter Terrorist Wing - to be equipped and trained on the same lines as that of a mechanised Infantry Battalion of the

Army and provided with adequate transport to move quickly to the trouble spots; Law and Order Wing - trained and equipped to deal with civil disorder, carrying lathis, tear gas, water cannons etc.; Rapid Action Force - to deal with 'Communal Riots; and Civil Emergency and Relief Wing - trained and equipped to deal with Natural and man made calamities. Each Sector should have at least one each of these specialised Battalions. One Company of each Counter Terrorist Battalion should be trained and equipped to operate as an Air Borne Unit.



RAF-An Elite Wing of CRPF

Welfare of personnel is a nagging problem being faced by the CRPF. With a little imagination and planning, it is possible to reduce the movement of personnel. The concept of rest and recreation of personnel once in two years of active duty should be built-in the operations scheme of the organisation. To be a nomad is psychologically debilitating factor. Headquarters of each of the Battalions should be declared and all welfare measures like family accommodation, educational and medical facilities are to be built around this. Personnel should be provided with liberal house building loans and encouraged to build their Homes around the Battalion headquarters. No lady, can for psysiological and biological reasons, perform

active field duty after attaining 35/40 years of age. It is necessary to devise special schemes to absorb CRPF Mahilas in static jobs after 15 years of active field service. They should be retrained to serve as Signalers, Computer Operators, Ministerial hands and Paramedics.

As a welfare measure, 20 per cent of the vacancies in the direct recruitment of Constables and Sub-Inspectors should be reserved for the Children of CRPF personnel, if they fulfil all the stipulated qualifications. Within this quota preference should be given to the children of personnel retiring within the next five years. Grievances Redressal machinery in CRPF is outdated. Protocol and Procedures choke the lines of communication. Personnel are denied the basic human right of dignified existence and livelihood. There is need to have an Independent Ombudsman to deal with the grievances of the personnel.

While serving in disturbed and operational areas side by side with the Army, CRPF personnel should also be given the same perks and privileges that their Army brethren get. The discrimination practiced today in the field between personnel of two fighting Forces performing same duties in the same area, is unethical, illegal and unconstitutional. This should be removed at once.

Peace and tranquility are essential for a Nation to develop and for its citizens to realise their full potential for growth. A professionally competent and contented, happy and vibrant CRPF will ensure that peaceable conditions exist in society to achieve this goal. Any attention paid to the needs of the CRPF will give handsome dividends to the Nation.

On the occasion of its Diamond Jubilee, we wish CRPF a glorious future. May it serve the Nation in the new Millennium with geater devotion, dedication and success.

CRPF - Across the Frontiers



CRPF men airlifted to Sri Lanka as a part of IPKF

Amember of the Force is under obligation to serve anywhere within and also beyond the territory of India. In the last 10 years or so, the Force had to go beyond its frontiers a number of times, carrying the message of peace.

For the first time in 1987, 2 CRPF Bns and a Coy of the Mahila Bn were inducted in Sri Lanka as a part of the IPKF. The manner in which they carried out their tasks in an unfamiliar and inhospitable land against heavy odds, is a part of the history now. Late Ct. T. Mohanan was posthumously awarded “Vir Chakra” for conspicious gallantry in an encounter with LTTE extremists. Inspector Sharma got the “Sena Medal” for saving lives of 44 compatriots. Ct. Bimla Devi of the Mahila contingent became the first police women in the country to be honoured with Sena Medal.

A contingent of nearly 100 CRPF men remained in Cambodia from January 20, 1992 to September 1, 1993 as members of the UN Transitional Assistance Group. They contributed significantly to the eventual installation of an elected Government there.

In March 1995, a 123 strong strong contingent of RAF was sent to Haiti as part of the UN Mission to assist in the Haitian election process. The RAF contingent won praises from all quarters for its professionalism and steadfastness to duty.

The present trend is that wherever there is a serious problem of public

order and the United Nations or the Commonwealth is involved in efforts to restore peace, CRPF officers are detailed as monitors or observers. Five subordinate officers were sent to Nambia as the UN Police Monitors during the period Oct 1989 to Jan 1990. Two officers were sent to South Africa in 1994 as members of the Commonwealth Observer Mission who also supervised training of the newly created National Peace Keeping Force of South Africa. Fourteen officers were sent to Mozambiaque as the UN Police Monitors in 1994. Likewise, five officers were sent to Angola in March 1995 as UN Police Observers. Officers are also being sent to Bosnia in batches as members of the UN International Police Task Force and two Coys of RAF have also been earmarked for UN assignment to Kosovo.

CRPF & Human Rights

—V.G. Kanetkar, Ex DG, CRPF



Justice M.N. Venkatachaliah, Former Chairman NHRC presenting a memento to D.G. CRPF Shri M.N. Sabharwal on the occasion of debate on Human Rights organised by CRPF

I left the CRPF a little over 3 decades back and am not aware if members of the organisation have since been invested with any specific powers in respect of arrests, detention and interrogation of accused or suspected

persons i.e. more than since long have been given to every citizen of this country by the Code of Criminal Procedure 1973 under Section 43 and 51. If no such addition has been made in the last 27 years, the frequency of violations of human rights by men and officers of the CRPF may not, I presume, be very high or serious enough to warrant widespread condemnation.

The term “Human Rights”, which has now become a buzz word in relation to actions being taken at a large number of places throughout the world by security forces to maintain law and order or to quell militancy, insurgency or violent uprisings etc, actually came into vogue on the 10th December 1948 after the Second World War when the United Nations Organisation came into existence and it drafted a charter on rights which every law-abiding person throughout the world should possess. Very few people therefore could possibly be aware of the fact that violations or abuses or many of these rights had actually been incorporated into our Indian Penal Code, 1860 that is 140 years back; not only this but they were methodically defined and graded punishments were prescribed for them. Only they did not carry the imposing tag of “Human Rights” at those times! For instance there are chapters in this Code labelled “Of Offences Against Human Body” (Sections 299 to 377) and another titled “Of Offences Against Property” from sections 378 to 462. In another words offences such as hurts, murders, rapes, wrongful restraint or confinement, arson, the fts, robberies, dacoities etc. are all there. Not only this but there are three specific Sections (329 to 331) which deal with torture of the accused persons by the investigating agencies and they inflict heavier punishment on persons found guilty of committing them. The only ommission, if at all it could be so called, was of what has now come to be known as custodial deaths. But Section 176 of the Code of Criminal Procedure specifically lays down that when any person dies while in the custody of the police, the nearest magistrate empowered to hold inquests into the cause of death shall hold an inquiry and if necessary even order the exhumation of the body if it had been buried. It follows that if this inquiry revealed that the death had not been a natural or accidental one, the magistrate would not just file the papers and forget all about the episode. He would certainly set the law in motion.

Apart from the powers of arrest, brief detention and search given to every citizen as mentioned at the outset, members of the CRPF are frequently called upon to deal with riotious mobs on the streets bent on

mayhem stirred by communal or other causes. Chapter X of the Code of Criminal Procedure empowers members of the security forces to use force while dispersing unlawful assemblies (vide sections 129 to 132). There is yet one more situation when security forces have to depend solely on their firearms or other weapons such as while moving in areas disturbed by acts of violence committed by militants or terrorists. It is human nature to retaliate, sometimes a bit too fiercely, when one is ambushed by enemies in hiding and then running away from the scene. The urge to give vent to one's outraged feelings on such occasions by burning the houses of suspected shelterers or looting them or molesting their womenfolk or razing their crops to the ground or opening reckless fire even if the perpetrators had already vanished and felling passers-by may appear natural at that juncture but cannot be justified on any moral or legal grounds, a fact to be carefully borne in mind by security personnel.

Similar control on one's impulsive or instant reactions must also be maintained while using powers given by the Indian Penal Code in the exercise of the right of private defence (Sections 96 to 106).

I might lastly mention briefly an experience I still remember of my confrontation with angry and violent college students of Jaipur, Rajasthan where I was IG Police from 1955 to 1957. The state Govt, decided in July 1957 to increase College tution fees, a move deeply resented by the students (as also their parents or guardians) and as feared, students - Police face-offs began on the streets with stone throwing and lathi and tearsmoke charges galore. On the 30th July, I decided to try an experiment of personally handling the belligerent students with utmost patience. They wanted to surround the Secretariat and I barricaded their way with a strong posse of my police. They abused me and the Chief Minister (who was also holding the education folio), burnt our effigies, urged a horse-driven vehicle to drive through and break our ranks and lastly forced an excited bull to make a charge at us! It knocked down three of us including me and disappeared down the road. Certainly a provocation to justify use of our firearms, but I resisted the impulse. In perhaps sheer disappointment, the student retreated but before dispersing caused as much damage as possible to street lamps and other public property. The police arrested a number of them and locked them up. Next morning, I purposely visited the lockup to have a talk with the young law breakers. I was greeted with a full-throated "IGP Murdabad". I still had a fairly long chat with them about their abusive, indecent and

criminal behaviour of the preceding day and asked them how they justified it against their family and educational background. They did feel some remorse and when I left, it was “IGP Zindabad”! That this repentance did not last long and the agitation continued in the same strain for some more time was another matter !

Emerging Challenges Before Police Leadership in the 21st Century

— A.A. Siddiqui, ADGP-cum-Director, Punjab Police Academy

As the new millennium approaches, the police leadership appears to be on the cross roads of a transitional period from the age-old traditional police model to the community oriented policing model. This desired transition in fact has an inbuilt resistance making the decision increasingly difficult if not impossible. The law enforcement agencies engaged in years of experimentation are realizing that the community oriented policing required strategic rather than programmetic implementation. Despite greater comprehension of the general issues at all levels of command, the effective implementation of any community oriented policing continues to present problems. Out of many diverse problems, the police leadership at the supervisory level is the most common but critical one. Even though the stated organisational mission does not clearly include the community policing as an objective there is growing realization in the police hierarchy about the need for community-oriented policing. And if the police does not solve the problems of society, it will remain an alien to the society even in 21st Centuty as it is now. These issues in an atmosphere of expanded responsibilities for police officers accompanied by uncertainly of goals and objectives create the need for new thinking and improved skills at the supervi-sory levels.

The police leadership which was typically comfortable with uni-dimentional leadership is now confronted with a dynamic environment of today’s socio-economic and political scenario. It is, therefore, necessary that the police leadership must depart from their dominant leadership style and modify their behaviour situationally to become effective supervisors while

keeping in view the goals and objectives of the organization and the situation.

Organisational Structure of Police

Any organisation in order to achieve its goal follows a strategy. The leadership within the organisation follows the same strategy to pursue the mission/goal. So far as the police organisation is concerned, traditionally it functions as a closed system characterized by greater organisational autonomy with a mission confined mainly to law enforcement. The police organisation over a period of time has developed its own goals, has its own methods and delivers service to the society on their own terms. The police leadership decides as to what needs to be done and when. The community is neither invited to any policing process nor is it considered necessary. This in turn has made the police organisation as bureaucratic with an emphasis on control, tall hierarchies, abundance of rules/regulations and procedure. This has further led to one way communication, centralized decision making the autocratic leadership.

On the other hand if the police has to cater for the community as is implied in community-oriented policing, it has to operate as an open, transparent system. The police leadership will then realize the need to work through and with the community. This will require more flexibility on the part of police leadership. Two



Former Chief Justice J.S. Verma, speaking in Seminar "CRPF in the year 2003"

way communication, participative leadership, decentralized decision making etc. will automatically emerge. Therefore, if the police has to really deliver service to the community, which of off course is the need of the hour, they seriously need to have a look on their organisation structure and its strategies before entering into the 21st century.

Management Versus Leadership

In the process of evolution from the traditional model of policing (bureaucratic) to the community-oriented model, the difference between management and leadership must be appreciated. The management is concerned with efficient utilization of departmental resources through planning, organising and controlling whereas the leadership involves influencing the followers towards attainment of the organisational goal. The management focuses on controls while the leadership focuses on empowerment. In nut-shell one can say that while the resources should be managed, the people should be led.

In the police organisation, however, this distinction is often blurred. The result is that most of the time the police department is either over-managed and under-led or vice versa. In the coming scenario of dynamic

environment, the police while emphasizing rules and controls should be doing right things besides doing thing right. To achieve effective organizational performance, we require both management and leadership. This will essentially mean that in the changing scenario, the police leadership has to change its style of functioning from bureaucratic paradigm to a more modified and developed methods.

Leadership Theories

At this state a brief discussion of various leadership theories is required to demonstrate, not only the need for change but also the mode of its accomplishment.

a) Initially the leadership theory focused on personal traits and characteristics of the leader himself. The hypothesis was that effective leaders possessed some important characteristics the presence or absence of those could be used to predict the performance of the organization.

b) Later on, the leadership theories concentrated on attitudinal and behavioural aspect of the individual. According to these theories, there was need for democracy, participation and human relations approach i.e. concern for people.

c) Thereafter a contingency theory emerged which viewed leadership as an interactive relationship involving the leader, followers and the situation/community. Accordingly, to be effective the leader was to assess the capacity of the followers in relation to the situation and then determine the appropriate response and then necessary modify the approach of necessary.

When you look at the above three alternatives it is clear that the contingency theory of leadership is much more appropriate for the present day situation as it integrates better with the concept of community policing. But this is easier said that done. In order to bring about a change in police leadership of the kind desired, the training and development implications have to be considered.

There is need to develop different leadership skills at different levels of Police organisation.

The first is executive leadership which attempts to influence the organisation as a whole. This level primarily requires conceptual and inter-

personal ability in order to communicate effectively and state the organisational mission to the police force.

The second level is supervisory leadership which influences the performance. It requires more of inter-personal and technical skills in order to ensure operational effectiveness.

Knowledge, Attitude & Behaviour vis-a-vis Organisational Change

Any successful organisational change requires adjustment in the behaviour of its members. The important question is how we can induce the behavioural change. The police leadership of today can use personal power to initiate a participative change cycle by increasing the level of knowledge of the police force through training. This will have to be strengthened by belief that the desired change in attitude and behaviour, will naturally flow from better understanding.

The second alternative could be that the leaders can directly affect the subordinate's behaviour by using his position and power to initiate a directive change cycle in the hope that knowledge and attitude will follow and this will eventually sustain the behavioural change.

The leader's participation can be effective in changing attitudes but the anticipated change in behaviour requires sustained effort and substantial time. Further if the organisation culture is resistant to change and the force is not compelled, the commitment towards desired behaviour may never come. Therefore, while participative change is more appealing, leaders may need to employ directive changes in policemen's behaviour. This brings us back to the starting point as to whether we want to change our goals and mission towards community policing in the 21st Century or we are content with the present day traditional role of policing.

Rapid Action Force – Sentinels of Peace

– Tashi Dawa, IGP, RAF



Rescue and relief work done by 105 RAF in flood affected areas of Kerala



RAF men deployed at Rath Yatra



RAF men doing social service at Coimbatore

Raised in 1992, The Rapid Ac tion Force, has added one more glorious year to its history of impartial and dedicated service to the Nation. Sensitive

policing has been the motto of this elite wing of CRPF. The RAF has maintained strict vigil throughout the last 7 years in all the communally sensitive and hypersensitive districts of the country while carrying out familiarisation exercises. The RAF has performed creditable whenever deployed due primarily to its non-partisan and unbiased attitude. Its mere presence has prevented many tense situations from developing into communal riot. The contribution of the RAF in preserving secular fabric of the society as diverse as ours has been very significant. We have in this Force officers and men belonging to all communities and castes.



RAF Contingent detailed for Kosovo demonstrating their skill before the UN officers

We strive relentlessly towards excellence in our performance. Our efforts are directed towards maintaining ‘Zero Response Time’. The excellent performance of the RAF has led to an increasing demand for this Force throughout the country. This force has gone international having participated in UN Peace Keeping Mission in Haiti from March ‘95 to November ‘95. Two companies of RAF are being sent shortly to Kosovo as a part of UN Peace Keeping mission in Kosovo. Its role in extending humanitarian aid and help to people in distress like cyclone in Gujarat, train and road mishaps in various part of the country and land-slides in Sikkim can not be forgotten. This Force has become a path-finder for many of the State Governments who seek its assistance in raising their State Armed Forces on the pattern of RAF.

Training is a regular feature in the RAF Bns when not deployed. Each member of the force besides undergoing conversion training is made to undergo specialised courses like Human Rights, First-Aid, Rescue and Relief, Disaster Management, etc. On an average every year about 4,000 RAF personnel are trained in various locations in the country.

Encouraged by the success of RAF, various State Governments have requested the RAF to train their forces on its pattern. Inspite of the constraints of infrastructural facility and staff, the RAF has been able to train the Police forces of Karnataka, Goa, West Bengal, UP and Rajasthan. We have received requests for similar training from other States also.

To be able to perform better it is necessary not only to have better co-ordination with the public and civil administration but also sound knowledge of the ground-realities. Maintaining good rapport with the public is of paramount significance. It should not be lost sight of. In order to acquaint the force personnel with their area of responsibility, they are exposed to the familiarisation exercises held away from Bn headquarters. During these visits useful information is collected so as to enable the force to perform their duties more effectively and efficiently. These exercises also help reduce inter-community and inter-caste conflicts among members of various communities besides bringing about communal harmony.

Apart from handling communal riots and other riot like situations, the Rapid Action Force undertakes socially useful work which, in fact, is part of RAF charter of duties. The RAF Bns have adopted some villages located

near their Bn HQrs and they educate the residents of villagers about hygiene, sanitation besides promoting communal harmony. Conduct of adult literacy programmes, holding of free medical camps and organising sports tournaments in the schools are some of the functions this Force performs.

During 1999, the RAF conducted 3-day medical camps at Nand Nagari and Sarai Kale Khan with active cooperation of Delhi Homeopathic Medical Association, Health Department of NCT Delhi and Rotary Club of Meerut. During these camps more than 8,000 patients were treated and free medicines provided. The Bns at their own initiative has also been conducting such camps in their areas of responsibility.

The officers and men of RAF are also trained in rescue and relief work. From its inception the RAF personnel have been providing fruitful assistance to various states during natural or man-made calamities like cyclones, earthquakes, floods, outbreak of epidemics, etc. They did commendable work in rescue and relief work at the time of landslides in Sikkim, outbreak of plague at Surat and cyclone in Gujarat.

In the recent super cyclone which devastated Orissa towards the end of October 1999, six RAF Coys rendered yeoman’s service during their one month long stay for providing rescue and relief to the victims. Their duties ranged from escorting relief material to disposing off the highly decomposed dead bodies in the cyclone ravaged areas. They distributed more than 100 truck-loads of relief materials to thousands of families living in about 100 gram panchayats. With a view to checking spread of epidemic, the RAF & CRPF medical teams held medical camps at various places and provided medical aid to about 10,000 patients suffering from malaria, cold, fever and dysentery aside from setting up milk camps for infants, children and lactating mothers. The Coys recovered more than 400 highly decomposed bodies and disposed them off. Such activities do help us build our image as sentinels of peace and earn good-will of the people at large.



DG CRPF Shri M.N. Sabharwal in RAF's medical camp in Delhi

The RAF Bns are armed with sophisticated equipments such as shock batons, rubber truncheons, plastic pellets and rubber bullets which though non-lethal are effective deterrents. There are special tear smoke munitions and stun grenades available with them besides normal riot control equipment and highly effective 'VAJRA'. Procurement of Water Cannon is also in hand which will be very useful in dispersing the riotous mob without posing any serious threat to their lives.

Posting to RAF Bn is done by a due process of selection which includes scrutiny of service records and interview to ascertain attitude towards secularism/communalism. A Composite character is given to the force by giving adequate representation to all the communities and sections of the society.

The organisation structure of the RAF is different from that of a standard CRPF Bn. The smallest functional unit in the Force is a riot control team comprising riot control element, tear smoke element and firing elements. The team is commanded by an Inspector. Four riot control teams make a platoon led by an Assistant Commandant. Two platoons make a company commanded by a Dy. Commandant. Thus each Bn of RAF has 32 riot

control teams.

Each RAF Bn has one platoon of women officers and other personnel. It helps considerably in dealing with situations more effectively where women demonstrators take part or where searches have to be carried out inside houses or to provide relief to woman and child victims in riots and disasters.

No wonder that the RAF units are being increasingly demanded in riot prone areas to prevent and quell the disturbances firmly. The force has substantially fulfilled the expectations of one and all and has proved as the true sentinels of peace.

The Imperatives of Change

— K.P.S. Gill, Ex-DG, CRPF & Punjab Police



CRPF men deployed in rural area of Punjab during turbulent times

The Central Reserve Police Force (CRPF) is a unique organisation in terms of the sheer range and character of operational demands placed upon it, and

I believe that there is no other security or paramilitary organisation in the world that mirrors a mandate as wide, or performance as consistent, as this Force. This is an opinion I have formed over decades of association with the CRPF, an association virtually co-terminus with my career in the police, since much of my own service has been in places marked by civil strife, insurgency and terror ism, problems that almost automatically result in the deployment of this Force in affected areas. This was the case when I took over my first district posting at Naogong in Assam in 1961. The area was already marked by militancy and significant law and order problems, and working shoulder to shoulder with these troops, I came to know a large number of officers and men from the CRPF. Impressions formed at this early stage were only confirmed through subsequent interactions which include my first deputation to the Force in 1986, when I was posted to the newly constituted sector comprising the Amritsar Revenue District to look after counter-terrorism operations. Between December 1990 and November 1991, I served as the Director General of the CRPF, and throughout the campaigns in Punjab, worked in close coordination with the force. There were many occasions when I personally witnessed the exemplary courage and discipline of officers and men from the CRPF while patrolling the Mand area, carrying out ambush operations in Tarn Taran, and throughout the period of Operation Night Dominance, when the authority of the security forces and the rule of law were restored after nearly a decade of anarchy in the Punjab countryside. Suffice it to say that, at a time when at least some of the officers of the Punjab cadre were seeking postings outside the violence afflicted State, a large number of officers from the CRPF were taken on deputation into the Punjab Police, especially in the posts of SP Operations that were created in order to kick-start the anti-terrorist operations from 1985 onwards. Many of these officers lost their lives in the subsequent campaigns, and most of them distinguished themselves in their willingness to take on tasks that others shirked, and through their bravery and commitment. It is a little known fact of the Punjab campaign that, at one time. I surrendered almost a hundred companies comprised of various forces for just half that number of CRPF companies, only to find that this smaller force was more effective and produced better results than the larger force had.

Wherever they have been called upon to serve, the officers and jawans of the CRPF have responded with extraordinary fortitude and discipline, even

in the most challenging terrain, in remote locations, often in places where the barest amenities, sometimes including even drinking water, are unavailable. Their abilities to adapt and respond quickly to each new situation and challenge, born out of long years of experience, has been remarkable, whether they are deployed in the dense forest of the Northeast, or the snowbound peaks of Jammu & Kashmir, in densely populated and communally sensitive urban areas or the violence torn countryside of Bihar, Andhra Pradesh or, from time to time, various other States.

With this exemplary track record, it is unsurprising that the force has expanded constantly. This is a matter, quite naturally, of great pride, but, at the same time, of grave concern. The expanding role and responsibilities of the CRPF have not been accompanied by continuous reform or by any clearly conceived strategic perspective that harmonises the capabilities and capacities, the infrastructure, the character, the mandate and the training of the forces with a projection of the challenges it must be expected to face in the long term. It is important to note that a force that was raised to combat relatively minor civil disturbances and the menace posed by small groups of dacoits is now required to fight what is nothing less than full-fledged low intensity wars against well-equipped terrorists armed and supported by foreign powers, and that this transition has occurred with little formal change in its basic constitution or mandate. The result is that performance has, over time, become more and more dependant on extraordinary sacrifices and courage, and the willingness to endure often needless hardship on the part of the officers and men of the CRPF. While the fortitude and dedication of these men is to be appreciated, it may not be adequate to meet the excalating challenges of the future. The rapid technological innovations and weaponry available to militants and criminals, and the growing “capacity for hyperviolence” that will characterise low intensity warfare in the near future, demand fundamental changes in the basic nature of the Force, the technologies and weaponry available to it, the qualifications and character of recruits, and the training imparted to them. Such changes have to be initiated today, if the Force is to be competent to face the demands that will inevitably be placed upon it in the new millennium. The CRPF, as it is presently structured and constituted, will find it difficult to deal with the terrorist of the future who may have added weapons of mass destruction information warfare and the most sophisticated surveillance, communications, transport and precision attack

technologies to his arsenal.



CRPF men in snow clad Srinagar

There is, moreover, an urgent need to humanise the administration of the Force. Today, the CRPF is being stretched to the very limits of its existing capacities. The exigencies of each emerging crisis have ensured that its officers and men do not get adequate training or rest. The main part of training has now virtually become ‘on the job’ with all the attendant risks and disadvantages of putting poorly trained, raw troops in situations of high stress and conflict. There is, consequently, urgent need to create a training reserve so that the existing system can be rationalised. Some method must be devised, through fresh legislation or whatever administrative steps that may be required, that such a training reserve is not deployed, irrespective of the circumstances.

There have, of course, been many positive initiatives in the recent past to improve facilities available to the men and their families. Many new group centres have been created. Nevertheless, most of the men of the Force still spend a preponderance of their careers in make-shift camps and only a

fraction are provided residential accommodation for their families. The personal effects and equipment that are standard issue to the ordinary jawan have also been substantially neglected, largely as a result of an orientation that we have inherited from our colonial past. The very real risks and the rigours of the objective challenges that these men have to confront are, in themselves, immense. That these are added to be bureaucratic indifference and the inability to provide the high quality accouterments that have become standard issue for troops fighting less demanding wars in other countries; and that are often even available to the terrorists against whom the CRPF jawan stands as a bulwark, is unforgivable. These are matters that have been neglected for far too long, and must receive the immediate attention of policy makers and administrators at the highest level of governance.

Human Rights and Internal Security

— D K Suri, IGP, CRPF

In India, while adopting the Constitution in 1950, we had incorporated most of the clauses of the Universal Declaration of Human Rights adopted in 1948. However, we did not constitute a separate Body which could safeguard these rights and keep a watch. The National Human Rights Commission was set up in October 1993 and thereafter the Human Rights Commission have gained paramount importance and have become one of the most important concerns of the country. In the last five years most of the States have also constituted State Human Rights Commissions and also there are large number of NGOs and media who are actively working towards protection of human rights by taking up the issues to an appropriate forum.

The actions of police in general and Central Para-Military Forces in particular, operating against the anti-national elements is mostly under scrutiny by media, NGOs and Commission. Unlike police, security force men and officers are not equipped with sufficient legal powers for being effective in their area of operation or even in an area ‘declared disturbed’. In a disturbed area though certain police powers are given to members of the Armed Forces through Armed Forces Special Power Act, but these powers

are also under scrutiny from time to time and being restricted by administrative instructions. With the advancement of information technology and media having enlarged their scope of information through advance technology, an incident happening in any part of the country can not be shadowed. Investigating journalism which was less known in the past has picked up very fast and incidence are at times over played putting Security Forces under lot of pressure.



RAF - A fully sensitized force on Human Rights

The Indian sub-continent has been affected by terrorism/insurgency right after the independence. Earlier it had affected few parts of the North-East, but later, it spread to the whole of the North-East, Punjab and J&K besides Bihar and Andhra Pradesh. The Armed Forces because of being continually deployed remain exposed to unusual circumstances in these hostile terrains. They have to operate against the terrorists who are not to be seen who cannot be segregated, who have no code of conduct, no moral principles, who can attack at their will, surprise factor being in their favour and therefore the troops while operating in these areas are immensely under lot of tensions and stress. The inevitable upsurge of stress in the working condition, incessant movements at short notice, inability to attend to family

at the time of need, long hours of duty coupled with the perpetual fear of bullet and death, force the Jawan to behave in an unpredictable manner. These personnel have often been found to be having severe mental and schizophrenic disorders besides psychiatric problems. The human rights response needs examination from the view point of a soldier and therefore, one must put onself in that situation and then think of the alternatives, while drawing a comparison between the human rights of the soldiers who are giving their life for the security of the nation and preservation of human rights and those of insurgents, terrorists and naxalities who are killing thousands of law protectors and innocent people of the country.

The role of police and security forces has to be properly differentiated and understood. Police, in general, works in peace time mostly against the routine criminals, lawbreakers, etc. Whereas the security forces are deployed on Internal Security role in extraordinary situation against insurgents and militants who are not only supported, trained and equipped with sophisticated weapons by foreign groups but also have garnered support of local public. Therefore, while dealing with subjects like Human Rights vis-a-vis the powers of security forces, the Internal Security situation has to be separated from normal law and order situation.



CRPF Mahilas helping an old lady during 1987 Meerut riots

The ardent proponent of the protection of human rights usually remark that by giving special powers to security forces, have we been able to eliminate insurgency so far? In this context Nagaland always comes in reference during various discussions on Human Rights. It is necessary to understand that Special Powers Act is not a 'method' to eliminate insurgency or militancy. It is like any other law to accord legal protection to security forces for their effective working, like powers provided to local police through various Acts for maintenance of Law and order under normal situations. Armed Forces, when inducted to handle special situations, do require powers to be effective. Had the security forces, under a special Power Act were not given powers in North-East firstly, their operation would become extremely difficult. Secondly, the forces would have incurred more losses them what they are presently undergoing. Insurgency/militancy is not a law and order problem that by deployment of security forces alone we expect the problem to be solved. Major task of security forces is to provide protection to the law abiding citizens of country, to instil confidence and ensure liberty and dignity and above all maintain semblance of govt, authority and creates an environment for due democratic process. Final solution would emerge out of the political process, from the persons governing the country and not from the operations of the security forces.

The pioneer vanguard of Punjab terrorism, Mr. K.P.S. Gill who succeeded in bringing peace in Punjab, says that though the peace has been brought to Punjab but it can be retained and made lasting only by observation and protection of Human Rights of the people by a popular government through political processes and not by perpetual use of force. When he advocates a policy of bending the laws of the land in favour of police officer, he refers to the particular situation where the objectives of peace could not be achieved without giving special powers and special protections under the law to the security forces.

Even with the Spl Powers Act, Security forces may not be in a position to bring normalcy but they would certainly contain the situation from escalation. In a democratic set up, lasting peace can be brought only through an economical development and political processes.

Our forces operating in such difficult environment are well aware of high responsibility Country has asked them to shoulder, and amount of restraint

they maintain even in adverse conditions, is extra-ordinary and unmatchable. Any prejudice, against such forces who are highly professional and maintain very high discipline, would make them ineffective. They need to be adequately equipped with Legal Powers. The point certainly needs a debate on various forums to analyse and draw the balance between the preservation of Human Rights vis-a-vis the sacrifices of the security forces, in the light of Proxy war which is threatening the very existence of the country.

Need for Legal Awareness in CRPF

— Tilak Kak, IGP, CRPF



CRPF being one of the Premier Central Para Military Forces aiding the States in the maintenance of law and order, it is bound to act within the ambit of law and has to maintain order in society by aiding in the implementation of the Rule of Law. To discharge their duty efficiently in the field the Officer's and men of the CRPF should not only be acquainted with the provisions of the law enacted by the legislature but should also keep themselves abreast of important principles of law enunciated by the Apex Court of the Country.

The CRPF Officers and men in the field do not have sufficient time to go

through all the law's enshrined in various acts, which have a direct bearing on the working of our Force. Many a time our men commit/omit acts which deny justice to the people due to ignorance of the correct position of law and some times justice is also denied to our men due to ignorance of their rights and remedies within the ambit of law. Therefore it is our foremost duty to keep ourselves abreast of the various provisions of the law which have direct bearing on our functioning.

Duties and Powers available to CRPF

The CRPF is the most versatile Force available with the Central Govt. which performs a variety of duties and is capable of switching roles in a short span of time. The CRPF is performing duties related to maintenance of Law and Order, counter insurgency operations in the North East and anti terrorists operations in J&K. The CRPF is also performing duties like VIP security, protection and security of sensitive installations and protection of public undertakings. When it is placed at the disposal of any State/UT, it acts in accordance with instructions issued by the Ministry of Home Affairs, GOI for use of such Force by those authorities.

Sub Section 1 of Section 16 of CRPF Act 1949 empowers Central Govt, to confer or impose upon any men of the Force any of the powers or duties conferred or imposed on a Police Officer of any class or grade by any law for the time being in Force through a general or special order.

In exercise to these powers Central Govt. by Notification No. J.II.9/74-ADM-PERS-II GPA-I dated 27th July 76 conferred the powers and duties imposed on a Police Officer by following section of CrPC 1973

Section 41(1) : To arrest a person with warrant.

Section 46 : Arrest how made

Section 47 : Search of place entered by person sought to be arrested.

Section 48: Pursuit of offenders into other jurisdictions.

Section 49 : No unnecessary restraint.

Section 51(1) : Search of arrested person.

Section 52 : Powers to seize offensive weapon.

Section 74: Warrant directed to Police Officer.

Section 102 : Power of Police officer to seize certain property.

Section 149 : Police to present congnizable offences.

Section 150 : Information of design to commit congnizable offences.

Section 151 : Arrest to prevent commission of cognizable offense.

Section 152 : Prevention of injury to public property.

or in the State of J&K by the corresponding section of J&K CrPC Act 1889, shall be the powers and duties, respectively, of every member of the Central Reserve Police Force. Besides that the powers given in

Section 53 : Examination of accused by medical practitioner at the request of a Police Officer.

Section 100 : Person in charge of close place to allow search.

Section 129 : Dispersal of assembly by use of civil force, of CrPC are also conferred to Sub Inspectors and above ranks of the Central Reserve Police Force.

The Central Govt. from time to time also vests certain special powers in the armed forces to act in disturbed areas in the State of Assam, Manipur, Meghalaya, Nagaland, Tripura, Mizoram & Arunachal Pradesh. However before exercising these powers it must be ascertained that the area in which the powers are sought to be exercised has been notified as a “Disturbed area” by the State Govt. or the Administrator of the UT.



Powers to CRPF Officers while dealing with unlawful Assemblies

Though Police and Law and Order are subjects in the State list and members of CRPF are not personnel of State Police, therefore, they do not have police powers which State Police personnel of corresponding rank enjoys. CRPF personnel however do get police powers under certain sections by virtue of the GOI notification dated 27th July ‘76 discussed in preceding paras which unlawful assemblies by use of Civil also includes section 129 of CrPC dealing the dispersal of Force. Besides this, CRPF Officers have also powers under Section 130 and 131 of CrPC as Officers of Armed Forces.

According to section 130 of CrPC it is the duty of CRPF Officers to obey requisition by any Executive Magistrate in causing the dispersal of unlawful assembly and in doing so he should use as little Force as may be considered with dispersing the unlawful assembly.

Under section 131, the CRPF Officers may command dispersal of unlawful assembly but only when security of public property or life is manifestedly endangered and no Executive Magistrate can be communicated

with and while acting when it becomes practicable for him to communicate with an Executive Magistrate, he shall do so and shall obey the instructions of the Magistrate.

Abuse of Power/Human Rights

Human Rights in the present day scenario have acquired importance which hitherto had been neglected. Even today for some, Human Rights is an enigma, for some it has become a living, for a few it is an obsession, but for the larger group it still remains a Utopia. There is only one Right and that is the right to survive which lies with the fittest. The courts have began to take a very active and leading role in achieving this utopia.

At present, the CRPF is acting as a cohesive agent of stability in a complex society and is battling against the Forces of disruption and destabilisation which threaten to tear apart the very fabric of our society. Shrill cries of violation of Human Rights, sometimes with enough justification, are also being raised against us. There is an urgent need for proper training of our personnel who are actively involved in this crusade to ensure correct response.

Process of maintenance of Law and Order by ignorant and ill trained police personnel, manytimes, adversely affects the true spirit of law and legal systems. When we need immediate solutions and results, no questions regarding the means are raised, law enforcers undergo a change in their personality and take law into their own hands and Human Rights become the first casualty. To create an awareness for observance of Human Rights in our Rank and File, the subject of Human Rights has been prescribed as a compulsory input in the syllabi of all training programmes.

Officers and men of CRPF are required to be well informed about violation of Human Rights. Firstly acts of illegal arrest, detention, high handedness and use of third degree methods by our personnel should be avoided. There are specific directions of the Supreme Court to prosecute such officers. (Arvind Singh Bagga Vs State of UP and others, 1995).

CRPF personnel should also be aware vis-a-vis the Supreme Court’s guidelines regarding use of hand cuff and threat of Apex Court to invoke contempt jurisdiction to punish officials who violate such guidelines as enunciated in the case of citizens for democracy Vs State of Assam 1995.



CRPF Mahilas frisking a lady in Srinagar, J&K

Similarly Supreme Court has also issued guidelines in the cases of arrest/detention in WP No. 539/ 86 and 592/87 in DK Basu and Ashok Johri Vs State of West Bengal. Therefore, before arresting or detaining a person one should keep in mind the following guidelines.:-

i) The arrest and the handling of interrogation of arrestee should be accurate. Visible and clear identification. The particulars of personnel who handle interrogation must also be recorded in the register.

ii) Before carrying out the arrest, the arrestee shall prepare a memo of arrest at the time of arrest and such memo shall be attested by atleast one witness. It shall also be countersigned by the arrestee and shall contain the time and date of arrest.

iii) Atleast one relative/friend or person known to arrestee be informed as soon as practicable.

iv) The time, place of arrest and venue of custody of an arrest must be notified where the next friend or relative of the arrestee lives outside the district or town through the Legal Aid Organisation in the Dlstt and the Police Station of the area concerned within a period of 8 to 12 hours after the arrest.

v) The person arrested must be made aware of this right to have someone informed of his arrest or detention as soon as he is put under arrest or is detained.

vi) An entry must be made in the diary at the place of detention regarding the arrest of the person which shall also disclose the name of next friend of the person who has been informed of the arrest.

vii) The arrestee should, where he so requests, be also examined at the time of his arrest and major and minor injuries, if any present on his/her body, must be recorded at that time. The “Inspection Memo” must be signed both by the arrestee and the Police Officer and its copy provided to the arrestee.

viii) The arrestee should be subjected to medical examination by a trained Doctor every 48 hours during his detention in custody.

ix) Copies of all the documents including the memo of arrest, referred to above, should be sent to the magistrate for his record.

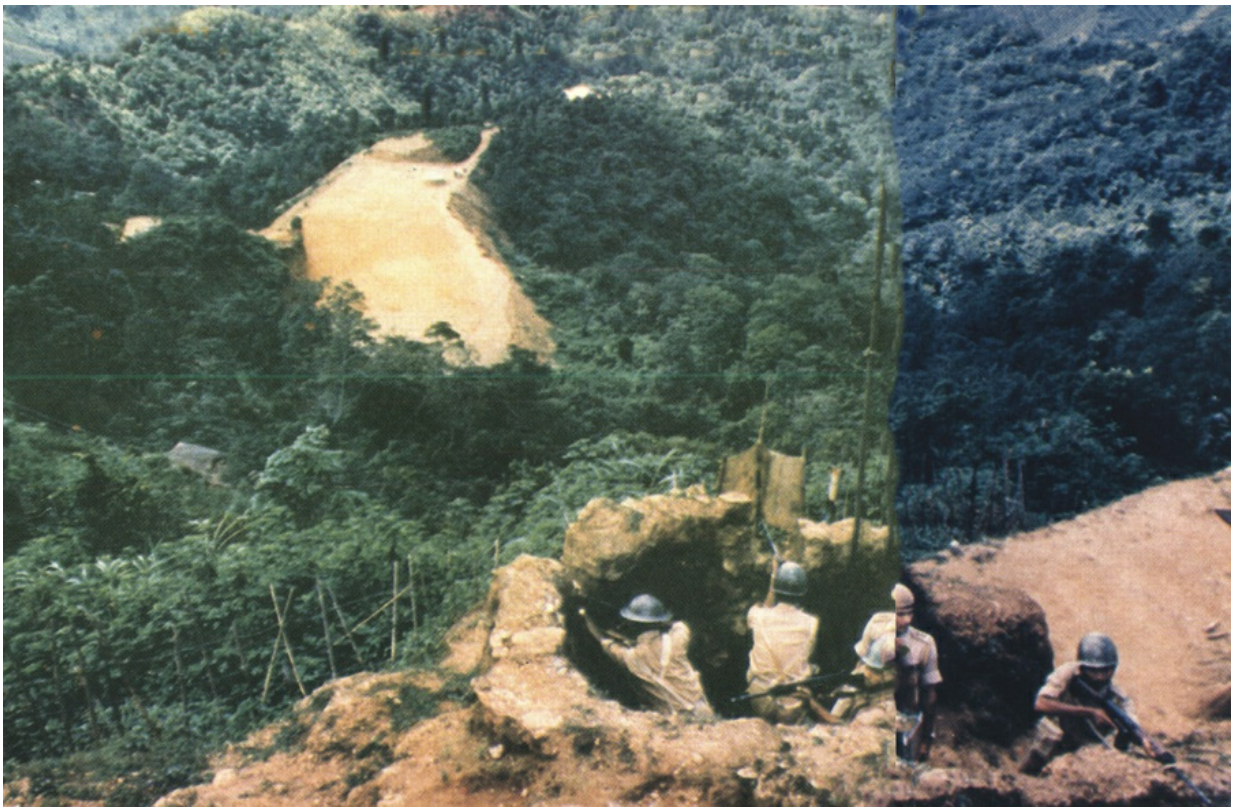
x) The arrestee may be permitted to meet his lawyer during interrogation, though not throughout the interrogation.

Finally men should be taught to be careful during preliminary interrogation of suspects in operational areas so as to avoid custodial deaths. The Supreme Court in the case of State of MP Vs Shyam Sundar Trivedi and others 1995 has put onus of proof of innocence on the Police Officer concerned.

It is expected that with proper knowledge of law and legal provisions CRPF Officers & men would be able to effectively perform their duties within the ambit of law.

Tripura - Another Strife - Torn State

– Geec. Podipara. IGP CRPF



Till the recent addition of Sikkim to the North Eastern States of the country, Assam and six adjoining States were known as “Seven Sisters of North East”. From the prehistoric time onwards this area witnessed migration of Mangloid tribes from different parts of China, Tibet and Burma. Though of the same racial origin, all these tribes possess different cultural heritage, social habits and languages. The Lushal tribe of Mizo Hills known for their courage and fighting skills, the head hunters of various Naga tribes, the peace loving and hospitable Ahoms & militant Bodos of Assam, the Tripuris, the ruling class of Tripura, Kukies and Meithis of Manipur etc. all form the vast diverse tribes of people occupying this area.

Hills and valleys covered with lush green forests and cris-crossed by the silver bands of numerous rivers and rivulets, inhabited by these tribals in their colourful costumes, and their mededial music and folk dances make this area one of the most enchanting places on earth. To understand how such a heavenly abode of beauty, occupied by these simple minded tribals has become an area of constant strife and blood shed, a brief look into the history of the area is called for.

During the colonial era, the British strategically did not intervene in this area except the Brahmaputra Valley where their large tea estates flourished.

They exercised a loose political control over the rest of the area with the twin objectives of keeping this land mass as a buffer zone with China and at the same time protecting its tribals from the people from plains to prevent their ‘Indianisation’. However, they allowed Christian missionaries into the area who converted a large number of tribals into Christianity. Their traditional fierce spirit of self respect, their village structures, equality of sexes and quest for freedom coupled with the recently imbibed Christian culture further aggravated their alienation from the people from plains. Being not involved in the Freedom struggle, they remained out of tune with the building of co-operative Indian Nationalism.

In the initial days of Independence, the entire area (except Sikkim) came to be known as Assam State. Extension of civic rule in the area caused disruption of millenniums-old traditions of the tribals and they revolted against, what they perceived, as an out-side imposition on their culture and traditions. Further dimensions to this sense of deprivation were added by the large scale migration of Hindu Bengalis from the erst-while East Pakistan into Assam and Tripura during the days of Partition. This mutual distrust and ill-feelings found expression in the form of organised armed resistance by tribal youths initially in Nagaland, and later in Manipur, Mizoram etc causing the induction of Army followed by CRPF and Armed Police Battalions of other States during the late ‘50s and early ‘60s.

The situation in Tripura is however slightly different, smallest of the original Seven Sisters (10,000 Sq. KMs), Tripura has the second largest population after Assam (about 30 lakhs). The state shares 84% of its 1001 kms long border with the Bangladesh. This international border is highly porous with no geographical barriers or border fencing to separate it from Bangladesh. It is believed, Tripura State was founded by Tripuri Tribe, an off shoot of Bodos hailing from the Indo-Mangloid racial group who initially spread over the entire Brahmaputra Valley and Bengal. Other Mangloid groups like Reangs, Jamatias, Chakmas, Halams, Debbarmas etc form the 19 listed Scheduled Tribes of the State. History of the State indicates that this land was ruled by tribal kings from 1st Century AD till 1949. At one stage the kingdom extended upto the Garo Hills of present day Meghalaya and to the Bay of Bengal. It is believed the State was originally known as ‘Tuipra’ meaning a land adjoining the water. This word was later corrupted to ‘Tripra’ and from ‘Tripra’ to ‘Tripura’.

Tripura became a part of the Indian Union with merger agreement signed by the Regent Queen on behalf of the minor Maharaja in 1949. This agreement is challenged by the National Liberation Front of Tripura, the largest extremists group of the State as they perceive this as a loss of tribal supremacy in the State. The tribal content of the population till the Partition was more than 50% which witnessed a drastic change from 1947 onwards due to the large scale influx of displaced persons from East Pakistan. As per the last census, the tribals formed only 31% of the 27.5 lakhs population which inhabited the State in 1991.

The tribals of Tripura, basically a very hospitable people, welcomed these displaced persons and allowed them to settle down in the fertile areas of the State. Over a period of time almost all the fertile



A CRPF post somewhere in North-East

places in the valleys came under the occupation of these Bengali settlers confining the tribals into the hilly forests. A large percentage of the government jobs and police also were secured by these settlers besides an overwhelming presence in the State Assembly and cabinet. This sense of deprivation caused the tribal youth of the State to rebel.

Initial beginning was with the formation of an organisation called ‘Tripura Upajathi Sena’ (TUJS) formed in June, 1967 struggled for the restoration of tribal supremacy and restoration of tribal identity. Militant elements amongst them formed a set up called Tripura Sena in 1970 from

which yet another militant group called Tripura National Volunteers (TNV) was formed in 1978 with the avowed objective of carving out an independent tribal State by use of force. Their activities lasted till 1988 and the State witnessed a lot of violence including the killing of over 1500 tribals and non-tribals over a period of 13 days in an ethnic conflict, which broke out in the Khowal Sub-Division in 1980. Police in the State being in an infant stage, the Army and CRPF had to be inducted to the State to contain the activities of TNV. The TNV however surrendered in 1988 after a tripartite agreement with the Governments of India and Tripura.

The second phase of insurgency in the State saw another extremist group called All Tripura Tribal Force (ATTF) which surrendered to the State Government after a bipartite accord in 1993.

The third phase of insurgency which commenced in 1993 is dominated by 2 groups, i.e. the National Liberation Front of Tripura and All Tripura Tiger Force (NLFT and ATTF). Both these bands of extremists had been getting liberal assistance in the form of weapons & training from across the border as well as from other insurgent groups operating in Nagaland, Manipur and Assam. They have also been provided with over 20 safe sanctuaries in Bangladesh, where they retreat for rest and training. It is estimated the NLFT has an active cadre of about 500/550 Approx. in their ranks as on Oct. '99 with another 250/300 Approx. with the Tiger Force. This is in addition to about 16 other militant groups operating in the State. All of them indulge in large scale killings and kidnapping of non-tribals and extract heavy ransoms which they utilize for weapons and to maintain their cadres, besides, paying for their shelter and training. The ISI is actively assisting these extremists and other groups operating in Assam, Manipur and Nagaland. As many as 149 people were killed in extremists' attacks during the last ten months from Jan. '99 and 376 kidnapped. It is learnt that during 1998, the NLFT and ATTF collected over Rs. five crores on account of ransoms procured through kidnappings and tax collected from both the tribals and non-tribals of the State during 1998. The Bengalies retaliate extremists attacks by setting fire to the houses of innocent tribals residing in their areas and by killing some of them. This causes further retaliation from the tribal extremists, and the blood shed and arson continue in an unending cycle, adding to the agony of the people, over 65% of whom fall below the poverty line.

To counter the extremists' menance, the State has 4 Bns of Assam Rifles, 9 Bns of BSF and 6 Bns of TSR, in addition to 12 Bns of CRPF. The BSF is guarding the border, with an inadequate strength to effectively stop the movements of extremists across the porous border. Assam Rifles Bns are involved in counter insurgency operations. Most of the TSR Bns are deployed on routine police and security duties. 12 Battalions of CRPF have different roles to perform. While half of its strength is committed on counter insurgency duties, a large chunk is deployed on the National Highway and State highways to prevent hijacking of passengers and goods by extremists. 4 of its coys are deployed in Khowai Sub-Division to prevent recurrence of ethnic violence like the one witnessed in 1980. The CRPF also looks after the security of vital institutions like Rajbhavan, Airport etc. Though security forces operating in the State are armed with extensive powers under the Disturbed Area Act promulgated in the areas of 27 Police Stations out of the 45 in the State, operating within the bounds of law and principles of Human Rights considerably restrain their operations against extremists.

Besides being the largest CPMF operating in the State, multifarious duties performed by CRPF and its extensive presence in almost all the tribal and non-tribal areas makes CRPF the most visible Force in the State, prompting the Chief Secretary of the State to state "CRPF is the main stay of counter-insurgency operations in Tripura". The State Govt. which is very receptive to the requirements of CRPF, fairly easy excess to even remote localities and its well equipped Bns are some of the advantages enjoyed by CRPF while operating here. However almost total absence of hard intelligence, non-cooperation by the public in imparting information, language barrier and thick undergrowth in jungles cause major constraints in the CI Ops undertaken by us. Large scale deficiency of officers and high age profile of CRPF personnel also handicap the Force to a great extent. Vigilance and alertness of CRPF men however facilitate smooth flow of normal life in the State besides containing extremists activities here. CRPF also resort to confidence building measures especially among the poor tribals living in remote areas, through its civic action programme, and relief work in remote areas afflicted with drought and other calamities.

About 40,000 persons belonging to Reang Tribe displaced from Mizoram are now settled in 4 refugee camps in the North District of Tripura. They refuse to go back to Mizoram until their demands like creation of an Autonomous District Council etc are met which the Mizoram Govt. find

difficult to accept. About 50,000 out of the 9 lakhs of tribals belong to various factions of Christianity. A general myth exists even among few intelligencia of the State that all tribals are Christians and that some of the churches abet the militants' misadventures. This is a recently introduced phenomenon which may add further dimensions to this trouble-torn State, already afflicted with acute ethnic strife, Hindu-Muslim rivalry and polarisation of ideologies.

Unchecked infiltration from across Bangladesh, unsystematic development works executed and growing poverty among tribals further add to the strife and instability of the State. Unless some strong political decisions are taken which may not be palatable to a sizeable majority in the State, the poor and down-trodden people of the State will continue to live in utter misery.

CRPF -Its Achievements & Future Challenges

— Dr. Krishna Mohan Mathur, Ex-IGP, CRPF



Central Reserve Police Force is one of the most mobile, effective and reliable police organisation of the world which has earned and maintained

its excellence in many different fields of activity and is well known for its service and loyalty to the nation.

Earlier known as the Crown Representative's Police, on 28th December 1949 Central Reserve Police Force was constituted as one of Armed Forces of the Union as a stabilising influence to handle any threat to the security of the Country and CRPF will complete its 60 years of glorious services on 28th December 1999. Central Reserve Police Force has made its valuable contribution for the National Integration and maintenance of internal security of the country. The bulk of the force had been deployed in Jammu & Kashmir to fight the low intensity conflicts and proxy war waged by the Pakistan. CRP has continued its operations in North-Eastern States to quell the insurgents and maintain internal security of the Country. During the last fifty years, it has become the most mobile, highly trained and professional Central Police Organisation of the Country. From two battalions in 1948 CRP has grown to 137 battalions, 30 Group Centres, 8 Training Institutions and 3 Base Hospitals. The organisation has its head-quarters at New Delhi in the Directorate General with one zone headed by Addl. DG and 13 Sectors including 4 operational sectors headed by Inspectors General of Police and 28 Ranges including 6 operational ranges headed by the Deputy Inspectors General of Police. CRP is a service organisation which has no parallel in the world in terms of its mobility, multi dimensional combat capability, professional commitment and its unique contribution to the restoration and maintenance of internal security and national unity. Its saga of sacrifice and glorious achievements are too many to be enumerated in a single article, it is necessary to look ahead and analyse the challenges that lie ahead. Central Reserve Police Force has an excellent record of dedicated service to the nation at various fronts. Some salient features of its excellence in various fields can be estimated from the following notable achievements:-

1. In its various operations CRP killed 100 extremists and apprehended 2858 extremists besides recovering large amount of Arms and Ammunition during January to June 1999.

2. CRP nas played a pivotal role in peaceful conduct of elections in the country and has moved from one place to another at short notices during various Parliamentary and Assembly Elections.

3. In North-Eastern States during its counter-insurgency operations, CRPF has apprehended 2578 insurgents and killed 22 insurgents during Jan. to

June 1999. During the last fifty years it has performed most difficult and challenging task of fighting insurgency with great success with an excellent record of human rights observance.

4. The Mahila Battalions of CRPF have done most praiseworthy task of maintaining law and order of the country and maintaining internal security of the country inspite of many difficulties.

5. The Rapid Action Force of CRPF, consisting of ten battalions have achieved remarkable success in handling communal riots and preserving communal harmony between different communities.

6. CRPF personnel carry out relief and rescue operations during man-made and natural calamities by rendering first-aid to the injured, succour to the victims and relief to the common man during distress.

7. In Orissa, Barbera Forest of approximately 24,000 hectares has been adopted by CRPF for preservation and protection of flora and fauna by effectively checking the illegal felling of trees and poaching of wild life. All over the country CRPF has undertaken massive tree plantation.

8. In the field of training CRPF has maintained its excellence in training officers of all para-military and District Magistrates in Internal Security matters. CRP has one Academy, three Central Training Colleges and four Recruits' Training Centres. From 1st Dec. '98 to 3rd June '99 in all 4479 officers and personnel including 416 officials from CPOs/State Police/IPS were trained in various Training Institutions.

9. In the field of human rights, CRPF has maintained excellent record of promoting and protecting human rights in difficult and disturbed areas of the country. It has organised a number of courses of human rights for CRPF personnel of various ranks and during first half year of 1999 in all 38416 officers and personnel have undergone awareness orientation on human rights.

10. In the field of sports CRP has established its supremacy in many areas. N. Kunjarani Devi, Jincy Philip, Geeta Manral, Paramjit Singh have set up national records.

11. CRPF is the most adaptable force among Central Police Organisation and is known for its nutrality, impartiality, secularism and the spirit of self less sacrifice. 36 CRP personnel sacrificed their lives on the call of duty and 66 were injured in 128 encounters between January 1, 1999 to June 30,

1999. CRPF faces war like situation in Kashmir and North-Eastern States. It is ironically surprising that the death of CRP personnel during the service of the nation in safeguarding unity, integrity and internal security of the country remains unrecognised, unsung and unhonoured by the nation and not even given space in Local newspapers.



CRPF men at Dal Lake Srinagar

It is difficult to enumerate all the excellent records of CRPF due to shortage of space. However, it cannot be complacent about its future challenges. CRP mission and vision needs to be reviewed from time to time. CRPF has to carry out organisational revamping and restructuring for achieving better operational results, professionalism and effectiveness. CRP organisation has to ensure proper and full development of its human resources. It has to develop its infrastructure to meet the residential needs of its families and personnel. The medical set up and infrastructure has to be revamped to meet the medical and health needs of the personnel. Prolonged occupational stress, social isolation, trauma due to frequent movements, constant deployment in disturbed areas and inability to lookafter domestic and family needs of dear ones lead to :-(i) Lack of self esteem (ii) Abnormal behavioural patterns (iii) eterioration of physical and mental health, (iv) Premature ageing (v) Chronic illness of self and family (vi) Increased cases of death in harness (vii) Operational ineffectiveness and casualness and (viii) Feeling of frustrations and Cynicism. These trends call for remedial measures and a better quality of work life is required for the CRPF personnel. It is necessary to restore the “reserve” nature of the force by evolving effective strategies for rapid entry, effective assistance and quick withdrawal of CRPF. There is an urgent need to provide better infrastructure for Internal Security Academy which is premier training institution of the Force. Better staffing pattern, more incentives to trainers and

implementation of Gore Committee report on training should be the future tasks for improving the training of the force. The multi-dimensional duties and the onerous responsibilities which the CRPF has often been called upon to shoulder, demand very intensive training and mind set which needs to be built up by dedicated trainers and leaders. CRPF is a unique force having regional and cultural representatives, yet maintaining a high level of cohesion and discipline. To maintain this unity in diversity calls for high level of psychological integration which is brought about by constant briefing, collective training and behavioural orientation at all levels in the organisation. CRP Group Centres are virtually mini-India and a true representative of Indian National unity in diversity. CRP is time-tested and dependable notional police force which has contributed to a large degree in maintaining the integrity, unity and secular character of the Indian republic. To maintain high motivation and morale of this great force is the greatest challenge for the CRPF leaders. To prepare CRP for maintaining its high discipline and effective performance, CRPF leaders have to constantly provide transformational leadership and utilize various motivational strategies. The excellent image of the CRPF is to be maintained at all costs and CRPF leaders have to be innovative to find out ways and means to deal with the various challenges. On the occasion of the Diamond Jubilee of the CRP, I salute the members of the Force and wish them goodluck and success in their endeavours. I also salute the martyrs of CRPF who have made their supreme sacrifice for the nation.

Human Rights Awareness in Police Ranks

— Dr. R.M. Pal, Editor, PUCL Bulletin



RAF Officers attending Human Rights Course Organised by ICRC

Over the years politics has been criminalised, almost beyond redemption. So that sensitivity to human suffering and killing, not to mention human dignity, is nearly extinct, specially among politicians. Consequently, our record of respect for human rights both by the people and state agencies as well as protection of civil rights and liberties by the state, is depressing. The functioning of the Provincial Armed Constabulary (PAC) in Uttar Pradesh and of Mumbai police in Mumbai during communal riots, has been disturbing. It is in this context and in the light of this background that I may refer to effort made by Central Police Organisations like the Central Reserve Police Force/ Rapid Action Force (CRPF/RAF) to promote the cause of human rights.

When the National Human Rights Commission (NHRC) was set up in 1993 it was greeted with skepticism by most activists and civil liberties groups. Many activists thought that it was set up with a view to covering the sins of the government under the carpet. This apprehension is not altogether unfounded. To give just one instance. Since 1993-94 successive governments have not had the time even to go through the recommendations of the Commission not to speak of taking any action. In fact, there has

hardly been any debate and discussion in the parliament on the Commission's report. Nor is there any record to indicate that the opposition demanded any debate/discussion!

Our purpose here is notto evaluate the NHRC's functioning except to say that its annual reports are not creative and do not inspire confidence among people who are concerned with the values of human rights and civil liberites. It is not possible to hail its functioning as outstanding and revolutionary. It has, however, brought about at least one change : it has made law-enforcing agencies to take note of human rights violations.

A number of police organisations and administrative academics have started periodical lecture series on human rights. One such exercise was conducted in Delhi in July 1994, by the Rapid Action Force (RAF) of CRPF for their officers. The initiative was taken by its first inspector General, Mr. A.A. Siddiqui, IPS. This writer was invited to speak on "The Relevance of Human Rights to the Directive Principles and Fundamental Rights of the Indian Constitution" at the inaugural session. I gave instances of violations of human rights by the police/paramilitary forces in both civil police stations as also in insurgency areas, and emphasised on the need for observing human rights as prescribed by our own constitution.

It was indeed a pleasant experience to hear senior officers of the RAF and CRPF that the police should follow the rule of law while dealing with people in custody, indeed, in all situations. The questions that followed my lecture were also indicative of the fact that at least a section of police personnel have respect for human rights and dignity, and for rule of law.

The CRPF-run Internal Security Academy (ISA) at Mount Abu conducts periodical courses for their officers, as also for the IPS cadre, to probe into all aspects of human rights violations by the police. This writer has had the privilege of being a panelist in a number of such courses. Regrettably not many are aware of such exercises undertaken by the police and para-military institutions, including the annual debate competition on human rights organised by the Central Police Organisations like CRPF, BSF etc. The Academy and the CRPF should have an effective public relations department to publicise their efforts in this regard.

What follows is a brief account of the ISA courses of study. The courses include detailed discussions on international charters like the UN Universal Declaration of Human Rights 1948 and other UN covenants; provisions

made in our Constitution; human rights and problem of women, children and weaker sections of our society, and so on. The courses are attended by CRPF and IPS officers ranging from assistant commandant to inspector general of police. The panelists include NGOs, human rights activists, academics from universities, police officers and civil servants both serving and retired.

The Meets are throughout an academic and intellectual exercise as in a gathering of university faculty members. There are always indepth discussions on violation of human rights including partisan behaviour of the police. The exercises are aimed at finding remedial measures and not at scoring debating points.

On a couple of occasions the subject of societal violation of human rights was discussed at length. It was indeed encouraging to find senior officers of CRPF showing great concern about human rights of Scheduled Castes and Scheduled Tribes, women, children and minorities. There was indepth analysis of violation of human rights arising out of caste and religious intolerance victims of which are invariably Dalits, women, children and the minorities.

A number of officers have expressed their concern regarding police resorting to methods totally contraventional of the laws of the land. The issues that emerge include: human rights as part of police culture; sadists be made to leave the police force; implement the National Police Commission recommendations; revamp the criminal justice system in that lengthy processes must be avoided; mandatory judicial investigation into complaints of violation of rights and law by the police; the police must learn to work within the rule of law; the police should be custodians of human rights; police personnel should refuse to abide by illegal orders by political bosses; investigate causes and patterns of torture; government to conform to international covenants; implement the provisions of our own constitution like free compulsory basic education, and so on.



Justice M.N. Venkatachaliah Chairman, NHRC giving away the prize to Ms Mamta Singh for winning debate Competition on Human Rights

Another subject which is taken up in the courses relate to terrorism and insurgency. Officers who have seen action in insurgency areas point out that it is not always possible to tackle the problem of terrorism without bending the law at times, and that, in the interest of the country. It is, however, pointed out by most panelists that flouting the laws of the land like fake encounters and killing, would amount to state terrorism; and that individual terrorism cannot be eliminated by state terrorism. The police must recognise the fact that the evil of terrorism has to be tackled in accordance with the laws of the country. The exercises in the ISA are usually marked by an inhibited approach. So that even if there is no agreement on the subject, the fact remains that there is a free and frank discussion on such subjects.

I may refer to another subject which was raised by me on a couple of occasions - this relates to Section 19 of the Protection of Human rights Act 1993 which keeps the armed forces including the CRPF out of the investigative jurisdiction of the National Human Rights Commission (NHRC). Should the CRPF be brought within the jurisdiction of the NHRC as is the practice in a number of countries where armed forces are within the

investigative jurisdiction of Human Rights Commissions? Again, even though a majority of officers would not consider it desirable, an in-depth discussion on the subject is useful, and may eventually convince the CRPF hierarchy that it would be in the interest of the organisation to come under the jurisdiction of the NHRC.

What is most remarkable is the transparency of approach in all discussions; and given this transparency in all discussions by police and security forces, there could be, one hopes, an improvement in the sphere of human rights in our country.

A Successful Counter-Ambush

—M.S. Farooqi, Ex-IGP, CRPF



After achieving independence, India inherited in Nagaland from the British the diplomatic and political legacy which in early sixties culminated into insurgency by surfacing series of incidents against the lawfully established government. As the basic act of insurgency is manifested in use of force by hit and run tactics much against the democratic norms of protest, negotiation and sorting out the problem by peaceful means, the government ought to meet the challenge of hit and run by employing its own Forces, both for its defence as well as for containment of insurgent activities.

In this background the sixties and mid seventies witnessed large scale movement of security forces and their operation against Naga hostile in the North-East. The insurgency soon engulfed the entire hill areas of bordering Manipur state which had inhabited Naga and Kuki tribes dominantly. The entire region from Dimapur to Morch (Bordering Burma) became insecure

for security forces owing to frequent incidents of ambush laid by Naga insurgents who were trying to establish their supremacy in the whole area and run a parallel government.

The more induction of fresh battalions was taking place the more was the risk of ambush on them owing to their lack of understanding of the situation and tactics adopted by the insurgent Nagas. Many times the threat was spread over to the bodering Assam area also which was covered by thick vegetation and jungle. In the mid 1967, the railway line connecting Guwahati and Dimapur was blown twice near Diphu which had caused panic and further strengthening of security measures during movement of Forces. The Army and Para military vehicles and personnel were not allowed to move without adequate



CRPF patrol somewhere in North-East

protection and convoy. So much so that convoy from Dimapur to Kohima and Imphal was allowed to move only under the protection of Army, supported by Armoured vehicles.

I was posted as a Dy. S.P. in 6 CRPF in late 1967, which was deployed in the southern most part of Manipur called Teugnoupal then being part of Chandel Sub Division. Three coys of the Battalion were deployed on the Southern-West axis of Chandel at Sugnu, Mombi and Chakpikarong where I was commanding A Coy. The operations of ambush and counter ambush due to frequent search and cordon by security forces had become a routine affair. Unfortunately, all over Nagaland, Manipur and Mizoram, the

insurgents had been achieving success after success in ambushing contingents of security forces, thereby inflicting many casualities which were very demoralising to us but morale boosting to insurgents. There was only one dependable way to get over them; collect reliable local intelligence about movement of insurgents/intentions and take offensive measures continuously, without giving them a respite. However, the solution is easier said than done but, there is no other alternative. Hence, all of us were extremely alert and anxious in gathering intelligence about movement of insurgents in our area.

Sometimes in 1968 a celebrated Police Officer from Madhya Pradesh (late) T.J. Quinn was posted as DIG operations in Manipur. He had the reputation of being very tough, active and down right professional in his approach. Soon after joining Manipur police he had developed his own network of intelligence through which he used to verify all reporting of incidents and activities of Security Forces. Before his joining, I had led a prolonged operation in the sourthern-west area of Manipur, that is, ex-Mombi to Somtal for one month duration (16/8/68 to 15/9/68) against 400 Mizo insurgents who had returned from China after getting training and latest weapons and were trying to sneak into Mizoram through Moreh-Samtal axis of Teugnoupal. The operation was in the form of Long-Range Patrolling (LRP) on foot as suggested by IB/ IG Manipur.

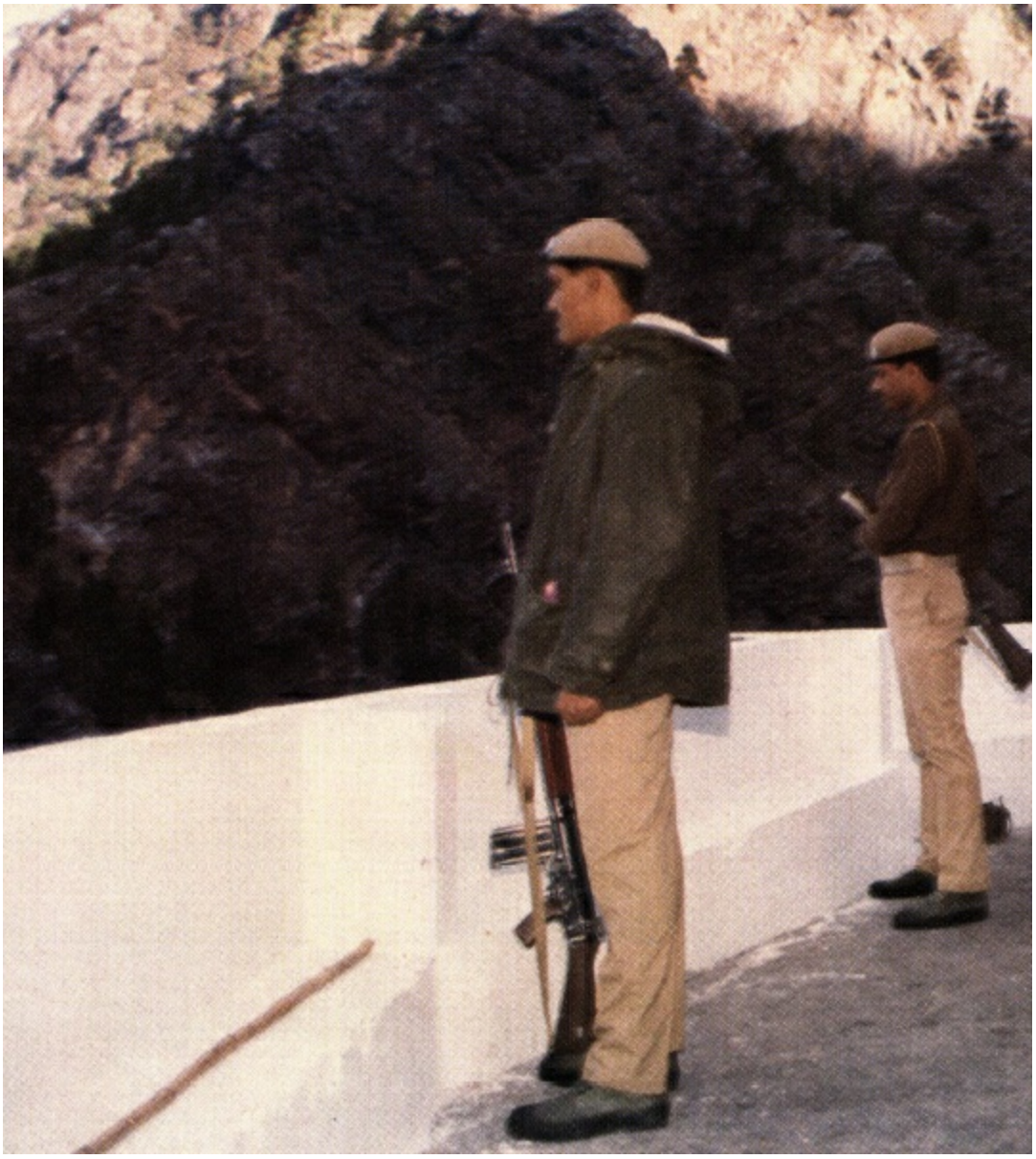
Around October 1968, Mr. Quinn gathered some reliable information about the plan of an Anal Naga Group at Wamku village (in interior hills about 25 km from Chandel) whose leader wanted to ambush CRPF convoy between Chandel and Pallel. He wanted to entrust the responsibility of ambushing this group before they could reach Chandel to an officer who could give him result defying the trend of continuous losses of para-military and police personnel in ambushes. Perhaps aware of my efforts and approach at the recent LRP, he called me at Imphal by a wireless message and briefed me about the information available to him for laying an ambush. He also told me that it would be better if I could capture some members of the group alive so that field interrogation can be held so as to reach out to their bases and hide-outs. After briefing I went straight to Chandel area and took a patrol to Recee the track leading to Wamku village. After studying the topography of the area, I returned to my Coy Hq at Chakpikarong falling on a different axis.

Next day, I selected a platoon and briefed them about my ambush plan with the help of sketch/drawing. The salient features of the briefing were that own movement will take place soon after early dinner the same day, the base will be made at Chandel where a Coy HQ of CRPF was already existing, the movement of our platoon from Chandel towards Wamku will be done by climbing over the left hills by-passing two villages falling enroute so as to avoid dog-barking, the site of ambush was selected at Jhula bridge (about 60 yds long), the platoon would remain in ambush position till 8 am and all action including opening of fire would be done only after I had challenged the hostile group or fired at them. After detailing parties and locating them on both sides of the Jhula bridge and covering possible escape routes, I placed myself at the other end of Jhula bridge towards Chandel properly camouflaged. Our platoon occupied the selected position by 4 am and the expected time for the underground group to pass through Jhula bridge for reaching Chandel area was about 5.30 am.

All Platoon personnel were in high spirit till they had occupied their places but soon two factors started bothering them to the extent that I noticed some impatient movement and slight murmuring from their side. The PI. commander came to my position to tell me that the mosquitoes of big size were having a field day by sucking their blood and, the morning cold was becoming unbearable. I somehow consoled him by telling that if I could bear the inconveniences why not the platoon members and advised them to remain in ambush position till I ordered other-wise. I further ordered that no undesirable movement should be made lest our position would get exposed.

The delay in arrival of our prey was causing me worry including a possibility of ambush over us during our return journey. My mind thus got distracted with making another plan in case our ploy to ambush the underground (UGs) was unsuccessful. At about 7.30 am two UGs were spotted by our Jawan approaching Jhula Bridge coming down from Wamku. I was given a signal accordingly. Next moment I was indicated that a section of UGs with rifles were approaching Jhula bridge. The moment one UG was on Jhula bridge and the other UG had crossed it, I rose from my position and challenged both of them. With my challenge other members of my platoon rose in the firing position. The two UGs started trembling by realising that they have been surrounded from all sides. The rear UGs ran in different direction to save their life. They were not properly visible yet I

fired at them giving signal to others to fire at the fleeing UGs. But the UGs took advantage of the natural cover and escaped. Yet we were successful in capturing the two UGs alive with their 303 rifles. At that time we were issued 303 rifles only.



CRPF men keeping vigil somewhere in North-East

I flashed a signal of success of ambush to my Commandant at Pallel who repeated it to (late) T.J. Quinn and the CRPF Directorate. Mr. V.G. Kanetkar, IP was the Director General who appreciated the success of ambush and congratulated all of us. The two captured UGs were interrogated by (late) T.J. Quinn which resulted in making the break through

in surrendering of Anal UGs from Chandel area to T.J. Quinn subsequently.

Medical Set-up in CRPF

—Dr. K.K. Saini - Director (Medical)



DG CRPF visiting a patient in CRPF Hospital

The first medical elements of the force came into existence alongwith the creation of Crown Representative Police in 1939 consisting of two Doctors

and 5 Paramedical Staff. This medical set up was an integral part of the Battalion and meant to impart primary health care to the personnel.

As the Force grew the need of having a hospital to look after the cases needing hospital care was felt and Ist Hospital was created in 1962, a 78 Bedded Hospital at Neemuch and the Battalion medical components were made as detachments of this Hospital. The Medical Officers in the earlier stages used to come from Army and from Princely States and para-medics were recruited locally.

During mid sixties the Force underwent a change in its organisational set up which became necessary due to its rapid growth and the management requirements. The earlier pattern of the Bns existing as independent Units was changed to create a Group Centre which served as static HQrs of a number of Bns to take over the functioning of the housekeeping for the Bns attached to this Group Centre.

The Medical-Set up also therefore was changed to suit this organisational change and each Group Centre was authorised a Hospital as a part of the Establishment. The number of beds in this hospital were directly proportionate to the number of Bns attached at the rate of 10 Beds per Bn. This was based on the concept that the unattached Bn having a 20 Bedded Hospital on attachment retained 10 Beds and the other 10 Beds were shifted to Group Centre Hospital i.e. its static HQrs. Similarly part of the staff and one Medical Officer were shifted from the Bn strength to the GC to man the GC Hospital.

Though the idea was to provide Hospital care to the patients of the Bns attached and families of those staying in the campus of GC yet, by not getting extra staff in tune with the requirement nor following the national pattern of staffing for these hospitals, the functioning of these Hospitals remained more or less like the M.I. Rooms. Treatment in these hospitals was provided with the help of Civil hospitals or nearby medical colleges.

With the expansion and reorganisation in the Force the number of Doctors and the paramedics had become substantial and the CRPF having failed to get Doctors from Central Health Service, thought of a cadre of Medical officers and Paramedics. Thus the CRPF started its own cadre of combatised Medical officers in 1975. By this time Govt. had sanctioned two 100 Bedded Hospitals by upgradation of 78 Bed Hospital at Neemuch shifted to Delhi and one at Avadi subsequently shifted to Hyderabad. In

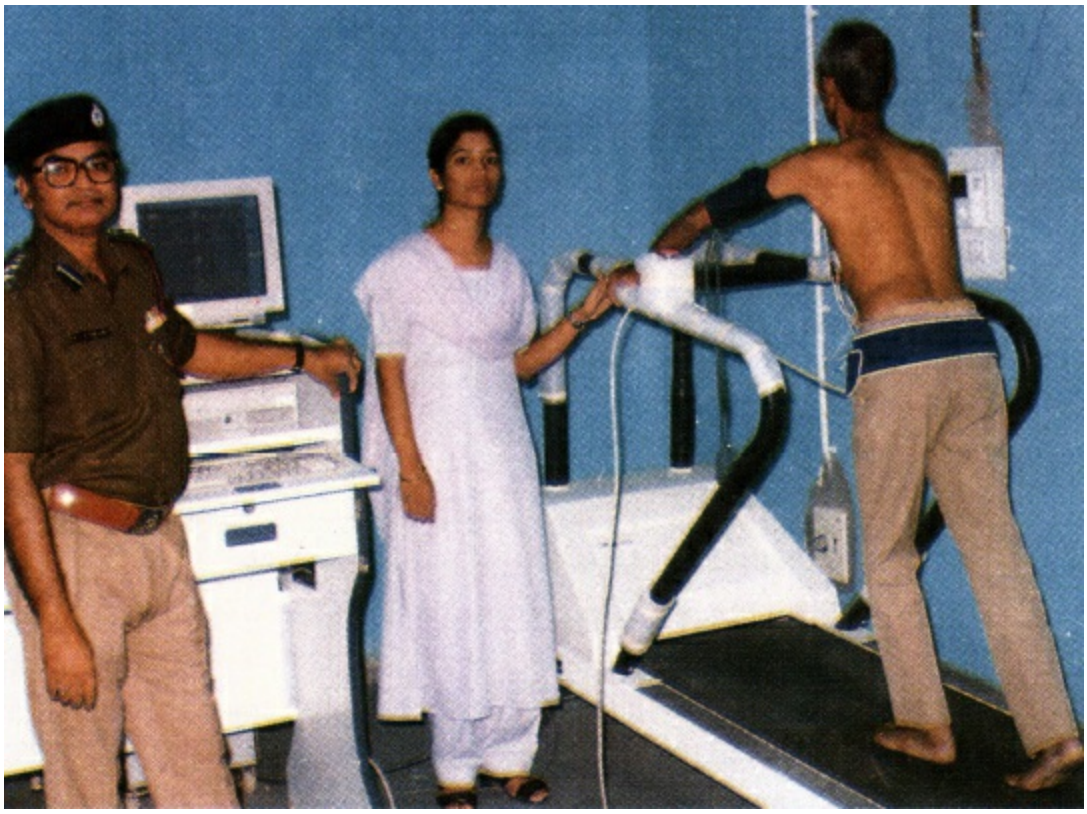
addition some Hospitals were upgraded to 50 Beds situated at Neemuch, GC I Ajmer and Guwahati and the Govt. in these Hospitals, allowed the staffing on the pattern as per recommendations for Hospitals prevailing at that time.

With the creation of own Cadre, the Medical Officers started joining this Force and many of the Medical Officers went for Post Graduate Studies with few joining it directly after Post Graduation.

Thus came into being a reasonably well manned and organised medical set-up with 158 Medical Officers and 758 para-medics into being in 1976 which subsequently has grown to the present strength of 318 Medical Officers and 1334 para-medics sanctioned with as many as 70 Post Graduates in various specialities. Earlier there was no representation of medics at Force HQrs and a post of Medical Supdt. was created in 1978. The force kept growing with creation of additional Group Centres and other Units and in the process the medical set-up also grew alongwith addition to quality of medicare. In 1989 the paramedical staff was also combatised to have uniformity and a sense of belonging to the Force.

Now with the present set-up, CRPF has the specialist facilities in the Branches of Medicine, Surgery, Gynaecology, Anaesthesiology, Orthopaedics, Paediatrics, Eye, Psychiatry, Skin & VD, and Radiodiagnosis available including the modern gadgets like Tread Mill Test Machine, Audiometry, Ultra sonography, X-Ray plants with TV Circuits and auto-analysers etc.

Sometime back all Group Centre Hospitals have been sanctioned X-Ray plants and Lab Equipments and in the coming days it will give much needed relief to CRPF personnel and families.



Computerised Tread mill test in Base Hospital New Delhi

The medical set-up is still growing and the Govt. have sanctioned Composite Hospital Scheme in which many hospitals have been sanctioned new or by upgradation of existing Hospitals to 50/100 Beds with proper staffing pattern and specialists facilities. The concept of Composite Hospital is with the idea of providing medical cover to all the Central Police Organisation irrespective of who mans the Composite Hospital.

The Govt. is also actively thinking of revising the staffing pattern of Hospitals existing already to make them provide the medicare as expected of them depending on the size of Hospital and there is conceptual thinking of providing Super-Specialist facilities also.

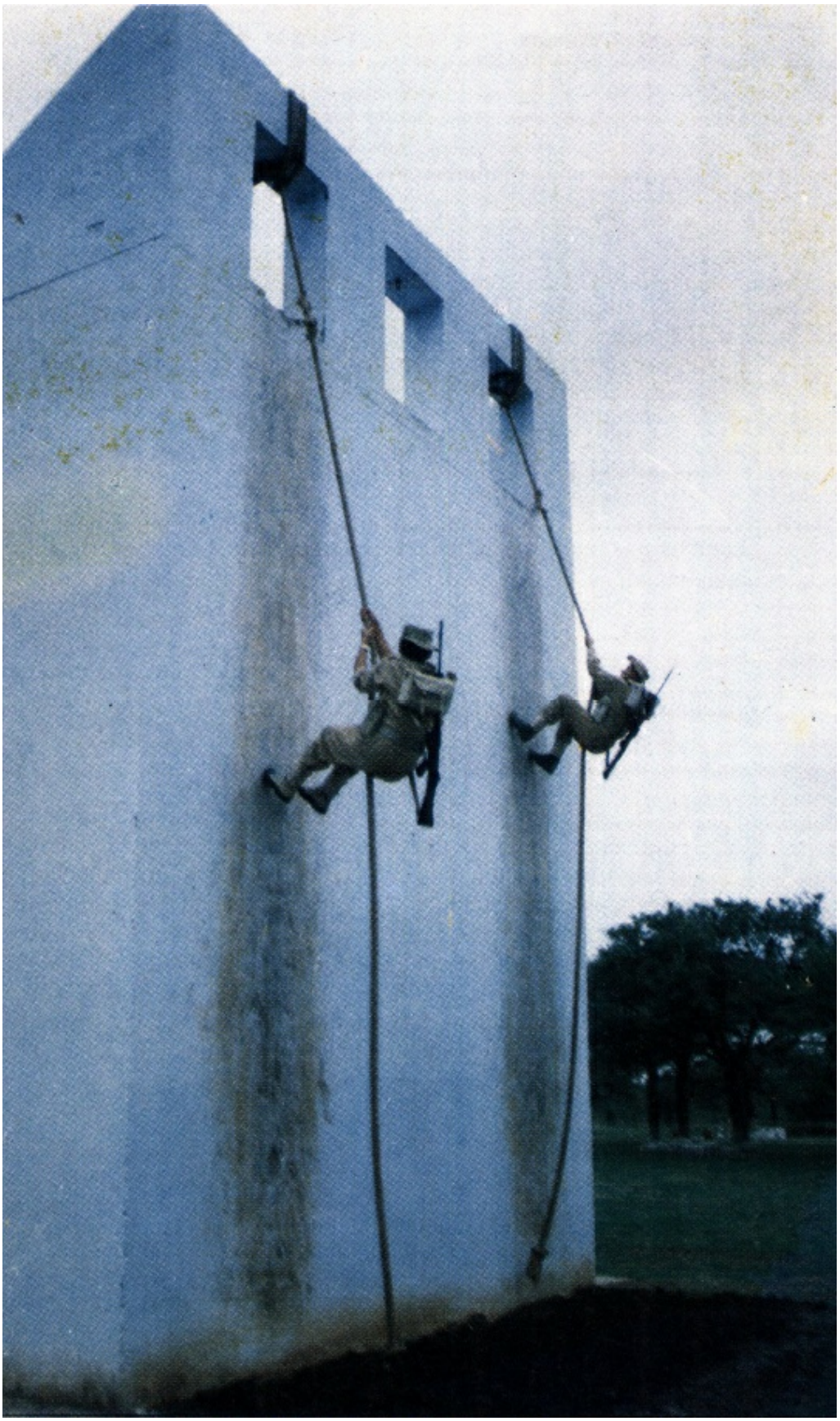
Recently the Govt. have extended medicare facilities to the retired personnel of CRPF from the nearby CPMF Hospitals/CGHS facilities wherever such facilities exist to the the extent the facilities are available in those Hospitals. This facility was not available earlier.

We are still required to grow in much needed expertise and equipment to keep pace with the modern pace of advancement in medical science and hopeful of getting Government’s clearance in due time to make the

medicare service one of the best though at present it already is the best amongst the CPOs with three Base Hospitals, three 50 Bedded Hospitals, twenty three 40 bedded hospitals and one 30 Bedded Hospital, with sanction of one 100 bedded and three 50 bedded composite hospitals coming up in addition to Unit hospitals with every Battalion, RTC, CTC III and ISI Mount Abu.

Modernisation in Training

— Brig (Retd.) Govind Ji Mishra, VSM, DIG CRPF



Central Reserve Police Force is fully committed in maintaining law and order and ensuring internal security in different parts of the country. Our units and sub units are deployed in highly sensitive areas combating insurgents and terrorists. Whereas in most of the areas, they are working in close co-operation with State police, in certain areas, the Force is carrying out counter-insurgency operations independently and in coordination with other Security Forces. The Anti National Elements who are equipped with modern automatic weapons, explosive devices and communication equipment are well trained, highly skilled and thoroughly motivated. To deal with such an opponent, the Force needs to be equipped appropriately and carry out very effective training to develop requisite confidence and quick reflexes to deal with any hostile situation.

The post Kargil scenario and political development in neighbourhood have intensified the militant activities in Jammu & Kashmir and other parts of the country. The stress on improving the training standards and overall security management, therefore, has assumed greater significance. A number of initiatives in this regard have been taken by the Ministry of Home Affairs and Force Headquarters towards modernisation of training.

With over 80 percent of Force having been deployed in sensitive areas where there is hardly any scope to conduct proper training, it has been decided to strengthen the basic training of Recruit Constables, Directly Appointed Subordinate Officers (Sub Inspectors) and Directly Appointed Gazetted Officers (Assistant Commandants), so that having graduated from their respective institutions, they are confident to take their place in the sub unit deployed in difficult counter-insurgency areas. To this end, the course duration has been increased with greater emphasis on physical fitness and edurance, shooting skill, operational drill for counter-insurgency and Anti-terrorist Operations, Jungle training camp, handling of explosives and I.E. Ds, VIP security and human sensitivities with adequate attention to overall personality development and attitudinal changes.

Training is a continuous process. Every individual needs to refresh his knowledge and practice drills periodically. Director General’s Training Policy for the year 2000 has now laid down compulsory inservice and promotional courses, which individuals in different rank and at different stage of service are required to attend. All effort is being made to ensure that every individual is given an opportunity to undergo a structured course

atleast once in five years. For the time being following courses are compulsorily to be carried out by the Force personnel:-

(a) Gazetted Officers

- Weapon & Tactics (Officers) - within 3 years as Assistant Commandant.



Commandants attending the senior command management course



Obstacle crossing by recruits during their training session

- Quarter Master/Motor Transport Officer’s course - within 6 years.
- Middle Command Management Course after 8 years.
- Senior Command Management Course as Commandant/Addl. DIG.



Recruits during Jungle Training



(b) Non Gazetted Officers

- JCC for Constables between 6 to 10 years of service.

- Section Commander's Course - 14 to 15 years of service.

- Weapon & Tactics for Head Constables - 20 to 25 years of service.

- Senior Under Officers Cadre Course - as per seniority for promotion as Sub Inspector.

- Platoon Commander's Refresher - 5 to 7 years after becoming Sub Inspector.

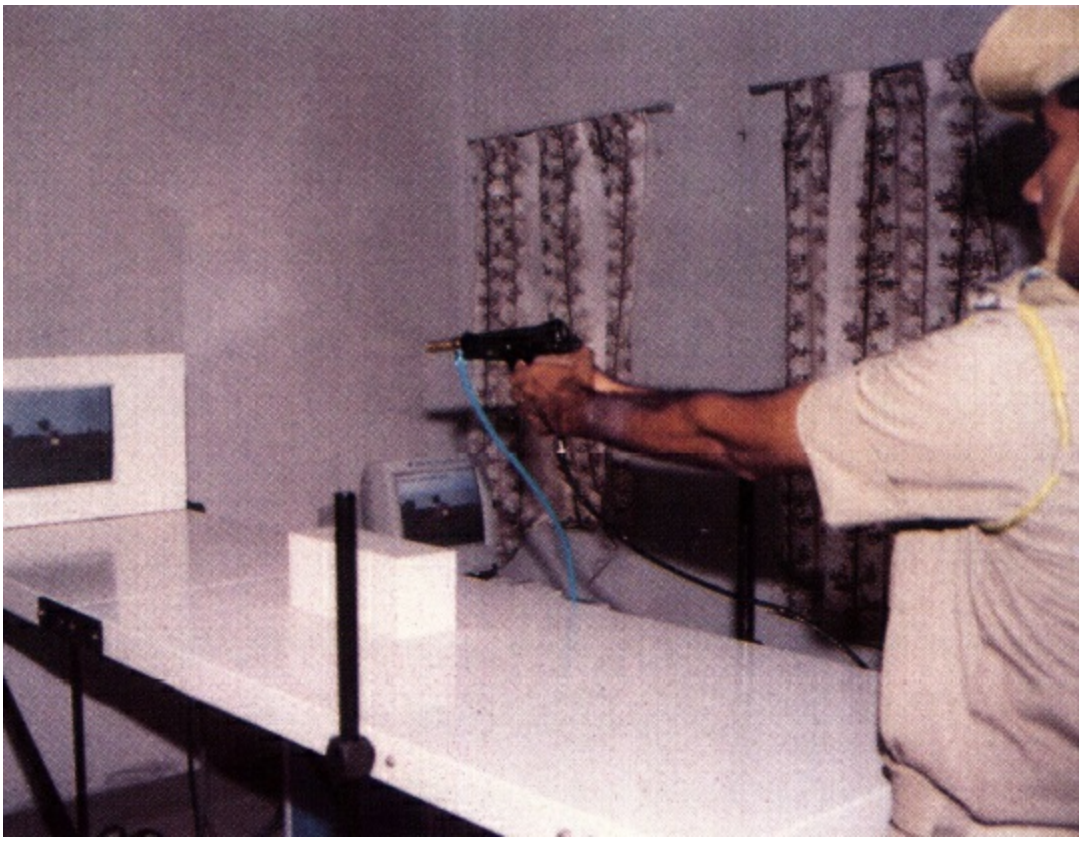
- Senior Sub Inspector Cadre Course & Senior Inspector Cadre Course - As per seniority for promotion to Assistant Commandant.

In addition, number of other specialised courses are being planned and conducted in own training institutions as also in other Central Police Organisations and Army institutions to train instructors and provide additional inputs for specialised appointments. It will be pertinent to mention here that pre-promotional and promotional courses for Non-Gazetted Officers may be revised to some extent based on the requirements

of Assured Career Progression to be implemented now. Similarly, it is desired that atleast 10 per cent of the service period of an individual should be spent on training.

The thrust of all training should be to prepare Force personnel in their individual skills and integrate them into a cohesive team at section, platoon and company level to operate effectively in insurgency and terrorist areas. For this purpose Operational Commanders in the field have been asked to ensure that every sub unit is put through rotational training once a year under their own commanders. Clear orders to deploy only five companies of a battalion exists. Local commanders are required to ensure that sixth company is available for training with least amount of disruption. It is also essential that rotation of companies for training is carried out smoothly.

For any meaningful training, availability of qualified instructors, upto-date training material, minimum required infrastructure and training aids are essential. All our effort is being made in this direction. It has been decided that on all instructional course a fixed allotment of seats to units will be made which has been specified in para 6 (c) of the Training Policy. Similarly, number of instructional staff which a unit should maintain in different disciplines has also been laid down in para 12. Vacancies on various courses during the year 2000 has been allotted to Sectors based on this Policy. Any unit which needs additional vacancy on a particular course may demand through their Sector Headquarters. Effort is on to standardize the training material which will be issued to all trainees attending instructional courses.



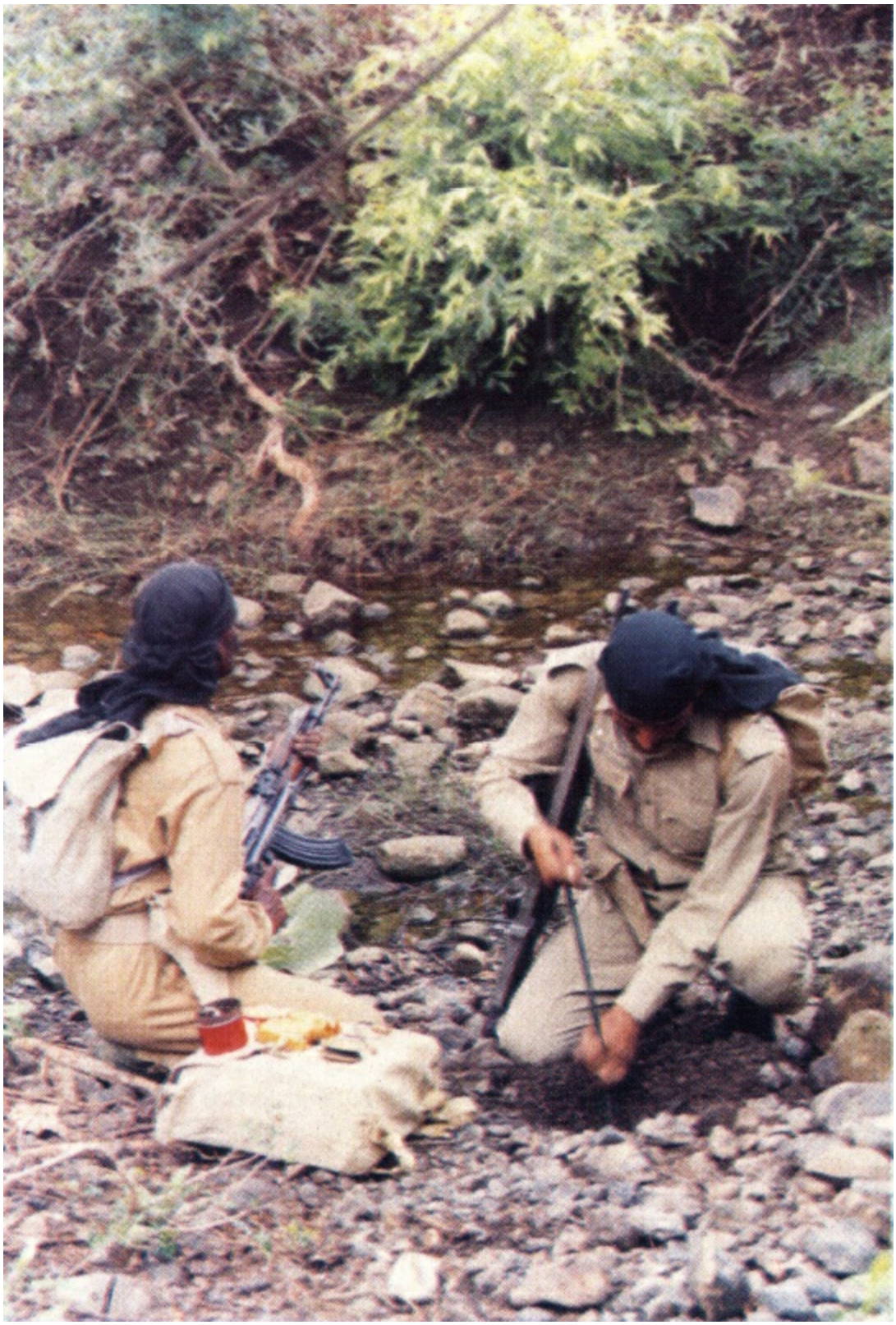
Using modern aids in Training



Jungle training in progress

In the field of infrastructure and training aids, a very appreciable improvement has been made. By the end of this financial year, it is expected that all training institutions will be equipped with Small Arms Training Simulator (SATS), which is Computerised Laser Beam Simulator, extremely effective to improve individual marksmanship. All Central Training Colleges and Internal Security Academy will also be given one set of Infantry Weapons Effect Simulator System (IWESS) with which simulated engagements in a tactical scenario can be conducted and effect of shooting skill, field and battle craft of every Individual practiced and judged. To improve method of instructions, all training institutions are now equipped with Multimedia Projection System and Video Camera. Effort is being made to produce own training films and CDs on important subjects which could be circulated to all institutions and units of the Force. To develop quick reflexes, a Counter-insurgency Marksmanship Capsule has been introduced for which improvised room intervention shooting and jungle lane shooting courses have been developed in Central Training Colleges. Electrically operated target systems for these ranges are proposed

to be acquired to make them more effective. One of the serious draw back in the infrastructure for training of the field force has been lack of classification and field firing ranges. Within the constraint of resources, all out effort is being made to acquire land and construct ranges in Jammu & Kashmir and North East, where large concentration of Force exists. All these should bring in a quality change in the training.



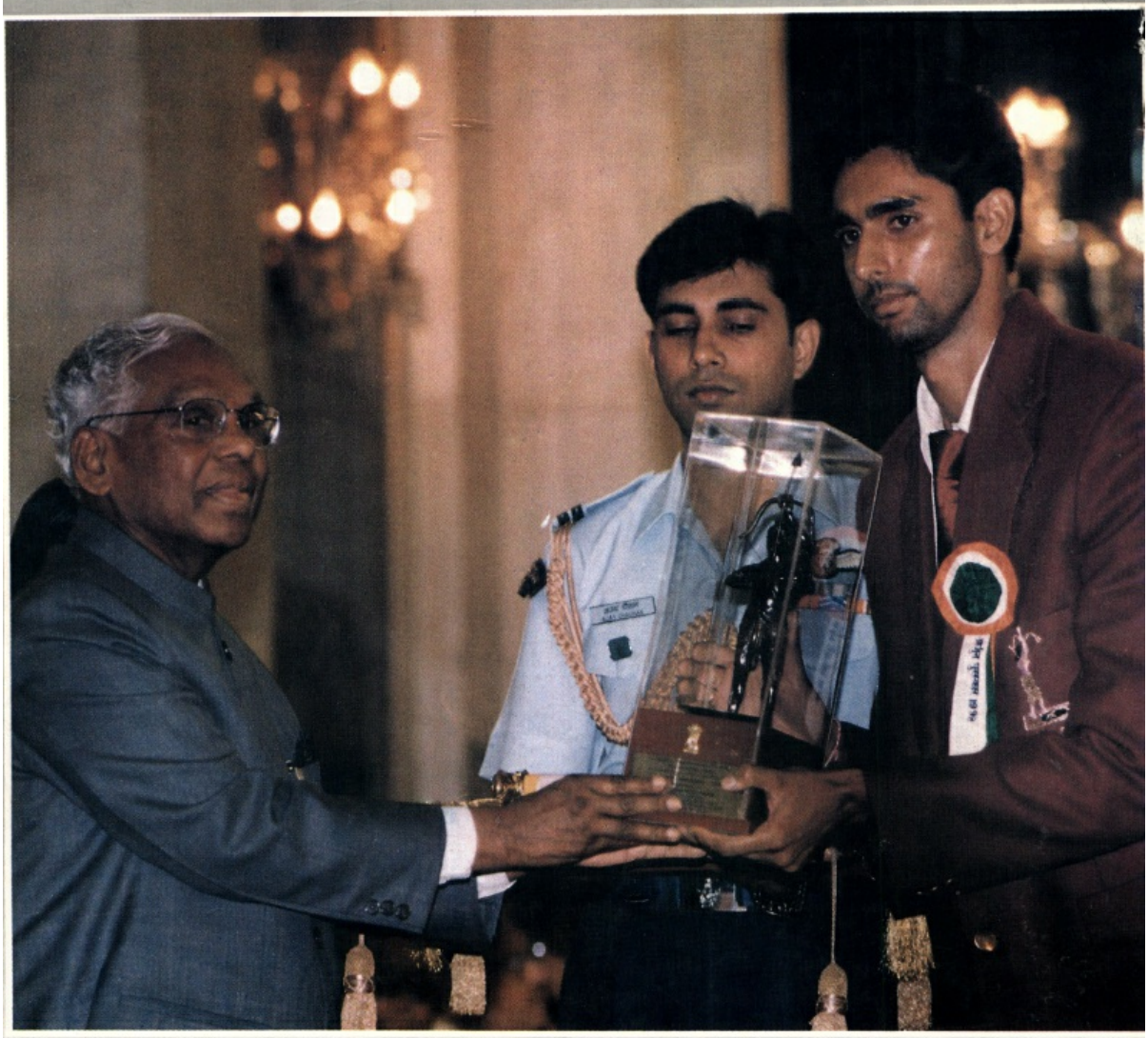
CRPF men are being trained in defusing lEDs

The operational role of the Force demands flexibility where there is a

need to develop public sensitivity and at the same time be prepared to deal with insurgents and militants. To prepare for both anti-insurgency and counter-insurgency tasks, own training methodology need to change from mere lecture, discussion and presentation to demonstrations, sand model discussions and tactical exercises. It is essential that all commanders in the field consider training as their command responsibility and make serious effort to imbibe modern technological developments to improve the skill and operational effectiveness of their command. The good old saying “the more you sweat in peace, the more blood you save in war” holds hood in fight with insurgents and militants as well. It must be remembered that there is no better welfare than training your command as by training you save life of your men. The threat of internal security in the new Millennium is expected to be as high, if not more. Commanders at all level need to devote themselves, be innovative and improvise wherever possible facilities to train their command to meet the future challenges.



के.रि.पु. बल वार्षिक परेड में भाग लेती बल की महिला टुकड़ी



बल के धावक परमजीत सिंह को अर्जुन अवार्ड प्रदान करते राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन